

# प्रद्युम्न-चरित

(आदि कालिक हिन्दी काव्य)

रचयिता:—कवि सधारु

प्राक्कथन लेखक

डा० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०  
रीडर, हिन्दी विभाग,  
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

★

सम्पादक

पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

कस्तूरचंद कासलीवाल शास्त्री एम० ए०,

प्रकाशक

केशरलाल बरुशी

मंत्री प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे

जयपुर

प्राप्ति स्थानः—  
जैन साहित्य शोध संस्थान  
मंत्री कार्यालय  
महावीर भवन सयाई नानसिंह हाईवे  
जयपुर

---

---

प्रथम संस्करण : जनवरी १९६०  
मूल्य ४)

---

---

मुद्रकः—  
अजन्ता प्रिन्टर्स,  
जयपुर

## प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४-५ वर्ष पूर्व जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र की प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध-संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रवास्ति संग्रह, सर्वार्थ सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें जिनका अभी ५-७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध-संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की संख्या को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रवास्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञात एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। ये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनाएँ हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर, एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३-१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रहू कवि कृत जिनदत्त चौपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इससे इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भंडार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यत्न के इस मुख्य कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानी सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५-७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेम में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

अन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूँ। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्राक्कथन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो कष्ट किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

जयपुर  
ता० १०-५-५६

केशरलाल बख्शी

## प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंड या पुण्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्व श्रेष्ठ कवि पुष्पदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुष्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्पदन्त था। किन्तु पिछले ५०-६० वर्षों की खोज में पुष्पदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से पृथक स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुड़ना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जित विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई हैं, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिन्दी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशिष्टताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती हैं। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों को मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि चोलचाल की भाषाएँ एकदम वहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे-धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रखा जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मानते कि अपभ्रंश-

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह सन्धिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्व श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्त्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची बद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुतः साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न मात्राओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मद्रकलेहचरित' (मृगाकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की श्रीवृद्धि में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इतने उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक द्रुमराग सूचित होता है; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किन्तु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की जड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारों से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि युग में साहित्य-रचना अनेक जैनैतर कवियों ने

इस ग्रंथ के संपादक श्री कस्तूरचंद्र कासलीवाल की कृपा से प्राप्त।

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'यंगल' \* में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छन्द जनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जैन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत छंदों में भी एक बड़ी संख्या जनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। वीर सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिक-विक्रि की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जैन भंडारों में प्रवेश असंभव-सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर दी है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा प्रारंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जैन भंडारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, संविकालीन हिंदी तथा आदि-कालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोज्वल रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्वल और मूल्यवान रत्न सद्यः, कृत प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११, १४११ और १५११ में हुई है; किन्तु गणना के अनुसार सं० १४११ की तिथि ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना तिथि है। इस समय के प्राप्त-पास की निश्चित तिथियों की रचनाएं इती-गिती हैं, और जो हैं भी, इतने अधिक निश्चित रूप और पाठ की और भी कम है। आकार में यह रचना छठपई छंदों की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्त्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित थी वृद्धि हुई है। यह बड़े हर्ष की बात है कि श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् को अतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चैनसुखदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

\* सम्पादक-चन्द्रमोहन घोष, प्रकाशक-एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुतुङ्ग का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिजिन त्रिजय द्वारा सम्पादित-पुरातन प्रबन्ध संग्रह।



जिनकी सहायता से इस रचना को पाठ-निर्धारण पाठानुसन्धान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों को सन्ततिजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोशों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सगर' में ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी वेद का विषय है। ऐसी दशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रवर्तनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से चघाई देता हूँ। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नव-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने संकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अन्यथा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग

माताप्रसाद गुप्त

३१-९-५६.

## प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायवहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्व रिपोर्ट' सन् १९२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख श्रीर सेना मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अग्रचन्द्र नाहटा वीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १९४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है ?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :—

"उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारण या सधारु था। वे अग्ररोवह से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महाराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूचीकर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगवर सन्त-पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र व शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर वसन्त होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्बत् १४११ की इतनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है।"

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियाँ तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १६२४ में जयपुर के ज्योतिषीन्द्रजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अत्रिसर पर उषी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम-जयपुर हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कौसलोवाल और श्री अनूपचन्द्र न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामां ( भरतपुर ) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्वत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खंडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्वत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वहीं के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर ( जैन ) आगरा निवासी सम्वत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०१ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का वही नाम देख कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुसन्धान' वर्ष ६ अंक १-४ में 'सम्वत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गईं। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंधी ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्राहलय की है। इन चारों प्रतियों का संचिप्त परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री वधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में ३४ पत्र हैं। पत्रों का आकार  $११\frac{१}{२} \times ५\frac{३}{४}$  इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्भवतः १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६८० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के पश्चात् प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो वे बढ़ गईं, शेष ४ छंदों की संख्या लिखने में गलती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६८० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

### (२) दूसरी प्रति ( 'क' प्रति )

यह प्रति कामां ( भरतपुर ) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार  $१० \times ४\frac{३}{४}$  इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के पश्चात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवतः १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २८ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

### (३) तीसरी प्रति ( 'ख' प्रति )

यह प्रति देहली के सेठ के कूचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवी ला० पन्नालाल अग्रवाल को कृपा से नाइटाजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ है जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह संवत् १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रह्लाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इसकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साहजहा राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे पहिलाद । शुभमस्तु ।

#### ( ४ ) चौथी प्रति ( 'ग' प्रति )

यह प्रति सिंधिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल संवत् १६३४ आसोज सुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय विनयसुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नवरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से ( छ प्रति में ७ वें पद्य से ) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिपभ प्रजित संभौ जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी ।  
अभिनन्दनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥  
पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिद करहि तुम्ह सेव ।  
चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥  
नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुपु मुकति भयो भासु ।  
सीतल नाथ श्रेयांस जिणंडु, जिण पूजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥  
वासपूज्य जिणधर्म सुजाण, भवियण कमल देव तुम्ह भाणु ।  
चक्र भवणु साई संसार, स्वर नरकउ सु उलंघण हार ॥ ४ ॥  
विमलनाथ जउ निर्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि ।  
सो जिण अनंतु वारंवार, अष्ट कम्म तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥  
जउ रे धम्मं धम्मयुरवीर, पंच सुमति वर साहस धीर ।  
जैरे सति तजी जिणि सीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कथु अरह चक्कवइ नरिद, निज्जर कम्म भयो सिव इन्द ।  
 जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरी लेवि अवतारु ॥ ७ ॥  
 मल्लिनाथ पंचेन्द्री मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल ।  
 जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिनंद ॥ ८ ॥  
 जउरे नामि गुण ग्यान गंभीर, तीन गुपति वर साहसघोर ।  
 निलोपल लंछन जिनराज, भवियण वहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥  
 सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु ।  
 जाउरे जिणवर नेमि जिणंद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंडु ॥ १० ॥  
 आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर ।  
 जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥ ११ ॥  
 मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ ।  
 कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणोसर वीर ॥ १२ ॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् ५८ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहंटात्री जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रचुम्न-चरित' की एक और प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा संवत् १६६६ श्रावण बुदी ६ आदित्यवार की लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा उनका  $१०\frac{३}{४} \times ४\frac{३}{४}$  इंच का आकार है। इसमें पद्य संख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ दिनां हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विस्तृत स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वासु, कासमीरि पुरियउ निवासु ।  
 हंसि चंडी करि वीणा लेइ, कवि सघारु सरसै पणवेइ ॥ १ ॥  
 पणमावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चवकेसरि देइ ।  
 अवाइणि रोहण जो सारु, सासण देवि नवइ साघारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमास्रिणी लीरु, करहिं आलवणि वाजहि वीरु ।  
 आगमु जारिण देइ बहुमती, पुणु परावो देवो सुरस्वती ॥ ३ ॥  
 जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथि लकृटि ले आगै होइ ।  
 भवियहु वुरिय हरइ असरालु, आगिवाणि परावउ खितपालु ॥ ४ ॥  
 संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए ।  
 भादव सुदि पंचमि जो सार, स्वाति नक्षत्रु सनीरुचर वार ॥ ५ ॥  
 वस्तुबंधः—

### एतन्नि जिणवर सुद्ध सुपविचु

नेमीसरु गुणनिलउ, स्याम वरुं तिवएवि नंदरु ।  
 चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकणी घण मारु मद्दरु ।  
 हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवणासु ।  
 सांसइ सुह पावहं हररु, केवलणारण पसु ? ॥ ६ ॥

### विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायेंः—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुराण पुरुषों में से एक है । इन्द्रकी गणना चौबीस कामदेवों ( अतिशय रूपवान ) में की गई है । यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे । यह चरमशरीरी ( उसी जन्म से मोक्ष जाने वाले ) थे । इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आकर्षणों से भरा पड़ा है । मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्बलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही खूबी से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है । न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है ।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र सर्व प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है । फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयंभू कृत रिदुर्येमिचरिउ ( ८ वीं शताब्दी ) में, पुष्पदन्त के महापुराण ( ६-१० वीं शताब्दी ) में तथा धवल के हरिवंश पुराण ( १० वीं शताब्दी ) में यह प्राप्त होता है । इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनायें मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

| क्र० सं० | रचना का नाम           | कर्ता का नाम    | भाषा        | रचना काल      |
|----------|-----------------------|-----------------|-------------|---------------|
| १.       | प्रद्युम्नचरित्र      | महासेनाचार्य    | संस्कृत     | ११वीं शताब्दी |
| २.       | पञ्जुणकहा             | सिंह अथवा सिद्ध | अपभ्रंश     | १३वीं शताब्दी |
| ३.       | प्रद्युम्नचरित        | कवि सघारु       | हिन्दी      | सं० १४११      |
| ४.       | प्रद्युम्नचरित्र      | भ० सकलकीर्ति    | संस्कृत     | १५वीं शताब्दी |
| ५.       | प्रद्युम्नचरित्र      | रङ्गू           | अपभ्रंश     | १५वीं शताब्दी |
| ६.       | प्रद्युम्नचरित्र      | सोमकीर्ति       | संस्कृत     | सं० १५३०      |
| ७.       | प्रद्युम्न चौपई       | कमलकेशर         | हिन्दी      | सं० १६२६      |
| ८.       | प्रद्युम्नरासो        | ब्रह्मरायमल्ल   | हिन्दी      | सं० १६२८      |
| ९.       | प्रद्युम्नचरित्र      | रविसागर         | संस्कृत     | सं० १६४५      |
| १०.      | शाम्भुप्रद्युम्न रास  | समयसुन्दर       | राजस्थानी   | सं० १६५६      |
| ११.      | प्रद्युम्नचरित्र      | शुभचन्द्र       | संस्कृत     | १७वीं शताब्दी |
| १२.      | प्रद्युम्नचरित्र      | रतनचन्द्र       | संस्कृत     | सं० १६७१      |
| १३.      | प्रद्युम्नचरित्र      | मल्लिभूपण       | संस्कृत     | १७वीं शताब्दी |
| १४.      | प्रद्युम्नचरित्र      | वादिचन्द्र      | संस्कृत     | १७वीं शताब्दी |
| १५.      | शाम्भुप्रद्युम्न रास  | ज्ञानसागर       | हिन्दी      | १७वीं शताब्दी |
| १६.      | शाम्भुप्रद्युम्न चौपई | जिनचन्द्र सूरि  | हिन्दी      | १७वीं शताब्दी |
| १७.      | प्रद्युम्नचरित्र      | भोगकीर्ति       | संस्कृत     | —             |
| १८.      | प्रद्युम्नचरित्र      | जिनेश्वर सूरि   | संस्कृत     | —             |
| १९.      | प्रद्युम्नचरित्र      | यशोधर           | संस्कृत     | —             |
| २०.      | प्रद्युम्नचरित्र भाषा | —               | हिन्दी गद्य | —             |
| २१.      | प्रद्युम्नप्रबन्ध     | देवेन्द्रकीर्ति | हिन्दी      | सं० १७२२      |
| २२.      | प्रद्युम्नरास         | मायाराम         | हिन्दी      | सं० १८१८      |
| २३.      | शाम्भुप्रद्युम्न रास  | हर्षविजय        | हिन्दी      | सं० १८४२      |
| २४.      | प्रद्युम्नप्रकाश      | शिवचन्द्र       | हिन्दी      | सं० १८७६      |
| २५.      | प्रद्युम्नचरित        | वस्तावरसिंह     | हिन्दी गद्य | सं० १९१४      |

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य ( ११ वीं शताब्दी ) के संस्कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पञ्जुणकहा ( १३ वीं शताब्दी ) के पश्चात् हिन्दी में



सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सधार को है। इसी रचना के परचान् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गईं। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता लगता है।

### ✓ प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें विदा कर दिया, पर जब वे सत्यभामा का लुराल-नेम पृछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अयमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहां से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खुद प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में विठाने के परचान् उन्होंने रुक्मिणी को छुड़ाने के लिये सभी प्रतिपत्नी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घनासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सन्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूद उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से मेट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र को माता के बलों का अपने पुत्र के विवाह के समय मुखडन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की धनी रात्रि को ही घूमकेतु नामक असुर हरण कर लेगया और पूर्य भंव के वैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्याधरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ विमान द्वारा उधर से जा रहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उसके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

उधर रुक्मिणी पुत्र वियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहाँ आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायब होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुःख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने विदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहाँ से पता लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहाँ प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पाँच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहरथ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहरथ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहरथ पर चढ़ाई कर दी। पहिले तो राजा सिंहरथ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहरथ को बांध कर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे सुवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण सब कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन सब कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे वन-क्रीड़ा के वहाने वन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहाँ उसने फुंकार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस डरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूंछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यत्न रूप में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और वीर प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दीं। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहां के रक्षक कालासुर दैत्य को हरा कर वहां से चंवर छत्र प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, वीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रक्षक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर सकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहां भी गये वहां से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रहीं इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे उनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उस पर बड़ा खुश हुआ। इस अवसर पर वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले ली। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के छिन जाने पर त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिया विद्या द्वारा अपने भाइयों के इरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बांधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं ठहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के साथ द्वारका नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहां दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिषेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की सांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुंच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को उचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बीस योद्धा भी उभरे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे उठाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की बाड़ी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार बाड़ी में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे बाड़ी से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई कुछ स्त्रियां मिलीं, जो मंगल गीत गा रही थीं। उनको भी उसने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की बावड़ी पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूँड लिये। जल सोखिणी विद्या द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उँडेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मेंढा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहाँ से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषचारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का लितना भी सामान जीवन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब चमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के सभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की याचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के जा सकने योग्य लड्डू उन ब्रह्मचारी को परोस दिये। उन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डूओं को उसे खाते देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियां जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आईं तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी धिक्कन कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े क्रुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे खेत गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनाई से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने निह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

अखाड़े में डाल दिया। फिर उसने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहाँ नारद और उदधि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की बांह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सांमर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलत्रली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ डटे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नीद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि वह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी वार करते उसे प्रद्युम्न अचिलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहाँ आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिर चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और सारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बांधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसंवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह बड़े ठाठ वाट से किया गया। सत्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंबुकुमार का जीव अच्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम हार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह हार देंगे उसी की कूख से उसका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह हार सत्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप सत्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोखे में डाल दिया और वह हार उसके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और सत्यभामा दोनों के क्रमशः शंबुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे बड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शंभुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली ।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द्र के पास कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शंभुकुमार को अपनी कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द्र ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की । रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई । प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया । प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया तथा युद्ध में रूपचन्द्र को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया । अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द्र ने अपनी पुत्रियाँ दोनों कुमारों को भेंट कर दी ।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों को भोगा । एक दिन वह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा । वहाँ केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई । माता-पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन दीक्षा ले ली । तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया ।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूपः—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यतः दो आधार हैं—एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण । आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारों विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं । प्रद्युम्न चरित की कथा जिमसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है । यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबंध में हरिवंश पुराण में दी हुई है । उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है । दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है । हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने वरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं ।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण ( महापुराण का उत्तरार्द्ध ) में प्रद्युम्न चरित की कथा संचेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

की सभा में आंगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल वध, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे प्रज्ञप्ति नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य पञ्जुणकहाः ( १३ वीं शताब्दी ) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पञ्जुणकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रद्युम्न के पूर्वजों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पञ्जुणकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधारु कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित है। पञ्जुणकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिपष्टिशलाकापुरूपचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई है उसमें और सधारु कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यकों के लिये ही नहीं किन्तु जैनतर साहित्यकों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

ॐ आमेर शास्त्र मण्डार जयपुर में इसकी हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।



हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्बरसुर ने हर लिया और उसे लवण समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मछेरों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फाँस लिया और शम्बर को भेंट कर दिया। जब शम्बर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो वह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहाँ नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे सब प्रकार की मत्स्या सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्बरसुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों पश्चात् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

- साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना।  
 (२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण।  
 (३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझना।  
 (४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्बरसुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहाँ उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्बरसुर को मार कर मायावती से विवाह करना।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित्र लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है।

वैदिक साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके।

## कवि का परिचय

रचना के प्रारम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'सधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर 'सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। +कवि ने अपने जन्म से अप्रवाल जाति को विभूषित किया था। इनकी माता का नाम सुघन था जो गुण वाली थी। पिता का नाम साह महराज था, अन्य प्रतियों में साहु महराज एवं समहराह भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरिछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक जान पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० वासुदेवशरण अप्रवाल ने भी जैन सन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

अपना परिचय देने के पश्चात् कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को पढ़ेगा वही मरने के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा इसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि प्रद्युम्न का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

+ मइसामी ङउ कीयउ वखाणु, तुम पञ्जुन पायउ निरवाणु ।

अग्रवाल की मेरी जात, पुर अग्रोए मुहि उतपाति ॥

सुधणु जणणी गुणवइ उर धारउ, सा महराज घरह अशतरिउ ।

एरछ नगर वंसते बानि, सुण्डिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥

सावयलोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धर्म कराह ।

दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि चितह जिणेसु देउ ॥

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही परिद्धत वगैरे से वह काम याचना करता है ।

### रचना काल :—

अत्र नक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं उन सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है । इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्वत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं । यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्वत्तों में कौनसा सही सम्वत् है । विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है:—

(१) अमवाला पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अमवाला की प्रतियों में सम्वत् १३११ लिखा हुआ है ।

(२) वधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और वाराणसी वाली प्रतियों में रचना सम्वत् १४११ दिया हुआ है ।

(३) सिंधिया औरिएंटल इन्स्टीट्यूट-उज्जैन वाली प्रति में सम्वत् १५११ दिया हुआ है ।

सम्वत् १३११ वाले रचना काल के सम्वन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है:—

संवत् तेरहसै हुई गये ऊपर अधिक इग्यारा भये ।  
भादौ सुदि पंचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार ।

उक्त पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था ।

सम्वत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है:—

सरसकथा रसु उपजइ घणउ, निसुराहु चरितु पञ्जसह तरणउ ।  
संवत् चौदहसै हुई गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए ।  
भावव दिन पंचइ सो सार, स्वाति नक्षत्र सनोश्चर वारु ॥१२॥

जयपुर वाली प्रात

सारसकथा रस उपजइ घणउ, निसुणउ चरित पज्जउवनतणउ ।  
 संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।  
 भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।  
 देवलोक आणोत्तर सार, हरिवंश आव्याउ वंश सधार ॥१२॥  
 खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर कामां

उक्त पद्यों में जयपुर वाली प्रति में सम्बत् १४११ भाद्रपद मास पंचमी शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्बत् १४११ भाद्रवा सुदी ६ शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है। दोनों प्रतियों में तिथियों के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि भरु तह भया ।  
 भादव वदि पंचमि तिथि सार, स्वाति नक्षत्र सनीचरवार ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्बत् १५११ भाद्रवा बुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है। इसलिये यह तो निश्चित है कि प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एवं शनिवार के दिन हुई थी। किन्तु रचना सम्बत् कौनसा है, यह हमें देखना है। तीनों रचना सम्बत्तों में सम्बत् १५११ वाला रचना काल तो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो यह सम्बत् अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त 'पंचसइ' पाठ स्वयं भी गलत है इससे पन्द्रह सौ का अर्थ नहीं निकलता इसलिये सम्बत् १५११ वाले पाठ को सही मानना युक्ति संगत नहीं है। सम्बत् १३११ वाला पाठ जो अभी तक ३ प्रतियों में मिला है, उसके सम्बन्ध में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक किसी विद्वान् ने सम्बत् चौदहसै के स्थान पर तेरहसइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुण्डि चरित मइ रचिउ पुराण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने के लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो बखान' पाठ बदल दिया। इसके अतिरिक्त इस कवियशः प्रार्थी ने आरम्भ के जिन पद्यों में सधार का नाम था उनके स्थान पर नये ही मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये।

अब रहा संवत् १४११ का रचना काल । इस रचना संवत् के सम्बन्ध में सभी विद्वान् एक मत हैं । श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है ' कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि वदी पंचमी, सुदी पंचमी और नवमी इन तीन दिनों में त्वांति नचत्र नहीं पड़ता । डा० नाताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार है । सर्व रिपोर्ट के निरीक्षक रायब्राह्मदुर स्व० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट <sup>२</sup> में लिखा है कि संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है । लेकिन उनका भी बुद्धि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नहीं बैठता है । इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है । प्रद्युम्न चरित में जो 'भाद्र दिन पंचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मूल पाठ 'भाद्र सुदी पंचमी सो सारु' यही होना चाहिये ।

### प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल ने इस बीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है । शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी हैं । इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हन्मीर रासो (३) कीर्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीसलदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रासो (११) लुशरों की पहेलियाँ और (१२) विद्यापति पद्म-यलि । उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों को दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरूपण और नामकरण हो सकता है । इनमें से अन्तिम दो तथा 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं । अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है ।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

१. हिन्दी अनुसंधान वर्ष ६ अंक १-४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन बारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है ' कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढ़ाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भू के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से प्रारम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थीं, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें हैं।

१ हिन्दी साहित्य का आदिकाल (डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी)

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पउमचरिय', 'रिदुगोमिचरिउ' तथा 'स्वयम्भू छन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरिउ' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट भाषा शास्त्री थे। इनके काव्यों में घटना वाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एवं पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ६३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्वत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे; इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'साययधम्म दोहा' उन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्वत् ६६० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', 'जसहरचरिउ' एवं 'शायकुमारचरिउ' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एवं शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविंसयत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धक्कड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संघियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आकर्षक ढङ्ग से हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाहचरित' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में वीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरित' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरित' वीर एवं शृङ्गार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंसण चरित' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंसणचरित' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। वाण एवं सुबन्धु ने जिस क्लिष्ट एवं अलंकारित पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इमं पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ५५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें संस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरित' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसका भाषा उदात्त भावों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले घाहिल का 'पद्मसिरिचरित' एवं अब्दुल रहमान का 'सन्देशरासक' भी उल्लेखनीय काव्य हैं।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द्र, हरिभद्र, सोमप्रभ, विनयचन्द्र आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दानुपासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में ५० लाख ने 'जिणायत चरित' जयमित्रहल ने 'बडुमाणकव' कवि सिंह ने 'पञ्जुहण चरित' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मसूरि का 'जम्बूस्वामीरास', रत्न का 'जिणायत चउरई' (संवत् १३५४) वेल्ह का 'चउरीसो गीत' (संवत् १३५१) भी उल्लेखनीय रचनायें हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी की रचना



जिणदत्त चउपई है जिसे रतह कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५५० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किस तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत् १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—“इस युग के साहित्य सर्जन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है। परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नींव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७) पल्ल (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिमद्रसूरि (सं० १२४१), नैमिचन्द्र भण्डारी (सं० १२५६), आत्तगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह खण और भत्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८९), सुमतिगणि (१२९०), विनेश्वरसूरि (१२७८-१३३१), अमयतिलक (सं० १३०७), लक्ष्मीतिलक (सं० १३११-१७), सोमसूरि (सं० १२६०-१३३१), जिनपद्यसूरि (सं० १३०९-२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५-५३), जगद्गु (सं० १३३१), संग्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०-६२), प्रज्ञातिलकसूरि (सं० १३६३), वस्तिग (सं० १३६८), गुणाकर-सूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेरु (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), चारसूरि (१३९०), जिनप्रमसूरि (१३६०-९०), सोलख (१४ वीं शताब्दी), राज-शेखर सूरि (सं० १४०५), जयानंदसूरि (सं० १४१०), तरणप्रमसूरि (१४११), विनयप्रम (१४२२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द (सं० १४२६), जिनचल सूरि (सं० १४३०), मेघनन्दन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १४४०), चाणुहंस (सं० १४४५)।

जैन विद्वानों की लोक भाषाएँ लिखने में रुचि होने के कारण उन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया ।

### प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर ( सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये ) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है । उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अवश्य किया गया है । इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शाङ्गधर आते हैं । किन्तु उनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य— गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं । हाँ, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं । शाङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है । एक पद्य देखिये—

पिधउ दिढ सराह वाह उप्पर पक्खर दइ ।

बंधु समदि रण घसउ हम्मीर वञ्जण लइ ॥

उड्डलणह पह भमउ खग्गा रिउ सोसहि डारउ ।

पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पव्वञ्ज अप्फालउ ॥

हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहारण मुहमह जलउ ।

सुलतारण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरसूरि (१४०५), जयानंदसूरि (१४१०), तरुणप्रत्रसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं १४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं । किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ इन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है । विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

नयण वयण कर चरण जिण वि पंकज जलि पाडिय ।  
तेजिहि तारा चंद सूर आकासि भयाडिय ॥

इसलिये यह कहा जा सकता है कि सधार कवि अपने समय के अकेले हिन्दी कवि हैं; जिन्होंने इस प्रकार का प्रबन्ध काव्य लिखने का प्रयास किया था ।

### हिन्दी साहित्य में प्रद्युम्न चरित का स्थान :

‘प्रद्युम्न चरित’ हिन्दी भाषा में अपने ढंग का अकेला काव्य है । यह पुरानी हिन्दी एवं नवीन हिन्दी काव्यों की मध्य की कड़ी को जोड़ने वाला एक भेद काव्य कहा जा सकता है । चउपई, एवं वस्तुबंध-छन्द में लिखा जाने वाला यह यद्यपि पहिला काव्य नहीं है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो इसे प्रथम स्थान मिलना चाहिये । आगे चलकर जिन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में चौपई छन्द को मुख्य स्थान दिया है उन पर अधिकांश रूप से जैन रचनाओं का प्रभाव है । चउपई छन्द क्या कवि और क्या पाठक दोनों के लिये ही प्रिय सिद्ध हुआ है ।

प्रद्युम्न चरित को काव्य की दृष्टि से किस श्रेणी में रखा जा सकता है यह विचारने की वस्तु है । काव्य के साधारणतः दो भेद किये जाते हैं प्रथम ‘प्रबन्ध-काव्य’ दूसरा ‘मुक्तक काव्य’ । प्रबन्ध-काव्य के फिर तीन भेद हैं : महाकाव्य, खंड काव्य एवं चंपू काव्य । इसमें से प्रद्युम्न चरित मुक्तक काव्य तो हो नहीं सकता इसलिये यह अवश्य ही प्रबन्ध काव्य है ।  
(10) रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली पृष्ठ ६६ प्रबन्ध काव्य का जो लक्षण दिया है वह निम्न प्रकार है—

“प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है । उसमें घटनाओं की संवद्ध शृंखला और स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले, उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव करने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिये । इति वृत् मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता । उसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिम्बित चित्रण होना चाहिये जो श्रोता के हृदय में रसात्मक तरंगें उत्पाने में समर्थ हो । अतः काव्य में घटना का कहीं तो संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार ।”

प्रद्युम्न चरित में (१०) रामचन्द्र शुक्ल का प्रबन्ध-काव्य वाला लक्षण ठीक बैठता है। इसमें घटनाओं का शृंखलाबद्ध क्रम है, नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश है। इन सबके अतिरिक्त यह काव्य के श्रोताओं के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में भी समर्थ है। इसलिये प्रद्युम्नचरित को निश्चित रूप से प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है।

प्रद्युम्नचरित ६ सर्गों में विभक्त है उसमें विरह, मिलन, युद्ध वर्णन, नगर वर्णन, प्रकृति-वर्णन एवं इन सबके अतिरिक्त सायावी विद्याओं का वर्णन मिलता है। उसका नायक १६६ पुण्य पुरुषों में से एक है। वह अतिशय पुण्यवान् एवं कलाओं का धारी है। वह धीरोदात्त प्रकृति का नायक है।

काव्य के प्रवाह को स्थिर एवं प्रभावोत्पादक रखने के लिये अत्रान्तर कथाओं का होना भी प्रबन्ध काव्य के लिये आवश्यक है। अत्रान्तर कथाओं से पाठों का चरित निखर जाता है और वे पाठकों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर लेती हैं। प्रस्तुत काव्य में रुक्मिणी-हरण तथा नारद के विदेह क्षेत्र में जाने की घटना, सिंहरथ युद्ध वर्णन, उदधिकुमारी का अपहरण, भानुकुमार के विवाह का वर्णन, सुभानु तथा शंभुकुमार का द्यूत-वर्णन आदि कथाएँ आयी हैं। इनसे 'प्रद्युम्न चरित' के काव्यत्व की उत्कृष्टता में वृद्धि हुई है।

पूरे काव्य में घात-प्रतिघात खूब चला है। पाठकों का ध्यान किञ्चित् भी दूसरी ओर न वँट सके; इसलिये कवि ने अपने काव्य में ऐसे प्रसंगों को पर्याप्त स्थान दिया है। स्वयं नायक के जीवन में ही आश्चर्यकारी घटनाओं का बाहुल्य है। धूमकेतु असुर द्वारा उसको शिला के नीचे दबाया जाना, फिर कालसंवर द्वारा उसका बचाया जाना, उसे गुफाओं के दिखाने के बहाने अनेक विपत्तियों में फँसाना, किन्तु उसका अनेक विद्याओं के लाभ के साथ वापिस सुरक्षित निकल आना, सिंहरथ के साथ युद्ध में विजय-श्री का प्राप्त होना, स्वयं कालसंवर एवं फिर द्वारका में श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध होना एवं उसमें भी विजय लक्ष्मी का मिलना आदि कितने ही प्रसंग उपस्थित होते हैं। जब पाठकों को नायक को विपत्ति में फँसा हुआ देखकर पूर्ण सहानुभूति होती है और जब वह वहाँ से विजय के साथ निरापद लौटता है तो पाठक प्रसन्नता से भर जाते हैं।

‘प्रद्युम्न चरित’ एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के पश्चात् जित दीक्षाधारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सानान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, भानुकुमार, नारद, कालसंवर सिंहस्थ, रूपचंद्र आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु ‘प्रद्युम्न चरित’ में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होती। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानुकुमार, सिंहस्थ, रूपचंद्र, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहस्थ एवं रूपचंद्र से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानुकुमार बचते हैं; किन्तु भानुकुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रूप में प्रकट होने के पहिले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानुकुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानुकुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानुकुमार के साथ सौमनस्य नहीं था। भानुकुमार की मांग-उद्घिष्टकारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उसने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानुकुमार को खलनायक सिद्ध नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में कैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौशल दिखलाने के लिये श्रीकृष्ण

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य विना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

‘प्रद्युम्न चरित’ वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। जैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है ; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण—जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न—सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न—कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण—युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द—युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध-वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक सर्ग में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। “रहिवर साजहु, गयवर गुडहु, सजहु सुदहु, आज रण भिडउ” के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को बालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरोचित जवाब है :—

बालउ सूरु आगासह होइ,तिन को जूझ सकइ धर कोइ ।  
बाल बभंगु डसइ सउ आइ, ताके जिसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥  
सीहिणि सीहु जयै जो बालु, हस्ती जूह तयो वे कालु ।  
जूह छाड़ि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

इसी प्रकार जब श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उसके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, बर्छा, बाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० बाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निबाण जलबाण, वायुबाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु बाण और जलबाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन विद्याओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है। इसलिए इसका मुख्य रस वीर होने पर भी वह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस भी जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिणि दिठा परदवगु ।

सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयगु फुणि कंठ लायउ ।  
अव मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥  
दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत ।  
वाला तुणहं नं दिठ मइ, यह पछित्तावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तंगे वयगुं निमुणैइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।  
खण इकुमाह विरधि सोकयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहउ ॥४३०॥  
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाई ।  
खण खण जेत्वंगु मागइ सोइ, बहुवु मोह उपजावइ सोइ ॥४३१॥

इसी प्रकार वीभत्स रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। श्री कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लड़ाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गेय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।  
ठाठा रहिर वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥  
गीधीणी स्याउं करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार ।  
वेगि चलहु सापडी रसोइ, ग्रसइ आइ जिम तिपत होइ ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छटी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव में हर एक के लिए हृदय द्रावक था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रंहने लेंगी कि उसका शरीर कृश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही। करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहिं सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहंवेरइ ।  
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥  
इक धाजइ अरू रोवइ वयण, आसू वहत न थाके नयण ।  
पूर्व जन्म मैं काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥  
की मइ पुरिष विद्धोही नारि, की दम्ब घाली वणह मभारि ।  
की मैं लेगु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयउ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ़ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है। ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई संदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती है।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया। ८४ हाडियों में तैयार किये हुए व्यंजनों को तो वह बात की बात में चट कर गया। यही नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के उदरस्थ हो गया। फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसास्वादन करें—

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि ।  
मांडे कंडे परोसे तासु, सबु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥  
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ ।  
जेतउ घालइ सबु संघरइ, बडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है। जैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्तः अपहृति अर्थात्-रन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी वहु सादु समुदु, जाणी उपनउ उथत्यउ समुदु ॥५५७॥





३. ब्रजभाषा का यह सर्वमान्य नियम है कि 'गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार'
४. ब्रज भाषा में कारक चिह्नों का लोप क्षम्य है।
५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु कवियों ने दोनों प्रकार के प्रयोगों की छूट ली है।
६. ब्रज भाषा में तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग होना भी उसकी एक बड़ी विशेषता है—

अब हमें यह देखना है कि ये उक्त सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में कहां तक मिलते हैं।

१. प्रद्युम्न चरित में एक ही अर्थ को सूचित करने वाले संज्ञा सर्वनाम क्रिया अव्यय आदि में कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे

संज्ञा—

|        |       |           |
|--------|-------|-----------|
| कृष्ण— | कन्ह  | (५०, ५७२) |
|        | कान्ह | (६०, ६६)  |
|        | किसन  | (५४२)     |

प्रद्युम्न—

|         |                      |
|---------|----------------------|
| परदमणु  | (४१३)                |
| प्रदवणु | (५२२) प्रदुवणु (१३६) |

|          |        |                            |
|----------|--------|----------------------------|
| सर्वनाम— | तुअ    | (२८) तुअि (१८८) तुहि (४७०) |
|          | तुन्हि | (२४८) तुन्ही (४७२)         |

|        |     |   |
|--------|-----|---|
| अव्यय— | इतु | (३८३) इह (२८, ३६) इहि (४०, ४७) उह (८१, ३१२) |
|--------|-----|---|

|         |            |                          |
|---------|------------|--------------------------|
| क्रिया— | कंपइ, कंपत | (३७८) कंपिउ (६७) (५०२)   |
|         | दीठउ       | (६२) दीठि (४८) दीठी (२७) |
|         | दीठे       | (३७)                     |

दीणउ (६४८) दीनउ (२६) दीनी (४७)

दीने (३५०)

२. ब्रज भाषा की दूसरी-विशेषता—क्रियाओं को लाघव रूप बना कर प्रयुक्त करने की रही है । प्रद्युम्न चरित में भी यही विशेषता असुगुण रूप से दिखाई देती है यथा—

सुन करके— निमुणि (२४,४२)

बुला करके— बुलाइ (१८७)

देख करके— निरलि (१०६) देखि (३२,४३)

पढ़ता है— पढ़इ (३१८)

दौड़ा करके— दौड़ाइ (३३०)

लिख पढ़ करके—लिखितु पढ़ितु— १३७

३. ब्रज भाषा के सर्व मान्य नियम—“गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार” का भी कवि सधारु ने अपने प्रद्युम्न चरित की भाषा में पालन किया है—जैसे—

क. सति भामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु वोलाइ बयणा (६६)

ख. वाहुडि राब विमाणा गयउ (१३३)

ग. जिन रुपिणि हीयरा विलाखाइ (१५६)

४. प्रद्युम्न चरित में कारक चिह्नों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है । अत्रिकांश स्थलों पर शब्द बिना कारक चिह्नों के ही प्रयुक्त हुये हैं—

कर्त्ता कारक— सारंग पाणि धनुष लौ हाथि  
काल संवर तम वीडा देइ (१७२)  
नारद ज्ञात मयणस्यो कही (२४७)  
मुनि जंपइ मुहि नाही खोडी (२४८)

कर्म कारक— सेस पाल पठउ जमपंथि  
फुणिर नेम जिन केवल भयउ (६६४)

|               |                         |       |
|---------------|-------------------------|-------|
| सम्बन्ध कारक— | सिंघ जुध जो जाणे भेउ ।  | (१६५) |
|               | वसंत मनि भयउ उछाहु      | (२२३) |
|               | तीनि खंड जो पुहमि नरेसु | (३०६) |

अधिकरण— इह षण चरण न पाव कोइ (३३६)

५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु प्रद्युम्न चरित में दोनों ही प्रकार के प्रयोग हुये हैं—

संयुक्ताक्षर— ज्योति (६६०) ज्योनार (६५३)  
नक्षत्र (११) घर्म (५६२)  
प्रदवण (५४६)

असंयुक्ताक्षर— जालामुखी (५) चकेसरी (५)  
जादमराउ (४७५) कान्ह (४०)  
सनमधु (६८६) बांभण (३२५)

६. ब्रज भाषा के अन्य काव्यों की तरह प्रद्युम्न चरित में तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे—

सतिभामा (६३) वरम्हंड (५३६) मोसिहु (१६०) हीयरा (१६०)  
सकति (२६८) विरख (८४) पुहिमि (८१)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रजभाषा के सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में मिलते हैं।

भाषा की अन्य विशेषतायें

प्रद्युम्न चरित में आद्य या अन्त के अक्षर में कभी कभी अ का इ रूप भी कर दिया गया है—

जैसे तिसु (२) किमाड़ (१६) तिपत (५०१) हाथि (७७)  
विवाहि (२२७)

अ+उ या अ+इ का औ या ऐ उद्बुत्त स्वर से संध्याक्षर रूप में परिवर्तन करने की प्रथा प्राचीन ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी मिलती है यथा—

चउवारे, चउक (५६२) चउत्थउ, चउतीसह (१०) किन्तु उद्वृत्त स्वरों के साथ २ संध्यचरों के प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में अन्य व्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं— यथा चोपास (३१४) चोपट्ट (३४२) चलयोउ (३३) पौरिप (४५३) सैन (२८८) रम्यो (२७०)

स्वर संकोच—प्रद्युम्नचरित में स्वर संकोच कितनी ही प्रकार से हुआ है जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

जादौराउ (यादवराव) ठाउ (स्थान) पून्न (पुण्य)

व्यञ्जन—प्रद्युम्नचरित में न और ण के विभेद को बनाये रखने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई नहीं देती जैसे—

मुनि के लिये मुणि

मानस ,, माणस

मदन ,, मयण

मानइ ,, भाणइ

किन्तु कहीं कहीं न के स्थान पर 'न' का ही प्रयोग हुआ है यथा—मानकुमार, मन, भामिनी आदि ।

काव्य में ङ और र की ध्वनियां भी कितने ही स्थानों पर आपस में मिल सी गयी है यथा—

पकडि तथा पकरि, लडइ और लरइ, वाहुडि तथा बाहुरि मु'दडी एवं मु'दरी तथा भिडे एवं भिरे ।

प्रद्युम्नचरित में न्ह, म्ह एवं स्व का प्रयोग खूब किया गया है यथा पम्बाण (४१६) न्हइ (५०६) तुम्हा (१२७) तिन्हि (५२६) जेम्बणु (३६१) तिन्हि (१)

इसी तरह 'च' का छ बनाकर शब्दों को अधिक मधुर बनाने की चेष्टा की गयी है यथा—नछत्र (नक्षत्र) जच्छ (यच्) छण (क्षण) छत्री (क्षत्री)

## सर्वनाम

प्रद्युम्नचरित में सर्वनामों के तीन-ही भेदों का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि शब्दों में समानता नहीं है फिर भी काव्य में उनका विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है यथा—

|                            |                                |                            |
|----------------------------|--------------------------------|----------------------------|
| उत्तम पुरुष—               | एक वचन                         | बहु वचन                    |
|                            | हउं (१) मैं (१४१)              | हमि (२७) हमइ (६५०)         |
|                            | हौ (१४७)                       | हमारी (११३) हमारे          |
|                            | मेरो (५४२) मेरी (३०१) मे (६०३) |                            |
| मध्यम पुरुष—तू, तुमि (१०६) |                                | तुम्हारउ (२६) तुम्हि (२४५) |
|                            | तु, तुम्ह (१२७)                | तुमहि (४७०)                |
| अन्य पुरुष—वह (७६) सो (१)  |                                | ते (६३२) आदि।              |

अनिश्चय वाचक एवं प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिये—कोउ (२) काके (५५) किमइ (४४०) किम (४०५) आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यद्यपि काव्य में कारक चिह्नों का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु फिर भी रचना में कितने ही स्थलों पर उनका प्रयोग कर भी दिया गया है। इन कारकों में कर्मकारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक एवं अधिकरण कारक मुख्य हैं। यथा—

कर्म कारक—वाइ कम्मु को किउ विगासु

संख्या वाचक विशेषण—प्रद्युम्नचरित में संख्या वाचक विशेषणों का निम्न प्रकार से वर्णन हुआ है—

१. इकु (३४) इक (३७) एकु (२३७) एक (३०३) एकइ (५३६)
२. दुइ (३३) दूजी (१६७) दोइ (१८१)
३. तीजी (२००) तीजे (२०३) तीनि
४. चारथो, चारि (३२४) च्यारि (२०) चउत्थउ (८)
५. पांच (१३६) पंचति (४५६) पंचम (५६६)

६. छड़ (८६) छठि (१२२)  
 ७. सात (५१)  
 ८. अठ (३) आठमउ (८)  
 ९. नवउ (६)  
 १०. दसह (४६६) दस (४)  
 ११. ग्यारह (११)  
 १२. द्वादस (३७४)  
 १३. तेरह (६८६)  
 १४. पंद्रह (५४८)  
 १५. सोलह (८०) सोलहउ (६)  
 १६. सतरह (१०)  
 १७. अठारह (२०) अठार (१७६)  
 १८. एगुणसीवार (१०)

### क्रिया पद

ब्रजभाषा में संयुक्त क्रिया का बहुत प्रयोग होता है प्रद्युम्नचरित में भी ऐसे प्रयोग खूब देखने को मिलते हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया दोनों के ही पदों का प्रयोग देखने को मिलता है। सहायक क्रिया मुख्य रूप से भूधातु से बनी है और उसके प्रद्युम्नचरित में निम्न रूप प्राप्त होते हैं—

वर्तमान काल—होइ (१) कवितु न होइ  
 होहि (७४) रहि रूपिणी वामा काहरि होहि  
 हुइ (११) संवतु चौदहसै हुई गये

भूतकाल—(१) दाठउ भयउ (२६)  
 (२) उपर अधिक ग्यारह भए (११)  
 (३) आज पविचु भयो इह ठाउ (२८)  
 (४) निसुणि वयण कोप्यो परदवणु (१७८)

मुख्यक्रिया पदों का प्रयोग भी प्रद्युम्नचरित में ब्रजभाषा के अन्य अन्य काव्यों के समान ही हुआ है।

सामान्य वर्तमान—सामान्य वर्तमान काल में सभी क्रिया पदों को इकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है—यथा—

१. सो सधार पणमइ सरसुति । (१)
२. तिस कउ अंतु न कोउ लहइ । (२)
३. करइ गर्जे मेदनी विलसंतु । (२१)
४. रइटमाल जिउ यह जीउ फिरइ (६६६)
५. फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि (५२४)

आज्ञार्थ—वर्तमान आज्ञार्थ के रूप कभी भी शुद्ध रूप में प्राप्त नहीं होते । इसकी रचना अंशतः प्राचीन विधि ( Potential ) अंशतः प्राचीन आज्ञार्थ और अंशतः प्राचीन निश्चयार्थ से होती है (पुरानी राजस्थानी पृष्ठ ११६) । प्रद्युम्नचरित में आज्ञार्थ क्रिया पदों के निम्न रूप से प्रयोग मिलते हैं—

- |                                |         |
|--------------------------------|---------|
| ( १ ) रथ साजिउ सारथि वयसारि    | ( ५८ )  |
| ( २ ) रहिवर साजहु गयवर गुरहु   | ( ७० )  |
| ( ३ ) उदधिमाल तुमि मो कहु देहु | ( ३०५ ) |
| ( ४ ) हीण अधिक जण लावहु खोडि   | ( ७०१ ) |
| ( ५ ) घर वेगे सामहणी करहु      | ( २८६ ) |

विष्यर्थ—

- |                               |         |
|-------------------------------|---------|
| ( १ ) कलुस मोल आइ तुम्हि लेहु | ( ३४० ) |
| ( २ ) दुइ घोड़े ए घरहु अघाइ   | ( ३४१ ) |
| ( ३ ) नयर मंगल किजइ           | ( ५६६ ) |

भूत काल—वर्तमान काल में इकारान्त क्रिया पदों के समान २ क्रिया भी उकारान्त बनाकर प्रयोग की गयी है यथा—

- ( १ ) तिहि कुरखेत महाहउ भयउ (६६१)
- ( २ ) सतिभामा महिलउ पठयउ (४३३)
- ( ३ ) रइवरु मोडि नयर महगयउ (२६२)
- ( ४ ) कठिया जाइ संदेसउ कहिउ (३६८)



भविष्यत्काल—भविष्यत्काल में अधिकांश 'हृ' वाले रूप ही मिलते हैं  
ग वाले रूप बहुत थोड़े तथा कहीं २ ही मिलते हैं ।

( १ ) सो काहो जेम्बहिरो आइ ( ३६२ )

( २ ) किम रण जीतहुगो महसहण ( ७३ )

अन्य भाषाओं का प्रभाव—

त्रज भाषा के अतिरिक्त प्रद्युम्नचरित की भाषा पर मुख्य रूप से अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ा है। वास्तव में १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश भाषा के प्रभाव रहित किसी भाषा का काव्य लिखना भी दुष्कर कार्य रहा होगा। कवि ने यद्यपि अपभ्रंश के शब्दों का कम से कम प्रयोग करने का प्रयास किया है और पूरे काव्य में अपभ्रंश की एक गाथा उद्धृत की है, जिसके सम्बन्ध में अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह स्वयं कवि द्वारा निरुद्ध है अथवा किसी अन्य रचना में से उद्धृत की है, किन्तु फिर भी रचना में अपभ्रंश शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। यहाँ अपभ्रंश के कुछ शब्द रचना में से उद्धृत किये जा रहे हैं—

अवलौइ (५४२) असराल (२२२) उच्छ्राह (५२६) तिजयणाहु  
(१२) शिञ्जाणा (२३२) वीण (४) जइउ (४२६) अपमाण (४२३) अवरइ  
(३२१) उभाइ (१७०) कुकडहि (६१०) कोह (२२७) खेसु (६५४) खग  
(२१३) लोयपमाणु (६६०) लोयणु (५०७) वण (५६) विविह (१०७) सवेहु  
(५२२) सयज (२५२) सरसइ (३) नयर (१५) दुज्जण (६२६)

त्रजभाषा के अरिक्ति राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी कहीं कहीं प्रयोग स्वतः ही हो गया है जैसे—आगि (४७५) आपणी (६३१) दूख्यो (६३०) न्हाणी (२३६) आदि।

प्रद्युम्न चरित की अन्य विवेकतायें—

प्रद्युम्न चरित यद्यपि अधिक बड़ा काव्य नहीं है। डा० माताप्रसादजी गुप्त के शब्दों में हम उसे सतसई कह सकते हैं क्योंकि पूरे काव्य में ७०१ पद्य हैं। प्रद्युम्न चरित में वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओं का भी अच्छा वर्णन किया गया है जिन में से कुछ का यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है :—

१. सामाजिक सम्बन्ध, कृत्य उत्सव आदि—  
सन्तानोदय, विवाह, स्त्री समाज
२. सेना के अस्त्र शस्त्र
३. नगर वर्णन
४. प्रकृति वर्णन

१:—सामाजिक सम्बन्ध कृत्य उत्सव आदि :—

(अ) सन्तानोदय—समाज में पुत्र होने पर खूब उत्सव मनाये जाते थे। प्रद्युम्न के जन्म पर द्वारका में खूब उत्सव मनाये गये। प्रत्येक घर में वधावा गाये गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल गीत गाये :—

दूह नारि घर नंदरा भए, घर घर नयारि वधावा गए ।  
सूहो गावइ मंगलचार, वंभरा वेद पढ़इ भुणकार ॥१२०॥  
वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार ।  
घरि घरि कूँ कूँ थापे देह, मंगल गावहि कामिनि गेह ॥१२१॥

(ब) विवाह—विवाह बड़ी धूमधाम से किये जाते थे प्रद्युम्न के विवाह के अवसर पर देश विदेश के राजा महाराजा सम्मिलित हुए थे। नगर को सजाया गया, वाजे बजाये गये तथा विवाह विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया था। ऐसे शुभ अवसरों पर ब्राह्मण लोग मंत्रोच्चारण करते थे एवं सौभाग्यवती स्त्रियाँ मांगलीक गीत गाती थी। प्रद्युम्न के विवाह का वृत्तान्त पढ़िये :—

संख सवुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसारणा घाउ ।  
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥१२०॥  
विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।  
वहु कलियरु नयारि उछेलिउ, जन मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥१२१॥

(स) कवि और स्त्री समाज—

कवि ने प्रद्युम्न चरित में एक प्रसंग पर स्त्री समाज पर खूब आक्रमण किया है। तुलसीदासजी ने तो अपनी रामायण में स्त्री को 'ताड़न

का अधिकारी' कह कर ही सन्तोष कर लिया था, किन्तु सधार कवि उनसे भी ४ कदम आगे चलते हैं। स्त्री समाज की निन्दा करते हुये कवि कइता है कि वह असत्य बोलती है और असत्य कार्य करती है तथा अपने पति को छोड़ कर अन्य के साथ रमती है। कवि ने अपनी बात की पुष्टि के लिये कुछ ऐसे वदाहरण भी दिये हैं जिन अवसरों पर स्त्रियों ने पुरुषों को धोखा दिया था।

तिरिय चरितु निसरणउ भरिभाउ,

विलख वदन भउ हगवइराउ ।

अजियउ बोलइ अलियउ चलइ,

निउ पिउ छोइइ अवरु भोगवइ ॥२६६॥

तिरियहि साहस दूणो होइ,

तिरिय चरितु जिया फुलइ कोइ ।

नीची बुधि तिसवइ मनि रहइ,

उतिमु छोडि नीच संगइ ॥२६७॥

पयडी नीच देइ सो पाउ,

एसो तिवइ तरणउ सहाउ ॥२६८॥

२—सेना प्रयाण :—

१. सेना के अस्त्र शस्त्र—

राजाओं के पास नियमित सेना होती थी जो संकेत मात्र से युद्ध के लिये तैयार हो जाती थी। शिशुपाल, कालसंवर श्रीकृष्ण एवं रूपचंद्र की सेना युद्ध के लिये संकेत मिलते ही तैयार हो गयी थी तथा अपने २ शस्त्रों को संभाल लिया था। गज, अश्व एवं पदाती सेना होती थी। शस्त्रों में कौतु, तलवार, सेल, कटारी, छुरी, धनुष बाण आदि शस्त्र प्रयोग में लाये जाते थे। इन शस्त्रों के अतिरिक्त विद्यावल से भी युद्ध लड़ा जाता था।

२. विद्याओं के बल पर युद्ध करने की परम्परा—

प्रद्युम्नचरित में सभी अवसरों पर विद्याओं के बल पर युद्ध करवाये गये हैं। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण आदि चितने ही प्रकारों के बाणों का प्रयोग होना, प्रद्युम्न का कितनी ही विद्याओं में प्रवीण होना तथा उनके आचार-पर निदरथ, काल संवर एवं श्रीकृष्ण की सेनाओं को मूर्च्छित करके हरा देना; कनकमाला से तीन विद्याओं की प्राप्ति एवं उनके बल पर कालसंवर

को हाराना आदि घटनाएँ प्रद्युम्न की लोकोत्तर शक्ति का परिचय देती हैं कि वंस समय के युद्ध इस प्रकार की आश्चर्यकारी विद्याओं के द्वारा भी लड़े जाते थे।

कवि को अलौकिक विद्याओं पर खूब विश्वास था। प्रद्युम्न जहाँ भी गया वहीं उसे विद्याएँ प्राप्त हुईं। कवि ने जिन १६ विद्याओं के नाम गिनाये हैं वे सभी अलौकिक विद्याएँ हैं। यदि प्रद्युम्न को वे विद्याएँ प्राप्त नहीं होती तो वह कभी किसी युद्ध में नहीं जीत सकता था क्योंकि सिंहरथ, कालसंवर एवं श्रीकृष्ण सभी उससे बल पौरुष में बढ़ कर थे। इसमें कोई संन्देह नहीं कि उसकी प्रत्येक सफलता का कारण उसकी अलौकिक विद्याएँ थी।

### ३. नगर वर्णन—

प्रद्युम्नचरित में द्वारका का वर्णन किया गया है। यद्यपि वर्णन विस्तृत नहीं है किन्तु थोड़े से शब्दों में ही कवि ने नगर का काफी अच्छा वर्णन किया है। नगर में ऊँचे २ महल थे जिन पर विभिन्न प्रकार की पताकायें फहराती थीं। प्रद्युम्न जब नारद के साथ विमान द्वारा द्वारका पहुँचा तो नारद ने नगर के प्रमुख महलों का वर्णन करके उसे परिचित कराया था।

### ४. प्रकृति-वर्णन ( वृक्ष एवं पुष्पलताओं का वर्णन )

सघारु कवि को प्रकृति-वर्णन भी प्रिय था। सत्यभामा के बाग का वर्णन करते हुये उसमें २५ से भी अधिक वृक्षों, पुष्पों एवं लताओं का वर्णन किया है। इस प्रकार का वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन अपभ्रंश साहित्य में भी खूब हुआ है और उसी का अभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है। प्रद्युम्नचरित में जिन वृक्षों एवं पौधों का वर्णन किया गया है वह निम्न प्रकार है—

जाइ जुही पाडल कचनारु, बवलसिन्धि वेलु तिहि सारु ।

कू जउ महकइ अरु करणवीरु; रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुंडं टगर मंदार, सिंदूर, जहि वंधे महइ सरीर ।  
 दम्बरा मरुवा केलि अरांत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥  
 आम जंभीर सदाफल घरणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब तरणे ।  
 केला दाख विजउरे चारु, नारिग करुण खीप अपार ॥३४७॥  
 नीवू पिडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।  
 नारिकेर फोफल बहुफले, वेल कइथ घरणे आवले ॥३४८॥

रूपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के प्राचीन चरित काव्यों में प्रथुम्न चरित एक उत्तम रचना है और इसका हिन्दी साहित्य में भाषा और वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थान है। इसे ब्रज भाषा का आदि काव्य होने के कारण भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये आधार भूमि भी माना जा सकता है। ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी के अवलोकन से पता चलेगा कि कवि ने शब्दों के प्रयोग में कोई निश्चित लक्ष्य नहीं रखा किन्तु एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया है। इससे कवि की भाषा विषयक विद्वत्ता एवं तत्कालीन प्रचलित भाषा के विभिन्न प्रयोगों का भी पता चलता है। कवि ने कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो हमें हिन्दी के अनेकानेक शब्दकोशों में नहीं मिले हैं इसलिये इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी शब्दकोश में भी अभिवृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी भाषा के आदि कालिक काव्यों की संख्या में एक और की अभिवृद्धि ही नहीं होगी किन्तु विद्वानों को प्राचीन काव्यों की परम्परा जानने में भी सहायता मिलेगी। हिन्दी भाषा के अन्वेषण प्रिय विद्वानों को इस काव्य से एक दिशा निर्देश प्राप्त होगा और खोज के लिये अधिकाधिक प्रेरणा मिलेगी। प्राचीन हिन्दी साहित्य की अवतक पूरी खोज नहीं हुई है, नहीं कह सकते सघारु जैसे महान् कवियों की कितनी अमूल्य रचनाएँ ग्रंथ भण्डारों के गहनाघकार में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं और हिन्दी सेवकों को कह रही हैं कि यदि अब भी तुमने ध्यान नहीं दिया तो हम सदा के लिए नहाकाल के सुँह में विलीन हो जायेंगी।

ग्रन्थ का सम्पादन—

इस ग्रन्थ का सम्पादन कैसा हुआ है और उसमें किस सीमा तक सफलता मिली है इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। हमें इस बात का संतोष है कि हमसे इस ग्रन्थ का उद्धार हो सका और इस वहाने हम हिन्दी की यह सेवा पा सके। ग्रन्थ संपादन में मूल प्रति के अतिरिक्त तीनों प्रतियों के पाठ में यदि थोड़ा भी असाम्य ज्ञात हुआ तो उसे पाठ भेद में दे दिया गया है। यद्यपि मूल प्रति अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुन्दरता से लिपि की हुई है फिर भी कुछ पाठ अशुद्ध लिखे होने के कारण उनके स्थान पर अन्य प्रतियों के शुद्ध पाठ को ही देना अधिक उपयोगी समझा गया है। इसके अतिरिक्त मूलपाठ में कोई संशोधन अथवा संवर्द्धन नहीं किया गया है। शब्दानुक्रमणिका काफी विस्तृत होगई है किन्तु कवि द्वारा एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किये जाने के कारण उन सभी शब्दों को देना आवश्यक समझा गया, यही इसके विस्तृत होने का कारण है। हमें मूल ग्रन्थ का हिन्दी अर्थ लिखने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ा; क्योंकि प्रद्युम्नचरित के बहुत से शब्द तो ऐसे हैं जो हिन्दी कोशों में खोजने पर भी नहीं मिले; तो भी जहां तक हो सका है शब्दों का टीका-अर्थ देने का ही प्रयत्न किया गया है।

गच्छतः स्वलनं वपापि, भवत्येव प्रमादितः ।  
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

धन्यवाद समर्पण—

अन्त में हम क्षेत्र कमेटी एवं विशेषतः कमेटी के मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को क्षेत्र द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित कराकर प्राचीन हिन्दी-ग्रन्थों को प्रकाश में लाने में सहयोग दिया है। श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ एवं श्री सुगनचन्दजी जैन के हम विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने प्रद्युम्नचरित के पाठ भेदों, शब्दानुक्रमणिका एवं प्रूफ रीडिंग में हमें पूरा सहयोग दिया है। श्री भंवरलालजी पोल्याका जैनदर्शनाचार्य के

भी हम आभारी हैं जिनसे हमें ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी तैयार करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके अतिरिक्त डा० माताप्रसादजी गुप्त के भी हम बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे अनुरोध पर भूमिका लिखने एवं शब्दार्थ के निर्णय में भी सहायता दी है। श्री अजरचन्दजी नाइटा के प्रति भी हम आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने प्रद्युम्न चरित की प्रतियां उपलब्ध करने में अपेक्षित सहयोग दिया है। खण्डेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर कामां ( भरतपुर ) एवं वधीचन्दजी दि० जैन मन्दिर जयपुर के न्यत्रस्थापकों के भी हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने भण्डार की हस्तलिखित प्रतियां सम्पादनार्थ दी हैं।

चैनसुखदास

कस्तूरचन्द कासलीवाल

दिनांक १-१-६०

---

मद्युग्म चरित की मूल प्रति

धा उ न म स सि हे नः ॥ मार व वि णु म ति क वि नु न दो ॥ म म अ म म वि वृ म इ को ॥ मो म स  
 धरा म म र मु ती । ति न्दि क क वृ धि हो इ के न इ ती ॥ र म नु के मार द मार द कर ॥ ति म क उ अ नु न  
 के न न द ॥ डि ण च र ख म ह ज्ज णि गाय व णि । स मार द मार द अ ण रि णि म् अ उ द व ल्ख क म स वि  
 धार व रू वी षी का स मी प उ र ल नि क म् सु । द म व डी क न के ष णि टि ॥ क वि म अ र म र म इ य त ए  
 ॥ १ ॥ भे व व क्क य द म व ती णा । क र ह अ न्ना व णि वा ज्ज हि थो णा । आ रा म मा णि दे क्क म् इ म ती ।  
 उ णु क्क उ ण ण वे इ म र ख ती ॥ ५ ॥ ष ट्ठ म्मा व ती दे उ क र ति ॥ ज्ञा ता सु म्मी व के म्प री दे ॥ अ न्ना  
 इ रे दि णि डि णा म्मा ल्पा म्मा ण्ण दे वी न व इ स अ द्दा ॥ ५ ॥ डि ण म्मा स ण को वि ष न दे ॥ दा थ ल कु वि  
 दे उ भा दे षा न वि य इ उ रि उ द र अ म र णा । डि ण व उ वी म न उ ध रि से उ क र उ क वि नु न इ ॥  
 वी उ द र णा उ व वी क उ के ड र म र णा । डि ण व उ वी म न उ ध रि से उ क र उ क वि नु न इ ॥  
 प्प र ण उ ॥ ७ ॥ णि म् अ न्नि सु स ए त दि स य ठा अ णि न व उ व न्ने य उ म्म णि द्दु म्प उ  
 इ के म्प उ ण म् । क द्द प्प उ आ व म उ नि क्क म् सु ण । मु वि धु न व उ वी त ल्ख द स म्प उ । अ न्ना य उ  
 णा । उ ड म्प उ वा ष्ठ म्प उ अ क वि म लो अ न्नि सु । अ म्प र्ण ति म्मा ल्ख उ य ह्ठ प ह्ठ ना ॥ ९ ॥ उ अ म्प र  
 क्क म् सु क्क म्प व म्म डि न्ना मु य ण णा वी वारा । मु णि मु व तु न णि ना मि वा वी णा या सु धी क्क म्प उ दे वि

मथम पत्र



-----

# प्रद्युम्न चरित

स्तुति खण्ड

चौपई

सारद विंगु मति कवितु न होइ, सरू आखरू एवि बूझइ कोइ ।  
 सो सधार परामइ सरसुति, तिन्हि दाहुं बुधि होइ कतहुती ॥१॥  
 सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोउ लहइ ।  
 जिगावर मुखह जु रिगाय वाणि, सा सारद परावहु परियाणि ॥२॥  
 अठदल कमल सरोवरु वासु, कासमीरपुर लियो निकासु ।  
 हंस चढी कर लेखणि देइ, कवि सधार सरसइ पभरोइ ॥३॥  
 सेत वस्त्र पदमवतीण, करहं अलावणि वाजहि वीण ।  
 आगम जाणि देहु बहुमती, पुरगु दुइजे परावइ सरसुती ॥४॥

(१) १. सार (क) सार (ग) २. अखिर (क) अखर (ख) अखर (ग) ३. नवि (क) नउ (ख) कहइ संभु (ग) ४. बूझ (ख) = ५. जोइ सधारि जराणि सरसति (क) जो सधार परावइ सरसुती (ख) जउ सधार पनमइ सरसती (ग) ६. ननमइ तिह नइ बुधि न हरती (क) तिन्हि कहु बुद्धि होइ मति (ग)

(२) १. सह (क) २. कहइ (ख) ३. को (क) ताकउ (ग) ४. कोइ (क, ख) ५. मुखि सो निरचं जाणि (क) जउ मुख हति विद्या खणी (ग) ६. परावउ परमाणि (क) सारद पनव बहुविधिघरणी (ग)

(३) १. अठदल (क, ख, ग) २. कमल (ग) ३. मुखमंडरावासु (क) पुरलउनिवास (ख) पुरी लियो निवासु (ग) ४. हंसि चढी करि पुस्तकि लेइ (ग) (क) प्रति में तीसरा और चौथा पद्य निम्न प्रकार है—

जोइ सधारि परावउं परामेवि, सेत वस्त्र पदमावति देवि ॥३॥

करहिं कलां करि वीणा अति, आगम जाण देहु बहुमती ।

हंसासणि लेहइ बुख अति, दोइ कर जोइ रामउं सरसती ॥४॥

५. साधार (ग) सधार (ख)

(४) १. श्वेत (ख) २. पदमासण (ग) पदमावतीलीण ३. आगमुं (ख, ग) ४. विनउ (ग) ५. पुणि (ग) ६. बूझ (ग) ७. परामउ (ग) परावउं (ख) ८. चहु सरसुती (ग)

पदमावती दंड<sup>१</sup> कर लेइ, जालामुखी चकेसरी देइ<sup>३</sup> ।  
 अंबमाइ रोहिणि जो सारू, सासण देवी नवइ सघारू ॥५॥  
 जिए सासण जो विषन हरेइ, हाथ लकुटि लै उभौ होइ ।  
 भवियहु दुरिउ हरइ असरालु, अगिवाणीउ पणउ खिन्नपालु ॥६॥  
 चउवीसउ स्वामी दुह हरण, चउवीसउ मुक्के जर मरण ।  
 जिए चउवीस नमउ धरि भाउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥  
 रिपभु अजितु संभउ तहि भयउ, अभिनंदरगु चउत्थउ वर्त्नयउ ।  
 सुमति पदमुप्रभु अवर सुपासु, चंदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥  
 सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु अयेसु ग्यारह जयउ ।  
 वालुपूजु अर विमलु अनंतु, धम्मु संति सोलहउं पहूपहूंत ॥९॥

(५) १. भुरि करि लेइ (क) दंडु (ख, ग) २. सकेसरी (ग) चक्केसरि (क)  
 ३. देवि (क) ४. अंबाइ रोहिणि जे सार (क) अंबउ हीनउ जंडि जी सार (ग)  
 ५. सा सा प्रणमो नोइ सघार (क) सासण देवि कयइ साघार (ख)

(६) १. जिन शासन (क) सासण (ग) २. रहाइ (ग) ३. हाथि लकुटि सो  
 उनउ होइ (क) हाथ लकडि टाडा लिउ साइ (ग) ४. भवियण (क) ५. डुरी (क) डुरतु  
 (ग) ६. असराल (क) ७. खिन्नपाल (क) खिन्नपाल (ख)

(७) १. चउवीसइ (क) २. तामी (क) ३. जे चउवीसइ मुक्का (क) चउवीसइ  
 मुक्के ४. चउवीस नर नमो धरि भाव (क) जिए चउवीस नमउ धरि भाउ ५. करो  
 (क) ६. जे (क)

नोट—७ वां पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(८) १. रिपभु अजित संभव तह भयउ (क) २. तहि ययउ (क) हरि बुयउ  
 (ख) ३. पदम (क, ख) ४. यहु (ख) ५. पासु (ख) ६. चन्द्रप्रभु (क) चंदप्पहु (ख)  
 ७. आठमउ सुभासु (क) अट्टमु सतिभासु (ख)

(९) १. सुविधि (क) सुविधि (ख) २. शीतल तह दसमउ भयउ (क) सु  
 नयउ शीतलु दसमउ (ख) ३. जिए श्रीअंगड ग्यारमो धयउ (क) जिए जेयहु  
 ग्यारहमउ जयउ ४. धम्मं संति सोलहउं जिएउ (क) धम्मु संति सोलहउं निरतु (ख)

कुंथु<sup>१</sup> सतारह<sup>२</sup> अर सु अत्थार, मल्लिनाथु<sup>३</sup> एगुणसी वार ।  
 मुणिसुव्रतु<sup>४</sup> नमि नेमि वावीस, पासु<sup>५</sup> वीरु महु देहि असीस ॥१०॥  
 सरस कथा रसु<sup>१</sup> उपजइ घणउ, निसुणाहु<sup>३</sup> चरितु<sup>४</sup> पञ्जसह तरणउ ।  
 संवतु<sup>५</sup> चौदहसै हुई गए, उपर अधिक<sup>६</sup> ग्यारह<sup>७</sup> भए ॥  
 भादव दिन<sup>८</sup> पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र<sup>९</sup> सनीश्चरवारु ॥११॥

वस्तु बंध छन्द—

राविवि<sup>१</sup> जिणवरु<sup>२</sup> सुट्ट<sup>३</sup> सुपवित्तु<sup>४</sup> ।  
 नेमिसरु<sup>५</sup> गुण गिलउ सामि<sup>६</sup> वपु सिवदेवि<sup>७</sup> नंदगु ।  
 चउतीसह<sup>८</sup> अइसइ सहिउ<sup>९</sup> कम्मवारण<sup>१०</sup> घण मान मद्दणु ॥  
 हरिवंसर<sup>१०</sup> रुहइ मणि<sup>१०</sup> तिजयणाहु<sup>१०</sup> भय सासु ।  
 समयमुहं<sup>१२</sup> पंचज<sup>१२</sup> राणु<sup>१२</sup> केवलणाण<sup>१२</sup> पयासु ॥१२॥

(१०) १. कुंथ सतारह अर अठार (क) कुंथु अतारह अर अठार (ख)  
 २. मल्लिनाथ उगणीस कुमार (क) मल्लिनाहु उगणीसमउ कुमार (ख) ३. मुणिसुव्वउ  
 (क, ख) ४. निमि (ख) ५. पास वीर ए इम चौवीस (ख) पासु वीरु अन्तिम चौवीस ।

(११) १. रस (क) २. उपइ (ख) ३. निसुणा (क) ४. पञ्जउवन (क) पञ्जह  
 (ख) ५. चउदसइ इग्यार (क) चउदहसइइसु (ख) ६. अधिकइ (ख) ७. भईए ग्यार  
 (क) संवत पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अर तह भया (ग) ८. भादवसु दिनम  
 बीजे सार (क) भादव सुदी पंचमी सो सार (ख) भादव वदि पंचमि तिथि सार (ग)  
 ९. नक्षत्र (क) नखिउ (ख) १०. सनीश्चरवार (क)

(१२) १. नमिय (क) नविवि (ख) २. जिणवर (क) ३. सुट्टु (ख) सतु (ग)  
 ४. सपवित्तु (क) ५. सोमवथणु (क) सामवणु (ख) स्यामवणु (ग) ६. एवि (ख)  
 ७. वावीसमउ जिणसरु (क) वावीसमु दयसहिउ (ख) ८. मइ मोह खंजणु (क)  
 मंयमोहखंडणु (ख) ९. हरिवंसह तमु कमल रवि (क) हरिवंसह तह कमल रवि (ख)  
 १०. तिजइ णाहु पयासु (क) तिजय नाहु हय पासु (ख) ११. चउपइ संघह तमु हरइ  
 (क) चउविह संघह तमु हरइ (ख) १२. केवल ज्ञान प्रकासि (क) केवलनाण पयासु  
 (ख) केवलज्ञान प्रगास (ग) • मूलपाठ “चउवीसहं हय दय सहिउ”

पठमद्य पंच परम गुरू नवराी, वीय जिणवर पय सरण  
 गुरू राीगांथु नउं षरि भाउ, करउं कवितु जउ होउ पसाउ ॥१३॥  
 द्वारिका नगरी वर्णन  
 जंबूदेशु सुदंसणु मेरू, लवणवुहि वेढियउ सु फेरू ।  
 भरहखेत दाहिएण दिसि ग्रहइ, सोरठ देसु माहि तिही वसइ ॥१४॥  
 वसइ गाम्ब'ते नयर समान, नयर विसेषइ देव समाण ।  
 यह मंदिर धवल हर उतंग, कणइ कलस भलकंति सुचंग ॥१५॥

(१) पणरवि पणमो जिनवर वाणि, जामइ सुध वच्च गुण खाणि ।  
 करउ कवित जे करउ पसाउ, मोहिय जन तखा भनि भाइ (क)  
 पठम पंच परमेहि णवेवि, वीरणाहु भत्तिय पणवेवि ।  
 जातु तित्थि मइ जिणवर धम्म, पाविनि सहलु कियउ नर जम्मु । (ख)  
 पुणु पुणु पणविणि जिणवर वाणि जामइ सहस्रच्छ मणि खाणि ।  
 करइ कवितु जइ करइ पसाउ । महु पजुन करणे अणुराउ ॥  
 नोट—ग प्रति में प्रथम २ पंक्ति पीछे निम्न पाठ है—

दया धम्मं दिनु ख्यणि, करइ त्तुति चउवीस वंदनु ।  
 संकम भारु बहुविधि सहिउ, केवल ज्ञान प्रगास ॥  
 मुकत गउ तिई कम्मकरि, बुहियण वंदहु ताणु ॥

पहिलइ माइ पिता गुरू सरण, वीतराग जिणवर पाइ सरण ।  
 गुरू निरणु नवउ षरि भाउ, हुइ इक चित्ति मुणु करी पसाउ ॥

(१४) २. वीप (क) दोउ (ख) द्वीप (ग) १. सुदंसण (क, ख, ग) ३. लवणवेवि (क, ग) ४. वेढियउ चहु फेर (क) वेढिउ चउ फेर (ख) वेढयो चउ फेरि (ग) ५. भरत (क, ग) ६. येत्र (क, ग) खेत्तु (ख) ७. तिह दाहिएण दिसइ (क) तहो दाहिएण दिसइ (ख) दाहिएणो दिसा (ग) ८. देसु (ख) देस (ग) ९. माणि सो वसइ (क) माणि तहो वसइ (ख) माहि तिसु वसा (ग)

(१५) १. वसहि (ख, ग) २. गाम (क, ख) गांव (ग) ३. तिह नगर समान (क) ते नयर समाण (ख) तहि नगर समाण (ग) ४. नयर सेवही (क) नयर विसेषहि (ख) नगर विसेषहि (ग) ५. विमाणु (क) विमाण (ख, ग) ६. मठ (क, ख) गठ (ग)

सायर माहि<sup>१</sup> द्वारिकापुरी, धणय<sup>२</sup> जख जो रचि करि घरी ॥  
 वारह<sup>३</sup> जोरण कै विस्तार, कंचण<sup>४</sup> कलस ति दीसइ वार ॥१६॥  
 छाए<sup>१</sup> चउवारे बहुभंति, सुद्ध<sup>२</sup> फटिकं दीसह ससि<sup>३</sup> कंति ।  
 मारंज<sup>३</sup> मरिण जाणौ जडे किमाड, सोहहि<sup>४</sup> मोती वंदनमाल ॥१७॥  
 इकु<sup>१</sup> सोवन धवलहर<sup>२</sup> अवास, मढ<sup>३</sup> मंदिर देवल चउपास ।  
 चौरासी<sup>४</sup> चौहटे अपार, वहुत<sup>५</sup> भाति दीसह सुविचार ॥१८॥  
 चहु<sup>१</sup> दिस राइर<sup>२</sup> गहिर गंभीर, चहु<sup>३</sup> दिस लहरि भुकोलइ नीर ।  
 सो<sup>४</sup> वारवइ पयण जाणिए, कोडिध्वज<sup>५</sup> निवसहिं वाणिये ॥१९॥

७. धवल हर उत्तुंग (ख) देवल उत्तुंग (ग) ८. कणइ कलस भलकंति सुचंग  
 (क) काणय कलस धय मंडिय तुंग (ख) विविह भंति दीसहि अति चंग (ग)

(१६) १. महिभ (क) माहि सो (ख) २. धणय जखि सु रचिकरि घरी (क)  
 धणय जख सो रचि करि घरी (ख) धनयर जख वहुत विधि करी (ग) ३. जोयण  
 कइ विस्तारि (क) जोयण कै विचारि (ख) जोजन कइ विस्तारि (ग) ४. शाहति  
 भलकहि वारि (क) सीहत दीसहि वारि (ख) कलसज दीपहि वार (ग)

(१७) १. छाजे (क, ग) छजे (ख) २. ससि उदी करंति (ग) ३. मरकत  
 मरिण वहु जडे किवाड़ (क) मरगज मरिण वहु जड़िय किवाड़ (ख) मरगज मरिणक  
 जडे किवाड़ (ग) ४. मोसिय (ख) ५. वन्दरवाल (क, ख, ग)

(१८) १. एक सुवन (क) इक सोवन (ख) इक सोवन (ग) २. आवास  
 (क, ग) ३. देवल (क, ग) ४. चउरासी (क, ख, ग) ५. चउहटे (क, ख, ग) ६. वहुत भंति  
 (क) विविह भंति (ग) ७. सविसार (क)

(१९) १. चउ (ख) २. वित्तु (ख) विसि (ग) ३. सायर (क) सायर (ख)  
 भाइर (ग) ४. गहिरू (ख) गहर (ग) ५. गंभीर (ख, ग) ६. पवन (ग) ७. नीर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पंक्ति और है—

चहुं विसि नाना वरुं सिगार, चहुं विसि हाट अनुपम अपार ।

८. चौवारे चौहटे जाणिया (क) सा द्वारवइ पयण जाणियइ (ख) धन धान सहित  
 जाणिया (ग) ९. कोटीधुज (क) कोडीधुज (ख) कोडिधजी (ग) १०. वसहि (ग)

धर्म<sup>१</sup> नेम को जाण<sup>२</sup>हि गम्बरिण<sup>३</sup>, अरु<sup>४</sup> तहि वसइ अट्टारह<sup>५</sup> पवणि,  
 ब्राह्मण<sup>६</sup> खत्री वसहि<sup>७</sup> तियवर, वैस<sup>१०</sup> सुद<sup>११</sup> तहि निमसहि<sup>१२</sup> अवर ।  
 कुली<sup>१३</sup> छत्तीस त सुअइ<sup>१४</sup> ठाइ, तिहि<sup>१५</sup> पुरि सामिड जादउ राउ ॥२०॥  
 दल दल साहण<sup>१६</sup> गरुत अनंत, करइ<sup>१७</sup> गर्ज<sup>१८</sup> भेदनी विलसंतु ।  
 तीनखंड चक्केसरो<sup>१९</sup> राउ, अरियणदल भानइ<sup>२०</sup> भरिवाउ ॥ २१॥  
 तिहि वलिभद्र सहोदर<sup>२१</sup> अवह, तिहि<sup>२२</sup> सम पवरीप दीसह<sup>२३</sup> अवह ।  
 कोडि छपन जादउ अनिवार, करहि<sup>२४</sup> राज ते तव परिवार ॥२२॥  
 सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल सइन न सुभइ<sup>२५</sup> ठाइ ।  
 अगर सुगंध वास परिमलइ, कनक<sup>२६</sup> दंड तिर चामरि डलइ ॥२३॥  
 पंच सवदु तहि वाजइ<sup>२७</sup> घरौ, बहुत भाति<sup>२८</sup> पावल पेखरौ ।  
 भरिहि<sup>२९</sup> भाइ नाचरिण<sup>३०</sup> पउ वरइ, ताल विनोद कला अगुसरइ ॥२४॥

(२०) १. धम्म (ख) २. जाणइ (क) ३. गमरिण (क), गयणि (ग) ४. अवर (ग) अर (क) ५. अवार (ख) छत्तीसइ (ग) ६. वांभण (ख,ग) ७. वेस (क) ८. अपार (ग) ९. वसहि (क) वइस (ख) विस (ग) १०. सुद (क) ११. को जाणइ सार (ग) १२. कुलिय (ख) (१३) छत्तीसइ निवसइ ठाइ (क) छत्तीसइ सुअइठाइ (ख) छत्तीस इन सुअइ ठाइ (ग) १४. दिन पुरि निवसिइ जादन राउ

(२१) १. वाहण (ख) तह साहण (ग) २. गिरात न अन्त (क) गणिव न ग्रानु (ख) संयुत (ग) ३. राज (क ख ग) ४. भेइण (ख) ५. वहुत (ग) ६. भंडइ (ग) ७. भडिवाउ (क,ख,ग)

(२२) १. वलिभद्र वीरु सहाई तात (ग) २. सहोदर (ख) ३. जेय (क) जेदु (ख) ४. नीलंबर सूक्ष्म उक्किदु (क) नीलंबर हनु सूक्ष्म उक्किदु (ख) रणि अजीत सो तव विनासु (ग) ५. वर वीर (क) (यह पंक्ति ग प्रति में नहीं है ।)

(२३) १. जिह सामंजन सुअइ ठाइ (क) जिहि सामंत चक्रवइ राउ (ख) चउरंग दल नाहिन सुअइ ठाइ (ग) २. गंध वास परिमल मह नहइ (क) सबहि भवर परिमलइ (ख) ३. कणइ (क) कनकति (ग)

(२४) १. पाय पेखरणा (क) परवल पेखरौ (ख) भरहि सिभाउ अधिदु पेखरणा (ग) २. नाचहि (क) ३. बहुभाति (क) (तसिरा चरण ग प्रति में नहीं है) ४. गुणसंति (क) अजारहि (ग)

## नारद ऋषि का आगमन

छत्री हाथ कमंडल धरहि, मूंडे मूड चूटी फरहरइ ।  
 चढिउ विमाण मन विहसंतु, नानारिषि तहां आइ पहुंचत ॥२५॥  
 नमस्कार करि सारंग-पाणि, कराय सिंघासरा दीनउ आणि ।  
 रहस भाइ पूछइ नारायणु, कहा तुम्हारउ भो आगमणु ॥२६॥  
 हमि आकासत करि उपण, मंत लोग वंदे जिणभूवण ।  
 द्वारिका दीठी उपनउ भाउ, तउ तू भेटिउ जादउराउ ॥२७॥  
 तउ नारायण विनवइ सेव, भलउ भयउ जो आयउ देव ।  
 नानारिषि तुम कीयउ पसाउ, आज पवित्तु भयो इह ठाउ ॥२८॥  
 निसुणि वयण रिषि मन विहसाइ, कुसल वात पूछि सतभाइ ।  
 दइ असीस सो ठाढउ भयउ, फुनि नारद रणवासह गयउ ॥२९॥  
 जहि सिंगर सतभामा करइ, नयण रेख कजल संचरइ ।  
 तिलकु लिलाट ठवइ ससिभाइ, षण नानारिषि गो तिहि ठाइ ॥३०॥

(२५) १. करहइ (क) करहि (ग) २. चोटी (ख) उचले अणुसरइ (क)  
 ४. नारद (क) नारदु (ख)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

काल रुषि कलि देखी जहा, राउ नरायणु वड्ढा तिहा ।

(इसरा तथा तीसरा चरण नहीं है)

(२६) १. अर्थ (क) २. दीघउ (क) ३. कुसल (ग) ४. महमहणु (ग) ५. भयो  
 (क) भउ (ख) भईया (ग)

(२७) १. भए उत पवणु (क) ते कियउ आगमणु (ख) ते कीया गमणु (ख)  
 २. मातलोकि (क,ख,ग) ३. देखि द्वारिका (ग) ४. भेटियउ वलिभद्र यादव राउ (क)  
 वलिभद्र भेटयउ नारउ राउ (ख) तउ तुम्ह उलटे जादमराउ (ग)

(२८) प्रथम दो चरण ग प्रति में नहीं है ।

(२९) १. 'रहसिभाइ पूछइ हरिराउ, तउ नाना रिषि उपना भाउ' प्रथम दो  
 चरण के स्थान पर ग प्रति में है । २. तव (ग)

(३०) १. रेह (ख ग) २. फालु (ख) ३. सचरइ (ख)



नारद हाथ कमंडल धरइ, काल रूप कंलि देखत फिरइ ।  
 सो सतभामा पाछइ ठियउ, दर्पण माभ विरूप देखियउ ॥३१॥  
 विपरित रूप रिषि दिठउ जाम, मन विसमादी सुंदरि ताम ।  
 देखि कूडीया कीयउ कुतालु, सांति करत आयउ वेतालु ॥३२॥

### नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

वडी वार रिषि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न वरिणसण कहिउ ।  
 उपनो कोपु न सक्यउ सहारि, तउ नानारिषि चलयोउ पचारि ॥३३॥  
 विणहुं तूर जु नाचण चलइ, ताकहुं तूर आणि जउ मिलइ ।  
 इक स्याली अरू वीछी खाइ, इकु नारदु अरू चलीउ रिसाइ ॥३४॥  
 नानारिषि रण चलयो रिसाइ, श्रींगी पर्वत वडठो जाइ ।  
 मनमा वंडठउ चितइ सोइ, कइसइ मान भंग या होइ ॥३५॥

नोट—(ग) प्रति में प्रथम दो चरण निम्न प्रकार हैं—

सो नानारिषि आया तहाँ, सत्यभामा का मन्दिर जहाँ

४. निलाउ (ग) ५. तिह ठाइ (ग) ६. पहुतो (क ग) गउ (ग)

(३१) १. करइ (ग) २. आगे (क) ३. ठयउ (क ख) गया (ग) ४. माहि  
(क ख ग) ५. रूप (क ग) ६. देखिया (ग)

(३२) १. विप्रत (ख) विपरीतं (क) विप्र (ग) २. कूडण (क) ३. संति (कखग)

(३३) १. वेंर (क) २. न बेणण दियो (क) न वइसण कहिउ (ख) न  
वइसण चया (ग) ३. रोप (ग) ४. सक्यो (क) सकया (ग) सकिउ (ख)

(३४) १. बिना (क) २. कहइ (क) ३. तिन्हइ तूर जब अइवि मिलइ (क)  
ताकहुं तूर आइ जहि मिलइ (ख) ४. वानर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

बाहु तूरि जो ताचण जुलिउ, तिसहि तूरप आवतउ मिलउ (ग)

(३५) १. सींगी (क ख ग) २. माहि (ख) ३. चितवइ (क ख ग) ४. एह  
(क) इहि (ख) मानभंग किउ इसका होइ (ग)

ताम चित्तइत वइ मुनिराइ

कोवानल पजलइ सचभामु अवमान खंडउ ।

कहि काहुस्यउ हहडउ अहव सिला तत्तपि चंपि छंडउ ॥

तउ पछिताउ हरि करइ मन तह एम्ब विचारि ।

इह पह रूप जु आगली सो परणाउ गारि ॥ ३६॥  
चौपई

गाउ गाउ तिहि फिरे असेसु, नयर सयलु फिरि दीठे देस ।

सउजु दहोतरु खग वइ पुरी, स नारद क्षण इक फिरि ॥ ३७॥

नारद का कुंडलपुरी में आगमन

फिरत देस मन चितइ सोइ, कुवरि सरूप न देखइ कोइ ।

फुरिण नानारिषि आयो तहां, कुंडलपुरि विजाहर जहां ॥ ३८॥

भीमुराउ आहि तिस तणउ, धरम नेम जाणइ ते घणउ ।

अतिसरूप बहु लक्षण सारु, वेटा वेटी रूप कुम्वारु ॥ ३९॥

दीठि पसारि कहइ मुनि जाइ, इहि उणहारि कुम्वरि जो होइ ।

विहि पासाइ जइ घटइ संजोगु तउनि जु होइ नरायणु जोगु ॥ ४०॥

(३६) १. चित्तवइ (ग) २. मनहि (ख) मनहि फर भाउ (ग) ३. कोहानलु (ख) कोपानल (क) कोपि होइ (ग) ४. परजलइ (क) पञ्जलइ (ख) पञ्जलिउ (ग) ५. कहइ तथा पए हणउ (क) कहि कहइ हीया हरउ (ग) ६. तलि एह चंपउ (क) तालि चांप छंडउ (ख) ७. पछितावो (क) पछिताउ (ख) पछितावा (ग) ८. महि (क ख ग) ९. तहि (ख) इस ते (ग) एह थइ (क)

(३७) १. गाम गाम (क ख ग) २. सब जगु होता गावांपुरि (ग) ३. तिवि नारद रिषि खिरिण महि फिरी (क) ते सब नारदि खिखु इकु फिरि (ख ग)

(३८) १. कुमरी (क ख) २. फिरि (ख)

(३९) १. भीषमु (क ख ग) २. आयि (ग) ३. तिहि (ख) ४. बहु (क) सो (ख) ५. वेटा. रूपचंद्रु सुकुमारु (ख) वेटा दीक्षा रूपि अपारु (ग)

(४०) १. दृष्टि पसारि (क ग) २. सोइ (क ख ग) ३. वणइ (क) जुडइ (ग)

मन मा इग नारद चित्तवद्, दइ असीस रगावासह गयउ ।  
दीठी सुरसुंदरि तंक्षिणी, अरु तिहि छोलि कुम्बरि रकमिणी ॥४१॥  
नारद से र्कमिणी का सान्नात्कार

अति सरूप बहु लक्खणवंत, चन्द्रवयणि ससि उदउ करंत ।  
हंसगमिणि मनु सोहइ सोइ, तिहिं समु तिरिय न पूजइ कोइ ॥४२॥  
नारदु आवत जवु देखियउ, नमस्कार सुरसुंदरि कीयउ ।  
देखि रकमिणी वोलइ सोइ, पाटघरणि नारायणि होइ ॥४३॥  
भणइ सहोदरि भीषमु तरणी, सेसपाल दीनी रकमिणी ।  
इहि वर नयरी बहुत उछाहू, घरी लग्न ठयउ विवाहु ॥४४॥  
सुरश्रुंदरि वोलइ सतभाउ, नाहिन वोल तिहारउ ठाउ ।  
जो अरिराउ मानषइ कालु, सवुपरिमह आयो सुसपालु ॥४५॥

(४१) १. महि (क ख ग) २. अनतइ छोडि कुमरी रकमिणि (क) अरु तिहि छोलि कुमरि रकमिणि (ख) आयत वोलि तब रकमिणि (ग)

(४२) १. चन्द्रवदनि सति सोह करंति (क) चन्द्रवदना नयणभलकंति २. मोहइ (क ख ग) ३. तिहि सरि तिरिय न पूजइ कोइ (ख)

(४३) १. पेक्षिया (ग) २. कियो (क) किया (ग) ३. कामिणी (ग) ४. बोले (ग) ५. पटरणी (क) पटवरणी (ग)

(४४) १. सहोपरि (ख) सोइरि (ग) २. भणी (क) ३. सिसुपाल (क) सिसपाल (ख) सीसपालि (ग) यह मांगी सिसपालह जणी (ख) प्रति में यह पाठ है ४. दीयी (क) ५. लगन न दीठ वाह (क) ६. वरी (क ख) धन्य (ग) ७. लगनु (क ख ग) ८. थापठ (क) हइ ठयउ (ख) हो ज्यो (ग)

(४५) १. नानारिय तब वोल पसाठ (क) नाही इन वोलह का ठाउ (ख) नही इय वोलण का ठाउ (ग) २. मनावं (ख) जे सिरि राउ मनहि खइ कालु (ग) ३. तय (ख) गिद (ग) ४. परिगह (ख) पुरगिह (ग) ५. आवं (ख) आया (ग)

नोट—तीनरा व चौथा चरण (क) प्रति में नहीं है !

निसुगि<sup>१</sup> वयण<sup>२</sup> नारदरिषि<sup>३</sup> चवइ<sup>४</sup>, तिनि खंड<sup>५</sup> मह जो चकवइ ।  
 छपन कोडि जादउ<sup>६</sup> मुहवंतु<sup>७</sup>, अइसइ छोडि विवाहहि अंनु ॥४६॥  
 पूर्व रचित न भेटइ कोइ, जिहि कीहु रची विवाहइ सोइ ।  
 घालहु छोडि वात आपणी, नारायण परणइ रुकिमिणी ॥४७॥  
 तउ सुरसुंदरि मनमा रली, मुगिावर वात कहि सो मिली ।  
 नारद निसुगि कहउ सतिभाउ, कहहु जुगति किमहोइ विवाहु ॥४८॥  
 रिषि जंपइ तुम अइसउ करहु, पूजा करण देहुरइ चलहु ।  
 नंदरावण की करहु सहेउ, तिहि ठा आगि कराउ भेट ॥४९॥  
 तव जंपइ रूपिगि सुरतारि, को पहिचाणइ कन्ह मुरारि ।  
 तउ नारदुरिषि कहइ सुजागु, तउ तुहि कहइ ताहि सहनागु ॥५०॥

(४६) १. वचन (ख) २. रिषि नारदु (ख) नाना रिद्रि (ग) ३. कहइ (ख)  
 ४. जादव (क) जादो (ख) ५. महमंत (क) मुहकंतु (ख) ६. तेसम (क) अइसउ  
 ७. अंत (क)

नोट—(ग) प्रति में ३-४ चरण में निम्न पाठ है—

छपन कोडि माहि जिसकी आण, अइसा पुरुपु न अउर सयाण ।

२. मूल प्रति में “करउ कवित जउ बइ” दूसरे श्रीरतीसरे चरणके ये शब्द श्रीर हैं ।

(४७) १. लिखतु (क ग) २. कि झूटउ होइ (ख) ३. जेह कउ (क) जिह  
 कहु (ख) जिस कहु (ग) ४. घडी (क) ५. बाल्लभ (क) छोडउ (ग) ६. सहल  
 आपणी (ग) ७. व्याहइ (क)

(४८) १. तव (ग) २. त्वंदरि (क) ३. माहि (क ग) मह (ख) ४. सा  
 भिली (क) तउ भजी (ग) ५. नानारिषि तुम्हि तांचो कहाउ (ग)

(४९) १. एसी (क) ऐसा (ग) २. पूचा कारण (ग) ३. ठाउ (क)  
 डाइ (ख) ट्वाइ (ग)

(५०) १. तउ (क) ती (ख) इम (ग) २. जंवंड (ग) योलइसा (ग)  
 ३. रुफमिगि (क ख ग) ४. गारि (ख) सुनारि (ग) ५. पिछाणउ (क) पिछाणइ (ग)

नोट—२ रा चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

६. नानारिषि (ग) ७. हो तुम्ह (क) ही तुहि (ग) तउस्यउ (ग) ८. कहउ  
 (क ग) ९. तास (ग) १०. सुहनाण (क) सहनाण (ख) सहनाण (ग)

संख चक्र गजापहण जासु, अरु वलिभद्र सहोदर तामु ।  
 सात ताल जो वाणनि हणइ, सो नारायण नारद भणइ ॥५१॥  
 आपी ताहि वज्र मुंदड़ी, सोहइ रतन पदारथ जड़ी ।  
 कोमलि हाथ करइ चकचूरु, सो नारायणु गुण परिपूनु ॥५२॥  
 नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन  
 खेडो वात करि नारदु गयउ, पटु लिखाइ हपीणि को लियउ ।  
 चहि विमारा मुनि आयउ तहा, सभा नारायणु वयठउ तहां ॥५३॥  
 पुणु पुडु छोड़ि दिखालिउ जाम, मन अकुलाणउ नरवइ ताम ।  
 काम वाण तसु हयउ सरीर, भउ विहलंधण जाउउ वीर ॥५४॥  
 कीयह आद्धर की वणदेइ, कै मोहणी तिलोत्तम कोइ ।  
 की विजाहरि रूप सुतारि, काके रूप लिखो यह नारि ॥५५॥

(५१) १. गजापहिरण (क) गज पहिरण (ख) गज पहरण (ग) २. जो वाणइ (ग) जो वाणहि (ख) इकवाणहि (ग)

(५२) १. आपी तामु (क) आफियहि (ख) आपीताह (ग) २. तोमलि (ख) ३. चकचूरु (ख ग) ४. जनपूर (क) संपूनु (ख) परंपु (ग)

(५३) १. खरी (क ख ग) २. पट (क) पडहु (ख) पाटु (ग) ३. हकिमणी (क) तामु (ग) ४. चहि (क ख ग) ५. रिमि (क) सो (ग) ६. आया (ख) पहुता (ग) ७. वेणो (क) वेटु (ख) वइठा (ग)

(५४) १. पुणि (क) फणि (ग) २. पट (क) पडु (ख) पटु (ग) ३. खोति (ख ग) ४. दिखालिय (क) दिखालउ (ख) दिखामा (ग) ५. अकुलानो (क) अकुलाणो (ख) अकुलाणि (ग) ६. नरव (ख) सुन्दर (ग) ७. हुआ (ग) ८. भयउ (क) भय (ग) ९. विहलंधल (क) विहलंधलु (ख) विहलंधलि (ग)

(५५) १. कइ (क) कोइह (ख) केइ (ग) २. अपछरा (क ग) अछव (ख) ३. वणदेवि (क ख) वणदेव (ग) ४. तिलोत्तिम (ख) कि लोचन (ग) ५. एह (क) केव (ख) एव (ग) ६. विज्जहारि (क) विज्जहारि (ख) विद्यावर (ग) ७. संसारि (ग) ८. काकइ (क) काक (ख) कवण (ग) कवणतिया किसही उरणहारि ग प्रति का अंतिम चरण

नानारिषि<sup>१</sup> वोल्इ सतिभाउ, आथि<sup>१</sup> नयरू कु<sup>१</sup>डलपुर ठाउ ।  
 भीषमुराउ<sup>२</sup> दीठ तंषीणी, रूपिणी<sup>३</sup> कुवरि<sup>४</sup> आहि तसु<sup>५</sup> तणी ॥५६॥  
 सोमइ<sup>१</sup> तो कहु<sup>२</sup> मागी देव, परणउ<sup>३</sup> जाइ म<sup>४</sup> लावहु<sup>५</sup> खेड ।  
 मयण<sup>१</sup> कामदेहुरे सहेट, तिहि<sup>२</sup> ठा आणि<sup>३</sup> कराउ भेट ॥५७॥

श्रीकृष्ण और हलधर का कुंडलपुर के लिये प्रस्थान

तउ<sup>१</sup> तूठाउ<sup>२</sup> महमहणुरि<sup>३</sup>द्रु, मन<sup>४</sup> में विहसि<sup>५</sup> कीयउ<sup>६</sup> आणन्दु ।  
 रथ<sup>१</sup> साजिउ<sup>२</sup> सारथि<sup>३</sup> वयसारि, गोहिण<sup>४</sup> हलहर<sup>५</sup> लियो<sup>६</sup> हकारि ॥५८॥  
 तउ<sup>१</sup> सारथि<sup>२</sup> षण<sup>३</sup> रथ<sup>४</sup> साजियउ, पवण<sup>५</sup> वेग<sup>६</sup> कु<sup>७</sup>डलपुर गयउ ।  
 वण<sup>१</sup> उद्यान<sup>२</sup> देहरउ<sup>३</sup> जहां, हलहरू<sup>४</sup> कान्हु<sup>५</sup> पहुते<sup>६</sup> तहां ॥५९॥  
 ठयो<sup>१</sup> मंतु<sup>२</sup> नहु<sup>३</sup> लाइ<sup>४</sup> वार, पठए<sup>५</sup> दूत<sup>६</sup> जणाइ<sup>७</sup> सार ।  
 कहि<sup>१</sup> जाइ<sup>२</sup> तिहि<sup>३</sup> सारउ<sup>४</sup> वयणु, नंदणवणु<sup>५</sup> आयो<sup>६</sup> महमहणु ॥६०॥  
 निसुणि<sup>१</sup> वयण<sup>२</sup> रूपिणि<sup>३</sup> विहसेइ, मोती<sup>४</sup> माणिक<sup>५</sup> थालु<sup>६</sup> भरेइ ।  
 गोहिण<sup>१</sup> मिली<sup>२</sup> वहुत<sup>३</sup> सहिलडी, पूजा<sup>४</sup> करण<sup>५</sup> देहुरे<sup>६</sup> चली ॥६१॥

(५६) १. अतिय नयर (क) आथ नयर (ख) अथि नयर (ग) २. दिहुउ (क) विहु (ख) अथि (ग) ३. तिहतिणी (क) ४. तिले (क)

नो — तिसुकी कुवरि नाम रुविमणी (ग) प्रति का अंतिम चरण ।

(५७) १. स्वामी (ग) २. तुम्ह (ग) ३. न लावहु (क) म लावहि (ख) करहु सत (ग) मह देहुरे इस करी सहेट, तहां करावउ तुम्ह कहु भेट ॥

(ग) प्रति के अंतिम दो चरण !

(५८) १. तूठउ (क ख) ऊठयो २. महमहणनरिद्रु (क) मह महणुरारिद्रु (ख ग) ३. महि (क ख ग) ४. कीयो (क) कीया (ग) ५. आनन्द (क ग) आनंदु (ख) ६. साजिउ (क) सजोय (ग) ७. वंसारि (क ख) चइसालि (ग) ८. सुर तेतीस लिये संभालि (ग)

(५९) १. तव सारथि सरत्य मेलिया (ग) २. बलभद्र (ग) ३. कन्ह (कखग)

(६०) १. उहुउ मित्र (क) किया मंत्र (ग) २. पूछनि दूति (क) ३. करी जुगति जउ साच वण ४. मारिउ (क)

(६१) १. सुणी वचन रूपणि विगसाइ २. नारदु (क) ३. मिलिय गोहिण (क) सखी सहेली वहुती लेइ (ग) ४. गयो (ग)

## श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

भेटिउ जाइ तहा हरिराउ, तउ चंपइ रूपिणि सतिभाउ ।  
 रादउराइ वयण मुहु<sup>२</sup> गुणहु<sup>३</sup>, सात ताल तुम वाणनि हणउ ॥६२॥  
 वञ्ज मु<sup>१</sup>दरी<sup>२</sup> आफी<sup>३</sup> आणि, तउ कर मसकी सारगपणि ।  
 फुटि<sup>५</sup> चून भइ मु<sup>२</sup>दड़ी, जनकु<sup>६</sup> करिणक गरहट तल पड़ी ॥६३॥  
 तउ कोवंडु नरायणु लेइ, हलउ<sup>१</sup> आइ अगूठा देइ ।  
 सल<sup>३</sup> केसे सति सूघे भए, सातउ ताल वेधि सर गये ॥६४॥  
 नर<sup>१</sup> रूपिणि मन भयो सनेहु<sup>३</sup>, जाणिउ निज नारायणु एहु ।  
 रथ चढाइ तिन्हि<sup>५</sup> करी पुकारी, भीपमराइ जगाइ सारी ॥६५॥

## वनपाल द्वारा रुक्मिणी हरण की सूचना

पाछइ गरव करइ जिन कोइ, चोरी गए रुक्मिणी लेइ ।  
 तव वणवाल पुकारिउ आइ जहि वलु आइ सु लेहु छिड़ाइ ॥६६॥

(६२) १. रुक्मिणी (क) २. मुहि (क) हम (ग) ३. सुणहु (क ख ग)  
 ४. तुम्हे वाणउ (क) तुम्हि वाणहि (ख)

(६३) १. जव (क) २. मुदड़ी (क ख ग) ३. ति आमी आणि (क) आफो  
 आणी (ग) ४. संकरि (क) तउ करि (ख) करी समकरी (ग) ५. फूटी (क ख ग)  
 ६. जाइ रुक्मिणी देखइ मणि पड़ी (क) जाण्यो साकरण हट ते पड़ी (ग)

(६४) १. हलहर (क ख) हलघर (ग) २. अगुठउ (क) अगूठा (ग) ३. सल  
 किउते सत पूया भयउ (क) साल केस सति सूघा भयउ (ख) सल केये सति उभे भये  
 (ग) ४. बीवी (क) विधे (ख)

(६५) १. तव (क ग) तउ (ख) २. रुक्मिणी (क) ३. सनेहु (क ख) तव को  
 मन गया सनेहु (ग) —पूरा चरण ४. देउ (क) ५. तिणि (क ख ग) ६. जगावहु (ग)

(६६) १. करी (क) २. ले गयो (क) पीछइ गरवु म करिज्यो कोइ, चोरी  
 गया ते रुक्मिणि लेइ (ग) ३. पुकारिउ (क ख ग) ४. जाइ (ख) ५. आहि (ख) होय  
 इसु लेउ छुवाइ (ग)

वस्तु बंध—लइय रुपिणि रथहं चडाइ ।

पंचायणु तहि पूरियो, सारु सुर लोइउ संकिउ ।

महिमंडलु तहि थरहरिउ, टलिउ मेरु रामेसु कं पिउ ॥

महले जाइ पुकारियउ, पुहमिराय अवधारि ।

उभी रुपिणि देवलहि, हडिलइ गयउ मुरारि ॥६७॥  
चौपाई

तउ मन कोपिउ भीषमु राउ, ठा ठा भए निसाणा घाउ ।

तुरीय पलाणहु गैर गुडहु, काल रूप हुइ राम्वत चढहु ॥६८॥

सेसपाल राजा सुधि भइ, रुपिणि कुवरि चोरी हरीलइ ।

तवइ कोपि वोलियउ नरेस, तुरिय पलाणहु वेगि असेस ॥६९॥

रहिवर साजहु गयवर गुरहु, सजहु सुहड आजु रणव भिडहु ।

रावत कर साजहु करवाल, धारणुक करहु धरणुह टंकार ॥७०॥

सेसपाल अरु भीषमु राउ, दुइ दल सूइन न सुभइ ठाउ ।

घोडउ खुर लइ उछली घेह, जनु गाजहि भादौ के मेह ॥७१॥

(६७) १. वेसाइ (क) २. जब (क) ग प्रति में नहीं है । ३. सबद (क) सह (ख) सबहु (ग) ४. सब लोक आइय (क) सुरलोक कंयो (ग) ५. बल बलउ (क) ६. हरयो (ग) ७. चलयो (ग) ८. तव सेस (क) गिरिसेस (ग) ९. महिला जाइ पुकारि करि (क) १०. देहरइ (क) ११. हरिलइ (ग)

(६८) १. थाडउ (क) ठाडा (ख) वेगे (ग) २. निसाहण (क) ख ग) ३. पलाया (क) गयवर (क) ख) ४. गुडया (क) ५. साम्ह चइया (क) सर्वाहि चढहु (ख) ग प्रति में निम्न पाठ हैं—रुपिभरणी कुमरी चोरी हडिलइ, कहहु वेव यह कइसी भई

(६९) ६९ की चौपाई ग प्रति में नहीं है ।

१. धरणुह रयण च करहि टंकार (क)

(७१) १. बहवद सेनन (क) दुइदल सेनन (ख) दुइदल २. मिले खेह (क) ख ग) ३. जिम (क) जाणी (ग) ४. गरजइ भादव धण मेहु (क) गज्जइ भावों के मेहु (ख) भादव गज्जइ मेह (ग)



चिन्ह चमर दीमड चमरंत, जागी दावानल करलेहि निमजंत ।  
 चतुरंग दनु भयो नंजुन, पवग वेग रंग आड पहुँत ॥७२॥  
 आवत दनु दीठउ अपवाळु, उड़ी खेह लोपी सतिभाखु ।  
 अह डरि नपिगी लानी कहग, किम रग जीतहुगे महमहग ॥७३॥  
 रहि र्पीगी वामा काहरि होहि, पवरिथु आज दिखाउ तोहि ।  
 सेमपाल भानउ भगिवाउ, बाधि न आणी भीपमराउ ॥७४॥  
 वात कहत दनु आड पहुत, सेमपाल वांलइ प्रजलंतु ।  
 रावत निमजि लेह करवाळु, पडिउ भेट जिन जाइ गुवाळु ॥७५॥

(७२) १. विहदिम (ग) शौर (ग) २. चंवर (ग) ३. फरकंति (क)  
 फरहरंत (ग) प्रहरंतु (ग) ४. चवजा पवग को जारुं अंनु (ग) ५. कमलिनि जुत (क)  
 ६. जरद मगाहू भाय साजंत (क) चमर छत्र दल मिलिया संजुत (ग) ७. दल (क)

(७३) १. असमान (क) अयवाळु (ख) परवाळु (ग) २. मुडंकियो  
 (क) लोप्या (ग) लोपिउ (ख) ३. सति (क) ४. महमहग (क) महमहिया (ख)

(७४) १. शोरी दकमिली मुकंद लहोह (ग) २. म कायिर (क) मत  
 पानिर (ग) ३. दिखानउ (क ग) दिखावउ (ग) ४. भडि (क ख) भड (ग) ५.  
 शंघी करि आणउ (ख) बांधि जु आणउ (ख) आणउ बांधि (ग)

(७५) १. धनिबंधु (ख) मयमंतु (ख) २. निजु (क) निवजि (ख)  
 माजि (ग) ३. श्हांमि जिनि मरड गुवाळ (क) अउ भागा कित जाहि गोवाळु  
 (ग) ४. किम (ख)

मून प्रनि एवं ग प्रनि में निन्न छन्द नहीं है—

जय मनरान जनमु तहि भयउ, वटु सुव बंड गर्भु संनयउ ।

नद मिदि साना बोने पयग, सउ अदगुरा नड बोने सह्या ।

नरा नारणि हउ सकट दिशन्, फुलि मुटि नपिणि देनहि

अनु ॥ ७७ ॥ (ख)

वस्तु बंध—सेसपाल विठु हरिराउ ।

जउ वैसंदर घत ढल्यउ, धनुष वाण कर ले अफालिउ ।

अव समरंगिणि जाणिउ, पुव वयण नियमण सभालिउ ॥

चोरी रूपीणि हरिलइ, इह तइ कीयउ उपाउ ।

कहा जाइ दिठि परचउ, अव भानउ भरिवाउ ॥७६॥  
चोपई

दुष्ट वयण सठ पूरे जाम, कोपारूढ विज्जु भौ ताम ।

सारंगमणि धनुष लौ हाथि, सेसपाल पठउ जमपंथि ॥७७॥

श्री कृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

हाकि पचारि भिडइ दुइ वीर, वरसइ वाण सघण जाणौ नीरू ।

तव वलिभद्र हलावभु लेइ, रह चूरइ मइगल पहरेइ ॥७८॥

(७६) १. भिडइ (क) हमउ (ख) २. जखु (क) जनु (ख) ३. घीउ  
(ख)—पूरा चरण—कोपि होइ प्रज्जलिउ (ग)

निम्न पाठ—(ख) प्रति तथा (ग) प्रति में और है—

घण्टुह वाण करह लइ आफिउ, अवसमरंगिणि जाणि जाणियउ (ख)

धनुष वाणि हथियार लिए, रे गवार संभार संभलि (ग)

४. पूरव वरते (क) पुव वइरू (ख) किउ उपाइ क्यो रहहि जीव (ग) ५.  
नियमणह (ख) ६. हडिलेइ चालिउ (क) हड चलउ (ख) ले चलयौ (ग) ७. एतइ  
(क) यहु ते (ग) ८. माहउ किम जाइस (क) कहा जाहि तू (ग) ९. पडियउ (क)  
पडिउ (ख ग) १०. हिव (क) इव (ग)

(७७) १. संब (ख) मुख (ग) २. नामु (ग) ३. भयो (क)भउ (ख) कोपवंतु  
भय कन्हहुताम (ग) ४. पाणि (क ख ग) ५. खडगु (ग) ६. ले (क ग) लियो  
(ख) ७. पठयो (क) पठवउ (ख) पडवउ (ग)

(७८) १. एक वार (क) २. पचारि (ख ग) ३. उठहि (क) ४. घणा  
(ग) ५. जिम (क ग) जिउ (ख) ६. हलायुष (क) हलाउयु (ख) हलवयु  
(ग) ७. रयमइ गराते चूरइ लेइ (क) रह चूरइ मयगल पहरेइ (ख)

(७८) का अन्तिम चरण ग प्रति में नहीं है ।

सेसपाल कर घनहर लेइ, वार पचास वारण तो देइ ।  
 नाराइणु सउ करइ संघारणु, वह द्वैइ सइ मेलहइ सपराणु ॥७६॥  
 वह सइ च्यारि वारण पहरैइ, वह सैइ आठ संघारण करैइ ।  
 वह सोलह धरि मेलइ चाउ, वह बत्तीस न सूभइ ठाउ ॥८०॥  
 दोउ वीर खरे सपराण, दूरो दूरो करइ संघारण ।  
 बाढी राडी न उहरण जाइ, वारणनि पुहिमि रहि धरछाइ ॥८१॥

### श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

तव नारायणु करइ उपाय, नाहि धनुष वारण को ठाउ ।  
 फेरहु चक्र हाथि करि लियो, छिनि सीसु ससिपालह गयो ॥८२॥  
 सेसपाल भानिउ भरिवाउ, विलख वदन भौ भीषमराउ ।  
 भीष्म मारि रण सहन न जाइ, चवरंगु दलु चलयो पलाइ ॥८३॥

(७६) १. घणहृष्ट (क) घणहर (ख) प्रथम चरण ग प्रति में नहीं है ।  
 २. वारण (क ख) ३. संघारण करेहु (ग) ४. करउ (क) वेइ (ग) ५. संघारण (क)  
 संघारु (ख) संघारणु (ग) ६. वह (क) उहु (ख ग) ७. पराण (क) शिशुपाल (ख)  
 परवारणु (ग)

(८०) १. उसा चारि (क) उहु सय (ख) २. ए छत्तीस न चूकइ टाउ (क)  
 उहु वत्तीस न सूभइ नाउ (ख) रथ चूरे मइगल पुहरैइ, सीसपाल का  
 धुराहरु लेइ (ग)

(८१) १. दोइ (क) दोहिमि (ख) २. सपराण (ख) ३. छई सेननउ उठिउ  
 जाहि (क) ४. हटण (ख) ५. वारणउ (क) ६. पहुवि (क) ७. सब (क)

ग प्रति—वधो सुराज न हटनउ जाइ. वारणिहि पुहवी रहि धर छोइ

(८२) १. करे उपाव (क) करइ उपाउ (ख) २. वारणी (क) ३. फिरि  
 चापु (क) फेरि चक्रु (ख) फेरि चक (ग) ४. हाथ हिलउ (ग) ५. छेइ (ग)

(८३) १. ययो (क) २. विषम (क ग) ३. चवरंगु (ख) चावरंग (क)  
 चतुरंग (क) ४. बलु (ख) ख प्रति में तीसरा चरण नहीं है ।

तव रूपिणि वोलइ सतभाउ, राखि रूपचंदु भीष्मराउ ।

करइ साथ मन छाडइ वयरु, बहुडि आपि कुंडलपुर नयरु ॥८४॥

तउ नारायणु करइ पसाउ, वाघिउ छोडउ भीषमुराउ ।

रूपचन्द कहु आफहु भरइ, पुणि गिय रायर बहुडि हरि चलइ ॥८५॥

श्री कृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

वाहुडि हलहर चलै मुरारि, दीठउ मंडपु वणह मंभारि ।

विरख असोग तरण छइ जिहा, तिनी जणे सपते तहा ॥८६॥

तव तिनके मन भयो उछाहु, आखु लग्न हइ करइ विवाहु ।

महुवर भुणि जणु मंगलचार, सूवा पढइ वेद भुण कार ॥८७॥

वसासइ तिनि मंडपु कीयो, दे भावरि हथलेवो कियो ।

पाणि—ग्रहण करिपरणी नारि, फुणि घर चाले कन्ह मुरारि ॥८८॥

(८४) १. थापउ (क) वंधहु (ख) २. कराउ (क) अर राउ (ख ग) ३.  
संति (क ख) सांत (ग)

ग—करहु सांत तुम कहुल जाउ, चालहु कुंडलपुर हरिराउ (ग)

(८५) १. को आगे करइ (क) कहु आंकउ भरइ (ख) कहु अंक भरिउ  
(ग) २. वाहुडि नूप नयर कहु चलइ (क) फिरि गिय नयरि बहुडि हर चलइ (ख)  
पुणि तिहि नयरि बहुडि चालिबउ (ग)

(८६) १. विरखु (ख) वृष्य (ग) २. तरणउ (ख) तरणा (ग) ३. हे (ख) हइ  
(क) ४. तीन्यो (ग) ५. पहुते तहां (ग) सुपहुते तहां (ख)

८६ वां छन्द क प्रति में नहीं है

(८७) १. ठया (ग) है करहु (ख) २. महुवर भुणि जणु मंगलचारु (ख)  
मधुर धुनिहि होइ मंगलचारु (ग) ३. मूल पाठ महु में चरित्र सु जाणौ मंगलचारु  
सुवर (ख) सोइ (ग)

(८८) १. वणह माहि (क) वणसइ महि (ख) हरइ बंसका मंडप थया (ग)  
२. थयउ (क) ठयउ (ख) ३. देवि सनरि (क)

श्रीकृष्ण का रूक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन  
जब वाइस नारायणु गयो, छपन कोड़ी मिलि उछव कीयउ ।  
गूडी उछली घर घर वार, उँभे तोरण बंदनमाल ॥८९॥  
इक रूपिणि अरु कान्ह मुरारि, विहसत पैठा नयर मंभारि ।  
ठाठा लोग रहाए घरों, उइ पइ पठे मंदिर आपरो ॥९०॥  
गये विवस बहु भोग करंत, सतभामा की छोड़ी चित ।  
नित नित सुख विलखी खरी, सवतिसाल बहु परिहस भरी ॥९१॥  
सत्यभामा के दूत का निवेदन

महलउ राणी पठयो तहा, बलिभद्र कुवर वइठे जहा ।  
सीस नाइ तिहि विनइ सेव, सतीभामा हौँ पठयो देव ॥९२॥  
हाथ जोड़ि महले वीनयो, सतिभामा हइ अइसउ कहउ ।  
कवरगु दोसु मो कहहु विचारि, वात न पूछइ कन्ह मुरारि ॥९३॥  
निसुणि वयगु हलहलु गऊ तहा, राउ नरायणु वइठउ जहा ।  
विहसि वात तिहि विनइ घणी, करइ सार सतिभामा तरणी ॥९४॥

(८९) द्वारावइ (क) जब सी नयरी ख) २. जाय (ग) ३. महूछउ (ख)

आनन्द कराइ (ग) ४. बांघे (ख) रोपी (ग) ५. चंदरवाल (क ख ग)

(९०) १. विगसत (ग) २. सवि (क) अइ (ख) डुइ (ग)

(९१) १. एक (क) २. नारि (क) रोवइ (ख) भुरवइ (ग) ३. सोउ  
किशाल (क) ४. डुखह भरी (क ग)

(९२) महिला (ग) २. जहाँ (क) ३. कुमार (क) कुमरु (ख) कन्ह (ग)  
४. हमि (क) हउ (ख ग) ५. पठए (क) पठयउ (ख) पठई तू (ग)

(९३) १. हिव (क) तुन्ह (ग) २. अइसा चवइ (ग) ३. कवणु (क ख ग)  
४. मोहि (क) मुहि (ख) हम (ग) ५. जु वात (ग)

(९४) सुणी वात (ग) हलहर (क ख ग) ३. गयो (क) गयो (ग) ४. तवइ  
(ग) तिह (क) ५. वीनवी (क) विनवै (ग) ६. करउ (ग)

तउ नारायणु करइ कुत्तलु, जूठउ रूपिणि तणउ उगालु ।  
 गांठि वाधि संपतउ तहा, सतिभामा कइ मन्दिर जहा ॥६५॥  
 सतिभामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु वोलइ वयणा ।  
 कहइ वात बहु परिहस भरी, कवण दोस स्वामी परहरी ॥६६॥  
 तउ हसि वोलइ कन्ह मुरारि, मधुर वयण समभाइ नारि ।  
 कपट रूप सो निद्रा करइ, गाठी भुलाइ खाट तर धरइ ॥६७॥  
 गाठी भूलति जव दीठी जाम, उठि सतभामा छोरी ताम ।  
 परीमलु महकइ खरी सुगंध, देखी सुगंध लगाइ अंग ॥६८॥  
 अंगु मलति जव दीठी राइ, जागि कान्ह वोलइ विसधाइ ।  
 तेरउ जाणु गयउ सवु आलु, इह तउ रूपिणि तणउ उगालु ॥६९॥

(६५) १. गंठि (क ख) २. वंध (ग) ३. संपतो (क) संपता(ग) ४. कउ (क ख) का (ग)

(६६) १. दीठा (ग) २. जाम (क) ३. वोलो इक माम (क) ४. रोसह (क)  
 ५. दोसि (क ख) दोसे (ग)

(६७) १. समभावइ (क ख ग) २. तलि (क ख ग)

(६८) गंठडी भुलकत देखी (ग)

नोट—इसरा चरण कं प्रति में नहीं है

२. छोड़ी (ख) दीठी (ग) ३. वहइ बरिय (ख) दीठा गंध सुचंग (ग) ४.  
 वोडि (क) ५. लावइ (ख ग)

(६९) १. नारि (ग) २. जागु कन्ह बोलीया विचारि (क) ३. विहसाइ (ख)  
 ४. तेरा (ग) ५, तिगारु गयउ सवु अहल (ख) अरुगुण गया सवु आलु (ग) ६. ऐह  
 (क) इह है (ख)

निम्न छन्द मूल प्रति तथा क शीर ए प्रति में नहीं है—

विलदेते कवी घृत टलि जाइ, अणभावता न राण पाइ ।

कहा नाराइणु भंजहि आलु, इह मुभु यहणि तणउ उगालु ॥

सत्यभामा का रूक्मिणि से मिलने का प्रस्ताव  
 सतिभामा बोलइ सतिभाउ, मो कहु रूपिणी आरिण भिटाउ ।  
 तव हसि बोलइ कान्ह मुरारि, भेट कराउ वराह मङ्गारि ॥१००॥  
 उठि नारायण गयो अवास, वैठउ जाइ रूक्मिणी पास ।  
 बहु फुलवाडि वसइ वरा माहि, चलहु आजि जह जेवण जाहि ॥१०१॥  
 रूपिणि सरिस नारायण भये, चढे सुखासण वाडि गये ।  
 विरख असोग वावरी जहा, लइ रूक्मिणि उतारी तहा ॥१०२॥  
 सेत वस्त्र उज्जल आभरण, करकंकण सोहइ आभरण ।  
 देवी रूप अला वइसारि, जपइ जाप तहा गयउ मुरारि ॥१०३॥

सत्यभामा और रूक्मिणी का मिलन

पुणि सतिभामा पठइ जाइ, हउ रूपिणि कहुं लेउ वुलाइ ।  
 जाइ वावरी ठाढी होइ, जिम रूक्मिणी भिटाउ तोहि ॥१०४॥

(१००) मिलाइ (ग) करावहुं (ग)

(१०१) १. विहुण्ड (क) वइठा (ग) २. फल आदि (क) फुलवाड (ख)  
 फुलवावि (ग) ३. घइइ (क) अघं (ख) अघहि (ग) ४. तुम भेटण जाहु (क) तहं  
 भेटण जाहि (ख) तिन्ह देखण जाहि (ग)

(१०२) १. भयउ (क) गये (ख) भया (ग) २. वृक्ष अशोक (ग) ४.  
 वावडी (क ख ग)

(१०३) १. श्वेत (ग) २. सोहइ अनियर काल्ल नयण (क) कर कंकण  
 सोह तडिबयण (ख) कर कंकण पहेरे मन हरण (ग) ३. अवाल वइसारि (क)  
 आल वैसारि (ख) ४. जये (क) जपहि (ख) जपियऊ (ग) ५. कहि (क ख ग)

(१०४) १. फिणि (क) फुणि (ख) फुनि (ग) २. पहितो (क) पठई (ख) पठए  
 (ग) ३. कहे वात नरवइ सतिभाउ (क) ४. अडाइ (ग) ५. क प्रति में निन्न पाठ है—  
 खानि गेहिणी तू बलि होइ, वन रूक्मिणि भेटाउ तोहि ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

६. भेटाउ (क) भिटावउ (ख) मिलावहु (ग)

गोहिण<sup>१</sup> मिलो बहुत सहिलड़ी, वाडी<sup>२</sup> गइ जहा वावड़ी ।  
नयण<sup>३</sup> निरखि जद देखइ सोइ, वण<sup>४</sup> देवी वह<sup>५</sup> वैठी कोइ ॥१०५॥  
पय<sup>१</sup> ससि चेली जल मह हाइ, पुणि<sup>२</sup> देवी के लागइ पाइ ।  
सामिणि<sup>४</sup> मुहिकहु देहु पसाउ, जिम<sup>५</sup> मुहि मानइ जादउराउ ॥१०६॥  
अव<sup>१</sup> वह<sup>२</sup> देवी मनावहि सोइ, जिमि<sup>३</sup> रुकिमिणि दुहागिणी होइ ।  
विविह<sup>४</sup> पयार पयासइ सोउ, आगइ<sup>५</sup> आइ हसइ हरिदेउ ॥१०७॥  
सतभामा<sup>१</sup> तुमि<sup>२</sup> लागी वाइ. वार वार कत लागइ पाइ ।  
काहो<sup>४</sup> भगति पयासहु घणी. यह आलइ<sup>५</sup> वयठी रुकिमिणी ॥१०८॥  
सतिभामा<sup>१</sup> बोलइ तिहि ठाड, कहा<sup>२</sup> भयो जइ लाइ पाइ ।  
कूडी<sup>३</sup> वूधी करइ तू घणी, यह मो<sup>४</sup> वहिणी होइ रुकिमिणी ॥१०९॥

(१०५) १. बहुतु सहेली मिली (ग) २. गयी जिहां वाडी वावडी (क) वाडी मांहि देखहि एकली (ग) ३. जो नयण दिखाइ (क) जिव देखइ साइ (ख) जे (ग) ४. देव्या (ग) ५. कइ लागइ पाइ (क ख) यह (क)

(१०६) १. परहसि बोलि वणमहि जाइ (ख) २. लागी (ग) लागै (ख) ३. पाय (ख ग) ४. मोकहु (क ख) हमको (ग) ५. करहु (क) ६. जउ हउ मारौ जादमराय (ग)

(१०७) १. इम (क ख) जउ (ग) २. ऊहु (ख) ३. तउ (ग) ४. सेव (क ख) ५. आगलि (क) ६. हसै ।

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१०८) कित्तु लागइ पाइ (क) तुम्हि लागी पाइ (ख) तुम्ह कहउ सभाउ (ग) २. वया (ग) ३. भाइ (ग) ४. काहउ भगति करहि वह घणी (क) काहउ भगति पयासहु घणी (ख) कहा जाति बोलहि आपणी (ग) ५. अलाइ (ग) यह तो वहिणि आहि रुकिमिणी (क)

(१०९) १. हुआ (ग) २. कूड बुडि (क ख) कूटी बुडि (ख) इतनी बुडि (ग) ३. वूकी तुम्ह तरणी (ग) ४. मोहि (क) मुह (ख) तउ (ग)



राति दिवस तू करिहि कुतालु. वंस सहाउ न जाइ गुवालु ।  
 फुरिण रूपिणी सहू करह सभाइ. चालइ वहिण अवसइ जाइ ॥११०॥  
 चढि याण ते गइ अवास, सब सुख भूजहि करहि विलास ।  
 राजु करत दिन कछुक गये, राणी दुहु गर्भ संभये ॥१११॥  
 तव सतिभामा चवइ निरुत, जाके पहिलइ जामइ पूत ।  
 सो हारइ जाहि पाछइ होइ, तिहि सिहु मूंडि विकारइ सोइ ॥११२॥  
 सतिभामा अरू रूपिण तरणी, वलिभद्र आइ भयउ लागणउ ।  
 तुम जिण करहु हमारी काणि, जे हारहि तिहि मूडहु आणि ॥११३॥  
 एतह कुरवइ पठयउ दूत, नारयण पह जाइ पहुत ।  
 तुम घर जेठउ नंदन होइ, ता दूतह करावहु सोइ ॥११४॥

(११०) १. कोताल (क) डमाल (ग) २. वस वनाहें मही गोवाल (क) मुफ कहु कहा भोलवहि गोवाल (ग) ३. स्यो फहे सुभाइ (क) सद्द फहइ सुभाइ (ख) बोलत सतभाउ (ग) ४. चालि (क ख) चलहि (ग) ५. बहणि (क) बहण (ख) बहुरण (ग) ६. अपणे घरि जाहि (क) आवासहि जाहि (ख) आवासहि जाइ (ग)

(१११) १. चकडोल (क) विमणि (ख ग) २. गए (क) चलो (ग) ३. आवास (क) आवासि (ग) ४. भोग (ग) करत केलि दिन केतक गये (ख) ५. बहुरत (क ग) ६. विहुकर (क) दुहु कहु (ख) दुन्ह (ग) ७. ज भए (क) ८. गन्म (ख)

(११२) १. जिहि घरि पहिला जन्मे पूत (ग) २. जिह (क) जिमु (ख) जिहि (ग) ३. पीछे (ग) ४. सिर (क) सिस (ख ग) ५. विवाहइ (क ख) विवाहे (ग)

(११३) १. भरण (क) तरण (ख) तरण (ग) २. कुमर (क ग) ३. भयो (क) सयउ (ख) हुवा (ग) ४. लागण (ग) ५. मत (क ग) ६. तिह (क) तिस (ग)

(११४) १. एतइ (क) तिहि (ग) २. कइरविहि (ग) ३. तह (ग) ४. आइ (क ख) तिह को निय धुव व्याहइ सोइ (क) कुरवइ धीय विवाहइ सोइ (ख ग)

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

एतह<sup>१</sup> आइ बहुत दिन गये<sup>२</sup>, दुहु<sup>३</sup> नारि कह<sup>४</sup> नंदन भये ।  
लक्षणवंत<sup>५</sup> कला समजुत<sup>६</sup>, ऐसे भये<sup>७</sup> दुहु घर पूत<sup>८</sup> ॥११५॥

सतिभामा तराउ वधावउ गयउ, जाइउ सेसे<sup>९</sup> ठाढउ भयउ ।  
रूपिणि तराउ वधावउ जाइ, पाइत सो पुग<sup>१०</sup> वयठउ जाइ ॥११६॥

जागि नरायणु वइठो होइ, रूपिणि दूत वधावउ देइ ।  
हाथ जोडि बोलइ विहसंतु, रूपिणि घरह उपनउ पूत ॥११७॥

दूजउ दूत वधावउ देइ, नारायण सिहु<sup>३</sup> विनवइ सोइ<sup>४</sup> ।  
हउ स्वामी तुम पह पठयउ, सतिभामा पुगि<sup>५</sup> नन्दरां भयउ ॥११८॥

---

(११५) १. एतउ कहि दूत तव गये (क) २. भये (ग) ३. वेउ (क) दुहु  
(ग) ४. घरि (क) ५. लखिण (क ख) ६. वत्तीस (ग) ७. संभुत (क ग) संभुत  
(ख) ८. जइसे (ग) अइसे (ख) ९. विहु (क) १० के (ग)

(११६) १. जाइउ (क ख) जाइअ (ग) २. सीसउ (क) सीसे (ख) सीसा  
(ग) ३. ठाडउ (क) ठाउ (ख) ठाडा (ग) ४. आइ (क) देइ (ग) ५. तालि से  
(क)—सो पुगि पाइवि खडा रहेइ (ग)

(११७) १. होइ (क)

ग प्रति का तीसरा चौथा चरण—

रुकमिणि पूतु जण्यो छइ आज, देवउ ववावा ता हरं काजि ।

(११८) १. बीजा तिहां (ग) (२) वधावा (ग) ३. स्यो (क ग) सहु (ख)  
४. विनवे (क) विनवे (ख) विनउ (ग) ५. करेइ (ग) ६. हो (क) ७. पासि (ग)  
८. पठाविउ (क) पाठयउ (ख) पाठियो (ग) ९. घरि (ग)

तउ ह॑रि हलहर लेइ॑ हकारि, कहइ॑ वात जा वलि॑ वयसारि ।  
 भू॒ठउ॑ वोलि टलै॑ जिन कम्बगु, जे॒ठउ॑ पूत॑ भयउ परदवगु ॥११९॥  
 दूहु॑ नारि घर नंदगु भए, घर घर नयरि वधावा गए ।  
 सू॒हो॑ गावइ मंगलचार, वंभरा॑ वेद पढइ भूगा॑कार ॥१२०॥  
 वाजहि॑ तूर भेरि अनिवार, महुवरि॑ भेरि संख॑ अनिवार ।  
 घरि घरि॑ कू॒ कू॑ थापे देह, मंगलगावहि॑ कामिगि गेह ॥१२१॥  
 धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

छ॒ठि॑ निसि जागरण करंतु, धूमकेतु तहा आइ पहुंत ।  
 घोमि॑ विम्बगु रचि॒तु छ॒रां॑ जाम, धूमकेतु मनि चि॒तिउ॑ ताम ॥१२२॥  
 उ॒तरि॑ विमागु दिट्ठु परदवगु, भराइ॑ जक्षु॒ यहु॑ खत्री कवगु ।  
 वयर॑ सम्हालि कहइ तंखीरी, इ॒गी॑ हरी नारी मुहि तरगी ॥१२३॥

(११९) १. तिहि (ग) २. लीयउ-हकारि (क) लीया वुलाय (ग) ३. वउसा विचारि (क) वलिवइ साइ (ग) ४. भू॒ठी वात कहइ पर कवगु (ग) ५. जेठ (ग) ६. पुत्र (क ग) ७. परदमगु (क ख)

(१२०) १. दूये (ग) २. महुउ गमिउ मंगलचार (क) सूहउ करहिउ मंगलचार (ख) अहि जो गावइ मंगलचार (ग) ३. जयकार (क) भूगाकार (ग)

(१२१) १. सविचार (क) २. शब्द बहुताल (ग) ३. अनेचार (ख) ४. कुं कम रोला (क) ५. मंगल चारुबर कामिगि करेह (ख) घरि घरि कामिगि गीत करेह (क) मूलपाठ -- यह चरण मूल प्रति में न होने कारण 'घ' प्रति से लिया गया है ।

(१२२) १. छठ्ठा विवसि निसि गीत चबति (ग) २. थामि (क) खोवि (ख ग) ३. रहइ (क) रहउ (ख) रहया (ग) ४. गसि (क) खसि (ख) तिसु (ग)

(१२३) १. उठिउ (क) २. देव (क) जखिय (ग) ३. वइर (क) वयर (ख) वइरू (ग) ४. एगि (क) वयरू हड़ी (ख) यह हइ हारि नारि (ग)

हुइ प्रछन्न उठावइ सोइ, जैसे नयर न जाणइ कोइ ।  
घालि विमार्णि चलिउ ले तहा, वनखंड माभ सिला हति जहा ॥१२४॥  
धूमकेतु तौ काहौ करइ, घालउ समुद्र त वेलउ मरइ ।  
वामन हाथ सिला सो पेखि, इहि तल धरउ मरउ दुख देखि ॥१२५॥  
पूर्व रचित न मेटण कवणु, करम बंध भूजइ परदवणु ।  
चापि सिलातल सो घर जाइ, तव रूपिणी जागइ तिहि ठाइ ॥१२६॥  
वस्तु बंध—छठि रयणि हरिउ परदवणु  
तह रूपिणि कारणु करइ, अरे पाहरू तुम्ह वेगि जागहु ।  
नारायण हर निमुणि, तुम बलिवंत पुकार लागहु ॥  
सतिभामा आनंद भयउ, कलयर करइ बहूतु ।  
सो रूपिणि कारणु करइ जिहि रहस्यउ निसिपूत ॥१२७॥

(१२४) १. परछन्नि (क) परछन्नु (ख) प्रछन्नु (ग) २. उठाउ (क) तव उद्वियो (ग) ३. गयउ (क) चल्या (ग) ४. सो (ग) ५. वनवइ राडि (क) वणिखइ राडइ सिला थी जह? (ख) वखुखइ राडि सिला हइ जहा (ग)

(१२५) १. तह (क) तउ (ख) तुव (ग) २. काहउ (क) कहा (ग) ३. पामउ (क) ४. वेगिउ (क) वेगउ (ख) वेगि (ग) ५. वावन (क ख ग) ६. धरो (क) घालउ (ख) धरइ (ग)

(१२६) १. पूर्व क्रम सु मेटइ कवण, तउ ए दुख देखे परदवण (क)  
पूर्व बंध न मेटइ कोख, करम बंध भुचं परद्रीख (ख)  
पूर्व विभु न मेटइ कोइ, करम लिखा सो निवइ होइ (ग)

२. चंपि (क ग) ३. रयि (क) ४. जाणइ (क) जगई (ग) धूमकेतु चंपि विगसाइ (ख)

(१२७) १. निसहि हडउ परदवणु, (ग) २. हो (ग) ३. पहरवावे (ख) ४. हलहर (क ख) हरधर (ग) ५. मिल्हु (ग) ६. कुमार (क) ७. बलबंड (ग) ८. मनि (ग) ९. कलियल (क) करजल (ग) १०. हडियो पूत (क) हाडलियउ निसि पूत (ख) जिहि का हडिया तिस पुत (ग)

## चौपई

नयर माहि भयउ कहलाउ, सोवत जागिउ जादवराउ ।  
छपन कोटि मिल चले पुकार, फुरिण तिस तरणी न पाइ सार ॥१२८॥

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिये प्रस्थान

एतइ मेघकूट जहि ठाउ, जमसंवर तहि निमसै राउ ।  
वारहसइ विद्या जा पासु, कंचणमाला गेहिण तासु ॥१२९॥  
वहिकौ मन वनक्रीडा रल्यउ, चदि विम्वाण सकलत्तउ चलिउ ।  
सोवण भाभ पहुतउ जाइ, वीरु परदम्बणु चाप्पोही जहा ॥१३०॥  
देखी सिला भाभ वण धरी, वाम्वन हाथ जु उची खरी ।  
खण उचसही खण तलही होइ, उत्तरि विम्वाणहु देखइ सोइ ॥१३१॥

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

विद्या के बल सिला उठाइ, तउ नरिद देखइ निकुताइ ।  
लषण वत्तीस कनकमय अंगु, जमसंवर देखयउ अरांगु ॥१३२॥

(१२८) १. नयरि (ख ग) २. मांभ (ग) ३. हुआ (ग) ४. कलिहाउ (क)  
(क) कलिहाइउ (ग) ५. जाग्या (ग) ६. तसु (क) तिसि (ग)

(१२९) १. तहि (ग) २. मेघकुटिलपावइ (ग) ३. जिह (क) जिस (ख)  
४. गौई अवासि (ग)

(१३०) १. उपवन (क) उनका (ग) २. क्रीडा (क) कीला (ख) ३. ऊपरि  
भया (ग) उदक भयो (क) ४. वेदहि (क) ५. गयउ (क) गया (ग) ६. धरिउ (क)  
चापिउ (ख) चापी (ग)

(१३१) १. दोठी (क) २. सो (क ख) जी (ग) ३. कर (ग)

(१३२) १. विहि संजोग (ग) २. सिललाई उठाइ (ग) ३. कनक मइ अंगु  
(ग) उरांगु (ग) मूलपाठ—हचरेतसु अंगु

कुम्बरू उठाइ उछंगह लयउ, वाहुडी राउ विमाराण गयउ ।  
 पाट महा दे राणो जाणि, कंचणमालाहि आपिउ आणि ॥१३३॥  
 कंचणमाला लयउ कुम्बरू, अति सरूपु बहु लक्षण सारू ।  
 तिसके रूप न देखइ कोइ, राजा धर्मपूत सो होइ ॥१३४॥  
 चढि विमाराणु सो गयउ तुरंतु, पम्बराण वेग सो जाइ पहुँत ।  
 नयरि उछाउ करै सवु कवरणु, कणायमाल हुवो परदवरणु ॥१३५॥  
 भो प्रदुवनु कुवर सुपियारू, अति सरूप गुण लक्षण सार ।  
 दुइज चंद जिमि त्रिधि कराइ, वरस पांच दस को भो आइ ॥१३६॥

### प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

फुणि सो पढण उभावरि लयउ, लिखितु पढितु सवु बुभिवि लियउ ।  
 लक्षण छंदु तकु बहु सुणिउ, नाटक राउ भरथ सवु मुणिउ ॥१३७॥

(१३३) १. कर उचाइ (क) २. चडेइ (ग) ३. आफिउ (क) दीन्ही (ग)

(१३४) १. तिहि के (क) तिहिकइ (ग) तिसकइ (ख) २. पूजाइ (ग) ३.  
 राजाहि (ख) राषा (ग) ४. मो होइ (ग)

(१३५) १. विमाराण (क, ख, ग,) २. तुरंत (ग) ३. गया (ग) ४. आनंदु  
 ५. (ग) करइ(ख,ग) ६. भणइ (ग) ७. घरहि(ग)

(१३६) १. भो (क) तव (ख) सो (ग) २. करे (क) कुमार (ख) खरा (ग)  
 ३. सुखसार (क) ४. बहु (क ख ग) ५. दोइज (क) दोज (ग) ६. बिरधि (क ख ग)  
 ७. वरस पंचनउ हुवो जाम (क) वरिस पांच दस का भउ राउ (ख) दस वरस को  
 भयो तिह द्वाइ (ग)

(१३७) १. पढणउ (ख) २. परसाउ (ग) उभावरि (क) भावरि (ख)  
 भावरि (ग) ३. गुण (क) बुभिवि (ख) बुभिवि (ग) ४. लयो (ग) ५. बहुत सो (क)  
 कचितु बहु (ख) ६. राव (क) राउ (ग) मूल पाठ तकु

नोट—तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

धनुष वाणको वृक्षिउ जाणु, सिंघ जूभकौ जाणिउ जाण ।  
लडणु पडणु निकामु पइसारु. सबु जाणु प्रदुवनु कुम्वारु ॥१३८॥  
एसौ वीर भयउ परदवणु, तहि सरिसु न वृभइ कवण ।  
कालसंवर घर वृद्धि कराइ. वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ॥१३९॥

## द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

जहि सो रूपिणि कारणु करइ, पुत्र संतापु हिय गहवरइ ।  
नित नित छोणइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥  
इक घाजइ अरु रोवइ वयण, आसू वहत न थाके नयण ।  
पूव्व जन्म में काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥  
कोमइ पूरिप विछोही नारि, को दम्ब घाली वणहु मभारि ।  
की मै लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संतापु कवण गुरा पर्यउ ॥१४२॥

(१३८) १. कउ (क ख) का (ग) २. विभविउ (क) वृभइ (ग) ३. भुभकउ  
(क) बुम्बाउ (ख) जूभ का (ग) वाण (क) वाणु (ख) दवाणु (ग) ५. भिडणु (ग)  
६. निकसन ये (क) निकामु (ख) निकतु (ग)

(१३९) १. ताको सुधि न जाणइ कवणु (क) तहि सम सरिसु न वृभइ कवणु  
(ख) २. मइसा वीर भया तिह द्वार (ग ख) इहु कथा द्वारिका जाइ (ग)

(१४०) १. ते तउ नारो (क) २. सुतो इव (ग)

(१४१) १. घणइ (क) छोणइ (ख) २. इकु (ख) पर पूरइ वयण (ग) ३.  
टलि (ग) ४. नइरती (ग) ५. पाप मइ किया (ग)

(१४२) १. कइ मइ (क, ग) २. को (क) कइ (ग) ३. दवदीयो (क)  
दवताई (ग) दवताई (ग) ४. दुल पइया (ग)

इम सो रूपिणि मन विलखाइ, ती हरि हलहरू वइठइ जाइ ।  
मत तू सुंदरि विसमउ घरइ, ग्रनजानत हमि काही करहि ॥१४३॥  
सरलि पयालि कहइ सुधि कम्बगु, ती हमि चाहि लेहि परदम्बरा ।  
पलि एस्यो हमि करइ पराण, मारि उठावइ गीध मसाणु ॥१४४॥  
इम समझाइ रहाइ जाम, तो मन परिहस विसर्यो ताम ।  
आइसे भुरत वरिसुहु गयउ, ती नानारिषि द्वारिका गयउ ॥१४५॥

### रुकमिणी के पाप नारद का आगमन

मंडे मुंड चुटी फर हरै, छत्री हाथ कमंडल धरै ।  
ती नानारिषि आयो तथा, विलिख वदन भइ रूपिणि तथा ॥१४६॥  
जव तह नारद दीठउ नयण, गहवरि रूपिणि लागी कहण ।  
पद्मपूत हौ स्वामी भयउ, जाणउ नही कवण हरि लयउ ॥१४७॥

(१४३) १. छिण छिण विलखी जाइ (क) २. तव (ग) ३. वइठा तिह आइ (ग) ४. मत (क ख ग) ५. विषवाद (क) विसमउ (ख) विसमाहु (ग) ६. ग्रणजानते हम कहा करेहि (ग)

(१४४) १. सुरग (क) सुरगि (ख) सुग (ग) २. सो सुधि—(क) सोधि कवणु (ग) ३. तउ वेगइ आणउ बल बुधि (क) ४. बलितिह संगणन को पूरउ (क) बलि गसिउ हमि करहि पराणु ५. गीरध (ग)

(१४५) १. हलधर (क) हरि गउ धरि (ख) २. मन परिहस विसारि जाम (क) ३. वन (ख)

नोट—प्रथम २ चरण (ग) प्रति में नहीं है ।

(१४६) १. चले (क) चोटी (ख) २. रुकमिणि जहां (क ख) रूपिणि हइ जिहां (ग)

(१४७) १. बोलइ वयण (ग) २. एक पुत सुहि सामी भया (क) एक पुत, मो स्वामी भयउ (ख) एक पुत स्वामी हम भया (ग)



तु<sup>१</sup>हि पसाइ मुहि अँसाँ भयउ, पे<sup>२</sup>ट दाहुँ<sup>३</sup> देँ नंदरा गयउ ।  
हाथ जोडि वोलै रुकिमिणी, स्वामी सुधि करहु तमु तरणी ॥१४८॥  
तव<sup>१</sup> हसि नारद वोलइ वयगु, सुद्धि<sup>२</sup> लेरा चाल्यो परदवगु ।  
सुर्ग<sup>३</sup> पयालि पुहमि अह नहइ, चानि लेहु इम नारद कहइ ॥१४९॥

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

कही वात नारद समुभाइ, पूरव विदेह सपत्तउ जाइ ।  
जहि खेमं<sup>२</sup>वरु सामि पहागु, तहि उपनू केवलजानु ॥१५०॥  
समवसरण नानारिपि गयउ, तह चकवइ अचंभउ भयउ ।  
चक्कवंति<sup>३</sup> मुणि पूछिउ तहा, एसे माणस उपजइ कहा ॥१५१॥

सीमंघर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न-का वृत्तान्त वतलाना

तउ जिनवर वोलइ सतिभाउ, जम्बूदीप आहि सो ठाउ ।  
भरहखेत तहां सोरठ देसु, जयन धर्म तहि चलइ असेसु ॥१५२॥

(१४८) १. तउ सामी किम जाइ कहियउ (क) २. वेटउ (क) ३. दुल (क)  
४. ऐसे दे (क) ५. सुत (क)

(१४९) १. बिहसि (क) २. सुधि करी लेस्यो परदमगु (क) सुधि करि  
चाहि लेउ परदवगु (ख) सुद्ध करि चलहि लेहि परदवगु (ग) ३. पुहविहे जहा (क),  
पुहमि जइ रहइ (ख) पुहवि जे अइहै (ग)

(१५०) १. पुन्व (क) २. पुणि पूर्वदिति पहता जाइ (ग) ३. सीमंघर (क ख)  
जनघूत (ग)

(१५१) १. अचंभो (क) २. सभापेसि पुणि पूछण लिया (ग) ३. तउ छत्री  
(क) ४. जिन (क) नाना रिपि तउ पूछइ तिहां (ग) ५. निपजहि (ग)

(१५२) १. जिनवर (क) २. उपदेसइ (क) ३. भाउ (क) तिहु ठाइ (ग)  
४. सुगु नानारिपि कहउ सभाइ (ग) ५. भरत क्षेत्र (क) ६. जइन (क,ख) जैन (ग)

सायर मा<sup>१</sup>रु द्वारिका पुरी, जगु<sup>२</sup> सो इंद्रलोक तै<sup>३</sup> पडी ।  
 राउ<sup>४</sup> नारायणु निमसइ जहा, एसै<sup>५</sup> माणस उपजइ तहा ॥१५३॥  
 ताकी घरणि आहि रुक्मीणी, धरम<sup>२</sup> वात सो जाणइ घणी ।  
 ताकौ<sup>३</sup> पूत प्रदवणु भयो, धूमकेतु ता हडि ले गयो ॥१५४॥  
 वावणु हाथ सिला ही जहा, वीर परदवणु चाप्पौ<sup>३</sup> तहां ।  
 पूरव<sup>४</sup> जनम वैरू हीं घणौ, धूमकेत सारिउ<sup>५</sup> आपणउ ॥१५५॥  
 मेघकूट<sup>१</sup> जे पवहि ठाउ, तहि निवसइ वीजा<sup>३</sup>हरराउ ।  
 काल संवर आयो तिहि ठाउ, देखि कुवरू लैगय उठाइ ॥१५६॥  
 तहिंठा विरधि करइ परदवणु, तिसकी सुधि न जाणइ कवणु ।  
 वारह वरिस रहइ तिहि ठाइ, फुणि सौ<sup>३</sup> कुवर द्वारिका जाइ ॥१५७॥  
 निसुणि वयण मनि नारद रल्यउ, नमस्कार करि वाहुडी चलिउ ।  
 चडि विवाण मुनि आयो तहा, मेहकूटि<sup>४</sup> मयरुद्धु तहा ॥१५८॥

(१५३) १. मन्मि (क) माहि (ख,ग) २. जाणे (क) जाणौ (ग) ३. अरतारी (क) उत्तरी (ग) ४. तउ (ग) ५. निपजइ (क,ग)

(१५४) १. अछइ (ग) २. धम्म तणी मति जाणइ घणी (क) ३. तहु कहु (ग) ४. जनयउ (ख)

(१५५) १. हइ (क) थी (ख) (ग) २. लेइ कुंवर (ग) ३. चंपियउ (क) चापियउ (ख) चंपासो (ग) ४. पुव्व (ख) पूव (ग) ५. वहु (क) हउ (ख) हइ (ग) ६. साघउ (क) सान्या (ग)

(१५६) १. जो (क) जव (ख) हइ (ग) २. परवत (क) पावइ (ख) विषडा (ग) ३. विद्यावर (क) विज्जाहव (ख) विद्याहव (ग) ४. आविउ तह (क) आयउ ताहि (ख) आयतितु (ग) ५. उठाइ (क) उचाइ (ग)

(१५७) १. सोरुह (ख) २. जाहि (ग) ३. वाहुडि कया (क) पुन सो कुमर (ख) ४. दुवारिका (ख)

(१५८) १. रियि (क) सो (ग) २. रलियउ (क) चलिउ (ख) रलिउ (ग) ३. जिए बंदी यिणि (क) ४. मेघकूट (क,ख,ग) ५. महाराथा (ग)

देखि कुवरु ररिषि मन विहसाइ. फुरिण वारमइ सपतउ जाइ ।  
 भेटी जाइ तेण रुकिमीणी. कही सार तमु नंदण तणी ॥१५६॥  
 जिन रूपिण हीयरा विलखाइ, वरिस वारहै मिलिइ आइ ।  
 मो सिहु कहियउ केवली वयण, निश्चे आइ मिले परदवण ॥१६०॥

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

उकठे अं व फलइ सैहार, कंचण कलसइ दीपइ वारि ।  
 कूवा वारि जे सूके खरे, दिसइ निम्पल पाणी भरे ॥१६१॥  
 खीर विरख सव दीसहि फले, अरु अंचलइ होइ हहि पियरे ।  
 थण हर जुवल वहै जव खीरु, तव सो आवइ साहस धीरु ॥१६२॥  
 कहि सहनारा गयो मुनि जाम, रूपिण मन संतोषो ताम ।  
 पाख मास दिन वरिस गणाइ, वाहुरि कथा वीर पहजाइ ॥१६३॥

(१५६) मनइ (क) मनमहि (ग) २. वियसाइ (ग) ३. खिण वारवती  
 पद्वती (क) फुरिण वारवइ सपतउ (ख) फुरि सो नयरी द्वारिका (ग) ४ तिहा (क)  
 तहां (ख) तवते (ग) ५. ते (क) तिसु (ग)

(१६०) १. मन (ग) २. हियडइ (क,ख) हियइ (ग) ३. वारमइ (क) सोरह  
 (ख) ४. मिलती (क) में मिलहइ (ख) मिलइगी (ग) ५. मोहिसउ (क) मुहिसहु (ख)  
 मोस्यो (ग) ६. श्री जिनवर (क)

(१६१) १. सूके (क) उकठे (ग) २. अं व (क ग) ३. सैवार (क) सइहार  
 (ख) सहिसउ वार (ग) ४. दीसहि (क) ५. कूवावाविजे (क) कूव वाइजे (ख)  
 स्रहदी वावडि (ग) ६. निरमल (क,ख,ग)

(१६२) १. जयि (ग) २. सनि (ग) ३. अंचल (क ग) अंचल (ख) ४.  
 दीसइ (क) होसहि (ख) दीसहि (ग) ५. पीयले (क,ख,ग) ६. युयल (क) युगल (ग)  
 ७. बहु (क) ८. ते (क) परि (ग)

(१६३) १. सु गयउ (ख)

नोट—(ग) प्रति का प्रथम चरण निम्न प्रकार है—

काहसि दिन पुगे सब जान तउ २. नइ (क) ३. वाहडि (क ख) वाहडि (ग)

## तृतीय सर्ग

यमसंवर-द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

तहि निमसैं<sup>१</sup> सिंघरहु<sup>२</sup> नरेसु, तिहिसिहु<sup>३</sup> विगहु<sup>३</sup> चलिउ असेस ।  
 जवसंवर<sup>४</sup> जव करइ उपाउ, को भाणइ इहि<sup>५</sup> को भरिवाउ ॥१६४॥  
 कुवर पांचसौ<sup>१</sup> लए हकारि, रण जीतहु<sup>२</sup> संघरहु<sup>३</sup> पचारि ।  
 सिंघ जुध जो जागै भेउ, वेगि आइ सौ वीरा लेउ ॥१६५॥  
 कुवरन नियरौ<sup>१</sup> आवै कोइ, तव विहसि<sup>२</sup> करी वीवो लेइ ।  
 मोकहु<sup>३</sup> सामी करहु पसाउ, हउ रण जिणामु<sup>४</sup> सिंघरहु<sup>३</sup> राउ ॥१६६॥  
 तउ नरवै<sup>१</sup> बोलइ सतिभाउ, वाले कुवर न तेरउ<sup>२</sup> ठाउ ।  
 जुझ तणउ<sup>३</sup> नहि जाणइ भेउ, तिम करि तुहिकहु<sup>४</sup> आइस देइ ॥१६७॥

(१६४) १. निमसइ (क ख ग) २. 'सिंघरथ (क) सिंघरहु (ख) सिंघराय (ग) ३. तंह सो विग्रहुते (क) ताहि सहु विगाहु चलिउ (ख) तिसस्यौ विग्रहु चल्या (ग) ४. जम (क) ५. तव (क ख ग) ६. पसाउ (क) ७. किम भानउ एह नउ भडिवाउ (क) किम भानइ इहि कउ भडिवाउ (ख) कोइ भानौ इणु का भडिवाउ (ग)

(१६५) १. पांचसइ (क ख) पंचसइ (ग) २. जुलाइ (ख, ग) ३. सिंघराउ रणि जीतहु जाइ (ग) ४. जुझ (क) जुझ (ग) ५. तवहि विहसि तव वीडा लेइ (क) तखतुहि घसिरी वीडा लेहु (ख) वेगि आइ सौ वाडी लेइ (ग)

(१६६) १. वेउउ (ख) नियउउ (ग) नेडा (ग) २. कवणु (ग) ३. वीडा मागइ सोइ (क) करिवीर बोलेइ (ख) बोल्या परबवणु (ग) ४. जीतस्यौ (क) रणि जीतउ (ख ग)

(१६७) १. कुवरन (क ग) कुमरन (ख) २. तेरा (ग) ३. नहु (क) नउ (ख) ४. जिम (क) किम (ख) किमइ (ग) ५. किरि (क) ६. ताके तोहि (क)

१ वालउ सूर आगासह होइ, तिनको जूभ सकइ घर कोइ ।  
 २ वाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥  
 ३ सीहिरि सीहु जगै जो वालु, हस्ती जूह तंगो पै कालु ।  
 ४ जूह छाडि गए वरा ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥  
 ५ वालउ जै वयसंदरू सोइ, तिहि सुधि न जाणइ कोइ ।  
 ६ रउदवाल हुइ जै परजलइ, पुहमि उभाइ भासमु सो करइ ॥१७०॥  
 ७ तिम हौं वाले राकौ पूत, मोहि आइस देहु तुरंतु ।  
 ८ अरियण दलु भानउ भरिवाउ, जौ भाजउ तो लाजइ राउ ॥१७१॥

(१६८) १. वाला (ग) २. अगासह (क ख) आयसिहि (ग) ३. ताको तेज न सहिहइ कोइ (क) ताको तेज न वरने कोइ (ख) तिसुका तेज न सहई न कोइ (ग)  
 ४. वालउ (क) वालइ (ग) ५. सपं (क) भुयंगु (ख) भुयंगि (ग) ६. डसइ जो आधि (क) डसइ जइ कोइ (ख) डस्या जो कोइ (ग) ७. तिहके (क) ताके (ख) तिसुकइ (ग) ८. होइ (ख,ग) विसि कोइ नाहि उपाव (क)

(१६९) १. सीह (क) सीहु (ख) तिघु (ग) २. हाथी (क) हसती (ख)  
 ३. जूय (क) यूय (ग)

४. जवहि पडहि तव गिचइ भाउ । भाजि जूय जाहि पलाइ (क)  
 जवहि पडइ तहि कउ गंध वाउ । भाजहि जूह छोडि वरा ठाउ (ख)  
 जे उगह ताहि पडइ गंध वाउ । भाजहि यूय छोडि वन ठाउ (ग)

(१७०) १. वाले (ग) २. जे (क ग) ३. बेशंदर (क) वइसावरू (ख)  
 यइसानव (ग) ४. होइ (क ख ग) ५. तिहको (क) तहकी (ख) तिसुकी (ग) ६.  
 बुडि (ग) ७. दव दाभइ जुह जग पजुले (क) सइभाल जे हुइ परजलइ (ग) ८.  
 पज्जलइ (ख) ९. पुहवि (ग) १०. दभाइ (क ख) दाभावइ (ग) ११. भसम सो  
 (क ख) भसमी (ग)

(१७१) १. तिमहो (क) तिवहउ (ग) २. वालउ (क) वालु (ख) वाला  
 (ग) नाइनो पुत्र (क) रायकउ पुतु (ख) राइका पुत्र (ग) ४. मोहक (क) मुहिकइ  
 (ख) मोकहु (ग) ५. जं जं भाजउ तउ लीजइ राउ (ग)

निसुगि वयण<sup>१</sup> मन तूठउ राउ, मयण कुवर कहु करहु पसाउ ।  
कालसंवर<sup>२</sup> तव वीडा देइ, हाथ पसारि मयणु<sup>३</sup> तव लेइ ॥१७२॥

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिये प्रस्थान

वस्तुबंध—भयउ आयसु चलयउ परदवणु ।  
चउरंग<sup>२</sup> दलु<sup>३</sup> साजिउ, पडहु तूर बहु भेरि वजइ ।  
तहि कलियलु बहु उछलयउ, जाणौ अकाल घण मेघ गजइ ॥  
रह सज्जेह<sup>१</sup> गौर गुडे तुरिहय<sup>२</sup> पडियउ पलाणु ।  
हुइ सनधु<sup>३</sup> चलिउ मयणु गयणि न सूझइ भाणु ॥१७३॥

चौपई

मयण चरितु निसुणहु धरि भाउ, जहि रण जिगिबि सिंघरह<sup>२</sup> राउ  
..... १७४॥

(१७२) १. मनि हरविउ (क) ग प्रगति में—सुगि करि वात अभेघउ राउ, मयण कुवर कहु भया पसाउ (ग) २. जब (ख) ते तव (ग) ३. पदमणु (क) परदमणु (ग)

(१७३) १. चलिउ (क) २. चाउरंगु (क ख) ३. दलु (ख) ४. सज्जियउ (ख) ५. काइ (क) ६. वज्जहि (ख) वाजहि (क) ७. तउ तिह (क) ८. जिसउ (क) जणु (ख) ९. अंवरह (क) १०. गाजइ (क) गज्जहि (ख) ११. साजे (क) सज्जे (ख) १२. तुरीयण (क) १३. इसी सनिधि (क) सणइ (ख)

(१७४) १. निराउ (क) जीतिउ (ख) २. सिंघरथु (क) ग प्रति में १७३ और १७४ वां छन्द निम्न रूप से है—  
भया अइसु २ ताम परदवणु,

चतुरंगी सेन सज्जिय । पडहु भेरि बहुतु वज्जहि ॥  
तह कलियर बहु उछलिउ । जणु आकाश ते मेहु गज्जइ ॥  
सर पाइक अर बहुतु दल । तुरियह पडे पलाणु कियो ॥  
पयासाउ मयणि भड । गयणभ सूझइ भाणु ॥

## ध्रुवक

कुवर पलाण्ड सव जगु जरिण्ड, गर्याणहि उछली वेह ।  
 रहिवर साजहि वाजे वाजहि, जाणै भादों के मेह ॥  
 जै अरिदल भंजइ परीवल गंजहि, चुहड चले अप्रमाणु ।  
 ते भगाइ सभूते जाइ पहुते, सबल वीर समराण ॥१७५॥

## चौपई

आवतु देखि कुमर परदवणु, भणै सिंधु यौ वालो कोणु ।  
 वालो रण कि पठावइ कोइ, इहिसउ भीडत लाज मौ होइ ॥१७६॥  
 फुरिण फुरिण वाहरी जंपइ राउ, किम करि वालेहि घालै घाउ ।  
 देखि मया चित्त अपनी ताहि, बाल कुवर वाहुडि घर जाहि ॥१७७॥

## प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

निनुणि वयण कोप्यो परदवणु, हीण वोलु तै बोल्यो कवणु ।  
 बालउ कहत न लाभइ ठाउ, अब भानउ तेरउ भरिवाउ ॥१७८॥

(१७५) लणियउ (क) जणियउ (ख) २. तव राजकुमर पलाण्ड (ग)  
 ३. सह (क) सह (ग) ४. उडी (क) ५. जिन (क) जाण (ख) जाणउ (ग) ६. जव  
 (क) ७. अरियण (ग) ८. सथापह (क) ९. रण सानि (क) ते आण (ग) १०. भये  
 (ख) ११. रव-बूते (ग) १२. प्राइ (ख)

(१७६) १. देखिउ (क) देखा (ग) २. तिहि (ग) इहु (ख ग) ४. बालहु  
 (ख) बालहु (ग) कवणु (ख ग) क—प्रति—कहे तिघरथ छत्री कवण ६. बालउ  
 (क ख) बाला (ग) ७. रिणमहि (क) रणिहि (ग) ८. एह तो (क) इहु तिहु  
 (ख) इहु स्यौं (ग) ९. निरत (क) तिडत (ख) १०. न (क) मुहि (ख) नै (ग)

(१७७) १. बाला देखि जंपियो राउ (ग) २. दया (ख) ३. ननि (ग)  
 क प्रति—तो देखत मोहि मनु विगसाइ, उठि कुमर वाहुडि घरि जाहि (क)

(१७८) १. बुणै (ग) २. बचन (ग) ३. कहि (ग) ४. किव (ग) सान नहि  
 ठाउ (क) ५. इव (ग)

तव रावत काढइ करवाल, वरिसहि वाण मेघ असराल ।  
 भिडइ सुहड करि असिवर लेइ, रह चूरइ मडगल पहरेइ ॥१७६॥  
 मैगल सिहु मैगल आ भिडइ, हैवर स्यौ हैवर आ भिडइ ।  
 पंचावथु जूमू तहि भयउ, गीध मसाण तहा उठीयउ ॥१८०॥  
 सैन जूमि परीधर जाम, दोउ वीर भीरे रण ताम ।  
 दोइ वीर खरे सपराण, दोइ करइ सिध जिमू ठाण ॥१८१॥  
 मलु जूमते दोउ भीडइ, दोउ वीर अखाडो करहि ।  
 हारिउ सिह गयउ भरिवाउ, वांघिउ मयण गलै दे पाउ ॥१८२॥  
 वस्तुबंध—जवहि जित्यउ कुवर परददगु

सुर देखइ ऊपर भए, वांघि स्यंघरहु कुमर चलिउ ।

मयण सुगुण सधेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणांदियउ ॥

देखि राउ आणांदियउ, तू सिवि कीयउ पसाउ ।

महु रांदण जे पंच-सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चोपई

मयण चरितु निसुरिण सवु कोइ, सोला लाभ परापति होइ ।

(१७६) १. करि ले (ग) २. असराल (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर  
 चूरमड गल विहरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क)  
 ४. सिउ (ख) ५. संघडिउ (ख) तुलि चढै (ग) ६. हयवर सेती हयवर सार (क) पचावथु  
 (ख) पंचवरसु (ग) ७. जव (ख) ८. गिद्ध (ख) गर्ध (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि  
 करि गयउ (ग) (क) इणि जूम करत वडवार (क)

(१८१) १. सेना (क ख) सैन्या (ग) २. रणि (ग) ३. बहरी (ग)

(१८२) १. मारन (क) माल (ख, ग) २. राउ (ग) ३. वांघि (ग)  
 ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. अचिरज (क) ग प्रति— जइ कीयो तव सूरि  
 तहि ३. वांघि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. इहु (ख)

(१८४) १. सोलह (क ख ग) २. देवा पड घण सो वन जयउ हयोह चडि  
 सिंघरउ घरि गयउ (यह पाठ क प्रति में हैं) ग प्रति में इस छन्द का पूरा पाठ  
 नहीं है ।



विजाहर तव करइ पसाउ, बांध्यो छोडि स्यंघरउ राउ ।  
 देइ<sup>२</sup> पटु पुणि आकउ लयउ, समदिउ स्यंघराउ घर गयउ ॥१८४॥  
 तव<sup>१</sup> कुम्बरन्हि<sup>२</sup> मन<sup>३</sup> विसमउ<sup>४</sup> भयउ, जियत<sup>५</sup> वुआल<sup>६</sup> हमारउ भयउ ।  
 इतडो<sup>७</sup> राइ न राखियउ मान, पालकु<sup>८</sup> आरिण<sup>९</sup> कीयउ परधानु ॥१८५॥  
 तवहि<sup>१</sup> कुवर<sup>२</sup> मिल<sup>३</sup> कीयउ उपाउ, अरव<sup>४</sup> भानउ इनकौ भरिवाउ ।  
 सोला गुफा<sup>५</sup> दिखालइ आजु, जैसे होइ निकंटकु<sup>६</sup> राजु ॥१८६॥  
 कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना  
 एह मंत्र जिण भेटइ कवरणु, लियउ वुलाइ कुमर परदमणु ।  
 कियो मंतु सव कुमर मिले, खेलण मिसि वण क्रीडा चले ॥१८७॥  
 भराहि कुवर निसुराहि परदवरणु, विजयागिरि उपर जिण भवरणु ।  
 जो नर पूज करइ नर सोइ, तिहि कहु पुत्र परापति होइ ॥१८८॥

(१८५) १. सव्व (ग) २. कुमर (क) कुमरहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विदामो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) देखुछु (ग) ६. आलु (क) अहलु (ख) हालु (ग) ६. गयउ (ख) थयउ (क) कौया (ग) ७. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ८. राखिय (क) राखिय (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तव (क) २. कुमर (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इव भागा (ग) इव अनि हिया कउ भडिवाउ (ख) ५. दिखावहि (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरहु (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. भेटउ (क) भेटइ (ख) भोटइ (ग) ३. कवरण (क) कडण (ग) ४. चालहु जाहि लेण (ग) ५. भाई सवि (क) ते खिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति में निम्न पाठ है—

जाइ जा लेण मुचति क्रीडा को चले !

(१८८) १. भाजहु (ग) २. देखउ (ग) ३. तिहं (क) तह (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क, ख, ग) ५. तिह को (क) तिसकौ (ग) ६. पुनि (क) पुत्र (ख, ग)

निसुगिण वयण हरष्यो परदवणु, चढि गिरवरि जोवइ जिणभवणु ।

चढी जो देखइ वीर पगारू, विषमु नागु करि मिल्यउ फुकारू ॥१८६॥

हाकि मयणु विसहरस्यो भीडइ, पकडि पूछ तंहि तलसीउ करइ ।

देखि वीरू मन चिभिउ सोइ, जाख रूप होइ ठाढो होइ ॥१८७॥

हुइ कर जोडि करइ सतिभाउ, पूवहुँ हूँ तु कण्णखउराउ ।

राजु छाडि गयउ तप करण, सोलह विद्या आफी धरण ॥१८८॥

हरि धर ताह होइ अवतरणु, तुहि निरखि लेइ परदवणु ।

यह थोखी तसु राजा तगी, लेइ सम्हालि वस्त आपणो ॥१८९॥

(१८६) १. हरषिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चढि गिरि (क) चढिवि  
सिखर (ख) चढि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चढियउ (क) चढियउ जो (ख)  
चढिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीर पगार (ख) वीर पगारि (ग)  
७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख ग)

(१८७) १. सिहु (ख) सउ (ग) २. भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि  
(ग) ४. शिरु कियउ (क) सिरु करिउ (ख) सिरु करया (ग) ५. मइ (क) मनि  
(ख,ग) ६. विशनद होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जखि (क) जखल (ख) जंख (ग)  
८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. रुठउ कोइ (क) वइठा होइ (ग)

(१८८) १. कहइ (क,ग) २. पुवइ हूँ (क) पूरवह (ग) ३. हूँ तउ (क)  
हित (ग) ४. कर्णखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहचल्या  
(ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आपी (क) आपी (ग)

(१८९) १. हरित्थर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवत्ताणि (क)  
अवतणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न. राखि (क) ६. लिहि परदमणु (क) विद्या  
आपणी (ख) ७. हइ छोड (क) थवणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वसत (क) वसतु (ग)

नोट—१८९ वां छंद (ग) प्रति में नहीं है--

## १६ विद्याओं के नाम

हिय-आलोक अरू मोहणी, जल-सोखणी रयण-दरसणी ।  
 गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ-दरिसणी सुधा-कारणी ॥१६३॥  
 अग्नि-धंभ विद्या-तारणी, बहु-रूपणि पारणी-बंधणी ।  
 गुटिकास्तिवि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१६४॥  
 धारा-बंधणी बंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।  
 रयणह जडित अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि आफउ आणि ॥१६५॥  
 आफि मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि वीरू तहा आणइ चलउ ।  
 सो मयरद्धु सपत्तउ तहा, हरिसय पंच सहोयर जहा ॥१६६॥  
 कुमरन्हि पासि मयणु जव गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।  
 उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, डूजी गुफा दिखालइ आणि ॥१६७॥

(१६३) १. गेहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से निम्न प्रथम वरणा के हिय के स्थान पर एक संमट (क) एक मूडा (ख) एक सुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडित (क) राइ (ग) २. त्रिणि (क) तहि (ख) तिह (ग)  
 ३. बीना (क) सो (ग)

(१६६) १. त्रि (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. आगति (क) भग्गहा (ग)  
 ४. सरिठ (ग) ५. मइरबड (क) मइराधा (ग) ६. पट्टो (क) आयो (ग) ७. हिव  
 पंचसह (क) हहिसयपंच (ख, ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. बीजा (क) २. जाइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु, कालासुर दैयतु तहि ठाउ ।  
 पूरव चरितु न भेटइ कवणु, तिहि सिहु जाइ भिरइ परदवणु ॥१६८॥  
 हाकि कुवर धर पाडिउ सोइ, हाथ जोडी फुरिण ठाढो होइ ।  
 पवरिषु देखि हियइ अहि डरइ, छत्र चवर ले आगइ घरइ ॥१६९॥  
 वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किंकर फुरिण लागइ पाइ ।  
 फुरिण सो मयणु अगुहडो चलइ, तीजी गुफा आइ पइसरइ ॥२००॥  
 नाग गुफा दीठी वर वीर, अति निहालिउ साहस धीरु ।  
 विषमु नागु घणघोर करंत, सो तिहि आइ भिडिउ मयमंतु ॥२०१॥  
 तव मयण मन करइ उपाउ, गहि विसहर भान्यउ भरिवाउ ।  
 देखि अतुल वल संक्यो सोइ, हाथ जोडि फुरिण उभो होइ ॥२०२॥

(१६८) १. सुहनाणि (क) तिह नांव (ख) २. काल सरोवग (क) कालु संभु (ग) ३. देखो (क) दोन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) टाउ (ग) ५. रचित (क) वित्तु (ग) ६. तिह ठा (क) तिहि सहु (ख) तिन्हस्यो (ग) ७. भिडइ (क) भिडिउ (ख) लड्या (ग)

(१६९) १. हाक्या (ग) २. सो (क) पछा (ग) ३. पाडइ (क) पडया (ग) ४. छिणि (क) सो (ग) ५. पौरिष (क) पउरिषु (ख) पउरषु (ग) ६. अति डरइ (क) गहवरइ (ग) ७. छत्रु (ग) छत्तु (ख)

(२००) १. लाग्ना (ग) २. ते (क) सु (ग) ३. आगउ चलइ (क) ती अगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संचरइ (क)

(२०१) १. वेडी (क) जवदीठी (ख) २. वीरि (ख) ३. घूत (क) बइतु (ख) रूप (ग) ४. निकलउ (क) निहाली (ग) ५. घुरवरंत (क)

(२०२) १. तवही (क ग) २. करइ (क) वहुकिया (ग) ३. अरव (क) तहि (ख) ४. भानो (क) भानउ (ख, ग) ५. अतिवर (ग) ६. संकिउ (क ख) संक्यां ७. लोइ (ग) ८. करिविनव सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयण कुवर वलिवंतउ जाणि, चंद्र सिधासरु अप्पउ आरिण ।  
 नागसैज वीणा पावडी, विद्या तीनि आरिण सौ धरो ॥२०३॥  
 सेनाकरी गेह-कारणी, नागपासि विद्या-तारणो ।  
 इनडौ लाभ तिहा तिह भयो, फुरिण सो नारण सरोवर गयो ॥२०४॥  
 न्हात देखि धाए रखवाल, कवरा पुरिषु तू चाहिउ काल ।  
 जो सुर राखि सरोवरु रहिउ, तिहि जल न्हाइ कवरा तू कब्जउ ॥२०५॥  
 तवइ वीर वोलइ प्रजलेइ, आवत वञ्च भेलि को लेइ ।  
 जै विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु जुभरणह समत्थ ॥२०६॥  
 तव रखवाले मिलइ सारण, विषमु वीरु यह नाही मान ।  
 उपरा उपरु करइ मुह चाहि, मयरघउ वरु अप्पहि आरिण ॥२०७॥

(२०३) १. विय (ग) २. वीघउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पासि (क)  
 ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सेनारो (क) सेना कारणी (ख) २. एवडउ (क) चडतु (ख)  
 इतना (ग) ३. थी (क) ते (ग) ४. न्हाण (क ख, ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चत्थो (ग)  
 ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाण  
 (क ख) ८. मुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति में ३-४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पजलेइ (ख) इतने सुणत मयण परजलेइउ (ग)  
 २. आवत तुम्ह भाडिब करि लेहु (क) अबतु वञ्च भलिय को लेइ (ख) आवतु दालि  
 भकौलवि चारथो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि  
 भूम करण (क) ६. मूलपाठ हाय और समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अवशाणि (क) मिलवहितपनु (ख)  
 चोलण ३. हम (क) इहु (ख ग) ४. जाणइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. रुपु (ख)  
 ६. कहहि (क, ख) करइ (ग) ७. मयरघा (क) मयरठ (ख) मइराघ्य (ग) ८. वर  
 (क) वलु (ग) ९. आफहि आह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अमिनिकुंड गड जव वर वीरू, करइ आण हिव साहस धीरू  
उठउ सरवरू चलियउजाणि, अग्नि कपड तहि आपिउ आणि॥२०८॥

लेतइ वीरू अगडो चलइ, विरख आंव तो दीठउ फल्यउ ।

आउ आंव तोडी सो खाइ, वंदरूदेउ पहुतउ आइ ॥२०९॥

कवणु वीरू तू तोडहि आम, मुहिसिहुं आइ भिडहि संग्राम ।

कोपि मयणु तव तिहिपह गयउ, तिहुसहु जुम्भु महाहउ कियउ॥२१०॥

मयण पचारि जिणउ सो देउ, कर जोडइ अर विणवइ सेव ।

पहुममालु दुइ हाथह लेइ, अर पावडी जुगलु सो देइ ॥२११॥

तउ लइ मयण कयथवण गए, पयठइ मयण फुणि उभे भए ।

गयउ वीर जउ वणह मभारि, दूरू गौरू उठिउ विचारि॥२१२॥

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जव गइयउ (ख) २. आण हिव (क) भंपता साइ (ख) भंपतह (ग) ३. उठउ (क,ख) तूहा (ग) ४. सुरवर (क ख) ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपड (ख) निपाटु (ग) ७. आयो जाणि (क) दोम्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ आणहिव के स्थान पर आपतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहइ (ख) अगहा (ग) ३. वलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. आंव (क) अत्रोक (ग) ६. फो (क, ख) ७. फणिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग) ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. आंव (क) आंव (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोस्यो (ग) ४. केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिन कियो (क) मालावचु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि सु विनवइ सोव (ग) ३. चहु (क ख) ४. पुहव (ख ग) पहुव (क) ५. युगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तव ले (ख ग) २. कयत्य (ग) ३. गयउ (ग) ४. जहुठइ (ख) पइठि (ग) ५. वीरू (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अभा-भया (ग) ८. ले ले मयण गउ (क) ९. जे (ग) १०. डुठरू (ख) दुधर (क) रूधरू (ग) ११. विचारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है ।

सा<sup>१</sup> गैरू<sup>२</sup> गरूवो<sup>३</sup> मयमंतु, हाथि<sup>४</sup> कुम्बरू<sup>५</sup>स्यो भिरउ<sup>६</sup> तुरंतु ।  
 मारि<sup>१</sup> दंतुसल<sup>२</sup> तोडइ<sup>३</sup> सोइ, चडिवि<sup>४</sup> कंधि<sup>५</sup> करि<sup>६</sup> अंकुस<sup>७</sup> देइ ॥२१३॥  
 पुणि<sup>१</sup> वावी<sup>२</sup> लइ<sup>३</sup> गए<sup>४</sup> कुम्वार, तइ<sup>५</sup> विसहरू<sup>६</sup> गिणवसइ<sup>७</sup> एंकालु ।  
 जाइ<sup>१</sup> वीरू<sup>२</sup>तहां<sup>३</sup> उपर<sup>४</sup> चढइ, विसहर<sup>५</sup>निकली<sup>६</sup> मयणस्यो<sup>७</sup>भिडइ ॥२१४॥  
 तहि<sup>१</sup> गहि<sup>२</sup> पूछ<sup>३</sup> फिरावइ<sup>४</sup> सोइ, विलख<sup>५</sup> वदनु<sup>६</sup> तउ<sup>७</sup> फुणवइ<sup>८</sup> होइ ।  
 फुणि<sup>१</sup> तिहि<sup>२</sup> विसहर<sup>३</sup> सेवा<sup>४</sup> करो, काममू<sup>५</sup>ंदरी<sup>६</sup> आफी<sup>७</sup> छुरी ॥२१५॥  
 मलयागिरि<sup>१</sup> पर<sup>२</sup> जव<sup>३</sup> गयउ, करि<sup>४</sup> विसादु<sup>५</sup> फुणि<sup>६</sup> उभउ<sup>७</sup> भयउ ।  
 अमरदेव<sup>१</sup> तहि<sup>२</sup> आयउ<sup>३</sup> धाइ, निजिणि<sup>४</sup> कद्रप<sup>५</sup> धरीउ<sup>६</sup> रहाइ ॥२१६॥  
 हारयो<sup>१</sup> देवभगति<sup>२</sup> तिस<sup>३</sup> करइ, कंकणु<sup>४</sup> जुवलु<sup>५</sup> आणि<sup>६</sup> सो<sup>७</sup> धरइ ।  
 सिखरू<sup>१</sup> मुकद्द<sup>२</sup> देइ<sup>३</sup> अवि<sup>४</sup> चारू, आपिउ<sup>५</sup> आणि<sup>६</sup> वस्त<sup>७</sup> उनिहारू ॥२१७॥

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय  
 (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरसिद्धं (ख) कुवरू (ग)  
 ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) चुरि (ग) ८. फुणि मानो  
 सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. वावडी (क) विविमो (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार  
 (क, ख) कुवारू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि सूर इक  
 करइ भंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. चढयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क, ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. आपी (क) अर  
 आफी (ख) आपउ (ग)

(२१६) ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग)  
 ३. विसइ (ख) विसमादुसु (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा नया (ग) भयो (क)  
 ६. कुवर संघाति करइ लडाइ (क) रिण्जि रिण्कद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या  
 मुकद्रप रहया थाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिसं कर इहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग)  
 २. युगल ते (क) जुगल (ग) ३. धरहि (क) जि दीनउ झाइ (ख)  
 आणि सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिचारू (क)  
 ६. आप्या (क) आफि (ख) ७. आपिउ (ख) ८. उरहारू (क ख) अरूहारू (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तह आयउ वाइ' पाठ है ।

वरहासेण गुफा ही जहा, कुवरन्हि मयण पठायो तहा ।  
 तिहि ठा अमरदेउ हो कोइ, रूप वरह भयो खण सोइ ॥२१८॥  
 सूवर रूप आइ सो भिडउ, मारिउ मयणि दंतसलि भिडउ ।  
 पुष्प चापु दीनउ सुरदेउ, विजहसंखु आपिउ तहि खेउ ॥२१९॥  
 तवहि मयणु वण वयठउ जाइ, दुष्ट जीउ निवसइ तह आइ ।  
 वण मा मयण पहुँतउ तहा, वीरु मणोजो बांधिउ जहा ॥२२०॥  
 वाधिउ वीर मनोजउ छोडी, फुणि ते वणमा गए वहोडी ।  
 जहि विजाहरि एतउ कीयउ, सो वसंतु खण बंधिवि लियउ ॥२२१॥  
 फुणि सु मनोजउ मनहविसाइ, कुम्बर मयण के लागइ पाइ ।  
 हाथ जोडि सो कहा करेइ, इंदजालु विद्या दुइ देइ ॥२२२॥

(२१८) १. वारहसेन (क) वराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. हहि (क) जव गयउ (ख) यो जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क) हइ (ख,ग) ७. यकउ (क) भयउ (ख) मया (ग) ८. रहि (क) हइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख,ग) ३. दंतसल भडइ (क) दंतसलु ऋडिउ (ख) हेठि सो वीया (ग) ४. पुहप (ख) पुहपि (ग) ५. चाप (क ख) चंपि (ग) ६. हुनइ (क) दीना (ग) ७. सुरदेह (क) सुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख) वाजि (ग) ९. आयो (क) आपिउ (ख ग) १०. तिरिण जहां (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपवरिण (ग) २. पयट्टइ (क) वणि (ख) पड्डा (ग) ३. दुइ (ख) ४. पुहीम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहुँतो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिणि (क) ४. विधाघरि (क) विजजाहरि (ख) ५. सोतिणि फुमरि वेधि छिणि लियउ (क)

(२२२) १. मनोजव (क) २. मनि विहसाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४. काहुउ करइ (क) ले घरइ (क)

नोट:—ग प्रति में २२० से २२६ तक के छन्द नहीं हैं ।



उवसंत मनि भयउ उछाहु, दीनी कन्या ठयहु विवाहु ।  
 वहु भगति बोल सतिभाइ, फुगि विजाहुरू लागइ पाइ ॥२२३॥  
 अरजुन वगह वीरु जउ जाइ, तिहि वण जरहु पहुतउ आइ ।  
 तिहिसउ जुभ अपूरव होइ, कुसमवाण सर आपइ सोइ ॥२२४॥  
 फुगि सो वीरु विउण खण गयउ, विलतरंग सिरि उभउ भयउ  
 विरखु तमाल तणउ हइ जहा, खण मयरद सपतउ तहां ॥२२५॥  
 फटक-सिला वयठी वर नारि, जपइ जाप सो वणह भभारि ।  
 तउ विजाहर पुछइ मयणु, वण मा वसइ गारियह कुम्बरणु ॥२२६॥  
 तउ वसंत मन कहइ विचारि, रतिनामा यह बूचइ नारि ।  
 अति सरूप सुहनाली नयण, लेइ विवाहि कुम्बर परद्वरणु ॥२२७॥  
 तव मयण मन भौ उछाहु, दीनी कुवरि आढए विवाहु ।  
 फुगि सो मयण सपतउ तहा, हहि सयपंच सहोयर जहा ॥२२८॥

( २२३ ) १. तव वसंत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीनी (क) ४. भिए (क) ५. लागउ (क)

( २२४ ) १. अरजुण (क) २. वीरजव (क) जखि (क) ४. पहुतो (क) तिहसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफंड (ख)

( २२५ ) १. बलि खण (क) २. विरख लता (क ख) ३. उग (क) तति (ख) ४. विरख (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ख)

( २२६ ) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

( २२७ ) १. बलि वसंत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. वीजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयण (क ख)

( २२८ ) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. दीठी (क ख) ४. तणउ (क) आढयो (ख) ५. खइ जइ (क) जहि सइ (ख)

२२४—मूल प्रति में तिहितउ जुभ के स्थान पर तिहिसउज

पभणइ कुवर मुहामुह चाहि, विषमु वीरं यह मानन आहि  
 सोलह गुफा पठायो मयण, तह तह मिलहि वस्त्र आभरण ॥२२६॥  
 मयणह पौरिखु देखि अपारु, तव कुम्बरन्हि छोडिउ अहंकार  
 सवहु मिलि सलहिउ तहि ठाइ, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥

वस्तु बंध—पुन्नु वलियउ अहि संसार ।

पुन्नु सेम्बहि सुर असुर, पुन्नु सफलु अरहंत जंपिउ ।  
 कत रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेत ले सिला चंपिउ ॥  
 जमसंवरु कत लै गयउ, कनयमाल घरितह गयउ विरिद्धि ।  
 सोलह लाभ महंतु फलु, पुण परापति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि राज भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजइ सुरलोइ ।  
 पुन्नहि अजर अमर मुगभणा, पुन्नहि जाइ जीव रिणव्वाणा ॥२३२॥

(२२६) १. चितइ (क) पभणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क)  
 माणु न (ख) ४. विलायी (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडियउ (क) छाडियउ (ख)

(२३१) १. गुरुवउ (क) २. आहि (क ख) ३. संसारि (क ख) ४. पुनि  
 (क) ५. फलइ (क) ६. जारिणउ (ख) जैपइ (क) ७. कितु (क) ८. कित धूमकेत (क)  
 ९. कित (क) लइ (ख) १०. सिला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कह  
 (क) किसो पुनइ अविहउ रिधि-यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलता है । १३. नोट-  
 भूल प्रति का पाठ 'घरि वंधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुन्न बडउ जु जगत महि होइ (ख)  
 २. अजरामर (ख) ३. पव ठाय (क) अमर विमाण (ख) ४. निरवाणि (क)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लइ अविचार, चम्बर छत्र सिर मुकट अपार ।  
 नागसेज जो रयणीनी जरी, असीणी कपड वीणा पावडी ॥२३३॥  
 विजयसंख कौसाद अपार, चंद्र संधासरा सेखरा हार ।  
 सोहइ हाथ काममुंदरी, पहुपचाप कर कडिहा छुरी ॥२३४॥  
 कुसुमुवारा कर हाथह लेइ, कुंडल जुवल सम्बरा पहरेइ ।  
 राजकुवरि दुइ परिणइ सोइ, चडि गैयर फुरिण ऊभौ होइ ॥२३५॥  
 कंकण जुगल रयणि अनिवार, अर दूइ लेइ पुण्ण की माल ।  
 न्हानी वस्त गरण तह कवण, इतनउ लेनि चलउ परदवण ॥२३६॥  
 मयण कुवर घर चलयो तुरंत, मेघकूट खण जाइ पहुत ।  
 जमसंवर भेटिउ तिहि ठाउ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३७॥  
 भेटि राउ फुरिण उभो भयो, मयण कुवर रणवासह गयो ।  
 कनकमाल खण भेटो जाइ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३८॥

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख)  
 रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपट (ख)

(२३४) १. कौसाद (क) कजसवटु (ख) २. सेरचर (क) ३. संधासरा (क)  
 ३. मूँवडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. अवण (क) सबराह (ख)  
 ३. जाइ (क) ४. गहयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पुहप (क ख) ३. वस्तु (क) वस्तु (ख)  
 ४. गणइ (क) गणइ (ख) ५. इह (क ख) तिहि (ख) ६. एली (क) इतनउ (ख)  
 ७. ले (क) लइ (ख) ८. चालिउ (क) निकलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खरिण (ख) खरिण (क) ३. आइ  
 (क) ४. काल (ग) ५. नइ घइठउ आइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राव (क) २. पुणि (क) तव (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग)  
 ४. फुरिणवि मयण (ग) ५. कणयमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क)  
 लागो (ख) लःगा (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप मयण वर वीर, कामवाण तसु हयउ सरीर ।  
फुण्णि सो अंचलु लागी धाइ, करि उनरुवह चलयोउ छुडाइ ॥२३६॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुण्णि सो मयणु सपतउ तहा, वण उच्चान मुनिस्वरु जहा ।  
नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो जुगतउ होइ ॥२४०॥  
कणयमाल माता मुह तणी, सो मोपेखि कामरस घणी ।  
आंचल गहिउ छाडि तहि काणि, कारणु कहहु कवण मुहि जाणी ॥२४१॥  
त मुणियर जंपइ तंखीणी, कहहु वात तुह जम्मह तणी ।  
सोरठ देस वारमइ ठाउ, तिहि पुरि निमसै जादमराउ ॥२४२॥  
ताकी घरणि आहि रुकिमिणी, जह कीरती महमंडल घणी ।  
तिहि सम तिरी न पूजइ कोइ, कंद्रप जगणि तिहारी होइ ॥२४३॥

(२३६) १. मयण सुन्दर (ग) २. न मुहयउ (ख) हण्ड (क) तिसु हुआ  
(ग) ३. अंचलि (क ग) ४. कहि (ग) ५. उत्तर (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं हैं

(२४०) १. जे (क) जुगती (ग) २. जैन धर्म हइ निदचय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३ मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग)  
४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हम (ग) ६. देखि (क ग) ७. सरि हणी  
(क ग) हणी (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुणीतर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तव (ग) २. तंघिणि (ख) ३. जनमह (क) जम्मंतर  
(ख) जनमह (ग) ४. द्वारिका (क) वारव (ग) ५. स्वामी (क) निवसइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) तिसु की (ग) २. परिणी (ख)  
३. अच्छइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहसरि (ग) ६. भोनवि (क) तिरिय न (ख)  
तिया न (ग) ७. तुहारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेतु है तू हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि गयो ।  
 जमसंवर तोहि पालिउ आणि, सो परदवन आप तू जाणि ॥२४४॥  
 करायमाल तुव, अंचल गहिउ, पूव जन्म तो सनमघ भयउ ।  
 जइ वह तोसिहु पेमरस भीनि, छलु करि लीजहि विद्या तीनि ॥२४५॥  
 निसुरिण वयण सो वाहुडि जाइ, कनकमाल पह वइठउ जाइ ।  
 विद्या तीनि मोहि जउ देहि, जुगतो पेसणु करिहो तोहि ॥२४६॥  
 रस की वात कुवर पह सुरी, पैम लुवधि अकुलाणी घरी ।  
 जमसंवर की करीय न कारिण, तीनिउ विद्या आफी आणि ॥२४७॥  
 पूरव दाउ कुम्बर मन रत्यउ, फुरिण विद्या लइ वाहुरि चलिउ ।  
 हम्बु तुम्हि पूतु जराणी तू मोहि, जगतउ होइ सु पेसणु देहि ॥२४८॥

(२४४) १. तिह यो हडिलियो (क) तउ तू हडिलिउ (ख) तुम्हि हडि ले गया (ग) २. उट्टियउ (क) उठि गयउ (ख) उट्टि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपुरव (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है ।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) बेहि (ग) ३. संनघ (ग) ४. जो बहू होइ (क) जइ हउ हतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरम (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. वहुडिउ (ख) ३. आइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५. जुगन (क, ख) जुगति (ग) ६. पलउ (क) विसणुह (ग) ७. करिहु (क) होइ (ख) हउ करिख्यो (ग) ८. देहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुवघ (क) प्रेम लुव्व (ग) ३. तीनइ (क) तीन्हों (ग) ४. सउपी (ग)

(२४८) १. परिमउ (क) कडिउ (ख) पूरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. छिण (क) ले (ग) ४. सो (ग) ५. वाहुडि (क ख ग) ६. चलयो (क) मलिउ (ख) ७. हम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हुई (ग) ११. युगत (क) जुगति (ग) १२. पवतउ (क) १३. करिउ क्यो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणायमाल तव धसक्यो हीयउ, मोसिहु कूडकूडीया कीयउ ।  
 इकु तउ लाज भइ मत टल्यउ, अवरू हाथि लइ विद्या चलिउ ॥२४६॥  
 कणायमाल तउ विसमउ धरइ, सिर कूटइ कुकुवारउ करइ ।  
 उर थणहर मह फारह सोइ, केस छोडी विहलंगन होइ ॥२५०॥  
 इक रोवइ अरु करह पुकार, कालसंवर रा जाणी सार ।  
 कुमर पांचसै पहुते जाइ, कनकमाल पह वइठे आइ ॥२५१॥  
 कालसंवर सउ कहउ सभाउ, इहि दिषि पालक कीयउ उपाउ ।  
 धरम पूत करि थापिउ सोइ, अरु सो मोकहु गयो विगोइ ॥२५२॥  
 कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना  
 निसुणि वयण नरवइ परजलीउ, जाणौ घीउ अधिकु हुतासणु परिउ ।  
 कुवर पाचसह लिये हकारि, पवण वेगि इहि आवहु मारि ॥२५३॥

(२४६) १. धसकैया (ग) धसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क)  
 मुहि सिहु (ख) मोस्यो (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अरु मोहि (क) इकु सहु (ख)  
 इकुतो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टालिउ (ख) मनु टलिउ (ग)  
 ८. ले विद्या हायह ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३. पीटइ (ग) ४. कुकुवर (क) कुकु  
 भारउ (ख) अरु कूकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नह (ख) करि (ग) ६. फाडइ  
 (क ख) पोटइ (ग) ७. खोलि (ख ग) ८. विहलघल (क ख) विहलंगलि (ग)

(२५१) १. जरइ सार (क) राजा पासि जयावउ सार (ग) २. पंचसइ  
 (क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्यो (क) सिउ (ख) तव वइठ्ठा आइ (ग) २. दिखु (ग)  
 ३. बालक (क ग) पालागी (ख) ४. किउ एह उपाव (क) कीयउ उपगार (ख) कीया  
 उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापी (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुणो (ग) २. जणु (ख) ३. पूत (क) धिरत (ग) ४. वसंनर  
 (क) हुवासए (ख) वेसंदर (ग) ५. भलिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६. चडिहु  
 वेगिइ सु ७. लुम (क)

तव कुवर मन पूरउ दाउ; इहिकहु भयउ विरुद्धउ राउ ।  
 मिलि सब कुवर एकठा भए, मयण बुलाइ कुवर वण गए ॥२५४॥  
 तवइ अलोकणि विद्या कह्यउ मयण अचंकित काहे भयउ ।  
 एह बात हो कहौ सभाइ, ए सब मारण पठए राय ॥२५५॥  
 तव रिसाणौ साहस धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर ।  
 चारि सौ नानाणौ आकउ भरइ, बावि घालि सिला सिर धरइ २५६  
 एकु कुम्बर राखिउ कमार, राजा जाइ जगाइ सार ।  
 तुहि जउ राय भरोसउ आहि, दणु परिगह आणइ पलणाइ ॥२५७॥  
 जमसंदर रा वइठउ जहा, भागिउ कुवरु पुकारिउ तहा ।  
 सयल कुम्बर वापी मह घालि, उपर दीनी वज्र सिल टाल ॥२५८॥

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरइ (ग)  
 ३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख)  
 ५. अहि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (कख)

(२५५) १. आलोकणि (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग)  
 ३. मयण काइते डीलउ कहइ (क) संभलु; मयण कुवर मति कहइ (ग) निवितउ  
 (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुभ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख)  
 रीसाणा (ग) ३. सहस सधोस (ग) ४. चारिसइ निनाण्यो (क) चारि निनाण्यो (ख)  
 चउसइ नंभ्याण (ग) ५. आगइ धरइ (क) आको भरा (ख) अंको भरउ (ग)  
 ६. वापि (ग) ७. सुहड (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उवारि (ग) २. राजाहि (कख ग) ३. जणावहि (ख)  
 ४. तुहि सइ (ख) जे तुम्हु (ग) ५. बलु (कख) दल (ग) ६. परियण (क) ७. सब  
 खेह (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पनाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहूँता (ग) ४. महि (क ग)  
 मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. दीवी (क) ७. शिला अडाल (क) शिला टाल (ख)  
 हताल (ग)

## जमसंवर और प्रद्यम्न के मध्य युद्ध

निसुणि<sup>१</sup>वयण<sup>२</sup>मन कोपिउ<sup>३</sup> राउ, आजु मयण<sup>४</sup> भानो भरिवाउ ।  
 रहिवर साजे गैवर गुडे, तुरिय पलागे पाखर परै ॥२५॥  
 धनुक पाइक अरु छुरीकार, अतिवल चलत न लागी वार ।  
 आवत देखि मयण कह करै, सैनाकरि सयन रची घरै ॥२६॥  
 जाइ पहुतउ दल अतिवंत, तहा हाकि भीडइ मयमंत ।  
 रावत स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥  
 जमसंवर कहुं आइ हारि, चउरंगु दलु घालिउ मारि ।  
 विजाहुरु रा विलखउ भयो, रहवरु मोडिनयर मह गयउ ॥२६२॥

(२५६) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. मानउ (ख) भागउ (ग) ३. भडिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६. तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. घाणुक (क ख) घाणुप (ग) २. कराहि (ग) ३. अविचल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हयियार सुभट ले जाहि (ग) ५. मद्यु (ख) ६. क्या (ख) के (क) ७. निहरत्यो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि साम्हउ संचरइ (क) सयना कहव सयनु रचि घरहु (ख) माया रुप सयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहुता (क) पहुते (ख) २. वलवंत (क) मिति आयो दलु जबहि अननु (ग प्रति) ३. वेगइ आइ (क) तहं तहं हांकि भिडे मयमंत (ख) तव रयु हकि भिड्या मयमंतु ४. रहवर सिहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. हुटइ खडग पडइमुंड ताम (क) हुटहि तुंड मुंड वर जाम (ख) हुटहि रुंड मुंड वह ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. वलु (ख) ४. चल्लिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तव (ग) ६. विलखा (ग) ७. मयण कुवर सहु दलु मारिया (ग)



पु१ गिण मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव कहइ निरुत ।  
कनकमाल हउ आयउ तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥  
निसुगि वयण अकुलानी वाल, जागि सुहइ वज्र की ताल ।  
जिहिलगी सामी एतउ भयउ, मो१ पह छीनी कुवर ले गयउ ॥२६४॥  
वस्तुबंध—एह नरवइ सुगिउ जव वयणु ।

विजाहर कारण करइ, तिय चरितु सुगि हियउ कंपिउ ।  
उरुषु रुहडे फाडियउ मोहि सरिसु इगि अलिउ जंपिउ ॥  
पेम लुवधै कारणै आपी विद्या तीनि ।  
अव मोस्यो परपंचु करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

---

(२६३) १. पिण (क) फुण २. तह (क) ३. आपी आखउ (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवर तव विलखा भया, वलु छोड्या घर कहु जहि गया ।

जहति जातह बोलै एह, तीन्यो विद्या बेगी देहु ॥२५२॥

(२६४) १. नारि (ग) २. तिरि वजी पचताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी  
(ग) ४. एहवा (ग) ५. मुभ (क) मोहि विगोइ छीनी ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. कलुषा (ग) करणु (ख) ३. भिया (क) तिया (ग)  
४. एस रूप मइ समभियउ (क) कंपइ उमुदा घर हरइ (ख) उरुषुरु होइ पूरहस्यो  
(ग) ५. आलु (क) आल (ग) ६. लुवधि (क ख) ७. परपंचु (क ख) ग प्रति—

बहु भूरइ तह राज मनि, देख चरितु इहु तेरि ।

प्रेम लुवध फइ कारणिहि, सबपी विद्या एणि ॥

## चौपई

देखि चरित जव बोलइ राउ, अरु मो भयउ मरण को ठाउ ।  
 तिरियहं तराउ जु पतिगउ करइ, सो माणस अणखुटइ मरइ ॥  
 तिरिय चरितु निसणउ भरिभाउ, विलख वदन भउ खगवइराउ । २६६

## ध्रुवक छन्द

## स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ, निउ पिउ छोडइ अरु भोगवइ ।  
 तिरियहि साहस दुणौ होइ, तिरिय चरित जिण फुलइ कोइ ॥ २६७ ॥

## चौपई

नीची बुधि तिम्वइ मनि रहइ, उतिमु छोडि नीच संगइ ।  
 पयडी नीच देइ सो पाउ, एसो तिवइ तराउ सहाउ ॥ २६८ ॥

( २६६ ) १. पुण्ड्रि (क ख) तव (ग) २. सोभइ (क) २. इव मोहि जुगतउ  
 मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) तियां (ग) ५. पतिगउ (ख) पतिगह (क)  
 भरोसा (ग) ६. मूरिख (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखुंटी (क ख) ८. त्रिय (क)  
 तिरिय (ख) तिया (ब) मूल पाठ तिनिय ९. चुणह (ग) १०. धरिभाउ (ग) ११.  
 पयउ (क) तह (ग) १२. तव राउ (क) बोलइ राउ (ग)

( २६७ ) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ख)  
 याहयु (ग) मूल पाठ केवल पिउ है । ३. छोडि (क ख ग) ४. पौरिष (क) ५. दुणउ  
 (ख) दुवणउ (क) ६. नवि (क) मनु (ग) ७. भूलइ (क) भूलउ (ख ग)

( २६८ ) १. नीच (ख) २. तियइ (क) ती (ख) तियह (ग) ३. मनि रहे  
 (क) मनु हरइ (ख) मनु धरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. संगहइ (क ख) भोगवहि (ग)  
 ५. नीची (क ख ग) ६. दे सो पाव (क) देइ सो पाउ (ख) वह तिर पाउ (ग) ७.  
 त्रियह (क) ती मइ (ख) ती वइ (ग)

उजैणि नयरिं सो वृचइ ठाउ, पुव्वह हुती विवयह राउ ।  
 तिरिय विसास करइ जो घराउ, जिहि जीउ सोप्यो राजा तराउ । २६६।  
 दुइजे राउ जसोधर भयउ, अमइ महादे सोखइ लयउ ।  
 विस लाइ दइ मारचो राउ, फुणि कुवडउ रम्यो करिं भाउ । २७०।  
 फुणि तीजे गिसुणह घरि भाउ, आथि नयरु पाटण पयठाणु ।  
 हया सेठि निमसइ तिहि काल, तीनि नारि ताका सुहिनाल । २७१।  
 सोतउ सेठि वरिणउ उठि गयउ, जीभ लुवधि तिहि काहउ कीयउ ।  
 छाडी हया सेठी की कारिण, श्रुतु एकु सिंर थापिउ आणि ॥ २७२॥  
 अदिणि छोडिं नाहु सुपियारु, श्रुतु आणि ता कीयउ भतारु ।  
 तिहि साहस कउ अंत न लहउ, तिहिं चरितु हुउ केतउ कहउ । २७३।

(२६६) १. जजैणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो टाउ (क)  
 ऊचइ (ख) उत्तम (ग) ४. पुव्वह हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वह हुं तु वियर कण्ठराउ  
 (ख) तिस पुर भंचउ विक्रमराउ (ग) ५. विसास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह  
 घरा (ग) ७. त्रिय (क) आपणउ (क) तीक्ष्ण चरण ख प्रति में नहीं है।

ते हिंति जिउ प्राण राजा तराउ (ख) रामइ सत्प्या जीव आपणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो दलिउ (क)  
 अमय महादे सो घर गयउ (ख) अन्नत-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख)  
 मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउइ (ग) ७. घरि (ख ग)

(२७१) १. तेउ (क) तीय (ख) विज्जाहरु तव वोतइ राउ (ग) २. अत्थि  
 (क ग) ३. पहाणपुर (क) ४. टाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. घणवइ (क) हाया (ख)  
 हुवा (ग) ६. वसइ (क) ७. तिहके (क) तिस की (ग)

(२७२) १. सोवतउ (क) सो तहि (ख ग) २. वरणहि (ग) ३. प्रेम लुवध  
 तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडी (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) लणी  
 (ग) ६. सब (ग) ७. वारिण (क) ८. घरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. परिणाल (क) रणिउं (ख) २. छांडि (ख) ३. नारि (क)  
 ४. तिह (क) तिन (ख) ५. भतार (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।  
 ६. इहु (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहइ (ग) ८. त्रिय (क) त्रिया  
 (ख) तिया (ग) ९. कितना से (ग) केता कहोइ (ग)

अभया रागी कीए विनाए, सुहृदंसए लगी गये परान ।  
 जिहि लगी जुझ महाहो भयो, लइ तप चरणु सुदंसए गयउ ॥२७४  
 रावण राम जु वाढी राडि, विग्रहु भयउ सुपनखा लागि ।  
 सीया हडह लंका परजलइ, सब परियण रावण संघरइ ॥२७५॥  
 कौरों पांडो भारथ भयउ, तिहि कुरुखेत महाहउ ठयउ ।  
 अठार खोहणी दल संघारि, द्वइ दल बोलइ दोवइ नारि ॥२७६॥  
 कालसंवरू तउ कहइ वहोडी, कनकमाल तौ नाही खोडी ।  
 पूरव रचित न मेटण कवरु, ए वीद्या लेहै परदवरु ॥२७७॥  
 असुह कम्मु नहु मेटइ कोइ, सुरजनुहु तउ सुवरीयउ होइ ।  
 दोस न कनक तुहि तरणउ, इह लहणी लाभइ आपणउ ॥२७८॥

(२७४) १. विवाए (ख) २. सुदंसए, (क) सुभवंसए (ग) ३. तिहि स्थों मास भूझ इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. वाघी (क) बंधी (ग) ३. विघन सुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखी लाहि (ख) विग्रह बलया सुपन भय ताडि (ग) ४. सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडखु (ख) हडी (ग) ६. परजलखु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रचउ परियर (ग) मूल पाठ स्यो पहयाल ८. संघरण (क) संघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कइरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. सयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अठारह (क ग) अठारह (ख) ८. दुइ (क ख ग) ९. द्रोपदी (क ग)

(२७७) १. बोला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३. तह लागी (क) न तुमय खोडि (ग) ४. कोइ (ख) तीसरा ओर चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

(२७८) १. कम्म (क) २. नवि (क) ३. सज्जन ते सुख वेरी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है । ३. कनकमाल (क ग) ५. लिखियउ (क) लहणा (ग)

गाया

दग्धंति<sup>१</sup> गुणा विचलंति<sup>२</sup> वल्लहा, सज्जनाहि<sup>३</sup> विहृडंति<sup>४</sup> ।  
विवसाय<sup>५</sup> राथि सिद्धी पुरिसस्स परंमुहादिम्बहा ॥

चौपई

छुटउ कमरु काल की बहिया, फुरिा ते बहुडी करी सामहरण ।  
चउरंगु वलु सबु समहाइ, करउ अभेडउ दुइजो जाइ ॥२७६॥  
यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध  
बहुत रोस मन नरवइ भयउ, चाउ चढाइ हाय करि लयउ ।  
लयउ धनुष टंकारिउ जाम, गिरि पवय जाणौ डोले ताम ।२८०।  
दोउ वीर आइ रण भिडे, देखइ अमर विवाराहि चढे ।  
वरसहि वारण सरे असराल, जाणौ घरा गाजइ मेघ अकाल ।२८१।

गाया

१. न संति (ख) निसंति (ग) २. विद्या (ग) ३. सज्जनाइ (क)  
सज्जनाय (ख) समय सज्जन (ग) ४. विचलंति (ग) ५. सजन पासु दुयए  
भया, जे मयिहु कम्म चलंति (ग)

(२७६) १. कबरा (क ख) २. समहरण (क) समहारा (ख) ३. करइ युम  
तव वाहुडि भावि (क)

ग—काल संवल मनि भया उदासु, छोड्या कणयमाल का पासु ।

दल चउरंगु सट्ट लीया बुलाइ, करइ भूमु वाहुडि सो जाइ ॥

(२८०) १. दोमु (ख) २. चक्र (क) वायु (ग) ३. तिहि लीया (ख) से  
(ग) ५. घुपुट्टु (ग) ६. टंकारा (ग) ७. पवास भइ कपइ ताम (ग)

क—धनुष टंकार करइ ते जाम, तत्र गिर परवत ढालइ ताम

(२८१) १. दोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रति में दो चरण निम्न  
रर में अधिक हैं—

रोऊ वीर खेर सपराण, डूएँ डूएँ करि संघाण

तव परदमण<sup>१</sup> रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ ताम ।  
सो दलु नागपासि दिठु गह्वउ, राउ अकेलउ ठाढउ वह्वउ ॥२८२॥  
भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।  
इम मयरद्धउ कहउ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ॥२८३॥  
नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति  
भणइ मयणु रहायो मयणु, वापहि पूतहि गाउ कमणु ।  
जिहिप्रतिपालिउकियउ तु राउ, तिहिकउ किमि भानइभरिभाउ २८४  
नारद वात कहै समुभाइ, दू दल विगाह<sup>२</sup> घरइ रहाइ ।  
कालसंवर तो हो इन जूत, यह परदवरण नरायण पूत ॥२८५॥  
निसुरिण वयण मन उपनौ भाउ, भरि आयौ सिर उमइ राउ ।  
इतडो परि पछितावो भयउ, चउरंग दलु संघरि लयउ ॥२८६॥

(२८२) १. सो (ग) २. छोडइ तित्तु ठाम (ग) ३. दुइ (क) ४. रहो (क)  
रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ॥२८३॥

ग प्रति—

भणइ मयणु ही इसउ कराउ, इव भागउ इसका भडिवाउ ।

नानारिषि आया तिह द्वाइ, कही वात चलि जांवइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिषि जाइ रहायउ मयण (क ख) बोलइ रिषि तू सुण  
परदवरण (ग) २. विप्रह (क ख ग) ३. अंतराव (क) दू तहू राउ (ग) ४. तिनकउ  
(क) तिस का (ग) ५. सिबु (क) किउ (ग)

(२८५) १. दुइ (क, ख) दुहु (ग) २. विघ्न (क) विप्रहउ (ग) विगाह (ख)  
३. हरइ घराइ (क) घराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहिं (ख) तुम्ह (ग) ५. निरत (क)  
बुत्तु (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. आक्इ (क) आकउ (ख) ग्रहि  
आंकि (ग) ३. दुमइ (क) चूवइ (ख) चूवो (ग) ४. लडियउ (क) तानि व मारि  
(ख) इतना (ग) ५. गयउ (क, ख) सह संघारिया (ग)

तव<sup>१</sup> मयण<sup>२</sup> मन छोडो कोह, मोहणी जाइ उतारयो मोह ।  
 नागपासि जव<sup>३</sup> घाली छोरी, चउरंग वल उठौ बहोरी ॥२८७॥  
 उठी सैन<sup>४</sup> मन हरिष्यो राउ, बहुत मयण को कीयो पसाउ ।  
 नानारिषि बोलइ तंदिणी, घर<sup>५</sup> अवेसि तिहारी घरणी ॥२८८॥  
 वयण हमारे जउ मन घरहु, घर वेगे सामहणी करहु ।  
 पवण वेगि तुम द्वारिका जाहु, आज तिहारौ आहि विवाहु ॥२८९॥  
 नारद वात कही तुम भली, मुही केवली कही सो मिली ।  
 विहसि वात बोलइ परदवगु, हम कहु वेगि पराइ कम्बगु ॥२९०॥  
 नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना  
 नारद खण विमारा रचि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।  
 बहुडि विम्बारा<sup>६</sup> घरइ मुनि जोडि, खण मलयद्वउधारइतोडि ॥ २९१॥  
 विलख वदन भोनारद जाम. करइ उपाउ मयणु हसि ताम ।  
 मणि मारिणक मय उदउ करंतु, रचि विमारा खण घरइ तुरंतु ॥२९२॥

(२८७) १. तवही (क ख ग) २. तव (क) वन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठी (क) उठि (ख ग) २. सैन (क) सयण (ख) मयणु (ग)

३. प्रारति (क) अयत्तेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारी (ख) अयि तुम्ह (ग)  
 ५. तणी (ग)

(२८९) १. चिति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु.  
 वेगि पयाण करहु (ख) घर की वेगि साखती करहु (ग) ३. घर कहू जाहु (ग)

(२९०) १. मुणिवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिषि (ग) २. रिषि (क) ३. करइ (क) रिषि घरइ मु जोडि  
 (ग) ४. करि (ग) ५. क्षण (ग) ६. मयणद्वउ (क ख) ६. मइराधा (ग) ७. घालइ  
 (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. मइरघउ (क) मयणं खिणि ३.  
 मइरघउ (क) ४. बह (ख) का (ग) ५. बण (ख) खिणि (ग)

विद्यावल<sup>१</sup> तह<sup>२</sup> रच्योउ, विमाणु, जहि<sup>३</sup> उदोत<sup>४</sup> लोपि<sup>५</sup> ससि भाणु ।  
 धुजा घंठ<sup>६</sup> घाघरि सजूतु, फुणि<sup>७</sup> तिह<sup>८</sup> चढयो नारायण पूत । २६३  
 जमसंवर<sup>९</sup> रामहिउ जाइ, बहुत भगति करि लागइ पाइ ।  
 कुमरहि सरिसु<sup>१०</sup> खिण<sup>११</sup> तनु करइ, कंचणमाल<sup>१२</sup> समदि<sup>१३</sup> घर चलइ। २६४।  
 कुवर मयण अरु नारदु पास, चढि विमाण उपए<sup>१४</sup> आकास ।  
 गिरि<sup>१५</sup> पव्वय बहु लंघे मयण, बहुत ठाइ वंदे जिणभवण । २६५।  
 फुणि<sup>१६</sup> वण भाभ पहते जाइ, उदिधिमाल दीठी ता ठाइ ।  
 बहुत वरात<sup>१७</sup> कुवर स्यो मिलि, भानु<sup>१८</sup> विवाहण<sup>१९</sup> द्वारिका चली । २६६।  
 नारद वात मयणस्यो कही, यह पहले तुम ही कहु वरी ।  
 तुम हडि भूमकेत ले जाइ, तउ अब भानहि दीनी आइ ॥ २६७॥  
 मुनि जंपइ मुहि नाही खोडी, आहि सकति तउ लेहि अजोडि ।  
 रिषि कौ वयण कुमर मरा धरइ, आपण भेस भील कहु करइ । २६८।

(२६३) १. तिन (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. चलिउ (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिहु (ग) करहि (ख) ५. घाघरि (क) वावती (ख) क-कणय विमाण सुहिर रसजूत (ग) ६. चलि चढयो (ग)

(२६४) १. राजा समिभाइ (क) राजा समदि धरि जाइ (ख) आया तितु ट्ठाइ (ग) २. छमावणि करइ (क) खिउ तव करउ (ख) सवहि कुवर सों विनति करइ (ग) ३. नाता जाइ धरि (क) चलण सिरि धरइ (ग)

(२६५) १. अगाति (क) २. उपमे (क) उपवे (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२६६) १. वण माहि (क ख ग) २. उदिधिमाला रहो तितु ठाइ (ग) ३. घात (क) वगत (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कनर कह (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहण (क ख ग) मूल प्रतिवण के स्थान-पर मण

(२६७) १. ऋषि (ग) २. उच्चरी (ग) ३. तो यह नारि भानु कहु ठया (ग)

(२६८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आतिय (ग) करि अजोडि (ग) ४. बहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग—नारद वचनहि अइसा भया, आपण भेस भील ठया (ग)



प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

धरणी<sup>१</sup>ही कांड<sup>२</sup> विसाले हाथ, उतिरि<sup>३</sup> मिल्यउ तिनि<sup>४</sup> के साथ ।  
 पवरा<sup>५</sup> वेग सो आगय गयउ, देइ<sup>६</sup> आखर परिण उभउ भयउ ।२६६।  
 हउ वटवाल नारायण तरणउ, देइ<sup>७</sup> दाण मुहि लागइ घणउ ।  
 चढी<sup>१</sup> वस्तु आपु मुहि<sup>२</sup> जोगु, जइसे<sup>३</sup> जाण देइ सवु लोगु ॥३००॥  
 महलउ भराइ निसुणि<sup>३</sup> महुं<sup>४</sup> वयणु, वडी वस्त तू मागइ कमूणु ।  
 अर्थ<sup>५</sup> दवुं<sup>६</sup> सोनो तू लेहिं, हम कहु जाण अगहुडउ देइ ॥३०१॥  
 भीलु<sup>१</sup> रिंसाइ देइ तव जाण, आइसी<sup>२</sup> परि किम्ब लाभइ जाण ।  
 भली<sup>३</sup> वस्त जो तुम पह आइ, मो मुहि<sup>४</sup> आफि अगहुडे जाहि ।३०२।  
 तउ महलउ जंपइ मुहि<sup>१</sup> चाहि, एक कुम्बरि<sup>२</sup> मोपह इह आहि ।  
 हरिनंदराण कहु परणी<sup>३</sup> जौइ, अरे सम्बर<sup>४</sup> किम मांगइ सोइ ।३०३।

(२६६) १. घणही (क) घणही (ख) घणुष (ग) २. सजि करि सर ले हाथि (क) वाण विसाले हाथि (ख) कटारी विसाहल हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुणि उठि मिल्या (ग) ५. ले आखत (क) दइ आखत (ख) वेइ अदिइ तव ऊभा भया (ग) ६. तव (क) फुणि (ख)

(३००) १. वस्त (क) दाण (ख) वस्तु (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुणहि (क) ३. मो (क) ४. अरथ (क) अरथु (ख ग) ५. दरवु (ख ग) देखि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगहुडे (ख) वेगि जाण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. बडी (ग) ५. आहि (क ख) अइहे (ग) ६. लागहु (क) अघउउउ (ख) सोह. हम देहु भिनु इम कहै (ग)

(३०३) १. वाहि (ख) २. जो मो पहि (क) इहं मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सवर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'म' प्रति में नहीं है ।

भणइ वीर यह<sup>२</sup> आफहि<sup>३</sup> मोहि, जइ सइ<sup>४</sup> वाट जाण<sup>५</sup> द्यो तोहि ।  
 महलहु<sup>६</sup> कोपि पर्यपइ<sup>७</sup> ताहि, अरे भिलु<sup>८</sup> तोहि जुगत न आहि । ३०४।  
 निसुणइ<sup>९</sup> महल<sup>१०</sup> कहइ विचार, हउ नारायण<sup>११</sup> तणउ कुमार ।  
 इहखोल<sup>१२</sup> जिन करहु<sup>१३</sup> संदेहु, उदधिमाल<sup>१४</sup> तुमि<sup>१५</sup> मो कहु देहु ॥ ३०५॥  
 महलउ<sup>१६</sup> वोलइ रे अचगले, भूठउ<sup>१७</sup> बहुत कहइ अतिगले ।  
 तीनि खंड<sup>१८</sup> जो पुहमि<sup>१९</sup> नरेसु, तिहि<sup>२०</sup> के पूतहि<sup>२१</sup> आइसु वेसु ॥ ३०६॥  
 वाट छोडि<sup>२२</sup> तउ ऊवट<sup>२३</sup> चले, उहि<sup>२४</sup> पह<sup>२५</sup> भील कोडी<sup>२६</sup> दुइ मिले ।  
 भणइ सधार<sup>२७</sup> नहि मुहि<sup>२८</sup> खोडि, वलु<sup>२९</sup> करि कन्या लइय अहोडी । ३०७।  
 प्रद्युम्न<sup>३०</sup> द्वारा उदधिमाला<sup>३१</sup> को बल<sup>३२</sup> पूर्वक<sup>३३</sup> छीन लेना  
 छीनि कुम्भरि<sup>३४</sup> तहि लइ<sup>३५</sup> पराण, फुगि<sup>३६</sup> सो वाहुडि<sup>३७</sup> चलयउ विम्बारा ।  
 भीलु<sup>३८</sup> देखि सो मनु<sup>३९</sup> अहि डरइ, करण<sup>४०</sup> कलापु<sup>४१</sup> कुवरि<sup>४२</sup> सो करइ । ३०८।

( ३०४ ) १. मुहि (क) इह (ख) यह (ग) २. भिल्लु (ग) ३. सउपहि मेहि (ग) ४. जेसे (क) ५. दो (क) दिउ (ख) नातर जाणक देऊ तोहि (ग) ६. भणइ (क) चंपइ (ख ग) ७. तुहि जुगती न आहि (क ख)

ग. प्रति में—हरि नंदन कहू परणी जोइ, अरे भिल्लु किउ मागहि सोइ ।

( ३०५ ) १. सुणि (ग) २. महिले (क) माहलो (ख) महिला (ग) ३. एणि वयणि (क) इसर वात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) तुहि मुहि कहू देहु (ख) हम कहू देउ (ग)

( ३०६ ) १. अचगले (क) महिला कोपि सु तव परजली (ग) २. जुट्टि (क) ३. आगले (क ख) भूठा वचन कहवहि हो भिली (ग) ४. पुत्र (क) पूत कि (ख) पूतन (ग) ५. कवणु इह वेसि (क) अइसउ भेसु (ख) अइसा वेसु (ग)

( ३०७ ) १. उवरे २. (ग) चलइ (क) चले (ख) चलिउ मूजप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उडि (ख) तापहि (ग) ४. इक (क ग) ५. कुमार (क) सधार (ख ग) मूल प्रति में 'सधर' ६. हम (ग) ७. वहोडि (क ख) अजोडि (ग)

( ३०८ ) १. दो निये पराणि (क) सोजं कुवर तिन्हि लई पराण (ग) २. चले (क) चडिउ (ख ग) ३. भरण (ख) करण (ग) मत ए रूप कुमार ए करिउ (ग)

पहलै मयरा कुवर कहू वरी, दुजे भागु विवाहरा चली ।  
नारद निसुगी हमारी बात, अब हौ परी भील के हाथ ॥३०६॥  
अब मोहि पंच परम गुण सरणा, लिउ सन्यास होइ किन मरणा ।  
तउ नारद मन भयो सदेहु, वुरो वयरा इनि आखिहु एहु ॥३१०॥  
तउ नारद जंपइ तंखिणी, कद्रप कला करइ आपणी ।  
लखण वतीस कणयमय अंगु, रूप आपणै भयो अरांगु ॥३११॥  
उदधिमाल सुंदरि समभाइ, फुरिण विमारा सो चलिउ सभाइ ।  
चलत विमारा न लागी वार, गये वारम्बइ के पइसार ॥३१२॥  
देखि नयर बोलइ परदवणु, दिपइ पदारथ मोती रयणु ।  
घनुक कंचरा दीसइ भरी, नारद वसइ कवरा उहे पुरी ॥३१३॥

---

(३०६) १. कुवरो (क) २. वली (ग) ३. कजइ (क ग) डुइचइ (ख)  
अवह (क) अवहउ (ख) इही (ग) ५. कइ (ख ग)

(३१०) १. ले चारित किन होइ सहि मरणु (क) ले भाता जसु होवइ मरण  
(ग) सील स्यात सिउ हुइ किन मरण (ग) २. पडिउ (क ख) पड्यो (ग) ३. वीरउ  
(क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. कणयन (क) कणइमइ (ग)

(३१२) १. तप (ग) चले विमारा वचन मनु लाइ (ग) २. गये नगर  
इरारिका मन्हार (क) गए वारमइ किययइ सारु (ख) गया वरवइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन कण (क ख ग) २. ए (क) इह (ख) ग प्रति में यह  
पछ नहीं है ।

## नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भण्ड नारद निसुरिण परदवण ।

यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माभ सायरहं रिण्चल ।

जंमि भूमिय अथि तुव, सुद्ध फटिक मणि जणित उज्जल ॥

कुवा वाडिउ च वणवर बहु धवहर आवास ।

पहुंपयाल जिणवर भुवण पउलि कोट चोपास ॥३१४॥

निसुरिण जंपइ मयणु वरवीर, मुभं वयणु नारद निसुरिण ।

फुडउ कहहि णहु गुभु रखहि, देखि मयणु रिणय चित्तु दइ ॥

जो जहि तरणुअ अवासु ॥३१५॥

चौपई

माभ नयरि धवल हर उत्तंगु, पंच वर्ण मणि जडिउ सुचंगु ।

गरइ धुजा सोहइ वह घणउ, वह अवासु सु नारायण तरणउ ॥३१६॥

(३१४) १. एह वसइ (क) यह कहियइ (ख) यह ऊंची (ग) २. सचंगी (क) हनिहचल (ख) हवकुपरि (ग) ३. जम्म (क) ख) जनम (ग) छइ तुमह (क) इह आयि तुव (ख ग) करइ राज इकु छति सो हरि (ग प्रति में यह चरण पल्ले के स्थान पर है। ४. सो वन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. वाडी वयण वर (क) वाडिउ वयण पवर (ख) वापी वाग वण (ग) ७. भवल (क) ख ग) ८. बहु पयार (क) ९. पोवलि कोर चोपास (क) मभु वयण नारद निसुरिण भुबरिण किवणणइ तासु (ख) कंचन कलसिहि दीपतिहि वसइ भुवण चउयास (ग)

(३१५) १. पयंपइ (ग) २. मोहिं (ग) ३. कुंडउ मुभहि गुहय रखहि (क) कहहु साचा जिन गुभु राखहु (ग) ४. कवण गेहि मुह तरणउ सयल चरित मोहि सयल अखहि (क) कवणु गेहु महु कहु तरणउ सव्वु चवहि महु सरसु अक्खर (ख) कवणु गेह इहु किरण तरणो । सयल भेटु हम वेगि आखहु (ग)

(३१६) १. मभि (क) ग) मभु (ख) २. जडिय (क) जडिउ (ख) जडे (ग) मूलपाठ चडिउ ३. तव खिरणउ (क) बहु खणा (ख) ४. एह (क) बहु (ग)

सि<sup>३</sup>व घुजा डोल<sup>३</sup>इ चोपास, वह<sup>३</sup> जाणइ वलिभद्र अवास ।  
जहि<sup>५</sup> घुज<sup>५</sup> मेढे<sup>६</sup> दीसइ देव, वह<sup>५</sup> मंदिर जाणइ वसुदेव ॥३१७॥  
जिहि<sup>५</sup> घुजा विजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।  
जहि<sup>५</sup> कलियलु वह<sup>५</sup> सूभइ घणउ, वह<sup>५</sup> अवासु सतिभामा तरणउ ।३१८॥  
कलकमाल जस उदो करंत, जह<sup>५</sup> वह<sup>५</sup> घुजा दीसइ फहरंत ।  
मणिगज मणि सहि चउपास, वह<sup>५</sup> तुहि<sup>५</sup> माता तरणउ अवास ॥३१९॥  
निसुणि वयण हरषिउ परदवणु, तिहि<sup>५</sup> को चरितु न जाणै कवणु।  
उतरि विमाराति उभउ भयउ, फुणि सो भयणु नयर मां गयउ ।३२०॥

प्रद्युम्न को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन संजूत, भानुकुवर दीठउ आवंतु ।  
तव विद्या पूछइ परदम्बनु, यह कलयलुसिह आवइ कम्बनु ।३२१॥

(३१७) १. सिव (क) २. लहरइ (क) डोलहि (ख) डोलै (ग) ३. ए आणइ (क) उ जाणइ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. घज्जु (क) घुजा (ख) घ्यजा (ग) ६. मोडा (क) मोडे (ख) मड (ग) ७. उह (क ख ग) मूल प्रति मे 'सिघ'

(३१८) १. सूभइ (क) सुणियै (ग) सूभइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजह वइ (क) सुनि चउउ (ख) बहु उदो (ग) २. विपइ (क) ३. नरकति (क) ४. नरकति मणि दीसइ तुह पासि (क) जाहि बहु घुजा दीसहि चउराणि (ग) मगंज मणि दीसहि जितु पास (ग) ५. उह (क) तुहि (ख) तुहु (ग)

(३२०) १. बोत्या (ग) २. तितु का (ग) ३. मांहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. मेन (क) मइन (ग) २. भानु कुवर घायइ निरतु (ग) ३. कतिपर म (क) कतिपर मउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयणु तुहि कहो विचारु, यह हरि नंदनु भानु कुमार ।  
 इहि ल<sup>१</sup>गि नयरी बहुत उछाहु, यह<sup>२</sup> जु कुवर जइ तरणउ विवाहु ॥३२२॥  
 प्रधु<sup>१</sup>मन का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेय धारण करना  
 तहा मयण<sup>१</sup> मन करइ उपाउ, अरु इहकउ भानउ भरिवाउ ।  
 वूढ<sup>५</sup> वेस विप्र को करइ, चंचल<sup>५</sup> तुरिय मयायउ करइ ॥३२३॥  
 चंचल<sup>५</sup> तुरीयउ गहिरी<sup>१</sup> हिंस, चार्यो पाय<sup>३</sup> पखारे<sup>५</sup> दीस ।  
 चारि<sup>५</sup> चारि आंगुल ताके कान, राग वाग पहचारणइ सान ॥३२४॥  
 इक सोवन वाखर<sup>२</sup> वाखर्यउ, पकरी<sup>३</sup> वाग आगैहुइ<sup>५</sup> चलिउ ।  
 भान कुवर देख्यो एकलउ, वाभण वूढउ घोरो भलउ ॥३२५॥  
 घोरो देखि भान मन रलउ, पूछइ वात विप्र कहु चलिउ ।  
 फुगि<sup>३</sup> तहि वाभणु पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ जैहहि<sup>५</sup> कहा ॥३२६॥

(३२२) १. एहि ल<sup>१</sup>गि (क) इह वर (ग) २. एह<sup>२</sup> सु (क) इह सु (ख ग)  
 ३. जिह (क) जहि (ख) जिस (ग)

(३२३) १. तबहि (क ग) २. वहु (ग) ३. इव (ख) ४. इसका (ग) इहि कर  
 (ख) ५. वूढउ (क ख) वूढा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ख) ७. मायामई (ग)  
 मायामउ (ख) मयणरचि घरई (ग)

(३२४) १. गुहीरी हासु (क) आगइ आरसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ख)  
 पाव (ग) ३. परवालिय (क) परवाले (ख ग) ४. ए तासु (क ख) ५. चारइ (क)  
 चारिसु (ख) ६. जिन्ह के (क) तिन्ह के (ख) जिसुके (ग) ७. पिछारणइ (क) यह  
 ारइ (ख) ८. भानु (क ख)

(३२५) १. साखति सो जन अरु पाखरउ (क ग) २. पाखर पाखरियउ  
 (क ख) ३. पकडि (क ख ग) ४. आघेरउ (क) आगइ (ख ग) ५. घोडउ (क ख)  
 घोवडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखत जन मनु चलिउ (ग) २. पूछण (क ख ग) ३. चले  
 चाल्यो किहा (ग) ४. जाइसि (क)

वाभस्यु ठवहुक घोडौ हइ आपणउ, तजिउ समुद वालुका तरणउ ।  
 निसुरिण भान कुम्बर कौ नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ ॥३२७॥  
 भान कुवर मन उपनो भाउ, बहुतु विप्र कहू कियउ पसाउ ।  
 निसुरिण विप्र हउ अखणहु, जो मागइ सो तोकहु देउ ॥३२८॥  
 तवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर कँ मनु न सुहाइ ।  
 विलखउ भानकुवर मन भयउ, मान भंगु इहि मेरउ कियउ ॥३२९॥  
 भणइ विप्रुहौ आखउ तोहि, इतनउ जे न सकहि दइ मोहि ।  
 मइ तो कहूदीनउ सतभाइ, परिहा जउ देखाहि दौडाइ ॥३३०॥

### भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

k

निसुरिण वयगु कुवर मन रल्यउ, कोपारूहु तुरगइ चढिउ ।  
 विषम तुरंगु न सकउ सहारि, घोड़े घाल्यो भानु अखारि ॥३३१॥

(३२७) १. वंभण चिरत कहइ आपणउ (क) वामण गवडु कहइ आपणउ  
(ख) वंभण नाउ कहइ आपणउ (ग) २. तेजो एह (क ग) ते जिउ (ख) ३. रण समदह  
तरणउ (क) समुदह तरण (ग)

(३२८) १. बहु (ग) २. बहुति (क) बहुतु (ग) ३. निसुरण (ख) ४. इतन  
करेउ (ग) अखो तोहि (क) अखउ तोहि (ख) ५. सो आयो (क) तुम्ह जोगो (ग)

(३२९) १. मनह (ख) २. सतिहा (ग) ३. वदन (क) ४. तव (ग) को (क)

(३३०) १. हह (क) कहू (ग) २. आयो (ग) ३. माणिउ सके न इहो  
कोइ (क) इतनउ जे न सकहि दइ मोहि (ख) मांग्या देइ न सकइ मोहि (ग)  
४. वोलिउ. सतिभाउ दीना रूपसाउ (ग) ५. परहुदाउ (क) जर जे इस कहू  
लइ दउदाइ (ग) ६. दउदाइ (ख) मूल प्रति—मामिउ जइ सकइ दे मोहि.

(३३१) १. कोप रूपि सु (ग) २. तुरंगम (क) लइ चलिउ (ख) ४. नवि  
सहो (क) ५. भानकुमार घालिउ अखारि (क) घोड़इ दीनउ भानु जु राडि (ख)  
घोड़े राइया भानुकुमार (ग)

पडिउ भानु यहु वडउ विजोगु, हासी करइ सभा को लोगु ।  
 यह नारायणुतनो कुमारु, या समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥  
 भणइ विप्र तुम काहे रले, इहि तरुणो पह वूढे भले ।  
 इरह ते करि आयउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥  
 हलहर भणइ विप्र जिण डरहु, इन्ह घोडे किन तुम ही चढउ ।  
 हौ वूढउ चाहौ टेकणौ, दिखलाउ पवरिष आपणउ ॥३३४॥  
 प्रद्युम्न का घोडे पर सवार होना

जण दस वीस कुवर पाठए, विप्रह तुरी चढावण गए ।  
 तउ वाभण अति भारउ होइ, तिहिके कहै न सटकइ सोइ ।३३५।  
 तुरीय चढावण आयो भाणु, उलगाणे को नाही मानु ।  
 जण दस वीस कियउ भरिवाउ, चडिवि भान गलि दीनउ पाउ ३३६  
 चढइ विप्र असवारिउ करइ, अंतरिख भो घोरो फिरइ ।  
 दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उणइ गयउ ॥३३७॥

(३३२) १. जब हुनो (क) तब भया (ग) २. ए (क) इहु (ख ग) ३. समान  
 (क) इहि समु (ख) इसु सरि (ग)

(३३३) १. हंसे (ख) २. हम (क) ते हम (ग) ३. दूर थकी (क)

(३३४) १. कहइ (क) २. मत अडहु (ग) ३. रणि को (क ख) इसु घोडइ  
 तुम वेगहु चडिउ (ग) ४. चाहउ विकणिउ (क) चाहउ वेकणउ (ख) चालउ टेकणा  
 (ग) ५. दिखलावउ (ख) ६. बल पीरष (क)

(३३५) १. वीषम (ख) २. तू चढावण भए (क) ३. तिह कइ कियइ न  
 उडुइ सोइ (क) तिन्ह कइ कहइ नइ चाडइ सोइ (ख) तिन के कहे न सकइ  
 चडि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगाण (क) उलगाणे (ख) उलगण (ग) २. चढचो तुरंग दिया  
 गलि पाउ (ग) मूलप्रति—उलगाणे कउमाणु न आहि

(३३७) १. हुइ (क ग) २. आणे (ब) ३. ऊपमि (क ग)



प्रधुम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना  
 पुण्ड्रिण सो रूप खवाइ होइ, दूँ घोड़े निपजावइ सोइ ।  
 वन उद्यान रावलुहो जहा, घोड़े खाँची पहुँतउ तहा ॥३३८॥  
 वराह मयरा पहुँतउ जाइ, तउ रखवाले उठे रिसाइ ।  
 इह वरा चरण न पाव कोइ, काटइ घास विगुचनि होइ ॥३३९॥  
 कोपि मयरा मन रहउ सहारि, रखवालेसहुँ कहयउ हकारि ।  
 कङ्कस मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चरण किन देहु ॥३४०॥  
 तवइ भइ तिन्हु की मनु हारि, काम मूदरी देइ उतारि ।  
 रखवाले बौलइ वइसाइ, दुइ घोड़े एँ चरहु अवाइ ॥३४१॥  
 फिरि फिरि घोड़ो वगु मा चरइ, तर की माटी उपर करइ ।  
 तउ रखवाले कूटइ हीयउ, दूँ घोड़े वरा चोपटु कीयउ ॥३४२॥  
 बीनी तिनसु काम मूदरी, बाहुरी हाथ मयरा कँ चढी ।  
 सो वर बीर पहुँतउ तहा, सतिभामा की वाडी जहा ॥३४३॥

(३३८) १. खवाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालउ (ख) सुरावल (ग)  
 ३. रचि (क) खइचि (ख) खँची (ग)

(३३९) १. वरा महि (क ख ग) २. काचउ खात चरावइ जाइ (क) काटइ घासु  
 विगुचइ सोइ (ख) तीसरा चौवा चरण—क प्रति—तव रखवाला बोलेइ एम घास  
 रावलउ काटइ केम (क) ३. कापइ तासु विधावइ सोइ (ख) कावइ घास  
 विगुचइ सोइ (ग)

(३४०) सु कोप (क) जिन (ग) २. वंशहि जस हारि (ख) कुलाइ (ग)  
 ४. कङ्क मोल तुम हन पहि लेहु (क) कङ्क मोलि तुम्हि आणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)  
 (३४१) १. तव कीनी (ग) २. बोलेहि (क) बोले (ग) ३. लेहु (ग)  
 मूलप्रति—वइपइ

(३४२) १. तल को (क ख ग) २. कूटहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु  
 (ग) चउपट (ख) अरिजम चरण क प्रति में नहीं है ।

(३४३) १. मूँवडी (क ख) २. बीनी तहि (ग) ३. कुमर के पडी (क)

वाडि मयरा पहुतउ जाइ, बहुत विरख दीठे ता ठाइ ।

कोइ न जाणइ तिनकी आदि, बहुत भाति फूजी फुनवादि ॥३४४॥

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

जाइ जुही पाडल कचनारु, ववलसिरि वेलु तिहि सारु ।

कूँजउ महकइ अरु कणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुँडु टगरु मंदारु सिंदूरु, जहि वंधे महइ सरीरु ।

दम्बरा मरुवा केलि अणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥

आम जंभीर सदाफल घरो, बहुत विरख तह दाडिम्ब तरौ ।

केला दाख विजउरे चारु, नारिंग करुण खीप अपार ॥३४७॥

नीवू पिडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।

नारिकेर फोफल बहु फले, वेल कइथ घरो आवले ॥३४८॥

(३४४) १. तिह (क) तहि (ख)

(३४५) १. पाटल (क) पाडले (ख) २. वाउल सेवती सो सभिचार (क) वायल (ख) ३. अवर (ख) ४. राइ (क) राय (ख) ५. चंपा (क) ६. केतकी गहीर (क) केवडउ हीर (ग)

(३४६) कुँव अगर मंदार सिंदूर (क) कुँडु टगर मधुग सिंदूर (ख) २. मह महइ (क) महकइ (ख) ३. ससरीर (ख) ४. दम्बरा (क) दम्बरा (ख) ५. महंत (ख) ६. नीवू (क) नेवाली (ख)

(३४७) १. अणत गिरो (क) जानिस गरो (ख) २. विजरी (क) ३. नारिणी (क) करुण (क) करुणा (ख) ५. खीप (क) खीप प्रति में 'खीप' पाठ है

(३४८) १. अणंत (क) अनंत (ग) मूलप्रति में दक्ष के स्थान परद्वय पाठ है

नोट—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'ग' प्रति में नहीं हैं ।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

वाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चितइ साहस धीर ।  
जइसइ लोग न जाणइ कोइ, वांदर दुइ निपजावइ सोइ ॥३४६॥  
तउ वंदर दीने मुकलाइ, तिन सब वाडी घाली खाइ ।  
जो फुलवाडि हुती बहु भाति, वंदर घाली सयल निपाति ॥३५०॥  
फुरिण ते वंदर पइठे मोडि, रूख विरख सब घाले तोडि ।  
सब फल हली तव संघरी, तउपट करि सब वाडी धरी ॥३५१॥  
लंका जइसी की हएवंत, तिम वारी की वालखयंत ।  
भानु कुम्बर हो वैठी जहा, मालि जाइ पुकारचो तहा ॥३५२॥  
मालि भएइ दुइ कर जोडि, मो जिन सामी लावहु खोडि ।  
वंदर द्वैस पइठे आय, तिहि सब वाडी घाली खाइ ॥३५३॥  
जवति माली करी पुकार, रथ चढी कुम्बर लए हथियार ।  
पवण वेग सो धायउ तहा, वंदर वाडी तोरी जहा ॥३५४॥

(३४६) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) बंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवादि पाठ है ।  
यह चौपई 'ख' प्रति में नहीं है ।

(३५१) १. पुरणते (ख) २. पठए (क) ३. रुख (ख) ४. सब  
फलाहली (ख) फुलवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सब धरी (क ख) चउड चपट  
तिह वाडी करी (ग) मूलप्रति में 'वेद पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेमसी (ग) २. करी (क ख ग) ३. लीघी बु  
लावंत (क) किय काल कर्यति (ख) तउ वाडी वंदरि रवाधन्ति (ग) ४. छइ (क) था (ख)

(३५३) १. बिनवइ (क ग) २. मुम्भ (क) मोहे (ग) ३. मत (क) ४. वनचर  
(क) ५. वाडी (क) दुइ (ग ग) ६. इहि बइठा आइ (ग) दुइ तिहि पइठे आइ (ख)  
७. तिन (क) तिग्ह (ग) तिग्ह (ग)

(३५४) १. जव तिहि (क ख ग) २. घाउ (क) पठता (ग) ३. वानर (क)  
४. तोडइ (क) तोडी (ख) तोरहि (ग)

प्रधुम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरघउ काहौ करइ, मायामइ मच्छर रचि धरइ ।  
 तिहि ठा भानु सपतउ जाइ, खाजतु मच्छर चलिउ पलाइ ॥३५५॥  
 भानु भाजि गिणय मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु आइ तिह भहउ !  
 तंखिणि बहु वरकामिणी मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रधुम्न द्वारा मगल गीत गाती हुई

स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

तेल चढावहि करइ सिंगारु, सूहउ गावइ मंगलुचार ।  
 रथ चढि कुवरिति उभीभइ, फुगि मटियारणुउ पूजण गइ ॥३५७॥  
 तवइ मयण सो काहो करइ, ऊंटु तुरंगु जोति रथ चढइ ।  
 ऊटु तुरंगु सुअठे अरडाइ, भानु रालि घोडउ घर जाइ ॥३५८॥  
 पडिउ भानु उइ विलखीभइ, गावत आइ रोवति गइ ।  
 ऊटु तुरंग उठे अरराइ, असगुन भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

(३५५) १. काहउ (क) अइसा (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिति धरइ (ग) ४. मूलपाठ तहां जाउ (ग) भानुकुमरु तउ पहंता आइ (ग) ५. खाजत (क) खाजनु (ख) ६. माछर (क ग)—७. चलउ (क ख) खिणि रही मो चली पलाइ (ग)

(३५६) १. जिन (क ग) २. आइ तिह थयो (क) तहां तितु भया (ग) ३. नयरी (ग)

(३५७) १. तितु (ख) २. चढवहि (ख) ३. अइसइ (क ख) तब से (ग) ४. कुवरति (क) ते (ख)—चढयो कुंवर रथि आगे भयो (ग) ५. मटियारणौ (क) मटियारणउ (ख) मटियारणउ (ग)

(३५८) १. तहि अइसो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. चलइ (क ख) घरइ (ग) ४. उठ्या अरडाइ (क ख) तवहि उर सो करइ पुकार (ग) ५. असवण भयो न जणह सुहाइ (क) घोडा भागा भानहि मार (ग)

(३५९) १. तब विलखा भया (ग) २. गावै थो सो घर कहू गया (ग) ३. असवणु (ख) नोट—यह पद्य क प्रति में नहीं है ।

श्रुमन् का बुद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर  
सत्यमामा की वावड़ी पर पहुँचना

फुरिण मयरद्धउ वंभरु भयउ, कर<sup>१</sup> धोवती कर्मडलु लयउ ।  
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खण वावडी पहुँतउ जाइ ॥३६०॥  
उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी जहा ।  
भूखउ वामरुणु जेम्बरुणु करहु, पाण्डिउ पियउ कर्मडलु भरहु ॥३६१॥  
फुरिण चेडी जंपइ तंखणी, यह वापी सतिभामा तरणी ।  
इरिण ठा पुरिणु न पावइ जाण, तू कत आयउ विप्र अयाण ॥३६२॥  
तउ वंभण कोपिउ तिरुणकाल, किन्हू के सिर मूडे हि वाल ।  
किन्हू नाक कान ते खुटी, फुरिण वंसरुणु पइठउ वावडी ॥३६३॥

विद्या जल से वावड़ी का जल सोखना

फुरिण तहि बुधि उपाइ धरणी, चुइरी विद्या जल सोखणी ।  
पूरि कर्मडलु निकलिउ सोइ, सूकी वावडी रीति होइ ॥३६४॥  
कर्मडलु के जल को गिरा देना  
सूकी देखि अचंभी नारि, गो वाभण चौहटे मभारि ।  
घाइ लड़ी वाहुडी कर गयउ, फुलि कर्मडलु नदी होइ बहउ ॥३६५॥

- 
- (३६०) १. तलि (ग) २. आइ (क ग)  
(३६१) १. वावडी (क) चेडी (ल ग) २. जोमण (क) जेमण (ल) जीवण  
(ग) ३. पाणी मिए (क) पाणी देहु (ग)  
(३६२) १. ता तरणी (क) २. इहि ठा (ल ग) ३. आयइ (क)  
(३६३) १. तिरिण काल (क) तहि वाल (ल) तहिनाल (ग) २. किन्हूकउ  
(क) किन्हू के (ल) तिरु के (ग) ३. वाल (क ल ग) ४. किन्हू (क) तवे (ग)  
५. खुटी (क ल ग) इव (क) ६. वइठवउ (ग) भूतप्रति में 'तिताल' पाठ है  
(३६४) १. सुमरो (क) सुमरी (ल) संवरी (ग) २. बाइ (ग)  
(३६५) १. चउहटे (उ) ते पहुँती सतिभामा वारि (ग) २. फूडि (ल)

बूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।  
 नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३६६॥  
 प्रघु म्मन का मायामयी मेढा वनाकर वसुदेव के महल में जाना  
 फुणिए तहि मयण मित्र चितयउ, माया रूपी मेढो कियउ ।  
 पहुतउ वसुदेव तरणी खंधार, कठीया जाइ जगाइ सार ॥३६७॥  
 तउ वसुदिउ वोलइ सतभाउ, वेगउ तहा भीतरि हकराउ ।  
 कठिया जाइ संदेसउ कहिउ, ले मैढो भीतरि गयउ ॥३६८॥  
 छोटो मैढो धरी न संक, विहसि राउ तव छाडी टंक ।  
 तउ मयरद्वउ वाहु कहइ, वात एम कौ कारणु अहइ ॥३६९॥

(३६६) क प्रति में—

कर्मंडलु भरि चलिउ वाजारि, करयी पडिउ कर्मंडलु सारि ।  
 फुटि कर्मंडलु नहु तिह चली, लोक उत्तर पुछइ देवली ॥३७४॥  
 पुछइ परिहारी बड्ठे हाट, भणहि वाणिए पाडी हाट ।  
 नगर लोग सब कौतिग लिउ, इतनो करि तहां थी चलिउ ॥३७५॥

ख प्रति

बूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।  
 नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३७६॥  
 लोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि वाहुडि चाल्यो (ग)

ग प्रति

वंभण जाइ जगाईसार, गय वंभण चउहटै मभारि ॥३७८॥  
 फारि कर्मंडलु नही हुइ चली, नगर उनी वोलइ तव वली ।  
 डूवरण लागउ सभु वाजार, सबइ लोग मिलि करहि पुकार ॥३७९॥

(३६७) १. मनु (क) बहुडि (ग) मंतु (ख) २. मडिउ (क) मेढउ (ख)  
साटी (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुदेउ (क) वसुहिउ (ख) वासुदेव (ग) २. तिहि ठाइ (ग)  
३. सातरिह (ख) वेढा नुइह भीतरह कराउ (ख) ४. बुलाइ (ग) ५. कियउ (ख)  
चयउ (ग) ६. ले भागउ बहु (क) ले मीढा उहु भीतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. ठाइउ (क) छोटिउ (ख) छूटा (ग) २. संख (क) संग (ग)  
३. विहसि रायणि आडी रांक (क) विहसि राय पुखु ऊटी टंग (ख) विहसि राय तव  
दीनी टंग (ग) ४. अछइ (क ग) मूलपाठ अहै

विहसि अणंगुं पयंपइ ताहि, हउ परदेसी वाभण आहि ।  
 दुखइ टंक तुहारी देव, तउ हउ जीवत उवरउ केम्ब ॥३७०॥  
 तउ जंपइ वसुदेउ वहोडी, इहिर वयण तुहि नाही खोडी ।  
 मन आपरो घरइ जिंन संक, मेरी तूटि जाइ किन टंक ॥३७१॥  
 तव तिन्हि मेहउ दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।  
 तोडि टांग मैठो वाहुडिउ, वसुदेउ राउ भूमि पडिगयउ ॥३७२॥  
 वसुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि मन हासउ भयउ ।  
 तिहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥  
 प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण  
 कर सत्यभामा के महल में जाना  
 कनक धोवतो जनेउ घरै, द्वादस टीकौ चन्दन करै ।  
 च्यारि वेद अचूक पढंत, पटराणी घर जायो पूत ॥३७४॥  
 उभो भयो जाइ सीद्वार, कठिया जाइ जणाइ सार ।  
 जेते वाभण भीतर घरो, सतिभामा वरजे आपरो ॥३७५॥

(३७०) १ देखइ कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिंनवरउ मन मानउ देव (क) तउ हउ तुम्ह से उवरउ केव (ग) 'हउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. मीडउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क) वासुदेव भूमि गिर पडयो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति-हो वसुदेव कहा यह किया,..... ।

ताली पारै सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में-करिहि कमंडलु घोती बंधि, द्वादस तिलक जनेउ कंठि ।  
 चारिउ वेद अचूक भणाइ, पटराणी घर पढंता जाइ ॥

१. अचुपके (ख) २. पढंत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीह दुवारि (क ख) सुतासु (ग)

सुण्यो पढंतउ उपनो भाउ, वह वाभण भीतर हकराउ ।  
 राणी तरणउ हकारउ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥  
 अक्षत नोरु हाथ करि लेइ, राणी जाइ आसीका देइ ।  
 तूठी राणी करइ पसाउ, मागि विप्र जा उपर भाउ ॥३७७॥  
 सिर कंपत वंभण जव कहइ, वोल तिहारो साचउ अहउ ।  
 वयणु एकु हौ आखउ सार, भूखउ वाभण देहु आहार ॥३७८॥  
 राणी तरणउ पटायतु कहइ, भूखउ खरउ करटहा अहइ ।  
 राणी आणइ अर्थु भंडारु, एकुउ मागइ एकु आहारु ॥३७९॥  
 तुम विप्र कहत हहु भलउ, तुहि वहु वाभणु हउ एकलउ ।  
 वेद पुराण कहिउ जौ सार, उतिमु एक आहि आहार ॥३८०॥  
 वैठि विप्र उठ भोजन करहु, उपरा उपर काहे लडहु ।  
 एक ति उपरि तल वैसरहि, अवरइ विप्र परसपर लडहि ॥३८१॥

(३७६) १. पंडित (ग) २. इह (क) बहु (ख) इहि (ग) ३. बुलाइ (क) लेइ बुलाइ (ग) इहु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अक्षत (ख) अखित (ग) २. कहूँ आशिष सो वेदु (ग) ३. जिह (क) जह (ख) जिनु (ग)

(३७८) १. करइ (ग) २. अपउ (क) ३. आघार (ग)

(३७९) १. धरणी ततउ पटाइतु कहइ (ख) २. चितु आहाइ (ग) सोइउ कसइ (क) ३. करहिहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आफइ (ग) ६. तू किउ (क) वडुवा (ख) हउतउ (ग) ७. आघारु (ग)

(३८०) क प्रति में यह छन्द नहीं है । १. सभि (ग) एकला (ग) ३. सो (ग) - 'ख' प्रति में चौथा चरण नहीं है ।

(३८१) १. वैसि (क) वइसि (ख) वइसहु (ग) २. वंभण (ग) ३. एक ति विप्रति उपरि लडहि (क) ४. जलहि (ख)



निसुनहु वात परदवन तरणी, मुकलाइ विद्या जूभरणी ।  
 उपरापहति वंभरण लडइ, सिर कूटहि कुकुवार फरहि ॥३८२॥  
 राणी वात कहइ समुभाइ, इतु करटहानु लागी वाइ ।  
 दूरउ होइ तहि घालइ रालि, नातरु वाहिर देहि निकालि ॥३८३॥  
 तउ मयरघउ वोलइ वयगु, सायु अघारणउ भूखे कम्दगु ।  
 खुघा वियापइ सुणइ विचारु, हमि कहू मूठिक देहि अहारु ॥३८४॥  
 सतिभामा ता तउ काहौ करइ, कनक थालु तस आगइ घरइ ।  
 वइसि विप्र तसु भोजन करहु, उन की वात सयल परिहरहु ॥३८५॥  
 वैठउ विप्रु आवासणु मारि, चकला दिनउ आगइ सारि ।  
 लेकर दीनउ हायु पखाल, आणिउ लोणु परोसिउ थाल ॥३८६॥

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपर (ग) पहले (ख) उपरि (ग) ३. सिर फूटहि कोलाहल करहि (क) सिर कूटहि कुकुवार करहि (ख) पीटहि सीसु कूक बहु करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग) ४. भलइ डुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. राडि (ग) मूलप्रति में 'वार' पाठ है

(३८४) १. सायु (क ख) २. भपउ (ख) ३. दुघा वियापहि (ख) जुडे विष्प (ग) ४. तू वासा (ख) ५. अघारु (ग)

(३८५) १. तव (क ग) २. इसी (ग) ३. तव आणि घरइ (ग) ४. तुम (क) तुन्ह (ख ग) ५. उन्ह की (ख ग) इनकी (क) ६. तवे (ग) मूलप्रति में 'तुन्ह की' पाठ है ।

(३८६) १. बइतउ (क) २. विपु (ख) ३. अघारि (क) ४. सोटउ (क) ५. अपिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रथम का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि ।  
 माडे वडे परोसे तासु, सवु समेलिं गउ एकुइ गासु ॥३८७॥  
 भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुरा राणी वैठि आइ ।  
 जेतउ घालइ सवु संघरइ, वडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥  
 वाभरा भराइ निसुणि हो बाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल ।  
 तिमु तिमु लोगु सयलु परिहरचउ, मो आगे सवु कोडा करहु ॥३८९॥  
 जहि जेम्बरा न्योते सवु लोगु, तितउ परोसित वाभरा जोगु ।  
 नारायणु कहु लाइ धरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥  
 तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि तो खाइ सयल रसोइ ।  
 यह वाभरु अजहु न अघाइ, भूखउ भूखउ परिविलखाइ ॥३९१॥  
 भयरा वीरु यह वडउ विजोगु, तइ जू नयर सवु न्योत्यो लोगु ।  
 सो काहो जेम्बहिगे आइ, इकुइ विमु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

(३८७) १. विधि (ग) ते तउ (ग) ३. भोजन (ग) ४. मंडा (क) मांडे (ख ग) ५. बहुत (ग) ६. सकेलि (ख ग) सवनि कीयो एके गासु (क)

(३८८) १. ते तउ खाय (ख) २. बडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उवरइ (ख) मूलप्रति में 'ठाइ'

(३८९) १. निबलो लोग सबहि परिहरउ (ग) २. कूडा (क ग)

(३९०) १. जीमरा (क ख) ज्योखार (ग) २. निउतउ (क) निउते (ख) निवतिह (ग) ३. तिन्ह कह उपज्या घडा वियोग (ग)

(३९१) १. इहतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सबहि (र) ३. खाले लाइ नारायण खाइ (क) ४. विललाइ (क ख ग)

(३९२) १. चारू (ख) विप्र (ग) २. नयर काज (ग) ३. जीमइगो (क) जीबहिगे (ख)

राणी चितह उपणी कारिण, काही अवरु परोसो कारिण ।  
 भूखड वाभरण काहो करइ, घालि आंगुली सो उखलइ ॥३६३॥  
 श्रैसो वांभरण कोतिगु करइ, सब मांडहीति उखली भरइ ।  
 मान भंगु रॉणी कहू कीयउ, मयणु विप्र ते खूडउ भयउ ॥३६४॥  
 प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुमिमयी के घर पहुँचना ।  
 मूंडी मूडि नलीयरा लयउ, निहुडिउ चलइ कुवडा भयउ ।  
 वडे दांत विरूपी देह, फुरिण सुचलिउ माता के गेह ॥३६५॥  
 खण खण रुपिण चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।  
 मोस्यो नारद कहउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३६६॥  
 जे मुनि बयण कहे परमाण, ते सबई पूरे सहिनाराण ।  
 च्यारि आवते दीठे फले, अरु आचल दीठे पीयरे ॥३६७॥  
 सूकी वापी भरी सुनीर, अपय जुगल भरि आए खीर ।  
 तउ रुपिणी मन विभउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहा गयउ ॥३६८॥

(३६३) १. सब पाछउ धरइ (क) सो करइ (ख) देसा केतिगु बंभण करै (ग)

(३६४) १. सब माहुड उखालि सो भरई (क) सब माणहुड उखलि सो भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरऊ (ग)

(३६५) १. कर्मडलु हायि (ख) नालियर (ग) २. हूडउ भयो (क) भयउ (ख) होइ (ग) ३. वातारिच (क) दंत (ग) ४. विरुली (ख) विरुपिय (ग) ५. बहुडि (क) ६. सुचलिउ (ख)

(३६६) १. मुहिल्यो (क) हमसो (ग) ख प्रति में प्रथम बरयण नहीं है ।

(३६७) १. वरण (क) बरु (ग) २. आखे (ग) ३. वारि (ख ग) ४. अम्बते ५. अंचल (ग) ६. दीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयसा (क)

(३६८) १. याणय (क) पयोहह (ख) २. विसमो (क) विसमा (ग) चिभउ (ग) ३. इतडउ तापसु वारेहि गया (ग) ४. कहू भयउ (ख)

नमस्कारु तव रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उचरइ ।  
 करि आंदरु सो विनउ करेइ, करण्य सिधासणु वैसण देहु ॥३६६॥  
 समाधान पूछइ समुभाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ।  
 सखी बूलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥४००॥  
 जीवण करण उठी तंखिणी, सुइरी मयण अग्नि थंभीणी ।  
 नाजु न चुरइ चूल्हि घुंघाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ॥४०१॥  
 हो सतिभाम कै घरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ ।  
 जो दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पूरी लाघण तीन ॥४०२॥  
 रूपणि चितह उपनी कारिण, तउ लाइ ति परोसे आरिण ।  
 मास दिवस को लाडु घरे, खूडे रूप सवइ संघरे ॥४०३॥  
 आधु लाइ नारायण खाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ आघाइ ।  
 तव रूपिणि मन विभी कहइ, किछु किछु जाराउ यहुं अहइ ॥४०४॥

(३६६) ३६८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में श्रीर है जो निम्न प्रकार है—  
 तापस देखि उपना भाउ, तव रूपणी पूछई सतभाउ ।

स्वामी आगमथु किहां थो भया, एता ब्रह्मचरणु कहां ते निया ॥

१. खेडउ (क) खूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठी तंखिणी, (क) २. सुमरी विद्या (ग) ३. अग्नि  
 (क) अग्नि (ख) अग्नि बंधणी (ग) ४. नाज न चडइ भूमि घूंजाइ (क) नाज न राभहि  
 चूल्हि घुंघाइ (ख) अग्नि बलइ चूल्हइ, घूंघाइ (ग) ५. विललाइ (क ग)

(४०२) तवहि मयण उठि मा पहि गया (ग) २. रहिउ (क) भयउ (ख)  
 ३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित (क) चितहि (ग) २. लघु लडू परसउ (ग) परसे (क)  
 ३. नाराइथु कहू लाडु घरे (ग) ४. खोडे वंभण सव संघरे (ग) मूलप्रति में  
 'धीर' पाठ है ।

(४०४) १. विभउ (ख) चितिहि विसमाइ (ग)

तउ रागो मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रह को घरइ ।  
 जइ उपजइ तो कहसान जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥  
 तउ रूपिणी मनि भयो संदेह, जमसंवर घर वाढिउ एहु ।  
 विद्या वलु हइ हीएह घणउ, यह परभाउ अहि विद्या तरणउ ॥४०६॥  
 फुरिइ जै पूछइ करि नयणु, लयउ वरतु तुम्हि कारणु कवणु ।  
 तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥  
 काहा तै तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिप्या तुहि गुरु कवणु ।  
 जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो मोहि ॥४०८॥  
 तवहि रिसाणी बोलइ सोइ, गुर वाहिरी दीख किमु होइ ।  
 गोतु नाम सो पूछइ ताहि, व्याह विरधि जहि सनवधु आहि ॥४०९॥  
 हम परदेस दिसंतर फिरहि, भीख मांगि नित भोजन करइ ।  
 कहा तूसि तू हम कहु देहि, हसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

(४०५) १. उबरिको (ग) २. फिउ करि लाभइ इतको माय (ग)

(४०६) १. हइ तुम यह घणउ (क) हइ इह यह घणउ (ख) इतु पहि हइ घणी (ग) २. अत्यि तितु तरणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ल प्रति में से लिये गये हैं । १. इजइ (क) २. रुकमिणी (ग) ३. लिय बइ इहु (ग)

(४०८) १. दीन्ही दीसा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देखहि (क) दीवधा (ख) द्विष्टि (ग) २. तोहि (क) मोहि (ग) ३. होइ (ग)

(४१०) १. भीख मांगि (क) चरो मांगि (ख) चारि अंग (ग) मूलप्रति में 'चरो मांगित' पाठ है । २. हसी (क) हसहि (ख) हड़ी (ग)

खूडउ दिठु रिसाणउ जाम, मन विलखाणी रूपिणि ताम ।  
 वहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूली जिन् लावहु खोडी ॥४११॥  
 तवहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा विसूरइ माइ ।  
 साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्ब पडि उतरू आफउ मोहि ॥४१२॥  
 तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्ब रूपिणि कउ भयउ विवाहु ।  
 जिम्ब परदवणु पुञ्चु हडि लयउ, सयलु कथंतरू पाछिलउ कहिउ ॥४१३॥  
 धूमकेत हौ सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरू लै गयउ ।  
 मुहिसिहु नारद कहिउ निरूत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥  
 अवर वयणु मुनि कहे पम्वाण, ते सबई पूरे सहिनाणु ।  
 अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु विलखउ होइ ॥४१५॥  
 सतिभामा घर बहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।  
 हारी होइ न सीधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥  
 माता पास कथंतर सुण्यउ, हाथ कूटि फुणि माथो धन्योउ ।  
 आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जणु पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

(४११) १. खरा रिसाणा बीख्या जाम (ग) खूडउ निमुणि रिसाणउ जाम  
 (ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोवत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होइ (क) मूलप्रति में 'डोर' पाठ है

(४१७) १. तो मा (ख) २. तणउ (क)

कंद्रप<sup>१</sup> बुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या बहु रूपिणी ।  
 निजु माता उभिल करि घरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥  
 सत्यमामा की स्त्रियों का रूपिणि  
 के केश उतारने के लिये आना  
 एतइ बहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।  
 अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर एगारि पहुती तहा ॥४१९॥  
 पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।  
 सामणि जाणहु आए जण लेहु, अलिउल केस उतारण देहु ॥४२०॥  
 निसुणि वयण सुं दरि यो कहइ, बोल तिहारौ साचउ हवइ ।  
 निसुणहु चरित अणंगह तरणउ, नाउ मूडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥  
 प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना  
 हाय आंगुली घरी उत्तारि, अर मूंडी गोहिण की नारि ।  
 नाक कान तिनहु के खुरे, फुणि ते सन्व घर तन बाहुरे ॥४२२॥  
 गामति निकली नयर मभारि, कम्बण पुरिष ए विटमी नारि ।  
 यहर<sup>३</sup> अचंभउ वडउ विजोउ, हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥  
 एते छण ते रावल गई, सतिभामा पह उभी भई ।  
 विपरित देखि पयंपइ सोइ, तुम कवणइ मोकली विगोइ ॥४२४॥

(४१८) १. कइं पि (ग)

(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिनि सामिणि जण लेहु पाठ है

(४२२) १. पडे (ग) २. सेवडे (ग)

(४२३) १. गावत (क ल) गावतु (ग) २. विडंरी (ख) ३. अउर (क) एहु

(ग) इहुल (ल) ४. वियोग (क) विजोगु (ख) वियोगु (ग)

(४२४) १. कवरौ (ख) नाई (ग)

नोट—क प्रति में दूसरा और तीसरा धरण नहीं है ।

तव ते जंपइ विलखी भइ, हम ही रूपिणि कै घर गई ।  
 नाक कान जो देखइ टोइ, नाउ सरिसु उठी सव रोइ ॥४२५॥  
 निसुणि चरितु चर आए तथा, रूपिणि रावल वैठी जहा ।  
 विटमी नारि सिर मूडे घरणे, नाक कान हम काटे सुणे ॥४२६॥  
 निसुणि वयण फुणि रूपिणी कहइ, निरचे जाणौ येहो अहइ ।  
 काज ताज छोडहि वरवीर, परगट होइ तू साहस धीर ॥४२७॥  
 प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तव सो पयड भयो परदवणु, तहि सम रूपिन पूजइ कवणु ।  
 अतिरूप बहु लक्षणावंतु, तउ रूपिणि जाणउ यह पूत ॥४२८॥  
 वस्तुबंध—जव रूपिणि दिठ परदवणु ।  
 सिर चुंभइ आंकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कंठ लायउ ।  
 अरव मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥

(४२५) क प्रति में प्रथम दूसरा चरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख)  
 नाई (ग) २. सिउ ऊठे सवि रोइ (ग)

(४२६) करवि चरितु घरि आया तहां (ग) २. रोवै (ग) ३. तिय (ग)

(४२७) १. निहवउ जाणउ (ख) नीचउ जाणौ (ग) नविह जाणउ (क)  
 २. कुं इह अहइ (क) इह को अहइ (ख) ये हो अहै (ग) मूलप्रति में 'इवह' पाठ है ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यहां 'ग'  
 प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मयण (क) मयणु (ख) परगट (ग) २. सरि (ग) तानु रूपि न  
 पूजइ कवणु (क) सवु को जाणइ सुंदर वयणु (ख) ३. निज (ग)



दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत ।  
वाला<sup>५</sup> तुराह न दिठ मइ, यह पछित्तावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तरौ वयरणु<sup>५</sup> निसुरोइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।  
खरा इकु माह विरधिसो कयउ, फुरिासो मयरा भयउ वेदहउ ॥४३०॥  
खरा लोटइ खरा आलि कराइ, खरा खरा अंचल लागइ घाइ ।  
खरा खरा जेत्वणु<sup>५</sup> मागइ सोइ, बहुतु मोह<sup>५</sup> उपजावइ सोइ ॥४३१॥  
इतउउ चरितु तथा तिहि कियउ, फुरिा<sup>५</sup> आपराउ रूपो भयउ ।  
माता मयणु<sup>५</sup> सुनु मोहि, कवतिगु आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अरसर कयंतर भयउ, सतिभामा महलउ पठयउ ।  
तुम वलिभद्र भए लागने, आइस काम रुकमिरणी तरौ ॥४३३॥

---

(४२६) १. वाकउ वीयउ (क) अंकउ भरिउ (ख) अंकउ लिउ (ग)  
२. हिय तव कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फल (क) जीविउ तफउ (ख) जीवहु तफउ  
(ग) ४. उरि धारिउ (ख) मइ उरि घरचे (ग) ५. बालकु होतु न बौदु मइ  
इह पछित्तावा पुत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ ख प्रति में नहीं है ।

(४३१) १. भोजन रोह (ग)

(४३२) १. सुगहि तू (क) २. कउतिग (क) नोट—ग प्रति में चौया  
चरण नहीं है । मूलप्रति में 'रुतो' पाठ है ।

(४३३) १. अमर (क ख ग) २. कंचुकि (क) महला (ग) ३. अहला (क)  
भइते (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठयो' पाठ है

महलउ जाइ पहुतउ तहा, बलिभद्र कुवर वइठे जहा ।

जुगति विगतिहि विनइ घरी, ऐसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

हलधर के दूत का रूपिमणि के महल पर जाना

हलहल कौपि दूतु पाठ्यौ, पवरा वेगि रूपीणि पहुँ गए ।

उभे भए जाइ सीहद्वार, भीतर जाइ जराइ सार ॥४३५॥

तवइ मयरा बुधिमह धरइ, मूँडउ वेस विप्र को करइ ।

वडउ पेट तिनि आपराउ कीयउ, फुरिण आडौ दुवारि पडि ठयउ ४३६

तवहि दूत बोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि ।

तउ सो वाभरा कहइ वहोडि, उठि न सकउ आइयहु वहोडो । ४३७।

निसुरिण वयरा ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ रालियउ कडाइ ।

जइ इह कीम्बहूं वाभरा मरइ, तउ फुरिण इन्हकहू गोहिच चढइ। ४३८।

(४३४) १. सनत्त (क) संपत्तो (ख) संपती (ग) २. वीवी (क) स्वामी  
बात सुरीहि मुझ तरणी (ग)

(४३५) १. बलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पाठगे (क) पाठइ (ख) पाठया  
(ग) ४. घरि (ग)

(४३६) १. वूडउ (क ख) वूडा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. आनि इह (क) हउ न सकौ आये वहोड (ग)

(४३८) १. गहि गोडे रालउ इक नइ (क) गोडे डूखहि चलिउ न जाइ  
(ग) २. जो इह कवही बंभख महयु । तउ पुरिण इसु की हत्या चढइ (ग) ग प्रति में  
निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहू वेइ न पइतोर, संघि रह्या सो घर का वार ।

गहि गोडा जे रालउ तोहि, मरइ सु बंभख हत्या आहि ॥४४०॥

प्रदेश न प्राप्त सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

अइसो जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए ।  
 वाभरण एकु वाडह पडउ, जाणि सु दिवसु पंचकउ मडउ ॥४३६॥  
 तिन प्ह हम न लइ पयसारु, रुधि पडिउ सो पवलि दुवारु ।  
 गहि गोडउ जउ जालइ ताहि, मरइ सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुणि वयण हलहर परजल्यउ, कोपारूढ हो आपण चलिउ ।  
 जण दस वीसक गोहरण गए, पवण वेगि रूपिणि प्ह गए ॥४४१॥  
 उभे भए ति सीहद्वार, दीठउ वाभरण परउ दुवार ।  
 तउ वलीभद्र पइपइ ताहि, उठहि विप्र हमि भौत्तर जाहि ॥४४२॥  
 तव वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभामा धर जेम्बण गयउ ।  
 सरस अहार उवरु मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफरचउ ॥४४३॥

(४३६) १. इसउ वयण (क) अइसउ जाणिति (ख) वीठ वंभण (ग)  
 २. वारणइ (क) वारिहइ (ख) वाहरि हइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहु वेद न पइसारु (ग) २. रहघा  
 धर का वाघ (ग) ३. रालहि (क) राडहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु वंभणु हत्या  
 आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें  
 के पहिले दिया गया है । मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहवहि षडराहि पाठ है

(४४१) १. पजजलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख)  
 जाणइ वइसंदरि धी दल्यउ (ग) ३. साधिहि (ग) ४. धरि (ग)

(४४२) १. जाइसीह (क ख) जिसीहउ (ग) २. वारि (क) वीढा वाभण  
 पडघा सुवारि (ग) ३. कहइ हसि वात (ग)

(४४३) १. एजो धरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में 'पहार'  
 पाठहै । ४. उवरु (क) बहुत संघरउ (ख), ५. आफरियउ (क) अफरिउ (ख) आफरं (ग)

तव वलिभद्र कहै हसि वात, एकर हटा न उठइ खात ।  
वाभण खउ लालवी होइ, बहुत खाइ जाएइ सवु कोइ ॥४४४॥  
तवइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू वलिभद्र खरौ निरदयो ।  
अवर करइ वाभण की सेव, पर दुख बोलइ तू केव ॥४४५॥  
तवइ उठिउ वलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि चलयउ कढाइ ।  
कहा विप्र कहु दीजइ कालि, वाहिर करि आवहु निकालि ॥४४६॥  
तव हलहर लइ चलीउ कढाइ, पूछइ मयणु रुक्मिणी माइ !  
एक वात हो पूछउ तोहि, कवण वीर यह आखहि मोहि ॥४४७॥

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यह कहिए वलिभद्र कुवारु ।  
सिधजूभ यो जाएइ घणउ, यह पीतियउ आहि तुमि तरणउ ॥४४८॥  
गहि गोडइ वह वाहिर गयो, वांघि पाउ घडउ हइ रहउ ।  
देखि अचंभउ हलहरु कहइ, गुपत वीर य कोण अहइ ॥४४९॥

(४४४) १. रिटिया अनूसरि खात (क) रटिहानउ हटहि खात (ख)  
रटिकान उठुही खातु (ग) २. खरउ (ख) खरा (ग)

(४४५) १. तहु दोषंतर बोलहि देव (ग)

(४४६) १. तिन लीयो उचाइ (ग) २. गालि (क ख) गाल (ग) ३. बहु  
देह (क) सुदीजे निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. वृद्धि पाइ खुटउ होइ भयो (क) वटिउ पाउ घइ अहा रहिउ  
(ख) वाधा पाउ धरति महि हुया (ग) २. करइ (ख) ३. कोइ (ग)

### प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

राशि पाठ भुइ उभउ रहइ, तहि क्षण सिंह रूप बहु भयउ ।  
 तहि हलु आवघु लियो सम्हालि, फुणि ते दोउ भीरे पचारि ॥४५०॥  
 जूमइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सवल मलावक लरइ ।  
 सिध रुपि उठियोउ संभालि, नहि गोडउ घालियउ अडालि ॥४५१॥  
 छपनकोटि नारायण जहा, पडियो जाइ ति हलहर तहा ।  
 देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भणइ कान्ह यह वडउ विजोगु ॥४५२॥

### चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा  
 अपने वचन का वर्णन

इहर बात तो इहइ रही, वाहुरि कथा रुपिणी पह गइ ।  
 पूछिउ तव नंदन आपनौ, कापह सीच्यउ वल पोरिप घराँ ॥४५३॥  
 मेघकूट जो पाठइ ठाउ, जूमसंवर तहा निमसै राउ ।  
 निसुराँ वयण माइ रुपिणी, तिहि ठाँ विद्या पाइ घराँ ॥४५४॥

(४५०) १. राशि पाठ नौमि जनों सोइ (ग) २. तंखिए (ग) ३. विक्रमह तो होइ (ग) ४. उठि वलिनइ घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवघु लियो संभालि (ख) हलु आवघु लियो संभालि (ग) मूलप्रति में—‘तहि खुवावघु’ पाठ है

(४५१) १. मल्लवह (क) २. चुम्बिइ (क) लडहै (ख) ३. अडालि (क) नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है । ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है ।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पडया (ग)

(४५३) १. अइसी (ग) हरनहर बात जही इह रही (ख) २. आपहि कल पडरियु घला (ग)

(४५४) १. पट्टइ (क) पाया (ग) पावड (ख) २. सुराह बात नाता रुकमिलि (ग) ३. यह (क) वा (ख) डइ (ग)

निसुरिण वंयरा हु आखउ तोहि, नानारिषि ले आयो मोहि ।  
उदधिमाल मइ यह जोडि, फुरिण प्रदवन कहै कर जोडी ॥४५५॥  
विहसि माइ तव रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद अहइ ।  
निसुरिण पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६  
प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा  
में ले जाने की स्वीकृति लेना

तउ मयरद्वउ कहइ सभाइ, बोल एकु हौ मागो माइ ।  
वाह पकरि तोहि सभा वसारि, लेजइहो जादौनो पचारि ॥४५७॥

यादवों के बल पौरुष वा रुक्मिणि द्वारा वर्णन

भराइ माइ सुरिण साहस धीर, ए जादौ है वलीए वीर ।  
हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाण ॥४५८॥  
पंचति पंडव पंचति जणा, अतुल बल कौतीनन्दना ।  
अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिष नाही छेव ॥४५९॥  
छयन कोटि जादौ बलिगंड, जिनके भय कांपइ नवखंड ।  
एसै खत्री वसइ बहूत, किम्ब तू जिंणइ अकेलो पूत ॥४६०॥

(४५५) १. लई. अजोडि (ग) लईय बहोडि (क ख) २. रुचहोडि (ग)

(४५७) १. दोजै (ग)

(४५८) १. भानउ चलो हउ (ग) २. महयलि (क) कहियहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाण (क ख)  
४. अवर मल्ल करव नन्दना (क) मल्ल कुंती रांद्रण (ख) बल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तीनि (ख) ब्रह्मंड (क) २. जिते (ग) ३. नियत (ग)  
४. जाइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध—ताम कोप्यो भंगइ मयच्छु  
 रण तोडइ भड अतुल बल, लउ मान जादम असेसह ।  
 विहडाउ रण पांडवह, जिणऊ रण सव्वह नरेसह ॥  
 नारायण हलहर जिणिवि, सयलह करउ संघार ।  
 पर कुरवि जिणवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमार ॥४६१॥  
 चीनई

मयणु चरितु निमुणहु सनु कवरु, नारायणु जुभइ परदवणु ।  
 वाप पूत दोउ रण भिरे, देखइ अमर विमाणाह चढे ॥४६२॥  
 रुक्मिणि की बांह पकड़ कर यादवों की सभा में  
 ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये ललकारना

कोपाण्ड मयणु जव भयउ, वाह पकरि माता लीए जाइउ ।  
 सभा नारायणु वडठउ जहा, रुपिणि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥  
 देखि सभा वोलेइ परदवणु, तुम सो बलियो खत्री कवरु ।  
 हउ रुपिणि ले चलयो दिवाइ, जाहि बलु होइ सु लेहु छुडाइ ४६४

(४६१) १. मयण रण (क) मयच्छ (ख) मूलपाठ ममकरि २. रण तोडइ  
 भड अतुल बल (क ख) घाइ लयरद्ध, रण तोडइ भड ३. जवह (ख) ४. जिणिसु  
 (क) जिणऊ रण सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ विहम्बु सवरि सहकरि नरेसह  
 ५. एकुवि-जिणवरु मुच्चिकरि (ख) नोट— वस्तुबंध छाने ग प्रति में नहीं है ।

(४६२) १. सह कोछ (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपाणपि (ग) २. रुपिणि (ग)

(४६४) १. नहि (क ख ग) २. किउछ (ग) ३. जेहा (ग) ४. घाइ (क ख)

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित  
करके युद्ध के लिये ललकारना

तू नारायण मथुराराज, तइ कंस भान्यो भरिवाउ ।  
जरासंध तइ वधौ पचारि, मोपह रूपिणि आइ उवारि ॥४६५॥  
दसह दिसा निसुरागो वसुदेव, जूभूत तराउ तुम जागाउ भेउ ।  
जादो मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रूपिणि लेहु अजोडि ॥४६६॥  
वलिभद्र तू वलियो वर वीर, रण संग्राम आहि तू धीर ।  
हल सोहहि तोपह हथियार, मो पह रूपिणि आइ उवार ॥४६७॥  
तूही अर्जुन खंडव डहरा, तो पवरिष जाग सवु कवरणु ।  
तै वयराड छिडाइ गाइ, अरव तू रूपिणि लेइ मिलाइ ॥४६८॥  
भीम गंजा सोहहि कर तोहि, पवरिष आज दिखावइ मोहि ।  
खारि पाच तू भोजन खाइ, अरव संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥  
निसुराणि वयरा सहद्यो जोइसी, करि जोइस काही हो वसी ।  
विहसि वातपूछइ परदवरा, तुमहि सरिस जिगाइ रण कवरणु ॥४७०॥

(४६५) १. हउ (ग) २. कंसह (क) कंसह (ख) ३. वंधिउ (क) जीतिया (ग) नाविणउ (ख) ४. लोहे (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होवह (ग) २. विसार (क ख ग) ३. भूभ (क) जूभण (ग) ४. वलिए (ग) ५. बहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभउ तह गुडआ गंभीर (ग) २. साहल धीर (ग) ३. वीर (ख) ४. हलु सोहितो (ग) ५. वलकरि (ग) ६. आज (ग)

(४६८) १. खंडव वरा वहरणु (क) खंडा वरा वहरणु (ग) धखक धरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन अगाइ (ग)

(४६९) १. गवा (क) २. अरवहि आइ जुज्भहि रण माहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसइ सउ होइसी (क ख) गिराज्योइसु कइ साहउ इसी (ग) २. वलवलि माहे रणि जीतइ कवरणु (ग) नोट—चोथा चरण ख प्रति में नहीं है ।



निकुल कुवर तउ पवरिपुसार, तोपह कोत आहि हयियार ।  
 अब हइ भयो मरण को ठाउ, मोपह रुपिरिण आरिण छिडाइ ॥४७१॥  
 तुहि नारायण हलहर भए, छल करि फुरिण कुंडलपुर गये ।  
 तबहि बात जाणी तुम्ही तरणी, चीरी हरी आणी रुकिमिणी ॥४७२॥  
 मयरवउ जपइ तिस ठाइ, अब किन आइ भिरहु संग्राम ।  
 बोल एकहु बोलो भलो, तुम सब खत्री हउ एकीलो ॥४७३॥

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध  
 के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु—निसुरिण कोप्यो तहां महमहरण ।  
 जाणै वैशुंदर घृत डल्यउ, जाणिक सिह वन मा गाजिउ ।  
 रां सायर थल हलिउ, सयन सवनि जादवन्हि सजिउ ॥  
 भीउ गजा लइ तहि चलिउ, अर्जुन लिउ कोवंड ।  
 नकुल कोपि तउ कोत लउ, तउ हल्लिउ वरम्हंडु ॥४७४॥

चौपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनदउ जादमराउ ।

गैवर साजहु गैवर गुरहु, साजहुइ सुहउ आजु रण भिडहु ॥४७५॥

(४७१) १. सोहइ इत्तु तोहि कुंता हयियार (ग) मोट—छ प्रति में चौया  
 चरण नहीं है

(४७२) १. बलि परिण (क) २. जाइ (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. घिउ (ग) ३. जयु (ख) जायु (ग) ४. गहणि  
 (ख) ५. सुर सायर तबउ चलो (क) रां सायर महि उछलियउ (ख) जाणउ सेवनु  
 मेहु उछलिउ ६. सयत जाम (क) सयन जवहि (ख) सुंडउ सेनु नीसानु बिज्जउ  
 (ग) ७. हलहरि हलु आवढलिउ (ख) ८. फाटउ (क) हाल्या (ग) मूलप्रति में—  
 अरहिउ पाठ है ।

(४७५) १. पावहु (ख)

आयसु भयउ सुहर रण चलइ, ठा ठा के विसखाती करइ ।

केउ कर साजइ करवालु, केउ साजि लेहु हथियारु ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गँवर गुडहि, केउ सुहर साजि रण चढइ ।

केउ तुरीन पाखर घालि, केउ आवध लेइ सभालि ॥४७७॥

केउ टाटण जूभरण लेइ, केउ माथे टोपा देइ ।

केउ पहरइ आगिसनाह, एसे होइ चाले नर नाह ॥४७८॥

कोउ कौतु लेइ कर साजि, कोउ असिवर नीकलइ माजि ।

कोउ सेल सम्हारइ फरी, कोउ करिहा साजै छुरी ॥४७९॥

केउ भणइ वात समुभाइ, इन सुहडनि हइ लागी वाइ ।

जिहि है रूपिणि हरि पराण, सो नर नहीं तिहारै मान ॥४८०॥

एक ठाइ सब खत्री मिलहु, घटाटोप होइ जूभरण चलहु ।

वोछी वृधि जिन करहु उपाउ, अत्र यो भयउ मरण कउ चाउ ॥४८१॥

(४७६) १. निसाणेह (ग) २. टाटर टोपजि मिरि परि घरघा (क) ठाडे होइ उसारवती फराऊ (ग) ३. केइ कमरि कसहि (ग) फोइ (ख)

(४७७) १. जात रथि (ग) रथ (ख) २. अंबारी (ख) ३. आयुव (ग)

(४७८) १. जोसण (ग) २. टोपी (ख) ३. अंग (क ग) ४. रण माहि (क ख ग)

(४७९) १. रण (ग) २. नीकलए (क) नीकालहि (ख) लेहि रण ३. खुरी (क) करी (ग) ४. हाथिहि (ग)

(४८०) नोट—प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८१) १. आयु रणि (ग) २. जूभरण (ख) करी तुम्ह (ग) मूल पाठ राघी ३. उत्पि (क) कष्ट (ग) ४. इव हियो (क) इष्ट हइ (ग) ५. कउ ठाउ (क) कउ ठाउ (ख) का ठाउ (ग)

चाउरंगु वलु मिलिउ तुरंतु, हय गय रह जंपाण संजूतु ।  
 सिगिरि छात दीसहि अपाण, अंतरीन्व हूइ त्रै विमारा ॥४८२॥  
 अैसी सयन चली अपमाण, वाजण लागे दरड निसाण ।  
 घोडा खुररड उछली खेह, जाणी ताजे भादम्ब के मेह ॥४८३॥

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

वाइ दिसा करंकइ कागु, वाट काटिगो काली नागु ।  
 महुवरि दाहिणी अरु पडिहार, दक्षणा दिस फेकरइ सियालु ॥४८४॥  
 वण मा दीसइ जीव असंखि, धुजा पडइ तिन वैसर पंखि ।  
 सारथि भणइ कहै सतिभाउ, वूरै सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥  
 तउ केसव वोलइ तिस ठाड, सुगमु सुगणइ विवाहरण जाइ ।  
 सा सारथी समुभावै कोइ, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥  
 चालै सुहड न मानहि सवनु, देखि सयनु अकुलारो मयणु ।  
 माता रूपिणि घालि विमारा, पाछइ अपरा रचइ भपारा ॥४८७॥

(४८२) १. डलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले वहुत (ग) ४. सिगिरि छत्र (क ख) सिगण छत्र नहीं परबाणु (ग) ५. वाजइ गाजइ गुहिर निसाण (क) ६. चडा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरइ (क) घोडा लइ (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ छोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहार (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहार कूकइ नसिण दिसा-सियालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहार

(४८५) १. इन लकुणिहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—हूतरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमारा (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है ग-सवहि मयणु वाहडि बुधि भाणि, माता रूपिणि चडो विमारा ।

चडि करि रथि बोलइ महमहण, चालइ सुहड न मानइ सवणु ॥

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

तवइ मयण मन<sup>१</sup> मा वृधिकरी, सुमिरी विद्या समरी करी ।

जइसउ तह वलु पर देखीयउ, इसउ सयन आपणउ कीयउ ॥४८८॥

### युद्ध वर्णन

दाउ दल सयउ मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए ।

इनउ साजि लए करवाल, जाणिक जीभ पसारी काल ॥४८९॥

मयगल सिउ मैंगल रण भिरइ, हैवर स्यो हैवर आ भिरइ ।

रावत पाइक भिरे पचारि, पडइ उठइ जिमवर की सारि ॥४९०॥

केउ हाकइ केउ लरइ, केउ मार मार प्रभणइ ।

केउ भीरहि स्मरि रण आजि, केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥

केउ वीर भिडइ दूवाह, केउ हाक देइ रण माह ।

केउ करइ धनष टंकारू, केउ असिवर करइ संघारू ॥४९२॥

---

(४८८) १. वाहडि (ग) २. घरी (ख) ३. सेना करी (क) सयन कारणी  
(ख) विरधी करी (ग) ४. तसउ (क) तइ सउ (ख) जे ता तिति परवल देखिया,  
ते ता सेनु आपणा कीया (ग)

(४८९) १. साम्हे उभे (क) सनमुल जव (ख) वीर चरावर भये (ग)  
२. धणहर (क) ३. किनही (क) किनहू (ख) केइ (ग) ४. जीभ (क ख ग)

(४९०) १. आ भिडहि. (क) २. आखुडइ (क) किरजडे (ग) ३. सहहि  
अतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हायि कहिके पहणह, केइ मारते कहि इम भणहि ।

केइ भिडहि संवरि रणि गाजि, केइ कायर नासहि भाज ॥

१. मूलपाठ रणानि

(४९२) १. घूव का ट्वाउ (ग) २. पहार (क ख) के असवार घासहि घाउ (ग)

देखि स्मरि बोलइ हरिराउ, अजु न भोम्मु तिहारी ठाउ ।  
 सहिद्यो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिषु आजु दिखावहि मोहि ॥४६३॥  
 फुरिण पचारि बोलइ हरिराउ, दसौ दिसा निसुराँ वसुदेउ ।  
 वलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तराउ, दिखलावहु पवरिषा आपराउ ॥४६४॥  
 कोप्यो भीमसेणि तुरी चढाई, हाकि गजा ले रणमहि भिडइ ।  
 गैयर सरोसो करइ प्रहार, भाजहु खत्री नही उवार ॥४६५॥  
 कोपारुढ पथ तव भयउ, चाउ चढाई हाथ करि लीयउ ।  
 चउरंग वलु भिडउ पचारि, को रण पंथ न सकइ सहारि ॥४६६॥  
 सहद्यो हाथ लेइ करिवालु, निकुल काँत ले करइ प्रहार ।  
 हलहर जुम् न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ॥४६७॥  
 जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण संग्राम ति साहस धीर ।  
 दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, बहुतइ सुहर जूम्कि रण पडे ॥४६८॥  
 प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना  
 तब मयरुद्ध कोप मन धरइ, माया मइ जूधु बहु करइ ।  
 माँहे मुहड सयल रण पडे, देखइ मुहड विमारा चढे ॥४६९॥

(४६३) १. सेनु (ग)

(४६५) १. भीव तवहि तुल चढ्या (ग) २. हायि (क ग) मूलप्रति में 'सए सो भीवह' पाठ है ३. जूम् भीम बेइ बहुती मार (ग)

(४६६) १. कोपिरड पत्य (ग) २. पत्यु (ख) ३. 'पद्यह (ख) पत्य (ग)'  
४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'अल' पाठ है ।

(४६८) १. संग्रामहि (ग) २. आहि रणवीर (क) ३. जे रण संगमि आहि रणवीर (ख) ४. नायामयो जुम् रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमत्तो तय जूम् कराइ (ग) २. मोहणि विद्या दीई समवायि (ग) ३. अमर (क ख ग)

ठा ठा रहिवर ह्यवर पडे, तूटे छत्रजि रयणनि जरे ।  
 ठाठा मंगल पडे अनंत, जे संग्राम आहि मयमंत ॥५००॥  
 सेना जूझि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।  
 हाहाकार करै महमहणु, वलियो वीरु आहि यह कवणु ॥५०१॥  
 रण क्षेत्र में पडी हुई सेना की दशा

वस्तुबंध—पडे जादौ व देखि वर वीर ।  
 अरु जे पंडी अतुलवल, जिन्हहि हाक सुर साथ कंपइ ।  
 जिन चलांत महि थर हरइ, सबलधार नहु कोवि जित्तइ ॥  
 ते सब क्षत्री इहि जिणे, यह अचरिउ महंतु ।  
 काल रूप यह अवतरिउ, जादम्बु कुलह खयंतु ॥५०२॥  
 चौपइ

फिरि फिरि सेना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।  
 मोती रयण माल जे जरे, दीसइ छत्र तूरी रण पडे ॥५०३॥  
 हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।  
 ठाठा रुहिस वहंहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥

- (५००) १. ठांइ ठांइ हिवइ आंसु पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग)  
 ४. सुर (ग)  
 (५०१) १. कार (क ग) मूलपाठ-कालु २. रणमहि चोर अग्नि परववणु (ग)  
 (५०२) १. अरुजे (ख) २. अरलुन (ग) २. जिन्ह हाक ते सुरगुरु  
 डोलइ (ग) ३. जिन्ह हाक इव मेदिनी धसइ (ग) ४. सनर (ख) चलइ मेरु जिन्ह  
 हाकु भोले (ग) ५. रण (ग) ६. इहुं सुरा मयमतु (ग) ७. सब संघरइ (ख)  
 (५०३) १. रल (ग) २. तूरि (ख) तुही घर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक  
 के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।  
 (५०४) १. मयगल (ग) २. बहत (ग) ३. रुधिरुपडे (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीणी<sup>१</sup> स्याउ<sup>२</sup> करइ पुकार, जनु<sup>३</sup> जमराय जणावहि सार ।  
वेगि चल्हु सापडी<sup>४</sup> रसोइ, असई<sup>५</sup> आइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि<sup>१</sup> रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ<sup>२</sup> खर हडइ ।  
हालइ महियलु सलकिउ<sup>३</sup> सेस, जम संग्राम चलिउ<sup>४</sup> हरि केसु ॥५०६॥  
युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

जव रण पेलिउ रथु आपनउ, तव फरकिउ लोयणु दाहियाउ ।  
अरु दाहियाइ अंगु तसु<sup>१</sup> करइ, सारथि निसुगिा कहा सुभु करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सवु जिणी, अरु इहि आइ हडी रुक्मिणी ।  
तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥  
तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण ।  
भाजहि<sup>१</sup> नुहड हाक तुह तरणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

(५०५) १. वाषिणि (ख) गीदउ (ग) २. स्याल (ग) ३. ते (ग) ४. संपडइ (ख) ५. स्याह प्राय जिम ति.ते होइ (ख) पंखी पनुवन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि बुडि (ख) कोपि रथि (ग) २. लडहडइ (ख) पवत थर हरथो (ग) ३. सकिउ (ख) बोस (ग) ४. चडिउ (ख) चल सुरणि जादमह नरेसु (ग)

(५०७) दौडी सयन पडी घर ताम कोपारुड विसनु भउ ताम ।  
तंसणि हाय लइ कर चाउ, आरियण दल नानउ भडिवाउ ॥  
यह द्युच भूलप्रति में नहीं है ।

(५०८) १. नुहड (ग) २. तीसरा चरणा 'ख' प्रति में नहीं है भूलप्रति में ।  
'कुवर' पाठ है ।

तउ जंपइ केसव वर वीर, निसुणी वयण तू खत्री धीर ।

तइ महु सयन सयलु संघरचउ, अर भामिनी रूपिणि ले चलयउ ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुंनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुहु उपरि मुह कोपु न होइ ।

जीवदानु मै दीनउ तोहि, वाहुड रूपिणि आफहि मोहि ॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तव हसि जंपइ षत्री मयणु, असी वात कहै रण कवणु ।

तोहि देखत मै रूपिणि हडी, तो देखत सव सयना परी ॥५१२॥

जिहि तू रण मा जिणिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि सांथि क्यो होइ ।

लाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, बहुडि भामिनी मांगइ केम्ब ॥५१३॥

मै तू सूणिउ जूभ आगलउ, अव मो दीठउ पौरुष भलउ ।

कछु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए ॥५१४॥

तउ मयरद्व हसि करि कछुउ, तइ सव कुटम धरणि पडि सखुउ ।

तेरउ मनुइ परंखिउ आजु, तुहि फुणि नाही रूपिणि काजु ॥५१५॥

(५१०) १. तात (ग) २. सह मयलु सयेतु संघरिउ (ख) मोहि (ग)  
३. तिया (ग)

(५११) १. इसु (ग) २. जाहि (ग) ।

(५१२) १. बोलइ (ग) २. राठी (ग)

(५१३) १. मारचा वलु सयारु विगोइ (ग) २. सारथि (ग) सांति (ख) किन  
कोइ (ख)

(५१४) १. तेता (ग ख) तीसरा चरण ख प्रति में रहों हैं । भूलप्रति में  
भेलउ पाठ है ।

(५१५) १. विहसि फुणि (ख) तवहि वहसि (ग) २. जेता हरइ मनि  
संसारहइ (ग)



छोडि आन तइ परिगह तगी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।  
जउ तेरे मन कछु न आहि, पभरुइ मयगु जीउ ली जाहि ॥५१६॥

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का

क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

मरण पछितावउ जादमुराज, मइयासहु वोत्यउ सतिभाउ ।  
इहि मोस्यो वोत्यो अगलाड, अत्र मारउ जिन जाइ पलाइ ॥  
उपनउ कोप भइ चित कारिण, धनुष चढाइयउ नारंगपाणि ॥५१७॥  
अर्द्ध चंद्र तहि वाधिउ वाण, अत्र याकउ देखियउ पराणु ।  
साधिउ धनिवउ दीठउ जाम, कोपारूढ मयण भो ताम ॥५१८॥  
कुसुमवाण तव वोलिउ वयणु, धनहर छीनि गयउ महमहणु ।  
हरि को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनप संचारिउ ताम ॥५१९॥  
फुरिण कंद्रपु सरु दीनउ छोडी, वहइ धनकु गयो गुण तोडि ।  
कोपारूढ कोप तव भयउ, तीजउ चाउ हाथ करि लयउ ॥५२०॥

(५१६) तकी (ग) २. जीयशा (ग)

(५१७) १. मनि (ख, ग) २. मइ इहतिन (ग) मइ सुख (ग) ३. प्रागलउ  
(ख) ४. इव (ख) जिन (ग)

(५१८) १. तिति संघ्या बाणु (ग) २. इव इह (ख) इव देखउ इहु तणा  
निवाणु (ग) ३. घणुहरू (ख, ग) ४. कोपिरुप (ग)

(५१९) मेलिउ (ख, ग) २. चाउ (ख) मयणु (ग) ३. छिन्नउ तव (ग)  
४. तव हरि चाउ तूटिया ताम (ग) ५. चढाया (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण  
ख प्रति में नहीं है ।

(५२०) १. तव (ग) २. मुहई (ख) ऊभी घणुप गया सो तोडि (ग) ३.  
विटणु (ख) विण्यु (ग) ४. कटारा (ग)

मैलइ वाण मयण तुजि चडिउ, सोउ वाण तूटि धर परचउ ।  
विस्तु सभालइ धनहर तीनि, खिण मयरद्वउ घालइ छीनि ॥५२१॥

अधुमन द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

हसि हसि बात कहै प्रदवणु, तो<sup>१</sup> सम<sup>२</sup> नाही खत्री कम्बणु ।  
( कापह<sup>३</sup> सीख्यउ पोरिष ठाउणु, मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥  
धनुष वाण छीने तुम तरणे, तेउ राखि न सके आपणें ।  
तो पवरिषु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूजिउ राजु ॥५२३॥  
फुणि मयरद्वउ जंपइ ताहि, जरासंध क्यो मारिउ कांसु ।  
विलख वदन तव केसव भयउ, दूजउ रथ मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न

प्रकार के वाणों से युद्ध करना

तहि आरूढो जादीराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ ।  
अगनि वाणु धायउ प्रजुलंतु, चउदस भल बहु तेज करंतु ॥५२५॥

---

(५२१) १. सोइ घणुष दूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदवणु (ख) २. अउहन (ग) ३. रहसि  
भाइ पूछइ महमहणु (ग)

(५२३) १. देखे तुहि तरणे (ख)

(५२४) १. किम जोतिउ (ख) तइ जोत्या (ग) २. मून प्रति में 'अर्य' पाठ है।

(५२५) १. अगनि वाणु नेतइ महणु (ख) अगनिवाण धाई परनलंत (ख)  
२. तिहि कौ बाण न जाई सहण (ख)

मयर<sup>१</sup>द्वे दल चले पलाइ, अग्निगि<sup>३</sup>भ लरइ सहण न जाइ ।  
 जा<sup>३</sup>भहि हय गय रहिवर<sup>४</sup> घरगे, उहटे<sup>५</sup> सयन पञ्जनहा तरगे ॥५२६॥  
 कोपा<sup>३</sup>ढं भयो तव मयगु, ता रगहाक सहारइ कचगु ।  
 पुहपमाल कर धनहर लीयउ, साविउ मेघवाण पर ठयउ ॥५२७॥  
 मेघना<sup>१</sup>डु धनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत ।  
 पाणी आगि बुझाइ जा<sup>३</sup>म्ब, जादम सयन चली वहि ताम ॥५२८॥  
 रहिवर छत्रजि दीसइ भले, नीर प्रवाह सयल वहि चले ।  
 हय गय तुरय<sup>३</sup> वहइ असेस, खत्री रागे वहे असेस ॥५२९॥  
 तव जंपइ महमहण पचारि, कीयह सुक्रम को चालि ।  
 नारायण मन परचो सदेहु, हुंती यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥  
 तव मनह अचंभो भयो, मारुत वाण हाय करि लयो ।  
 जबइ वाण घाइयो भहराइ, मेघमाली धानी विहडाइ ॥५३१॥

(५२६) १. रउछमल (ख) रूपवंत (ग) २. अग्निवाण रण सहण न जाइ (ग) अग्नि मल लख सहणन जाइ (ख) ३. जाभहि (ख) ४. हउरे (ख)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(५२७) १. मेघवाणु (ख ग)

(५२९) १. घरगे (ग) २. हुये तंखियो (ग) ३. रन संवहितउ चले (ग)  
 ४. खत्री वहे जे रण आगले (न)

(५३०) १. हरिराउ संभाति (ग) २. की यह सुक्रम भवम को मारि (ख)  
 कउ इहु सुकु कय संगलबालु (ग) ३. वडा (ग) ३. कहा हु तउ इह वरसिउ मेहु (ख)  
 डहु सु कहा ते आया मेहु

(५३१) १. मारची (ग) २. जबहि पवन हुका तिहि वाइ (ग) ३. मेघमाला  
 वाले बडुडाइ (ग)

माया<sup>१</sup>मयः सनः खर हडइ, उरइ छत्र महिमंडल परहि ।

चउरंगः दलु चलिउ पडाइ, हय गय रह की सकइ सहारि ॥५३२॥

तवइ पञ्जन कोपु मन कियउ, परवत वाण हाथ करि लियउ ।

भेलीउ वाण धनसु कर लयउ, रुधि पवणु आडहु हुइ रखइ ॥५३३॥

कोप्यो द्वारिका तणो नरेसु, मयणहि पवरिसु देखि असेसु ।

वज्र प्रहार करइ खण सोइ, पव्वउ फूटि खंड सौ होइ ॥५३४॥

देवतु वाणु मयण लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।

तव केसव मन विसमइ होइ, याको चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥

अयंसउ जुम्हुः महाहउ होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।

दोउ सुहड खरे वलिवंत, जिन्हि पहार फाटहि वरम्हंड ॥५३६॥

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

तवइ कोपि जादौ मनि कहइ, मेरी हाक कवण रण सहइ ।

मोस्यो खेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

(५३२) १. माया हपि पवन संघरइ (ग) २. अर (ग) ३. पलाइ (ग)

४. गयवर के सकउ रहाइ (ग)

(५३३) १. मणि (ग) २. हस्त (ग) ३. घाणइ (ग)

(५३४) १. फुलिं (ग) २. पर्वत (ग) ३. डुइ (ग)

(५३५) १. देव विभाग (ग)

(५३६) १. मही महि (ग) २. वीर (ग) वलिवंडं (ग) ३. जिन्हि चालंत्या कोपहि ब्रह्मंड (ग)

(५३७) नोट—बौया चरण ग मति में नहीं है ।

मइ रण जीतिउ कंसु पंचारि जरासंघ रण घालि मारि ।  
मै सुर असुर साथ रण बह्यउ, यह गरहु जु खेत अरि रखउ ॥५३८॥

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

तव तिहि धनहर घालिउ रालि, चन्द्रहंस करलीयो सभालि ।

वीजु सपिसु चमकइ करवालु, जाणौ सु जीम पसारै काल ॥५३९॥

जवति खरग हाथ करि लयउ, चंद्र ख्यसु चाम्बइ कर गहिउ ।

रथ ते उत्तरि चले भर जाम, तीनि भुवन अकुलाने ताम ॥५४०॥

इंदु चंद्रु फण वै खल भल्यउ, जाणौ गिरि पर्वतउ टलटल्यउ ।

मन मा कहइ सुरंगिनि-नारि, अवयहु इहइ कइसी मारि ॥५४१॥

क्रिसन कोपि रण धायउ जाम, रूपिणि मन अवलोइ ताम ।

दउ पचारै मेरो मरगु, जुभइ कान्ह परइ परदवगु ॥५४२॥

नारद निसुगि कहु सतिभाउ, अव या भयो मीच को ठाउ ।

जव जिउ सुहृद न भीरइ पचारि, वेगो नारद जाइ निवारि ॥५४३॥

(५३८) १. इह गरुवा जे रण महि रखउ (ग)

(५३९) १. तिहि (ग)-२. घणहर (ग)

(५४०) १. जब हरिहाय खडग करि लेइ (ग) तबहि खडगु हाथि करितियो  
(ख) २. चामइ (ख ग) ३. मुई (ग) भठ (ख)

(५४१) १. आसण पर हरे (ग) २. भले (ख) ३. जंरमह पावन गिरि पर्व-  
दलई (ग) ४. सुखपिणि (म)

(५४२) १. विषय कोपि रण घरया जबहि (ग) २. बहू पचाइइ (ख ग)  
३. पउ इरकू झुभई परदवगु (ग)

(५४३) १. लयु (ग):

रणभूमि में नारद का आगमन

रूपिणि वयण मन सो धरइ, हो तो विमाणह रीप्य उत्तरइ ।

रण मयरद्ध नारायण जहा, नारदु जाइ सपत्तउ तहा ॥५४४॥

विस्तु मयण रथ दीठउ पाउ, चाहै करण कुवर कहु घाउ ।

नानारिषि षण पहंतो जाइ, वाह पकरि सो धरचो रहाइ ॥५४५॥

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

तव हसि नारद लागो कहण, मोहि वचन निसुणह महमहणु ।

कहउ तोसिउ कहहु बहुतु, यह प्रदवण तिहारो पूतु ॥५४६॥

छठी निसिहि सो हरि लयउ, कालसंवर घर वृद्धिहि भयउ ।

इहि जीत्यो स्यंघरथ पचारि, पुनवंत यह देव मुरारि ॥५४७॥

सोला लाभ भए इहि जोगु, कणायमाल सिउ भयउ विजोगु ।

कालसंवर जीत्यो तिहि ठाइ, पंद्रह वरिस मिली तुहु आइ ॥५४८॥

यह सु मयणु गरवो वरवीर, रण संग्राम जु साहस धीर ।

याह पौरिषको वर्गाई घणउ, यह सो पूत रूकिमिणी तणउ ॥५४९॥

(५४४) १. रूपिणि वयणहि तब बाहुडहि, इहुं वेगा रथ ते उत्तरहि (ग)

(५४५) १. नराइणि रथि दीना पाउ (ग) २. लोडइ (ग)

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है

(५४६) १. क्या क्या हो तुम्हसउ २. तुम्हारा

(५४७) १. सिंघरथराउ (ग) २. पुण्यवंत (ग)

(५४८) १. वारह (ग) मूलप्रति में—'सो लाल' पाठ है

(५४९) १. रहि (ख) इसु (ग) २. वर्गाई (ख) वर्णउ (ग) मूल प्रति में

पराई पाठ है ।

एतहि मयण पास मुनि जाइ, तिहिंस्यो वात कहइ समुभाइ ।  
यह तो आहि पिता तुम तराउ, जिहि पवरिष दीठउ तइ घराउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पांव पढ़ना

तउ परदवणु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ ।  
तव नारायण हसिउ हीयउ, मयण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥  
धनु रुपिणी जेनि उर धरीउ, धनि सुरयणि जिणि अवरतिउ ।  
धनिसु ठाउ विराधी गवउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥  
धनुष वारु तिहि घाले रालि, वाहुडि कुवर लैयउ अरठालि ।  
जिहि घर आइसो नंदनु होइ, तिहिंस्यो वरस लहइ सवु कोइ ॥५५३॥  
नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिषि बोलइ एम, चलहु नयरि मन भावहु खेव ।  
कुवर मयण घर करहु पासु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥  
नारायण मन विसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुभिरण गयउ ।  
जादम कुटम पडे संग्राम, किम्ब मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥  
नानारिषि बोलइ वयण, क्षत्री तू मोहिणी सकेलइ मयण ।  
क्षत्री सुहुड उठइ वरवीर, रण संग्राम मति साहस धीर ॥५५६॥

(५५०) १. नारद मयण पास उठि जाइ, (ग) २. इहु सो पिता तु अपि  
बुम्ह तराण (ग) ३. तिसु पुरिय क्या बरुण घराण (ग)

(५५१) १. तव नारायण उठइ उछंगि, मयण साथि भया बनु रंग (ग)

(५५२) १. धनि (ख) २. जिनि उदरि बत्यो (ग) ३. धनु सुठाउ जिहि  
विरविहि गयउ (ख ग)

(५५३) १. अकि उचाइ (ख) अकबालि (ग) २. अइसउ (ख) ३. तिहि  
परमंस लहइ सवु कोइ (ख) तिहि धरि सलह करइ सहु कोइ (ग)

(५५६) सुहु (ख) तू सो (ग) २. संग्रामि (क ख) संग्रामहि (ग)

मोहिनी विद्या को उठा लेने से  
सेना का उठ खड़ा होना

तव मयराधइ छाडचो मोहु, मोहिणि जाइ उतारचो मोहु ।  
सैन उठी वहु सादु समुद्रु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुद्रु ॥५५७॥  
पांडो उठे सुहड वरवीर, हलहुलु दस दिसा घर धीर ।  
छपन कोटि जादव बलिबंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥  
हय गय रहवर अरु जंपाणु, उठे जिमहि सल पडे विमाण ।  
सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार, उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥  
प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयरा कुवरू जब दीठउ आनंदिउ हरि राउ ।  
लइ उछंगि सिर चुंमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥  
भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।  
सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंद्रपु घर आयउ ॥  
सहुंकार भरांत दैव, जरा परियरा तुठउ ।  
मन आनंदिउ राउ, नयरा जउ कंद्रप वयठउ ॥५६०॥

(५५७) १. मयरदउ छोडइ कोहु (ख) २. भएउ सद्रु समद्रु (ख) सेन्या उठि खडे अरु वडु (ग) ३. जछ सु उछलिउ पलय समुद्र (ख) जाग्या दनु वीयत्या समुद्रु (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

(५५८) १. पंडव (ख ग)

(५५९) १. जंपण (ख) जंपाण (ग) २. उठे मयगल छत्ररुकि क्याण (ग) ३. विमाण (ख)

(५६०) धवलु (मूल प्रति) दोहा (ख) धवल वंधों के (ग) १. अन्नाया (ग)



भेरि तूर बहु वाजहि, कलयरु भयो अनंदु ।  
 रुपिणि सरिस मिलावळ, अवाहि मिलिउ तहि पूतु ॥  
 अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु ।  
 अतुर मल्ल वर वीर, सुयण रायणांदाणु ॥  
 चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे ।  
 कलयलु भयउ वहुतु, ततूर भेरि ताहि वाजे ॥५६१॥  
 मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिंघासणु आणि ।  
 मयरद्वउ वयसारियउ पुनवंत धर जाणि ॥  
 पुनवंत धर जाणि, तहरि कंद्रप वइसारिउ ।  
 मोती माणिळ भरिउ थाल आरति उतारिउ ॥  
 पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ ।  
 ठयो सिंघासणु आणित, मोती चउक पुरायउ ॥५६२॥  
 घर घर तोरण उभे मोती वंदनमाल ।  
 घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार ॥  
 घर घर मंगलचार नयर जन सयल वधावउ ।  
 पुन कलस लइ चली नारिनइ कंद्रप घर आयउ ॥  
 कामिणी गीत करंति, अगार चंदन बहु सोभे ।  
 मोती वंदनमाल, घर घर तोरण उभे ॥५६३॥

(५६१) अचळ (स) २. नणु (ख)

(५६२) १. घर तोरण उभे नारि

(५६३) १. घलौडि (स) मूलप्रति में-‘नदी’ पाठ है । (स)

चौपाई

सयना सयल उठी घर जाम, छपनकोडि घर चाले ताम ।  
द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुगिा सवु चलिउ अछोहुं...॥५६४॥

श्रद्धुमन का नगर प्रवेश

गरुवड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मभारि, मयण किरणि रवि लोपियउ ।  
चडि अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अविलेखियउ ॥  
धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण घर अवतरिउ ।  
सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ ।  
घर घर तोरण उभे वार, छपन कोडि उछव भयउ ॥५६५॥

(५६४) १. अखोडि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहसु सवु करइ जुगई, सुहला जीतवु आज ।  
कहइ इव रुकमिणि माइ, परिगहु सवु आई वइहा ।  
आनंदा हरिराउ, मइशु जब नयणे दीहा ॥५६६॥  
भोरि तुरि बहु वजहि, कोलाहल बहुत्त ।  
रूपिणि सरिसु मिलावडा, आई मित्याति सुपूत्त ।  
आमुकट सिरि मोतोमाला, धरि धरि मंगलचार ।  
जिनसि अडबंरु छत्त, जाशु वरसहि घण गण्जहि ।  
ऊद्यो जय जय कार भेरि तुरा बहु वज्जहि ॥५७०॥  
धरि धरि तोरण खडे, धरि धरि वेद उचारइ ।  
धरि धरि गुडी उछली, धरि धरि आनंद अपार ।  
धरि नयरि धरि धरिहिबघाया, करहि आरतउ थालि ।  
भाहु बंभण सहि आया, हसि हसि पूछइ बात ।  
बहुत परमल तिनि मूलं, सिघासण ताणीया ।  
अरु धरि तोरण ऊभे..... ॥५७१॥  
दो मोती माणिक भरि थालुं, अवरु तिसु तिलकु कराया ।  
सुर तेतीस रहसु बहु, सिहासण बइसाया ॥५७२॥

चौपाई

सैन्य सवे ऊठी घर जाम, छपन कोडि चले धरि ताम ।

कंद्रपु पइहा नयर मभारि, बाजे सबद अपार ॥५७३॥

(५६५) १. नारि नच्चहि (ख) मूलप्रति में चडि पाठ नहीं है २. अभिलेखित (ख)

भयउ उछाहु जगत जाणउ, नयर मंगल किजइ ।  
ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सवद वंजहि ॥५६६॥  
जवइ मयरा परिगह गए, घर घर नयरि बघाए भए ।  
गुडी उछली घर घर वार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति च्यारि वेद ऊच्चरइ, वर कामिणी तह मंगलु करइ ।  
पूत्र कलस तह लेइ सवारि, आगे होए चली वर नारि ॥५६८॥  
नयरि उछाहु करवहु घराउ, जव ते दिठे नयन परदवगु ।  
सिधासण वयसारिउ सोइ, पुरयन तिलकु करइ सवु कोइ ॥५६९॥  
दहि दूव सिर आक्षित देइ, मोती मारिक थाल भरेइ ।  
कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सो ठाउ जमसंवर विजाहर राउ ।  
मारिक कंचण माल संजुत, द्वारिका नयरी आइ प्रहृत ॥५७१॥

(५६८) १. वंभरा (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछलइ  
३. सिधासन वंसात्यो सोइ (ग) ४. सिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) देइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ बहु कचछ (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति में  
नहीं है ।

(५७०) १. दहीप दूव (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघकूट जो ठाउ (ग) सीसरा और चौया  
पद्य ख ग प्रति में नहीं है । मूल पाठ विवाह

पवन वेग विजाहरराज, जिसकी सयनु न सूझै ठाउ ।

रतिभामा जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मभारि ॥५७२॥

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवर भेटिउ हरिराज, बहुत भगति बोलइ सतिभाउ ।

तइ बालउ पालिउ परदवरगु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्वरगु ॥५७३॥

तव रूपिणि बोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल कं लागी पाइ ।

किम्बहउ उरणि होउ घर तोहि, पूत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निरिचत होना

बहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयण कुवर को ठयउ विवाहु ।

घरि लग्न जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥

हडे वंस त्रि मंडपु ठयउ, बहुत भंती ते तोरगु रहउ ।

कापरछाए बहु विथार, कनक कलस डोलहि सिंहवार ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहण सयल निकुताइ, आगै निमति पुहमि के राइ ।

मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥

अंग बंग कलिगह तरणे, दीप समूंद के भूजही घरणे ।

लाड चोर कानकेजिकीर, गाजरावइ मालव कसमीर ॥५७८॥

(५७२) १. जिहि कइ सइनि (ग) २. रतिनामा (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हरइ (ग) २. कौतिगुभया (ख) ३. सिंह बुवारि (ख) दीपहि पहि वारि (ग)

(५७७) १. करिसम सहस्र (ख) २. अनेक, पुहमि के भउते राइ (ग)

(५७८) १. कालिगह (ख) तिलंगह (ग) २. कानाडेकिकीर (ख) लाडग उडक भंयज कसमीर (ग) ३. गाजणीर महलिवा बहुवीर (ग)

गूजर तेसो भीजी भए, वेलावल संभरि के भले ।  
 जिजाहुति कनवजी भले, पुहमि राइ सब निमते गरो ॥५७६॥  
 संख सवुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।  
 भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥५८०॥  
 विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।  
 बहु कलियरु नयरि उछलिउ, जव मयरडु विवाहण चलिउ ॥५८१॥  
 रयणनि जडे छत्र सिर धरइ, कनक दंड चावर सिर ढलइ ।  
 कनय मुकट सिर उदउ करंत, जाणौ पावय रवि करण करंत ॥५८२॥  
 तव बोलइ रुक्मिणी रिसाइ, सतिभामा आणिह केसइ ।  
 तीनि भवण जउवरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ तोहि ॥५८३॥  
 केस उतारि पायं तल मलइ, फुणि परदवण विवाहणु चलइ ।  
 एतइ मिलि सयल जनु सवु, दुहु नारि करयउ क्षिम तवु ॥५८४॥

(५७६) १. ते सोरवी जे भले (ख) कनकदेल सोरठ जे भले (ग) २. जोजन देस कनउजी मिले (ग)

(५८१) १. चारउ वेद विप्र ऊचरहि (ग) २. इव (ग)

(५८२) १. रयणीह (ख ग) २. जडित (ग) ३. अणि छत्र सिर जपरि घस्यो (ग) ४. उदो (ग) ५. जाणउ नव रवि किरण करंतु (ख) जाणु कि सूर किरण छोडंति (ग) छउर अडंवर चाणी भले दलहि, चउर कटि कउतिग बले यह पाठ ग प्रति में अधिक है ।

(५८३) १. आणहि कराइ (ग) आणीहितु कराइ (ग)

(५८४) १. मिले जउ ताह सयलु जण लोगु (ग) २. विक्षयल जननु सभ (ग) ३. करामउ दिन तवु (ख) होइ विवाह पुडयो संजोगु (ग)

सयल कुटुम्भ मनि भयउ उछाहु, कुम्बर मयण कउ भयउ विवाहु ।  
 दइ भावरि हथलेव कीयउ, पारिगहणु इम्ब कुवरहि लयउ ॥५८५॥  
 भयउ विवाहु गयउ घर लोगु, करइ राजु बहु विलसह भोगु ।  
 देखित सतिभामा गहवरइ, सवतिसालु बहु परिहसु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर  
 पाटण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मंत्रु आठयउ, दिजु वेग खेयउ पाठयउ ।  
 रयण सचउ पाटण तिहि ठाइ, रयणचलु तहि निमसइ राउ ॥५८७॥  
 विजु वेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा हो पठयो देव ।  
 रविकीरति सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, बहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।  
 बहुत नयर मह करइ उछाहु, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पारिगहण जब कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो विवाहु लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज विलसहि बहु  
 भाय (ग) ३. देखन (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहसि भरी (ग)

(५८७) १. मंत्रु (ख) २. अरठयउ (ख) अरठयो (ग) ३. विजु वेग खयल  
 पाठयउ (ख) विजइ विगे जोइण पाठयो (ग) ४. रमण संभु पाटणपुर ठाउ (ख)  
 ५. निवसइ (ख) खगा वंक तिहिहि ले प्राउ (ग) मूलपाठ-विमवइ

(५८८) चाल्यो इतु पवन मनुलाइ. वेगि पठता खिए मंहि जाइ ।

यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तथा मूल प्रति का प्रथम द्वितीय  
 चरण ग प्रति में तृतीय चतुर्थ चरण है ।

(५८९) १. विद्याधरं तुम्हि मिलहु सुणेहु, धीय सुयंवर भानकउ देहु

मारिण्ड बोल कुटमु बहु मिलिउ, खगवइराउ मंसाहण चलिउ ।  
 द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु घरयो छवाइ ॥५६०॥  
 तौरगु रोपे घर घर वार, कनक कलस थापे सीहद्वार ।  
 सयल कुटव मिलि कीयो उपाउ, भानकुवर को भयउ विवाहु ॥५६१॥  
 पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ ।  
 राज भोग सब मिलइ मयगु, तहि सम पुहमिन दीसइ कवगु ॥५६२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति  
 एतइ अबर कथंतर भयउ, पूव विदेह जाइ संभयउ ।  
 पूंडरीवरी रायर हइ जहा, खेमंधर मुनि निमसइ जहा ॥५६३॥  
 नेम घर्म संजमु जु पहागु, तहि कहू उपराउ केवलज्ञान ।  
 आइत स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनितर सेव ॥५६४॥  
 अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना  
 नमस्कार कीयउ तंखीरी, पूजी बात भवंतर तरणी ।  
 पूव महोबद मुणिए गुणवंतु, सो स्वामी कहिउर उपंत ॥५६५॥

- (५६०) १. कुपरियरु निच्यो (ग) २. सुताहल (ल) विवाहण (ग) ३.  
 नोरल घरे रचण (ग) सुनीय एवं चतुर्न चरण (ख) प्रति में नहीं है ।  
 (५६१) १. कर्मानिह गावहि मंगलचार (ग) २. उछाउ (ग) ३. हुषा (ग)  
 (५६२) १. म प्रति में गू चीपाई नहीं है । म प्रति में निम्न चीपाई है ।  
 एमे अर्चन रातु कराहि, हवतमारु दावहि मनमाहि ।  
 रातु भोगु सति विलमहि क्रागु, माही कोइ तिन्ह सनमातु ॥६०७॥  
 (५६३) १. पूरय वेति जाइ सो गया (ग) २. खेमधर (ग)  
 (५६४) १. तनि जिया समान (ग) २. उपवहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग  
 चण्ड सो देव (ग) सुवमति में 'रसइ' पार है ।  
 (५६५) १. नेमतिर को जेति जारु (ग) २. मोहि (ग) दुखहि (ल) ३.  
 गो तामो दहि दाउ उपतु (ग) सो सम्पावर आहि पकूत. (ग)

संसयहर फुरिण कहइ सभाउ, भरहखेत सो पंचमू ठाउ ॥

सोरठ देस वारमाइ नयरु, तहि समीपु हइ न दीसइ अवरु ॥५६६॥

तह स्वामी महमहरा नरेसु, धम्म नेम्म सो करइ असेसु ।

वहु गुणवंत भज तसु तरणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५६७॥

तहि घर उपराउ खत्री मयराणु, पुनवंत जाणइ सब कम्बणु ।

तासु के रूप न पूजइ कोइ, करइ राज धरणि मा सोइ ॥५६८॥

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

निसुरिण वयरा सुर वइ गो तहा, सभा नारायण वइठो तहा ।

सुरमणि रयराजडिउ जो हारु, सोविसुत आविउ अविचारु ॥५६९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

फुरिण रवि सुर वइ लागउ कहण, निसुरिण वयरा नरवइ महमहरा ।

जिहि तू देइ अनूपम हारु, हउ कूखि लेउ अवतारु ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार

देने का निश्चय करना

तउ मन विभउ जादउराउ, मन मा चित करइ मन भाउ ।

चंद्रकांति मणि दिपइ अपारु, सतिभामा हियह आफहु हारु ॥६०१॥

(५६६) १. सोसाइरु (ग) २. वुवइ राउ (ख) भूचइ तिहि ठाइ (ग)  
मूलपाठ-भूचंठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देसु ५. पूजइ (ग)

(५६७) १. तउ महमहरा राउ नरेसु (ग) २. तारि (ग)

(५६८) १. विलसहि महि सोइ (ग)

(५६९) १. देइ नारायण कहै विचार (ग) प्रथम तथा द्वितीय चरण के स्थान में निम्न पाठ है—परदबणु दीट्टा वइट्टा पासि, पूरव नेह चितु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिनु तिय के कइ गलि घालिहि हारु (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. धरि भाउ (ग)



प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को सूचित करना

तव<sup>१</sup> मय<sup>२</sup>ण मन चमक्य<sup>३</sup>उ भयउ, पवण वेगि रुपिणि पह गयउ ।  
 माता वयण सूभइ तू मोहि, एक अनूपम आफहु तोहि ॥६०२॥  
 पूव सहोवरु जो मोहितणउ, सो सनेह<sup>१</sup> बहु करतउ कनउ ।  
 अ<sup>२</sup>व मो देउ भया नुरसार, रयणजडित तिण आप्यो हार ॥६०३॥  
 अ<sup>१</sup>व वह अहारसु पहरै सोइ, तहि<sup>२</sup> घर पूत आइसो होइ ।  
 माता फुडउ पयासहि मोहि, कहहु तहा का अफामु तोहि ॥६०४॥  
 तव रुपिणि वोलै मुह चाहि, तू मो एक सहस वरि आहि ।  
 बहुत पूत मो<sup>३</sup> नाही काज, तू ही एक मही भू<sup>४</sup>जै राज ॥६०५॥

जामवंती के गले में हार पहिनाना

फुगि वाहुडी वोलै रूपिणी, जंभवती जु वहिण महु तरणी ।  
 निनुगि पूत तीहि कही विचार, इनी कउ जाइ दिवावइ हारु ॥६०६॥

(६०२) १. तांह (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम घणहु (ग) वह करतो घणउ (ख) २. इव सो देव  
 भया मुनिमार (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हार जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि कइ (ग) ३. कहुन  
 योतउ मोहि फहाहि, तहाक हउ दयावाटे तोहि (ग)

(६०५) १. वदि (ग) २. मोहि जाणै काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति  
 राउ (ग)

(६०६) १. तुम्ह (ग) २. उमरुउ (ग)

## जामवती का श्रीकृष्ण के पास जाना

तवहि मयगु मन कहइ विचार, जंववती कहु लेहि हकारि ।  
 काममूंदरी पहरइ सोइ, बोल रूप सतिभामा होइ ॥६०७॥  
 न्हाइ धोइ पहरे आभरण, कण कंकण सोहइ ते रमण ।  
 तिहिठा वड्ठे कान्हु मुरारि, तहा गइ जामवती नारि ॥६०८॥  
 तउ मनविहसिउ तव मन चाहि, तहा जाणइ सतिभामा आहि ।  
 वाहुडि कन्हु न कीयउ विचार, तिहि वळथलि घालिउ हार ॥६०९॥  
 घालि हारु आलिगनु कियउ, तिहि उपदेस आहि संभयउ ।  
 फुरिण गिय रूपु दिखालि जाम, मन भिभिउ नारायण ताम ॥६१०॥  
 वस्तुबंध—

ताम जंपइ एम महमहण ।

मन भिभिउ विसमउ करइ, जइ यउ चरित सतिभामा जाणइ ।

वैरूप करि मोहराइ जा संवइ आणइ.....॥

जो विहिणा सइ चितयऊ, सो को मेटणहार ।

पुनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. बोल रूप (ख) बोले रूप (ग)

(६०८) १. ते रमण (ख) ते रयण (ग) मूलपाठ तान्योरण २. जहिठा (ख ग)

(६०९) १. विगसइ केसव २. इह (ग) ३. ताह गलइ हंसि घाल्यो हार (ग)

(६१०) १. करइ (ग) २. ठा आइ देउ संचरइ (ग) उरि देइ (ख)

ग— काम मूंदरी घटी उतारि; देखइ राज जम्बवती नारी ॥

( तीसरे चोये चरण के स्थान पर है )

(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—

ताम जंपइ जंपइ एम महमहणु मन विभउ विस्मउ भयो ।

एहु रूप कहि मोहुनी, मयणि कुवरि माइयो विनारि ।

चरितु सतभामा जाणी, एहु काम कटु की कवणु हरिराजा चिति चितवइ ।

जो विहिण जिमु चितयउ सो किउ मोहो जाइ ।

जाहि जंववती विलसंतु करहि राज वहु भाइ ॥

संज्ञा

१  
 लव् कवेइ पुन अक्षतरिउ, संवकुम्बार्ह नाउ तनु धरचउ ।  
 वहु गुणवंत रूप कउ विलउ, सन्निहर कान्ति जोति आगलउ ॥६१॥  
 सत्यमाना के पूत्र उज्यति

१  
 एउहे सद्धु उगिण जो वेउ, सुर नर करइ काम की सेव ।  
 सो उहूँ के तउ आउ कउ चउउ, सतमाना पर तंदणु नयउ ॥६२॥  
 लमरुवेहु मयल गुणवंत, अति नरुप सो सीलवंत ।  
 गन कुवर सुभरु तहा चउउ, सन्निमाना पर सुवंगु नयउ ॥६३॥  
 बोहु कुवर करे सुपियार, एकहि दिवस लिपल अदतार ।  
 दोउ विरदि गए सन्निनाइ, शेइ पई गुणै इक ठाइ ॥६४॥  
 शंभुइनार और सुभरुइनार का साथ साथ क्रीडा करना

१  
 एक दिवस निदि पूवा ठयो, जोडि सुवंक शल निन ठयउ ।  
 संभ कुवर कीरियल उहि ठाइ, हारि सुभरुकुवर धरि जाइ ॥६५॥  
 धनु क्रीडा का आरम्भ

वह सन्निमाना परिहसु करइ, नन नै नैत्र विनि सो करइ ।  
 करहु देन कुकुडेहि वहीडी, को हारं ता देइ दुइ कोडि ॥६६॥

- 
- (६१) १. लव् कवेइ (२) वहु अक्षतरिउ (३) संवकुम्बार्ह (४) नाउ तनु धरचउ (५) वहु गुणवंत (६) रूप कउ विलउ (७) सन्निहर कान्ति जोति आगलउ (८) ॥६१॥
- (६२) १. लमरुवेहु (२) मयल गुणवंत (३) अति नरुप (४) सो सीलवंत (५) ॥६२॥
- (६३) १. गन कुवर (२) सुभरु (३) तहा चउउ (४) सन्निमाना (५) पर सुवंगु (६) नयउ (७) ॥६३॥
- (६४) १. बोहु कुवर (२) करे सुपियार (३) एकहि दिवस (४) लिपल अदतार (५) दोउ विरदि (६) गए सन्निनाइ (७) शेइ पई (८) गुणै इक ठाइ (९) ॥६४॥
- (६५) १. एक दिवस (२) निदि पूवा ठयो (३) जोडि सुवंक शल निन ठयउ (४) संभ कुवर (५) कीरियल उहि ठाइ (६) हारि सुभरुकुवर धरि जाइ (७) ॥६५॥
- (६६) १. वह सन्निमाना (२) परिहसु करइ (३) नन नै नैत्र विनि सो करइ (४) करहु देन (५) कुकुडेहि वहीडी (६) को हारं ता देइ (७) दुइ कोडि (८) ॥६६॥

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपरु भिरे ते आइ ।

कुवर भान तराउ गो मोडी, संवकुवर जिणे द्वै कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ मंत ता ओरइ कियउ ।

दूत हकारि पठायो तथा, वहरि विजाहर निमसइ तथा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी जगाइ सार ।

भणइ दूतु मनि चित्या लेहु, पुत्री एकु भानहि देहु ॥६२०॥

### सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर मन भयउ उछाहु, दीनि कुवरि भयो तह व्याहु ।

द्वारिका नयरी कलयलु भयो, व्याह सुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर सुभान विवाहै जाम, तव रूपीणि मन चितइ जाम ।

दूत बुलाइ मंत्र परठयो, रूपुकुवर पास पाठयो ॥६२२॥

(६१८) १. सभा नारायणु मुखु चात्या मोडि (ग) २. जीता बोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संवकुवर जीति धनु लीया (ख ग)

२. कुवर सुभानुहि आये हारि, तउ विलखी सतभामा नारि (ख ग)

(६२०) १. विज्जाहर राइ (ग) २. भणौ विपु जिन अनवितु लेहु (ग)

३. देहि (ख ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुचित लेख, पुत्री एकु भानइ लेहि, पाठ है ।

(६२१) १. विद्याहर (क) विज्जारु (ख) २. तिम (क) दीनी (ख-ग)

३. उतिगु लोणु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तव रूपिणि मन उठ्यो चाउ, हउ अपणा व्याहउ करिभाउ (ग)

२. तव कियो (क) सठयो (ख) ३. पासहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ख)

कुंडलपुरिहि दूतु-पाठयो, जाइ रूपचंडु वीनयउ (ग)

## रुक्मिणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंद्रस्यो कह्यो निरस्त ।  
स्वामी बात सुणो मो तरणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ॥६२३॥

संबकुम्भार कुवर परदवगु, तिहि पवरिसु जाणइ सबु कवेणु ।  
जइसे तुम स्यो वाढइ नेहु, दुहु कुमार कहु वेटी देहु ॥६२४॥

रूपचंद्रु वोलइ तिस ठाइ, रूपिणि कहु तू लेइ मनाइ ।  
जादौ वंस पूत जो होइ, तिसको वाहुरि धीयको देइ ॥६२५॥

कहइ वांत जणवउ समुभाइ, इत्वही कहहि रुकुमिणी जाइ ।  
सामंडि तइ जु पवांडउ कियउ, वात कहत नहु दूखित हियउ ॥६२६॥

जिणि परिगहु घालियंउ अवाटाइ, सेंसंपाल तू गई मराइ ।  
अजहु वयंगु कहइ तू एहु, मयणकुवर कहु वेटी देहु ॥६२७॥

(६२३) निरस्त (क) - नोट - प्रथम और द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है। मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. वाढइ (क) ३. देहु (क) वहु (ग)  
कुवरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. कउ तउ वेटी तेहु (क) स्यउं तू कहइ बुलाइ  
३. मूल प्रति में—पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धीयन वेई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणसिउ (ख) इहि (ग) २. तू तिन्हस्यउ  
जाइ (ग) ३. सम्भति (क ख) सम्भलि करियहु म्हारा. किय (ग)  
४. घाटइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (ख) मूलपाठ—तू कल्यो मरवाइ २. महि (ग)  
३. कह (ग) मूलपाठ तू

निसुरि वयण खण चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहुत ।

तुम को वचन कहै समभाइ, सो जण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायण स्यो आयस कहउ, हम तुम माह कमण सुख रहिउ ।

केते अंगुरा तुम्हारे लेउ, तुम कहु छोडि डोम कहु देउ ॥६२९॥

निसुरि वात विलखारणी वयण, आसू पातु कीए द्वै नयण ।

मानभंग इहि मेरउ कीयउ, बुरो कियउ मुह दूखयो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रूपिणी, पूछि वात जननी आपणी ।

कवण बोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जण पाठयो ।

दुष्ट वचन ते कहे बहुत, साले खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

(६२८) १. तिहकउ ( क ) उहकउ ( ख ) मोस्यउ ( ग ) २. आइ कहा रुकमिणि के आइ ( क ) सो ति कहिउ रुकमिणी सिद्ध आइ ( ख ) सो तिन्ह कहे रुकमिणि आइ ( ग )

(६२९) १. एलो ( क ) अइसउ ( ख ) आइसा वयउ ( ग ) २. हम तुम्ह आइ सुवइ सा भयउ ( ग ) ३. कितेक ( ग ) किते ( ख ) ४. थारे ( ग ) ५. डूम ( क ख ग )

(६३०) १. सो विलखी वयण ( ग ) २. करहि डूहु ( क ) करइ डुइ ( ख ग ) ३. यहु ( क ) इति ( ख, ग ) ४. बुरा बोलु मोरयउ बोलीया ( ग )

(६३२) १. इतिउ पूत मंत आठयो ( क ) मइयिउ पूत वयणु आययउ ( ख ) महया पुत्र मंतु इहु हुयउ ( ग ) २. छउ जण पाठयो ( क, ख ) इत पाठयो ( ग ) ३. साले खरउ हीयइ मोहि पूत ( क ) साले खरे मुहि हीय बहुत ( ख ) सालहि हिये खरे ते पूत ( ग )

मइ जाण्योउ मुहि भायउ अहइ, एसी वात निचू भउ कहइ ।  
विषयवासिणि मानइ होइ, एसी वात कहइ न कोइ ॥६३३॥  
निसुणि वयण परदवनु रिसाइ, हीरणु वयण तह वोल्इ माइ ।  
रूपचंद्रु रण जिणहु पचारि, पाण रूप छलि परणउ नारि ॥६३४॥

प्रद्युम्न का कुंडलपुर की प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीणी, सुमिरी विद्या बहुरूपिणी ।  
संबु कुवर परदमनु भयउ, पवण वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३५॥

दोनों का डोम का वेप घारण कर लेना

दीठउ नयह दुवारे गयउ, डोम हप दोउ जण भयउ ।  
मयण अलावणि करण पठए, सामकुमार मंजीरा लए ॥६३६॥  
फिरे वीर चोहठे मभारि, उभे भये जाइ सीहवारि ।  
बहु परिवार सिउ दीठउ राउ, तउ कंद्रपु करह ब्रह्माउ ॥६३७॥

---

(६३३) १. नीच ( क ) नीच स्यों ( ग ) २. विष्णु सिवासिणि ( क )  
विष्णुसवासिणि ( ख ) किम वचन सुणि वोल्इ सोइ ( ग )

(६३४) १. पवनवेग ( ग )

(६३५) १. संबु कुवर परदमणु नयो ( क ) संब कुवारि कुवर दुए भए ( ग )  
मूल प्रति में 'स्वामी' पाठ है ।

(६३६) १. द्वारि झाइए ( ग ) २. करि पाठए ( क, ख ) क्यहि दुयो ( ग )  
३. संबु कुवरि ( ग )

(६३७) सोह दुवारि ( ग ) सीह दुवारि ( ख क ) २. परिवार सिउ  
( ख ) परिगहस्यउ ( ग )

गीत कवित जे आदम तरौ, ते कंद्रप गाए सब सुरो ।  
 अवर गीत सब चीतइ धरणी, जादम राय की सलहरण करइ ॥६३८॥  
 जादम तरणउ नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ भयउ ।  
 बहुत गीत की जाणहु सार, कहाँ हुते आए वैकार ॥६३९॥  
 रूपचन्द को अपना परिचय बतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भूँजइ नारायणु जादमुराउ ।  
 पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोवरि जो तुह तरणी ॥६४०॥  
 तुह्नि सलहरण वई करइ वहुत, तिणि राणी पठए दूत ।  
 तुम्हि उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥  
 वाले बोलति करहु पम्वारणु, सतु वाचीय परि होइ पवाण ।  
 भाख पालि मन धरहु सनेहु, दोउ पुत्री हमि कहु देहु ॥६४२॥

(६३८) १. आपणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति नकि (ग) ३. जादम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग सणे पाठ है तथा चतुर्यं चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) सुरणउ (ग) २. मन विलखउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए बहुवार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहाँ ते आए ए वैकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) वसहि (ख) भूँचइ तांह नारायण राउ (ग)  
 मूलप्रति में—'बुचइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवंत (क) तोहि सरहरण करहि वहुत (ग) २. पठए ये दूत (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइणि था पट्टया दूतु (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परवाणु (ख) परदमणु (ग) २. प्रवाण (क) परवाणु (ख) सत्य वयण ते होहि परवाणु (ग) ३. नागिवंत (क) नाजि जामिनि (ग) ४. कन्या (ग)



रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना  
वस्तुबंध—

निसुणि कोपिउ खरउ तहिराउ ।

जाणौ वैमुंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु कंपिउ ।

प्राणभ वोलत गयउ, एहु वोलते कवरु जंपिउ ॥

लै वाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ ।

जइ जादौ वहहि सवल, तोहि छुरावहु आइ ॥६४३॥

बाँपई

गीम्व गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार ।

हाथ अलावणि सिंगा लए, हाट चोहटे सव परिरहे ॥६४४॥

तंखण कुवर भइ पुकार, रूपचंद रा जाणी सार ।

हय गय रह सेती पलणाइ, छरण इक माह पहुंतउ आइ ॥६४५॥

रूपचंद रा पहुतो आइ, सामकुम्वारु परदमणु जहा ।

एक ताकक सव एकहि साथ, सागालाए अलावणी हाथ ॥६४६॥

(६४३) १. तवहि मनिराउ (ग) २. अति रोस कीए (ग) ३. प्राण जीव (क) प्राण जीव (ख) पुणि बोल्यो भिम गयो (ग) ४. लैई वाहिरि निगयउ (क) वहि लेहो बहु निगहहु (ग) ५. वांह पकडि बन महि धरिउ जैसे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. गीम्व (क) गावत गाहे करहि पुकार (ख) गीत कवित तिनि काठ धारि (ग) २. अरु गति जाइ (ग) ३. भरिं गए (क ख) भये वृद्धि चौहटे फिराइ (ग)

(६४५) १. पुरवि (क) पुरवरि (ख) पुत्र पुये हुंकारि (ग) २. राय जणाई सार (क) कहु दोनो सार (ग) ३. रय पाइक (ग)

(६४६) आइ पहुतउ तिहा (क) २. संव कुमर-परदमणु (क) संव कुबह परदोखु (ग) ३. एक तक नामरि (ग) ४. गलै अलावण बोला हाथि (ग)

देख डाम मन विभउ राउ, नीघण जाति करउ किम घाउ ।

घणुक सधाणि वाण जव हणो, तहि पह अवर मिले चउगुरो ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारूढ मयण तव भयउ, चाउ चडाइ होथ करि लयउ ।

अग्निवाणु दीणउ मुकराइ, जुभत षत्री चलें पलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, वाधिउ मामू गले दई पाउ ।

लइ कन्या सवु दलु पलणाइ, द्वारिका नयरि पहुते आई ॥६४९॥

रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा ।

रूपचंदु हरि दीठउ नयण, हमई लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तव हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भारेजु तिहारउ अहइ ।

इहि विद्यावलु पवरिषु घणउ, जिणि जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

(६४७) १. विलखो (क) चितइ (ग) विभिउ (ख) २. निरघण ( ख ग )  
३. किउ ( क ) को ( ग ) ४. घणुष. वाण ले हाथि हिएई ( ग ) ५. ऊपरि  
अधिकु चउंगरो गिएई ( ग )

(६४८) १. मुकलाइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप ( ) मामा (ग)

(६५०) १. रूपचंद (क ग) २. इहु के बहुतु किया महमहथ (ग)

(६५१) १. यह भारेजा तुहारा अहइ (ग) २. इहु सुपुत्त. रुकमिणि  
तणा (ग) नोट—यह छन्द (क) प्रति में नहीं है ।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तव हृसि माधव कीयउ पसाउ, वाधिउ छोडिउ मनघरि भाउ ।  
मयरद्वे हृसि आकउ भरिउ, फुणि रूपिणिपह धर ले चत्यउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणि का मिलन

भेटी जाइ वहिणि आपणी, बहु तक मोहु घरयो रुक्मिणी ।  
बहु आदर सीरुइ ज्योनार, अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥  
भायउ वहिणि भारिजे भले, भयउ पेमु जइ एकत मिले ।  
निसुरिण वयण तव भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ विचाहु ॥६५४॥

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

हरे वंस तव मंडप ठये, बहुत भांति करि तोरण रए ।  
छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण चले ॥६५५॥

---

(६५२) १. करि मनिचाउ (ग) २. रूपचन्द राउ (ग) ३. मँराधा हृसि  
ग्रंही भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. वहुता मोहु करं रुक्मिणी (ग) बहुत सनेहु 'घरिउ रुक्मिणी  
(ग) २. कीरुहि जीमणवार (क) साजइ जवनार (ख) रची जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भारिजे भले (क) मिले (ख) आप व्रहण भएइ  
मुन्ह भले (ग) २. भलो सरो जो सोमहमिले (ग) ३. दुयो (ग)

(६५५) १. का (ग रा) २. रोपिषा (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ  
'विमारा' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रूपचन्द नित्र योनइ चाणि, दोइ कन्या देयउ' प्राणि (ग)

संख भेरि बहु पडह अनंत, महुवरि वेण तूर वाजंत ।  
 हे भावरि हथलेवउ भयउ, पाणिगहनु चौहुजण कियउ ॥६५६॥  
 घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवरकउ भयउ विवाहु ।  
 सूरिजन जण ते मन मा रलइ, एकइ सतिभामा परजलइ ॥६५७॥  
 रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायण सो घर गयउ ।  
 कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ॥  
 एयंतरि मनु धम्मह रलो, जिणु वंदुण कैलासहि चलिउ ॥६५८॥

### छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध—

ताम चितइ कुवर परदवणु ।

भउ संसार समुदु परिजयनु, धम्म दिहु चित दिजइ ।

कैलासहि सिर जिणवर भुवण, सुद्ध भाइ पूज्जइ किज्जइ ॥

अलीत अनागत वरत जे दीठे जाइ जिणिद ।

जे निपाए जिणवर भुवण, धनु धनु भरहं नरिद ॥६५९॥

(६५६) १. मधुरी वीण ताल वाजंत (क) २. कीया (ग) ३. पाणग्रहण करि दुइ परणीया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग आगे दुइ चले (ग)

(६५८) इस पद्य में ६ चरण हैं । १. इत्यंतरि (क) एयंतरि (ख) येयंतरि (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुत्तर तरइ (क) समुदपरि (ग) समुदपरि (ख) २. जैनधर्म (क ख ग) ३. सिखर (ख) कबिलासह सो सिखरि (ग) ४. वरति वंदे (क) ५. जेण कराए जिण भवण ते सब वंदे आनंद (ख) ग प्रति में अन्तिम २ पंक्ति निम्न प्रकार है—

चलिउ ताह जह कम छिजइ फिरि फिरि देखइ जिण भुवण ।

वंदइ भावन भाइजे जिन, आन्या महि रहहितह महोदसरवाइ ॥

फिरि चेताले वंदे मयण, तिन्हि ज्योति विपइ जिम्ब रयण ।  
 अट्टविधि पूजउ न्हवणु कराइ, वाहुडि मयण द्वारिका जाइ ॥६६०॥  
 इयंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।  
 तिहि कुरखेत महाहउ भयउ, तिहिनेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥  
 वाहुरि मयण द्वारिका जाइ, भोग विलास चरित विलसाइ ।  
 छहरस परि सीभइ ज्योनार, अमृत भोजन करै आहार ॥६६२॥  
 तथा सतखणा घोल हर अवास, निय निय सरसे भोग विलास ।  
 अगर चंदन वहु परिमल वास, सरस कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥  
 नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी रीति कालुगत गयउ, फुरिणर नेमि जिन केवल भयउ ।  
 समवसरण तव आइ सुगिद, वणवासी अवर सुररिदु ॥६६४॥  
 छपनकोटि जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।  
 समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तथा ॥६६५॥

(६६०) १. वंदण करइ (ख) वंदे जाणु (ग) २. तिन्ह की जोति देखइ  
जिएणमाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिन्हि (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छह रति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. घवल (क ख ग) २. निय पिय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग)  
३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ—तंबोल कुसम  
सर बीस

(६६४) १. अइसी (क ख) इत्ती (ग) २. भुवणवासी आयो घरिण्डु (ग)

(६६५) १. समी जादम मिले (ग)

देवि<sup>१</sup> पयाहिण करिउ वहूत, फुणि माधव<sup>२</sup> आरंभिउ<sup>३</sup> थुति ।  
जय कंदर्प खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए सेव ॥६६६॥  
जइ कम्मट्ट दुट्ट खिउकरण, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।  
तुम पसाइ हउ दूतरु तिरउ, भव संसारि न वाहुडि परउ ॥६६७॥  
करि<sup>१</sup> स्तुति मन<sup>२</sup> महि भाइ, फुणि नर कोठि वइठउ जाइ ।  
तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि घरइ ॥६६८॥  
धर्माधर्म सुणिउ दुठ वयण, आगम तणउ सुणिउ परदवणु ।  
गणहर कहु पूछइ षण सिधि, छपनकोटि जांदम की रिधि ॥६६९॥  
नारायण मरण कहि पासु, सो मो कहु आपहु निरजासु ।  
द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

### गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।  
वारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥  
द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।  
मद ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हलहल उवरइ ॥६७२॥

(६६६) १. देव कहीजे कथा बहुत्तु (ग) २. आरंभिउ युत्त (क) आरंभिउ थोउ (ख) पुणि केसउ आइरवउ युत्तु (ग) ३. मूलपाठ आरंभिउ पुत्रु ४. करहि तिसु सेव (ग)

(६६८) १. करिवइ थुति (क) करिव थुत्ति (ख) करिवि थुत्ति (ग)  
२. मनिमहि (क ख ग) दूसरा और तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(६७०) यह छन्द क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. वलिभद्र (ख) २. छपनकोडि समुद संघरहि (ग)

मुनि आगमु सो मेटइ कम्बगु, जरदकुमार हाथ हरि मरगु ।  
भान सुभानु अरु सामिकुमार, आठ महादे संजमु भार ॥६७३॥  
सुगि वात जउ गणहर पासु, निहचे द्वारिका होइ विणगु ।  
दीपायनु तपचरणह गयउ, जरदकुमार वनवासा लयउ ॥६७४॥

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

दसदिसा खहु जादम भए, करि संजमु जिणवर पह गए ।  
दीप्या लेइ कुमर परदवरु, चितावत्थु भयउ नारायणु ॥६७५॥

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण

श्रीकृष्ण का दुखित होना

विलख वदनु भयो नारायणु, हा मुहि पूत पूत प्रदवनु ।  
कवण वुद्धि उपनी तो आजु, लेहि द्वारिका भुंजइ राजु ॥६७६॥  
राजधुरंधर जेठउ पूत, तोहि विद्यावल आहि बहुत ।  
तोहि पवरिषु जाणइ सुरभवण, जिणतपुलेइ पूतपरदवरु ॥६७७॥  
कालसंवर जाणइ तो हियउ, हउ रण महतइ विलखो कीयउ ।  
तइ रुपिणि हरी मुहुतणी, फुगि तइ सुहड पचारे घरणे ॥६७८॥

(६७३) १. जरा (ग) २. होइ (ग) ३. लम्बु (क ख ग)

(६७४) १. जरासिषु (क) जराकुमार वनवासी भया (ग)

(६७५) १. चितवन्त (क) चितावत्स्य (ग) २. थपउ (क) ३. महमहण  
(क) महमहण (ग)

(६७६) १. बोलइ तिस कवण (क) बोलइ नारायण (ख) बोलइ  
महमहण (ग)

(६७७) १. मत (क)

नारायण के वयण सुगोइ, तं पडि ऊतरु कंद्रपु देइ ।  
का कउ राजुभोग घरवारु, सुपिनंतरु जइसउ संसारु ॥६७६॥  
का कउ धन पौरिषु वलु घणउ, का कउ वापु कुटंव कहि तरणउ ।  
घडिक मा जाइ विहडाइ, आव क्षिपति को सकइ रहाइ ॥६८०॥

### रुक्मिणि का विलाप करना

नारायण वारि विलखाइ, फुरिण रूपिणि सपत्ती आइ ।  
करण कलाप करइ विललाइ, केमु पूत मन धरमु रहाइ ॥६८१॥  
एकु पूत तू मोको भयउ, धूमकेत तवही हरी लयउ ।  
कनकमाल घर विरधि करंत, वाले सुखह न देखिउ पूत ॥६८२॥  
फुरिण मोहि घर आयो आनंदु, कुल उद्योत जिम पून्यो चंदु ।  
राज भोगत ए किए असेस, अव ए भूमिरु रहोगे केस ॥६८३॥

(६७६) १. तंखिणि (ग) २. कंद्रप उतर देइ (ग) ३. किसुका राज  
देस घरवार (ग)

(६८०) १. घडी एक घाले (ग) २. उपति खपति के रहइ घराइ (ग)  
ग प्रति में प्रथम द्वितीय चरण नहीं है ।

(६८१) १. वाहुडि (क ख) २. बलत अगनि कउ लिउ घुभाइ (ग)

(६८२) १. स्तनपान मेरो नवि करिउ, नवि उछंगि कवहि मह धरिउ (क)

(६८३) १. उदयो जाणुं (ग) २. लहिगे (ख ग)

क प्रति में निम्न प्रकार है—

रूपिण मइ तय कउ मन कियउ, इव किस देखि सहारउ हियउ ।

राजा एक कीता असेस, अव ए तुमिर सह केस ॥६८३॥

क प्रति में निम्न छन्द अधिक है—

पुरिण इव रूपिण लागी कहरण, जिन तव लेहि पूत परदमण ।

इसी कहि मइ तू उर धरिउ, अव किस देखि सहारउ हियउ ॥



प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तरण वयण निनुणोड, तव प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।  
 लावण रु सरीरह सारु, जम रुठे सो होइ है छारु ॥६८४॥  
 अवगी भाइन कंदलु करइ, माया मोहु माणु परिहरइ ।  
 जिन सरीर दुख धरहु बहुत, को मो माइ कवण तुहि पूतु ॥६८५॥  
 रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहमि अवतरइ ।  
 पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुज्जण सज्जण लेइ सो चाहि ॥६८६॥  
 हम तुम सन्मधु पुव्वह जम्मु, सोहउ आणि घटाउ कम्म ।  
 इम्ब करि मनुसमभावइ ताहि, रुपिणि माइवहुडि घर जाहि ॥६८७॥

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुझाइ रुपिणि माइ, फुणि णिमि पास वइठउ जाइ ।  
 देसु कोमु परिहरे असेस, पंचमुवीर उमाले केस ॥६८८॥  
 तेरह विउ चारितु चरेइ, दह लक्षण विहु घरमु करेइ ।  
 सहइ परीसह वाइस अंग, वाहिर भीतर छायाउ अंग ॥६८९॥

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुट्ट

(६८६) १. रहटमाल (ख) घरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूरव जनमि (ग)

(६८८) १. जिण (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मूठि उपाडे केस (क) पंच मुट्ठि तिर उपाडे केस (ख) पंचमरुट्टमउ लाये केस (ग)

(६८९) १. विरदि चारै ननु चार (ग) २. वंसु संगु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्म को किउ विण्णसु, उपणउ केवलु षण निरजासु ।

दीठउ लोयण लोयपमाणु, भायउ चित्तव उच्छउ भाणु ॥६६०॥

तंखण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर हलहर धरणिंदु ।

नारायण बहु सजण लोणु, सुरयणु अच्चरायणु बहु भोगु ॥६६१॥

थुणइ सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर ।

जय कंठप हउ मति नासु, जाई तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६६२॥

इय थुतिवि सुर वइ फुणि भणइ, धणवइ एकु चित भउ सुणइ ।

मुंड केवली रिद्ध विचित्त, रचहि खणंतरि वणण विचित्त ॥६६३॥

---

(६६०) १. जो चित्तवं सोचउ या प्रासु (ग)

(६६१) १. विद्याधर आया घरि घानन्हु (ग) २. नर सुर को तह हव संजोग (क) ३. डूमण (ग)

(६६२) १. सुणइ नारि सर (क) सुणइ सुवाणी प्रवणो अपार (ग) २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोहणजिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विण्णस (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडा भव पास (क) जउ भौ विद्या लीया पासु (ग)

(६६३) १. एम भणिवि सुर सामी भणइ, धणवइ एकइ चितइ सुणइ (क) इव सुणि सुरवइ सो फुणि भणइ, ध्यावइ नवइ सुइकचित्तिसुणइ (ग)

२. पवित्तु (ग) ३. पाणरति (ग)

## ग्रंथकार का परिचय

मइसामीकउ कियउ वखाण, तुम पजुन पायउ निरवाण ।  
 अग्रवाल की मेरी जात, पुर अग्रोए मुहि उतपाति ॥६६४॥  
 सुधणु जराणी गुणवइ उर धरिउ, सामहाराज धरहु अवतरिउ ।  
 एरछु नगर वसते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥६६५॥  
 सावयलोय वसहि पुर माहि, दहु लक्षणा ते धर्म कराइ ।  
 दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि चितहं जियोसरु देउ ॥६६६॥

(६६४) १. प्रसाद (ग) २. आगरवेद (ग) अग्रवेद (ख) निम्न छन्द अधिक है—

विहरइ गाम नगर दहु देस, भविय जीव संबोहि असेत ।  
 पुणि तिनि आठ कम्म परा कियो, पुण पञ्चुण नियदाणहु गयो ॥  
 हउ मतिहीण विबुद्धि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ वखाणु ।  
 उछाह मन में कियउ चरित्तु, पढमइ उढाइ वे सो वित्तु ॥७००॥  
 पंडिय जरा नमउ कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु खोडि ।  
 अग्रवाल की मेरी जाति, अग्रवे मेरी उतपति ॥७०१॥

पुव्व चरित्तु मइ सुणे पुराण, उपमउ भाउ मइ कियो वखाण ।  
 जइ पुहनि इक चित्त कियो, साई समाइवि लियउ ॥७०२॥

चउपइ बंध मइ कियउ विचित्तु, भविय लोक पहहु दे चित्त ।  
 हूं मतिहीणु न जाएउ केउ, अखर मात न जाएउ भेउ ॥७०३॥

(६६५) १. सुधनु (ग) २. गभुं उरि धरयो (ग) ३. साहु मइराज (क)  
 समहराद करिया अवतरयो (ग) ४. एलचि (क) एयरछ (ख) वेरस (ग) ५. हम  
 करिउ वखाण (क) में कौया वखाणु (ग)

(६६६) १. सबल लोग (ख) सब ह्री लोक (ग) २. नादहल ते राज  
 कराइ (ग) ३. वरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण नाणहि बूजउ भेउ (ख)  
 दर्शन माहि नही तिन्ह भेउ (ग) ४. जयउ विचित्त (क) ध्यावहि चित्त (ख)  
 ध्यावहि इक मनि जिनयर देव (ग)

एह चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।  
 हलुवइ धर्म खपइ सो देव, मुक्ति वरंगरि मागइ एम्ब ॥६६७॥  
 जो फुरि सुणइ मनह धरिभाउ, असुभ कर्म ते दूरि हि जाइ ।  
 जोर बखाणइ माणसु कवणु, तहि कहू तूसइ देव परदवणु ॥६६८॥  
 अरु लिखि जो लिखियावइ साथु, सो सुर होइ महागुणराथु ।  
 जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६६९॥

(६६७) १. हलुव. कर्तुं गुणि होइ सो बौउ (ख) २. पावइ एउ (ख)  
 क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६६९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द है—

पढहि गुणहि जे चित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे मुखि करइ ।  
 सुणइ सुणावइ भव्ह लोय, तिह कउ पुन परापति होइ ॥७०५॥  
 ख प्रति—

जु फुरि सुणइ मनह धरि जाउ, जो बखाणइ माणसु कमणु ।  
 तित्त कहू तूसइ सइ देउ परदवणु,.....॥७११॥  
 अरु लिखि जोरु लिखावइ सुद्ध, सो सुर होइ महागुणरिद्ध ।  
 जोर पढावइ गुण कउ निलउ, सो नर पावइ संजमु भलउ ॥७१२॥  
 एह चरितुह पुन भडाह, जो नर पढइ ह नर महं सार ।  
 तहि परदवणु तूरं सि फउ देइ, संपति पुत्र अवर जसु होइ ॥७१३॥  
 हउ बुधि हीणु न जाणउ भेउ, अखर मातह मुण्डि नभेउ ।  
 पंडित जसहं नबउ कर जोडि, हीण अधिक जिन लावहु खोडि ॥७१४॥  
 इति प्रथुम चरित्रं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु  
 ग प्रति—

हउ हीण बुद्धि न जाणउ केव, अखित मंतु सु मुनिवर भेउ ।  
 पंडित जन बिनवउ कर जोडि, अधिकउ हीनु जिन लावहु खोडि ॥७१२॥  
 नइ स्वाभी का कीया बखाणु, पंडित जन मति होइ सुजाण ।  
 केवल उपजइ गुण संपुंनु, सुणहु आवगउ उपजइ पुनु ॥७१३॥

॥ इति परदवणु चउपई समाप्त ॥

यद्दु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।  
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्रु अवरु जसु होइ ॥७००॥  
हउ बुधिहीणु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।  
पंडित जणह नसू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगल्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत्  
१६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारि श्री मूलसंधे लिखापितं  
आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा  
योग्यदत्त । श्रेयोस्तु ॥



# हिन्दी-अर्थ

## प्रथम सर्ग

### स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधारु कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेंद्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका निकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्रेश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में लकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो संसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे ज्ञेयपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरण से मुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को भाव सहित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ प्रद्यम्भ और सुपार्श्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(९) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें भ्रंयांसनाथ की जय होवे। त्रासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुण्डुनाथ, अठारहवें अरहनाथ, उगनीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिसुव्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये सुभे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र सुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भाद्र मास की पंचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुणों की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण वायों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पाँचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरूपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र नेमीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्ग्रन्थ गुरु को भाव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

### द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जन्तुद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गाँव बसे हुये हैं वे नगरों के सदृश लगते हैं। जो नगर हैं वे देव धिमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में प्रत्येक मंदिर धवल तथा ऊँचे हैं जिन पर सुन्दर स्वर्ण-कलश भल्लकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुवेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका वारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलश दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौवारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। वहां के किवाड़ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये हैं तथा मोतियों की बंदनवार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान हैं जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहां चौरासी बाजार (चौपड़) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में खूब गहरा समुद्र हैं जिसका जल चारों ओर भक्कोला मारता है। जहां करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी वह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग सुख पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब वह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। वह तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा शत्रुओं के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन श्रीकृष्ण पूरी सभा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहां खाली स्थान नहीं सूझ रहा था। अग्रर आदि सुगन्धित पदार्थों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चंवर) शिर पर ढुल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रकार के (सितार, ताल, मारंग, नगाड़ा तथा तुरही) बाजे खूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पायल पहने हुये भाव भरती हुई नृत्य करने वाली ताल, विनोद एवं कला का अनुसरण करती हुई पांच घर रही थी।



## नारद ऋषि का आगमन

(२४) इतने में हाथ में कमंडलु लिये हुए मुँड़े हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये प्रसन्न मन राजर्षि नारद वहाँ जा पहुँचे।

(२६) श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया। एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहाँसे हुआ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्य-लोक के जिन मन्दिरों की वन्दना करने गये थे। द्वारिका दीखने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहाँ पधारे। हे नारद ऋषि ! आपने हमारे ऊपर कृपा की। आज यह स्थान पवित्र हो गया।

(२९) वचनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हंसने लगे तथा उनसे सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी। नारद जी आशीर्वाद देकर खड़े हो गये और फिर रणवास में चले गये।

(३०) जहाँ सत्यभामा शृंगार कर रही थी तथा आंखों में काजल लगा रही थी। चन्द्रमा के समान ललाट पर जब वह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहाँ पहुँचे।

(३१) हाथ में कमण्डलु लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे। वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई। उस मंद-बुद्धि ने कुतर्क किया कि वहाँ पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है।

## नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे। सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा। तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उसे सहन नहीं कर सके। तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये।

(३४) विना ही बाजा के जो नाचने लगता है यदि उसको बाजा मिल जावे तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उसे विच्छेद खा जाय ? एक तो नारद और फिर वह क्रोधित होकर जलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्वत के शिखर पर जाकर बैठ गये । वहां बैठे हुये मन में सोचने लगे कि सत्यभामा का किस प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी । मैं सत्यभामा का अभिमान कैसे खण्डित करूँ ? या तो किसी से इसको भयभीत कराऊँ अथवा इसको शिला के नीचे दबा कर छोड़ दूँ लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा । अन्त में यह विचार किया कि जो इससे भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे ।

(३७) तब वे गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख डाले । एक सौ दस जो विद्याधरों की नगरियां थी उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख डाला ।

### नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई रूपवती कुमारी दिखाई नहीं दी । फिर नारद ऋषि वहां आए जहां विद्याधर की नगरी कुण्डलपुरी थी ।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को खूब जानता था । जिसके अनेक लक्ष्यों से युक्त रुपवान पुत्र एवं पुत्री थी ।

(४०) दृष्टि फैलाकर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाना की कृपा से संयोग मिल जावे तो इसका नारायण से सम्बन्ध हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य हैं ।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आशीर्वाद देकर रणवास में गए । उसी क्षण उनको सुरसुन्दरी और कुमारी रुक्मिणी दिखाई पड़ी ।

## नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) वह अत्यन्त रूपवती तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान सुल वाली वह ऐसी लगती थी नानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा ही। हंस के समान चाल वाली वह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुन्दरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रत्न दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अब आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके बचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन सरद का जो चक्रवर्त्ति है तथा द्रुपद करोड यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोड़कर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं भेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड़ दो, नारायण ही रुक्मिणी को दयादेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रमत्त हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी ! सुनो और सत्यभाव से कहो। वह युक्ति बनाओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नंदनवन को संकेत-स्थल बनाना, वहाँ पर मैं तुमसे (श्राद्धार्थ) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) मय दवांगला सट्टा रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णमुरारी को कौन पहिचानेगा तब मुविश नारद ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा बलिभद्र जिसका भाई है। अपने बाण से जो सात ताल वृक्ष को बीधता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

### नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार बात निश्चित करके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहां आए जहां नारायण सभा में बंटे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे उससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामबाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विद्याधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) इसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर संकेत-स्थल है उसी स्थान पर लाकर भेंट कराऊंगा।

### श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर एवं सारथी को बिठाकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(५६) तब सारथी ने क्षण भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुण्डलपुर पहुँच गया। जहाँ वन में मन्दिर तथा चर्ची पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा समाचार भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नन्दनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हँसी। मोती एवं माणिक्य आदि से याल भरा; बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

### श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहाँ जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल घुड़ों को बाणों से बीधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूँदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूँदड़ी फूट कर चूल हो गई मानो गरहट के नीचे चावलों के कण पिस गये हो।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दवाया। दवाने से सातों सूखे हो गये और बाणों ने सातों ही ताल घुड़ों को बीध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढ़ाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

### वनपाल द्वारा रुक्मिणी-हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिसमें शक्ति हो वह आकर छुड़ाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढ़ा लिया तथा उसने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शक्ति हो गया तथा महिमंडल धर धर काँपने लगा। महिलाओं ने जाकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में खड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) तब भीष्मराव मन में कुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा बजने लगा। घोड़ों पर काठी कसो, हाथियों को रवाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर जीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज रण में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करें।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराव दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उछली कि मानों भादों के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) ढुलते हुये राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हो। अथवा ढुलते हुए राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार की सेना इकट्ठी होकर वायु-वेग के समान रणभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुआ दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ ढर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! रण में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ! धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखलाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) वात कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड़ होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार भेंट हुई जैसे अग्नि में घी पड़ा हो। हाथ में धनुषवाण संभाल लिया। अब संग्राम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के बचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया यही तुमने जपाय किया। अब तुम मिल गये हो; कहाँ जाओगे ? अब मार कर ही रहूँगा।

(५५) जब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया ।

### श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(५६) इकाल और लजकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो । तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया ।

(५६) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े । तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया ।

(६०) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया । फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रस कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था ।

(६१) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे । युद्ध बढता ही गया वंद नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी ।

### श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(६२) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवनसर नहीं है । तब हाथ में चक्र लेकर उसे लुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर फट गया ।

(६३) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया । रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहाँ ने भागने लगी ।

(६४) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराव की रक्षा करो । मन में तैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर का शायिम चलो ।

(६५) तब नारायण ने कृपा करके वंशे हुए भीष्मराव को छोड़ दिया । रूपचन्द ने गते भिन्न और फिर अपने नगर को प्रधान किया ।

### श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुडकर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा। जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे।

(८७) तब उनके मन में बड़ी खुशी हुई। आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें। भ्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं।

(८८) वासों का मंडप बनाया तथा भाँवर देकर हथलेवा किया। पाणिग्रहण करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके पश्चात् कृष्णमुरारी अपने घर रवाना हो गये।

### श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि यादवों ने मिलकर उत्सव किया। घर घर में गुडियों को उछाला गया तथा तोरण एवं वंदनवार बांधी गयी।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर में प्रविष्ट हुए। स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए। सत्यभामा की चिंता छोड़ दी। सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त ढाढ़ से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी।

### सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां बलिभद्रकुमार बैठे हुये थे। शीश झुकाकर उसने निवेदन किया कि हे देव! मुझे सत्यभामा ने भेजा है।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते।



(६४) वचनों को सुनकर हलधर वहां गये जहां नारायण बैठे हुये थे । हंस करके उन्होंने अत्यन्त धन्य पूर्वक कहा कि तुमको सत्यभामा की सँभाल भी करनी चाहिये ।

(६५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूठा उगाल गाँठ में बांधा कर वहाँ पहुँचे जहाँ सत्यभामा का मन्दिर (महल) था ।

(६६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्ष्या से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी ! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड़ दिया है ।

(६७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया । फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गाँठ को झुलाकर खाट के नीचे लटकवा डी ।

(६८) जब गठरी को झूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला । गठरी से बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी । तब सुगंधित वस्तु का देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली ।

(६९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है । तुम अपने सब भ्रमों को गया समझो ।

### सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा सत्यभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ । तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उससे तुम्हारी भेंट कराऊंगा ।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये । और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाडियां हैं । चलो आज वहाँ जीमण करें ।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालकी पर चढ़कर बगीची में गये । जहाँ बावड़ी के पास अरोक वृक्ष था वही रुक्मिणी को उतार दिया ।

(१०३) श्वेत वस्त्र, उज्वल आभूषण तथा हाथों में कड़ों से सुशोभित रुक्मिणी को देवी का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और जाप जपने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

### सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को वहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर वाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली—हे स्वामिनी ! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगे।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मिणी पति प्रेम से वंचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या वाय लग गई है ? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी आधिक भक्ति क्यों कर रही हो ? यह आले में (ताक) में रुक्मिणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, यह रुक्मिणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्वालवंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मिणी से कहा—चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गईं। सब सुख भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निकल गये तब दोनों रात्रियां गर्भवती हुईं।

(११३) तब सत्यभामा ने एक बात कही कि जिसके पहिल पुत्र उत्पन्न होगा वह जिसके पीछे पुत्र उत्पन्न होगा उसे हरा देगी। तथा वह उसके पुत्र के विवाह के समय सिर के केश भी मुंडवा देगी।

(११३) बलिभद्र आकर सत्यभामा और रुक्मिणी के लागना (साक्षी) बन गये। दोनों ने उनसे कह दिया तुम हमारा पक्ष मत करना। जो भी हार जावे उस ही के सिर आकर मुंड देना।

(११४) इधर कौरवों ने दूत भेजा वह नारायण के पास पहुँचा। उसने कहा कि आपके जो बड़ा पुत्र उत्पन्न हो उसके जन्म की सूचना दूत के हाथ भिजवा देना।

### सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

(११५) इस प्रकार बहुत दिन बीतने पर दोनों ही रानियों के पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों ही घरों में इस प्रकार लक्षणवान् एवं कला संयुक्त पुत्र हुए।

(११६) सत्यभामा का (दूत) बधावा लेकर गया और वह जाकर सिर की ओर खड़ा हो गया। रुक्मिणी का बधावा लेकर जाने वाला दूत पैरों की ओर जाकर बैठ गया।

(११७) नारायण जगे और वैठे हुये। उस समय रुक्मिणी के दूत ने बधाई दी। दूत हंसता हुआ हाथ जोड़ कर बोला-रुक्मिणी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है।

(११८) दूसरे दूत ने भी बधाई दी और नारायण से निवेदन किया कि हे स्वामिन् ! मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने के लिये कि सत्यभामा के पुत्र उत्पन्न हुआ है, भेजा है।

(११९) तब श्रीकृष्ण ने हलधर को बुलाया और जो बात हुई थी वह उनसे वैठाकर कह दी। झूठ बोलकर कैसे टाला जा सकता है। प्रथम ही बड़ा पुत्र है।

(१२०) दोनों रानियों के पुत्र उत्पन्न हुये। इससे घर घर बधावा गाये जाने लगे। सभी मंगलाचार गाने लगे और ब्राह्मण वेद-संत्रों का उच्चारण करने लगे।

(१२१) भेरी एवं तुरहि खूब बजने लगे। महुवर एवं शंख के लगातार शब्द होने लगे। घर घर में केशर अथवा रोली के चिन्ह लगाये गये तथा रित्रियाँ अपने २ घरों में मंगल गीत गाने लगीं।

## धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। यत्न कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रछन्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहाँ वन में शिला रखी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूँ। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूँ? इतने में ही उसने एक शर हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूँ जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं भेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्माँ को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहाँ सो रही थी वहाँ जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुशी हुई और उसने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। छप्पन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं पता नहीं चला।

## विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) मेघकूट नामक एक स्थान था जहाँ यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास चारह सौ विद्यायें थी। तथा जिसकी कंचचमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन वन क्रीडा को हुआ तथा विमान पर चढ़कर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहाँ वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दवा हुआ था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी वायन हाथ ऊँची (लंबी) शिला को देखी। वह क्षण में ऊँची तथा क्षण में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

### यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बत्तीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

### प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढ़ने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण छन्द एवं तर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुष एवं धारण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिड़ना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न-कुमार को हो गया।

(१३६) प्रद्युम्न ऐसा धीर बन गया जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह यमसंवर के घर बंद रहा है। अब यह कथा द्वारिका जा रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

## द्वितीय सर्ग

### पुत्र वियोग में रुक्मिणी को

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन कृप होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विधाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू बहते हुये कभी थकते न थे। पूर्व जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सम्हालूँ ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ? अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और घी चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण से मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी संताप कर रही थी उस समय नारायण एवं बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे—हे सुन्दरि ! मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रद्युम्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे श्मशान में से गोध उठावेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के खेद को भूल गयी। इस प्रकार दुखित होते हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

### रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४६) जिसका सिर मुँबा हुआ है तथा चोटी उड़ रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुःखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी—हे स्वामी ! मेरे प्रद्युम्न नानक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया ?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐसा (पुत्र) हुआ था। किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलारा कीजिये।

(१४९) नारद ने तब हंसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला। स्वर्ग, पानाल, पृथ्वी अथवा आकास में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा।

### नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने समझाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंघर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है।

(१५१) नारद ऋषि सीमंघर स्वामी के समवशरण में गये। वहां चक्रवर्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। नारद से वृत्तान्त सुनकर चक्रवर्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं।

### सीमंघर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जन्मुद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है। वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो। जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहाँ एक बावन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दवा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र वैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहाँ विद्याधरों का राजा रहता है। कालसंवर राजा वहाँ आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहाँ पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। बंद कर द वर्ष वहाँ रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) बचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहाँ आये जहाँ मेघकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहाँ जाकर रुक्मिणी से मिले और उसका पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी। हृदय में संतोष मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

### प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा सेंवार फिर से हरे भरे हो जावेंगे। स्वर्ण-कलश जल से पूर्ण सुरोभित होने लगेंगे। क्रूर एवं बाघड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृक्षों में फूल आ जावेंगे। जय तुम्हारे आंचल पीले पड़ जावेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध भरने लगेगा तब वह साहसी और धीर वीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण घटा कर नारद मुनि वहाँ से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। यह पत्र, मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अथ कथा का क्रम प्रद्युम्न की खबर जाना है।



## तृतीय सर्ग

### यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहाँ एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने व्याय सोचा कि इसको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जीतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीजा ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पास नहीं आया। तब हंसकर प्रद्युम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिंहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम वच्चे हो अभी तुम्हारा अग्रसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूँ।

(१६८) (प्रद्युम्न ने कहा)—शाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का वच्चा भी यदि डंस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) भिड़नी बालभिह को पैदा करती है वही हाथियों के भुंड को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी बन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किमी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्ररूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) वैसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं शत्रुओं के दल का डटकर नाश करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊँ तो आपको लजाऊंगा।

(१७२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर कृपा की। जब यमसंवर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

### प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरंगिनी सेना को सजा कर रवाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरही बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उल्लूकपूर्व होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौद तथा काठियां रख दी गयीं। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहरथ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उछलने लगी। सजे हुये रथों के साथ जो वाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हो। उसके प्रबल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे सब वीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर सिंहरथ कहने लगा यह बालक कौन है? इस बालक को रण में किसने भेज दिया है? मुझे इसके साथ युद्ध करने में लज्जा आती है।

(१७७) बार बार मैं मुड़ कर राजा ने कहा कि वह इस बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार! तुम वापिस घर चले जाओ।

### प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न क्रोधित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अच्छी तरह से तुम्हारा नाश करूंगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली। मेघ के समान निरन्तर बाणों की वर्षा होने लगी। सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड़ गये। रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे।

(१७७) हाथियों से हाथी भिड़ गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े। इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये। वह युद्ध क्षेत्र स्मशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे।

(१७८) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर, रथ में भिड़ गये। दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये। दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे।

(१७९) वे दोनों ही वीर मल्लयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अलाड़ा बना दिया। अन्त में सिंहस्थ त्रिकुल द्वार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया।

(१८०) जब प्रद्युम्नकुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे। सिंहस्थ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुरुधाम कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनंदित हुये। राजा भी देखकर आनंदित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस श्रवसर पर बड़ी कृपा की है। मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो।

(१८१) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो। विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंहरथ राजा को छोड़ दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंहरथ भी भेंट देकर घर चला गया।

(१८२) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया। राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि इतक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे।

(१८३) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि श्रव इसको समाप्त करना चाहिये। श्रव इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिससे हमारा राज्य निष्कंटक हो जावे।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८४) इस युक्ति को कोई प्रकट न करे। प्रद्युम्नकुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर सलाह की और खेलने के वहाने से बन-झोड़ा को चले।

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर हैं जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है ।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा । परकोटे पर चढ़कर वीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुंकारते हुये मिला ।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड़ गया तथा पूंछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया । उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यज्ञ का रूप धारण कर खड़ा हो गया ।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे । जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे ।

(१९२) ( और कहा कि ) कृष्ण के घर उसका अवतार होगा । तुम प्रद्युम्न को देख लेना । उस राजा की यह धरोहर है । इसलिये अपनी विद्यायें सम्भाल लो ।

### १६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोषिणी ४. रत्न-दर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यातारणी १२. बहुरूपिणी १३. जलबन्धिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बन्धिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया । मुकुट सौंप कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढ़ा । वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पांच सौ भाई हंस रहे थे ।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ । वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लेजा कर दूसरी गुफा दिखाई ।

(१९८) उस गुफा का नाम काल गुफा था । कालासुर दैत्य वहां रहता था । पूर्व जन्म की बात को कौन भेट सकता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया ।

(१६६) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रस दिये ।

(२००) हंसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किंकर वन कर उसके पैरों में गिर गया । फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया ।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा । उस साहसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया । एक भयंकर सर्प धनधोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया ।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया ।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया । नागशय्या, बीणा और पावड़ी ये तीन विद्याएँ उसके सामने रस दी ।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहाँ से लाभ हुआ । फिर वहाँ से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया ।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहाँ के रक्षक दैत्यों और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो ? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो ?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वजू को कौन मेल सकता है ? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जो सर्प के मुँह में हाथ डाल सकता है ।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं । वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको मगर से चिन्हित एक ध्वजा दी ।

(२०८) इसके पश्चात् जब वह वीर हृदय में साहस धारण कर अग्नि-तुल्य में गया तो वहाँ का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये ।

(२०६) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव वंदर का रूप धारण कर वहां आ पहुँचा।

(२१०) आम तोड़ने वाला तू कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूमत्कर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उदण्ड हाथी चिंवाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मदीन्मत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमार से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूंड तोड़ दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा।

(२१४) इसके पश्चात् प्रद्युम्न को वे बावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी बंबी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उसमें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) वह उग्र सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विषधर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूंदड़ी एवं धुरी दी।

(२१६) मलयगिरि पर्वत पर जब वह गया तो आश्चर्य से वहां खड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह से संघात (वार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उसकी सेवा करने लगा। उसने कंकण की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिर का मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) वरहासेन नामक जहां गुफा थी वहां उन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई व्यंतर देव था जिसने क्षण भर में वराह का रूप धारण कर लिया।

(२१६) वह बराह रूप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसकेदांतों से भिड़ गया। तथा घात करने लगा। देव ने कृत्तों का धनुष एवं विजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहां दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बंधा हुआ था।

(२२१) बंधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब वसंतराज के मन में बड़ा उत्सह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहां एक यज्ञ था पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-वाण नामक वाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहां झड़ा हो गया। जहां तनाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहां चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) वसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न वहां गया जहां उसके पांच सौ भाई खड़े थे।

(२२६) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुंह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण वीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहां भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहंकार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान् अरिहन्तदेव ने कहा है कि इस संसार में पुण्य बड़ा बलवान् है। पुण्य से ही सुर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुविमयी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर वड़ा और महान् पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

### प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने अपना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, छत्र, मुकुट, रत्नों से जटित नागशय्या, वीणा, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शंखर द्वार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुष्प धनुष, हाथ के कंकण, छुरी, कुसुमत्राण, कानों में पहिने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर वश में करना, रत्नों के युगल कंकण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और जण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहां जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्तिपूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।



### कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३६) उस श्रेष्ठ वीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामवाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

### प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहाँ पहुँचा जहाँ उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे आंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूँ।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही बात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहाँ यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुविमणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी प्राता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहाँ से हर लिया और शिला के नीचे दबाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहाँ से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें आंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्व जन्म का सम्बन्ध है। यदि वह तुम्हारे प्रेसरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विधायें प्राप्त करलो।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहाँ से लौट गया तथा कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विधायें दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) कुमार से प्रेसरस की बात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विधायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन वांछ पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूँ।

(२४९) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर को कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुरेच लिया तथा केश बिखेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पांच सौ कुमार वहाँ आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे विगाड़ कर चला गया।

**कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना**

(२५३) बचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रज्वलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पांच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की इच्छा पूरी हुई। इससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न ! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साहसी और धीर वीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४६६ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२५७) उसने एक कुमार को छोड़ दिया कि जाकर राजा को सारी बात कह दे और कहला दिया कि अगर तुम में साहस हो तो सभी दलबल को लेकर आ जाओ ।

(२५८) यमसंवर राजा वैठा हुआ था वहाँ वह कुमार भाग कर पुकारने लगा कि सभी कुमारों को बावड़ी में बालकर ऊपर से बजू शिला डाल दी है ।

### जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

(२६६) वचनों को सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने विचार किया कि आज प्रद्युम्न को समाप्त कर दूंगा । रथ हाथी को सजा लिया गया तथा घोड़ों पर काठी एवं हाथी पर भूल रख दी गयी ।

(२६७) धनुषधारी, पैदल चलने वाले, खड्गधारी तथा अन्य सारी फौज को चलने में जरा भी देर नहीं लगी । प्रद्युम्न ने सेना को आते हुये देखकर मायामयी सेना तैयार करली ।

(२६८) यमसंवर की बलशाली सेना वहाँ जा पहुँची तथा एक दूसरे को हलकारते हुये मदीन्मत्त होकर परस्पर भिड़ गई । युद्ध में राजा से राजा भिड़ गये तथा पैदल से पैदल लड़ने लगे ।

(२६९) यमसंवर हार गया तथा उसकी चतुरंगिनी सेना को मार कर गिरा दिया गया । तब विद्याधर राजा बड़ा दुःखी हुआ और अपना रथ मोड़ करके नगर की ओर चल दिया ।

(२६९) जब वह अपने महल में पहुँचा तो कालसंवर ने कनकमाला से जाकर यह बात कही कि तीनों विद्याओं मुझे दे दो ।

(२६९) वचन सुनकर वह स्त्री बड़ी दुःखी हुई तथा ऐसी हो गई मानों सिर पर यज्ञ गिर गया । हे स्वामी ! उन विद्याओं का तो यह हुआ कि मुझ से प्रद्युम्न दौल ले गया ।

(२६९) स्त्री के वचन सुनकर उसका हृदय कांप गया और उसके होश चढ़ गये तथा हृदय पिदीरु हो गया । मुझ जैसे व्यक्ति ने भी इमने झूठ बोली । याम्य में प्रेम रस में डूबने के कारण इमने तीन विद्याएँ उसको दे दी और मुझ ने अथ दल कर रही है कि कुमार दौल कर ले गया ।

(२६६) उसका चरित्र देखकर राजा बोला कि अब उसकी (राजा की) मृत्यु का कारण बन गया। जो मनुष्य स्त्री में विश्वास करता है वह बिना कारण ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्त्री का चरित्र सुनकर वह विद्याधरों का राजा व्याकुल हो गया।

### स्त्री चरित्र वर्णन

(२६७) स्त्री झूठ बोलती है और झूठ ही चलती है (आचरण करती हैं) वह अपने स्वामी को छोड़कर दूसरे के साथ भोग विलास करती है स्त्री का साहस दुगुना होता है अतः स्त्री का चरित्र कभी भुलाने योग्य नहीं है।

(२६८) उसके मन में सदैव नीच बुद्धि रहती है। उत्तम संगति को छोड़कर नीच संगति में जाती है। उसकी प्रकृति और देह दोनों ही नीच हैं। स्त्री का स्वभाव ही ऐसा है।

(२६९) उज्जैनी नगरी जो एक उत्तम स्थान था वहां पहिले विंघ नामका राजा स्त्री पर खूब विश्वास करता था इस कारण उसे अपना जीवन ही समर्पण करना पड़ा।

(२७०) दूसरे यशोधर राजा हुए जो कि अपनी पटरानी महादेवी से नाश को प्राप्त हुये। उसने राजा को विष पूर्ण लड्डू देकर मार दिया और स्वयं कुंडे से जाकर रमने लगी।

(२७१) अब तीसरी स्त्री की बात सुनिये। पाटन नामका एक स्थान था उस काल में वहां 'हया' नामका सेठ था जिसके 'तीनि' नाम की सुन्दर स्त्री थी।

(२७२) एक बार वह सेठ व्यापार को गया हुआ था। तब किसी ने उसे जीभ के वशीभूत कर लिया। सेठ की मर्यादा छोड़कर उसने एक धूर्त को अपने यहां लाकर रख लिया।

(२७३) अपने पति के प्यार को छोड़कर उस आये हुये धूर्त को उसने भर्त्सार बना लिया। इस प्रकार स्त्रियों के साहस का कोई अन्त नहीं है। इन स्त्रियों का चरित्र कितना कहा जाय।

(२७४) अमया रानी की नीचता के कारण सुदर्शन पर संकट आया तथा उसी के कारण महायुद्ध हुआ और अन्त में सुदर्शन को तपस्या के लिये जाना पड़ा।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बड़ी थी वह सुपनला को लेकर ही बड़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध हुआ। उसमें अठारह अज्ञाहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों बल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं भेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रशुम्न ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं भेट सकता। सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने मान्य में यही लिखा था।

### गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन विछुड़ जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है ? फिर वैद राजा वापिस मुडा और उसने अपनी धनुर्गियों सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

### यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष को टंकरा की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों वीर रख में आकर भिडे तो विमानों में चड़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर आण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि असमय में आदल लूट गजे रहे हों।

(२८२) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपाश को फेंका। पूरा दल नागपाश द्वारा बँधता से बाँध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(२२३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसंवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

### नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२२४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लड़ाई? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड़ रहे हो?

(२२५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसंवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२२६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका सिर चूम लिया। राजा को बहुत पछतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२२७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड़ दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर सब की मूर्च्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुड़ा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२२८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उसी समय कहा कि तुम्हारी घर प्रतीक्षा हो रही है।

(२२९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही घर की ओर मुँह कर लो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२३०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हंसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परखावेगा?

### नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

(२३१) नारद ने क्षण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हंसी में तोड़ डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड़ दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२६२) जब नारद दुःखित मन हुये तो मदन ने हंस करके उपाय किया और माणिक और नणियों से सज्जित एक विमान तैयार कर भरे तैयार कर दिया ।

(२६३) प्रद्युम्न ने जिस विद्या बल से विमान को रचा था उस विमान ने अपनी कान्ति से सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति को भी फीका कर दिया । वह ध्वजा, घंटा एवं झालर संयुक्त था । उस पर नारायण का पुत्र प्रद्युम्न चढ़ा ।

(२६४) चढने के पूर्व कालसंघर को बहुत समझा करके अति भक्ति भाव से उसके चरणों का स्पर्श किया । कुमार ने तब ज्ञप्ता याचना की और कंचनमाला के घर गया ।

(२६५) कुमार प्रद्युम्न एवं नारद मुनि विमान पर चढ़ कर आकाश में उड़े । बहुत से गिरि एवं पर्वतों को लांच करके जिन मन्दिरों की वन्दना की ।

(२६६) फिर वे वन मध्य पहुँचे तो उस स्थान पर उद्धि माला दिखाई दी । प्रद्युम्न को मार्ग में बरात मिली जो भानुकुमार के विवाह के लिये द्वारिका जा रही थी ।

(२६७) नारद ने प्रद्युम्न से बात कही कि यह कुमारी पहिले तुम्हीं को दी गयी थी । तुमको जब धूमकेतु हर ले गया तो उसे अब भानुकुमार को दे दी गई है ।

(२६८) नारद ने कहा कि इसमें मुझे दोष कोई नहीं मालूम होता है । यदि तुम्हारे में शक्ति है तो इसको जबरन ले लो । ऋषिराज के वचनों को मन में धारण करके उसने अपना भील का भेष कर लिया ।

• प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

(२६९) हाथ में धनुष तथा विपाक बाण ले लिया और उत्तर कर उनके साथ मिल गया । पथन के वेग के समान आगे जाकर उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया ।

(३००) मैं नारायण की ओर से कर लेने वाला हूँ इसलिये मेरी अधिक लाग है वह मुझे दो । जो मेरे योग्य अच्छी चीज है वही भगो दे दो जिससे मैं सब लोगों को जाने दूँ ।

(३०१) महिलाओं ने कहा कि हमारी बात सुनो तुम कौनसी बड़ी वस्तु मांगते हो। धन सम्पत्ति सोना जो चाहे सो ले लो और हमको आगे जाने दो।

(३०२) भील ने क्रोधित होकर उनको जाने दिया तथा कहा कि ऐसे जाने से क्या लाभ है। जो भली वस्तु तुम्हारे पास है वही मुझे दे दो और आगे बढ़ो।

(३०३) तब महिलाओं ने उसका मुंह देख कर कहा कि एक कुमारी जो हमारे पास है उसका तो हरि के पुत्र भानु से सगाई कर दी गयी है। अरे भील ! तुम और क्या मांग रहे हो।

(३०४) उस भील वीर ने कहा यही (कुमारी) मुझे दे दो जिससे मैं आगे तुमको मार्ग दूँ। महिलाओं ने क्रोधित होकर कहा कि अरे भील यह कहना तुम्हें उचित नहीं है।

(३०५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर विचार करके कहने लगा कि मैं नारायण का पुत्र हूँ इन वाक्यों में तुम सन्देह मत करो और उदधि माला को मुझे दे दो।

(३०६) महिला ने कहा कि हे नटखट तुम भूँठ बोलने में बहुत आगे हो। जो तीन खंड पृथ्वी का राजा है क्या उसके पुत्र का ऐसा भेष होता है ?

(३०७) तब वे सीधे मार्ग को छोड़कर टेढ़े भेड़े मार्ग से चले तो उधर भी दो कोडी (४०) भील मिल गये। सघारु कवि कहता है कि तब भील ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पूर्वक छीन लूँ तो मेरा दोष मत समझना।

### प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बलपूर्वक छीन लेना

(३०८) तब उसने कुमारी को छीन लिया और मुड करके विमान पर चढ़ गया। भील को देखकर वह कुमारी मन में बहुत डरी और करुण विलाप करने लगी।

(३०९) पहिले मेरी प्रद्युम्न के साथ सगाई हुई फिर भानुकुमार के साथ विवाह करने के लिये चली। हे नारद मेरी बात सुनो अब मैं भील के हाथ पड़ी हूँ।



(३१०) उद्धि माला ने कहा अब गुम्फे पक्क परमेष्ठियों की शरण है । यदि मृत्यु न होगी तो मैं सन्यास ले लूंगी । तब नारद के मन में संदेह हुआ कि इसने बहुत बुरी बात कही है ।

(३११) नारद ने उसी नम्र कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएँ दिखा रहा है । तब प्रद्युम्न ने बत्तीस लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया ।

(३१२) उस सुन्दरी उद्धिमाला को समझा कर वे विमान से शंभ्र चलने लगे । विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये ।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है । हे नारद ! यह कौनसी नगरी है ?

### नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है । शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्वल है । कूबे, वाघड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनैन्द्र भगवान केमन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्टित यह द्वारिका नगरी है ।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन सुनो । मुझे स्वप्न कष्टों तथा दुःख भी मत छिपाओ । हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (यह मैं तुमको बतलाता हूँ ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पाँचों वर्णों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशोभित है वह नारायण का महल है ।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो । जिसकी ध्वजा में सैंढे का चिन्ह है वह वसुदेव का महल है ।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहां ब्राह्मण बैठे हुये पुराण पढ रहे हैं तथा जहां बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा का महल है ।

(३१९) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियां चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता वड़ा हर्षित हुआ । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

### प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा । तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ । यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है । यह वही कुमार है जिसका विवाह है । इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

### प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहां प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करूंगा । उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा बड़ा चंचल था तथा लोर से हिनहिना रहा था । जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे । जिसके चार चार अंगुल के कान थे । जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी । वह ब्राह्मण उसकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था । अकेले भानुकुमार ने उसको देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर कहाँ जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बल्ल घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहाँ लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण को बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूँगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अच्छा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखो हुआ कि इस विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देओ। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौड़ा करके देख लो।

### भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को सन्हाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया वह बड़ी विचित्र बात हुई इससे मभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चड़े ? इन तरुण से तो हम बुद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार ! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा बरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढ़ते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बैचना) चाहते हो तो अपना कुछ पुत्रार्थ दितलाओ।

### प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस धीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(३३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भानुकुमार आया । लेकिन वह लटक गया और उसे चढा नहीं सका । जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पांख रख कर चढ गया ।

(३३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा । समा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया ।

### प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(३३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये । राजा का जहाँ उद्यान था वहाँ वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया ।

(३३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहाँ के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता । यदि घास काटोगे तो किरकिरी होगी ।

(३४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, भूखे घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो । घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना ।

(३४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूँदड़ी उतार कर दे दी । रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लेंगे ।

(३४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे । तब रख वाले छाती कूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया ।

(३४३) उन्होंने वह काम मूँदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली । तब वह वीर वहाँ पहुँचा जहाँ सत्यभामा की बाड़ी थी ।

(३४४) प्रद्युम्न बाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखायी दिये । वे कब के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था । फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी ।

### उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की वेल थी। कणवीर का कुंज सहक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अमर, मंदार सिन्दूर एवं सरीष आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुवा एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस बगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंध फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं संदाफल के बहुत से पेड़ थे। तथा जहां बहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, विजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लॉग, छुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। वह वन कैथ एवं आंबलों के वृक्षों से युक्त था।

### प्रद्युम्न का दो मायामयी वन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की वाड़ी देख कर उस वीर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और साहस पूर्वक विचार कर के दो वंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों वंदरों को छोड़ दिया जिन्होंने सारी वाड़ी को खा डाला। जो फूलवाड़ी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन वंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन वंदरों को मुझा कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड़ डाले। फूलवाड़ी का संहार करके सारी चाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लंका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों वंदरों ने वाड़ी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानु कुमार बैठे हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे दोष मत देना। दो वन्दर वहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी वाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुकार की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ़ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां वन्दरों ने बाड़ी को चौपट कर दिया था।

### प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की। जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया। मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया। उस समय दिन का एक पहर बीत गया था। प्रद्युम्न को बहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने जा रही थीं।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढ़ा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगीं। कुमार रथ पर चढ़ा तथा स्त्रियां खड़ी हो गईं और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गईं।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया। ऊंट और घोड़ा अरड़ा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगीं तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं। जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशुक्ल हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता।

### प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की वावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया। स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर पश्चात् वावड़ी पर जा पहुँचा।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी लड़ी थी। वह कहने लगा कि भूखे ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो।

(३६२) उसी क्षण दासी ने कहा कि यह सत्यभामा की बावड़ी है यहाँ कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहाँ कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उसी समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूँड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने बावड़ी में प्रवेश किया।

### विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोपिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कमंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे बावड़ी सूख कर रीती हो गई।

### कमंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) बावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कमंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी में चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहाँ से चल दिया।

### प्रद्युम्न का मृगामयी मेंढा वनकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मृगामयी मेंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मेंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मेंढे को बिना शंका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३७०) प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग में पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३७१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी।

(३७२) तब उसने मेंढे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टाँग तोड़ दी। टाँग तोड़ कर मेंढा वापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३७३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो क्षुब्धन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हंसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३७४) पीली धोवती तथा जनेउ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३७५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३७६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लकड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३७७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आर्शीवाद दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र ? कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३७८) फिर सिर हिलाते हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बोली सही हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३७९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिलादो।



(३८०) उसने वहाँ एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं अकेला हूँ। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलाओ।

(३८१) वहाँ ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आपस में लड़ने हो ?

(३८२) अब प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जूझणी विद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझा करके कहा कि इन लड़ने वालों को वायु लग गई है जो दूर हो जावे उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक मुट्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण ! बैठ कर भोजन करो तथा उनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

### प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही आस में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहाँ आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल बची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रमोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो अब भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भखा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि अब इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी अब भूखे ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली बर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके वहां से खड़ा हो गया।

### प्रद्युम्न का विकृत रूप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूंड मुंडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर झुका हुआ वह कुवड़ा बन गया। वह वहां से लौटा। उसके बड़े बड़े दांत थे तथा कुरूप देह थी। वह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढती थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह बात कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष फले हुये देखे तथा उसका आंचल पीला दिखाई देने लगा।

(३६८) सूखी बावड़ी नीर से भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक ब्राह्मचारी वहां पहुँचा।

(१८६) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस खोड़े ने घर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचा की आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(१८७) रुक्मिणी ने तो समझा काके देमकुशल पूछा किन्तु वह भूला भूला चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी सली को हुलाकर सय बात बता दी तथा इसका जीवन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(१८१) तत्काल वह जीवन कराने के लिये उठी तो ब्रह्मन् ने अग्नि स्तम्भिनी विद्या को याद किया। उस कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा घुआ धार हो गया तथा वह भूला भूला चिल्लाता रहा।

(१८२) मैं सत्यभामा के घर गया था लेकिन वहाँ भी खाना नहीं मिला तथा बल्दा भूला रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(१८३) रुक्मिणी ने चित्त में लोचा और उमको लडू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लडू रखे हुये थे वे सब लुवड़े रूप धारी ब्रह्मन् ने खा लिये।

(१८४) जिस आधे लडू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक वृष रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ सनक में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(१८५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(१८६) तब रुक्मिणी के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह कालसंवर के घर बड़ा हुआ है वहाँ उसने किसनी ही विचारें सीख ली है यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(१८७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उससे पूछा कि हे महाराज आपका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपको कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश डालिये । फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है ?

(४०९) तब वह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा । गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है ।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं । भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं । तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रूठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी ।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी । वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी । मेरी भूल हो गयी थी आप दोष मत दीजिये ।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो । मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूँ जिसका जवाब दो ।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा ।

(४१४) उसे धूसकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया । मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा ।

(४१५) और जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं । लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुःखित हो जावेगा ।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानुकुमार का विवाह है । मैं आज होड़ में हार गयी हूँ तथा कार्य की सिद्धि नहीं हुई है । इसी कारण मेरा मस्तक आज मूँडा जावेगा ।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माथा धुना । मन में पञ्चतथा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो ।

(४१८) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। अपनी माता को उसने ओम्कल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी बना दी।

**सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना**

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से बहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पांव पडकर उससे अनवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुम अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा बोल सच्चा हो गया है। अब कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूँड लिया।

**प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना**

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अंगुली को काट लिया और साथ की स्त्रियों को भी मूँड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के बीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है? सबको यह बड़ा विचित्र अचंभा हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है?

(४२५) तब वे दुःखिता होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। जब उन्होंने दटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मूँडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से यही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

### प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्ष्ण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कंठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पछतावा सदैव रहेगा कि मैं उसका बचपन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पांच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न बारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी वह लौटने लगा, कभी हठ करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) वहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिख लाऊंगा।

### सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहलाया कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४२४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। घड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

### हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४२५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणी को इसकी सूचना भेज दी।

(४२६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूँडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पैर एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह धाड़ें होकर द्वार पर गिर गया।

(४२७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण बटो जिससे हम भीतर जा सके। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४२८) उसके वचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो उनको गोहत्या का पाप लगेगा।

### प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४२९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४३०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पोल (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जाये और वह मर जायेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

### स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४३१) वान गुनकर बलभद्र कोष से प्रव्रतित होकर चले। तथा उनके साथ दम नीस आदर्मी नाम और वे पवन-वेग का तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४२) वे सिंह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे ।

(४४३) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था । उसने उदर को सरस आहार से इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता ।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे । ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं ।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी है । दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो ?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उसके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले । ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो ? आओ मुझे बाहर निकाल दो ।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अपनी माता रुक्मिणी से कहा । एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो ।

### रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं । यह सिंह से युद्ध करना खूब जानते हैं । यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) हैं यह मैं तुम से कहती हूँ ।

(४४९) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर लैंच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बढ़ाकर धड़ सहित वहीं पड़ा रहा । यह आश्चर्य देखकर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है ?

### प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

(४५०) पाँच टेक कर वह भूमि पर खड़ा हो गया और उसी रूप उसने सिंह का रूप धारण कर लिया । तब हलधर ने अपने आयुध को स-हाला । फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये ।



(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े याजी करने लगे दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे । सिंह रूप धारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और वल-भद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया ।

(४५२) जहाँ छापन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहाँ जाकर हलधर गिरे । सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है ।

## चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने वचन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहाँ ही रहे । अब यह कथा रुक्मिणी के पास के प्रारम्भ होती है । वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि, इतना बल पौरुष कहां से सीखा ?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्वतीय स्थान है वहाँ यमसंवर नामका राजा निवास करता है । हे माता रुक्मिणी ! सुनों मैंने वहीं से अनेक विद्यायें सीखी हैं ।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे वचन सुनो । नारद ऋषि मुझे यहाँ लाये हैं । फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उद्धि माला को ले आया हूँ ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है । हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उद्धिमाला कहां है उसे मुझे दिखलाओ ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की समा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक वचन मांगता हूँ । मैं तुम्हें तुम्हारी वाह पकड़ कर के समा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा ।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस साहसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहाँ हैं उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे ।

(४५६) पांचों पाण्डव जो पंच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छापन कोटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेले उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अशेष यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ कर आ गये।

**रुक्मिणी की वाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे  
छुड़ाने के लिए ललकारना**

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की वाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उसमें बल है तो आकर छुडा ले।

**सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके  
युद्ध के लिए ललकार**

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पछाड़ कर मार दिया था। अब मुझ से रुक्मिणी को आकर बचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके वह कहने लगा, कि हे वसुदेव ! तुम रण के भेद को खूब जानते हो । तुम छप्पन क्लोदि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुडा लो ।

(४६७) हे बलभद्र ! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो । रण संग्राम में बड़े धीर कहे जाते हो । हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडालो ।

(४६८) हे अर्जुन ! तुम खांडव घन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुष को सब कोई जानते हैं । तुमने विराट राज से गाय छुडायी थी । अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुडा लो ।

(४६९) हे भीम ! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है । अपना पुरुषार्थ मुझे आज दिसलाओ । तुम पांच सेर भोजन करते हो । युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो ।

(४७०) हे ज्योतिषी सहदेव ! मेरे वचन सुनो । तुम्हारे ज्योतिष के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ । फिर हंसकर प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम्हारे समाच कौन रण जान सकता है ?

(४७१) हे नकुल ! तुम्हारा पुरुषार्थ भी अतुल है । तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है । अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडाओ ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी हल से कुंडलपुर गये थे । उसी समय तुम्हारी यात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे ।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में आकर क्यों नहीं भिड़ते हो । मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूँ । एक ओर तुम सब क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूँ ।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में धी हाल दिया हो । मानों निह ने धन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी हिलने लगे हों । तब सत्र यादव अपनी सेना सजाने लगे । भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने फोर्ट्रड धनुष को उठा लिया और नकुल ने हाथ में भाला के लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड दंपित हो गया ।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया । यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये । घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिडना होगा । ऐसा आदेश दिया ।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये । ठः ठः चारों ओर ये शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये ।

### युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदनोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे । कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये । कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये ।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये । कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये । कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले ।

(४७९) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढी हुई तलवार लेकर निकला । किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली ।

(४८०) कुछ लोग बात समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है । जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है ।

(४८१) एक ही स्थान पर सब क्षत्रिय मिल गये और घटाटोप ( मेघ जैसे ) होकर युद्ध के लिए चले । तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अब यह मरने का दाव आ गया है ।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहां मिल गयी । वहां घोड़े, हाथी, रथ और पैदल सेना थी । अप्रमाण छत्र एवं मुकुट दिखने लगे तथा आकाश में विमान चलने लगे ।

(४८३) इस प्रकार ऐसी असंख्यात सेना चली और चारों ओर खूब नगाड़े बजने लगे । घोड़ों के खुरों से जो धूल उड़ती उससे ऐसा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों ।

## सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४२४) सेना के दायीं दिशा की ओर कौचा कांव कांव करने लगा तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया। दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे।

(४२५) वन में असंख्य जीव दिखाई दिये। ध्वजारों फकड़ने लगी एवं उन पर आकर पक्षी बैठने लगे। सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये।

(४२६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें। वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है।

(४२७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले। जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिंता हुई। माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खड़ी कर दी।

## विधा बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४२८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विधा का स्मरण किया। जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी।

## युद्ध वर्णन

(४२९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया। कितने ही चौदाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया। वे ऐसे लगने लगे जनों काल ने जीभ निकाल रखी हो।

(४३०) हाथी वालों से हाथी वाले शौंढा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी। पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी। तलवार के चार के साथ २ वे भी पड़ने एवं उठने लगे।

(४३१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है। कोई मारो मागे इस प्रकार चिल्ला रहा है। कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं।

(४६२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४६३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम ! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव ! मैं तुमसे कहता हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र ! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय ऋगाने लगे और कोई बचा नहीं।

(४६६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४६७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने हलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४६८) सभी यादव एवं चौद्धा रणभूषिणों में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

### प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४६९) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से सूर्द्धित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(४७०) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिवेष्टित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(४७१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

### रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

(१०२) देखते देखते सभी यादव वीर गए गिर पड़े तथा साथ-२ सभी सेनायें गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी धर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज हारें हुये पड़े थे वह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(१०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये छत्र रण में पड़े हुये दिखलाई दिये।

(१०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। सदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और चेतल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(१०५) गृद्धिणी और सिवार पुकार रहे थे मानों चमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमलो जिससे पूर्ण तृप्त हो जाओ।

### श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(१०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे अग्राम के लिये चले तो सकल महातल कांपने लगा एवं शेषनाग भी हिल गया।

### युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

(१०७) जब अपने रथ को उतने युद्ध में आने बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फड़कने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(१०८) क्योंकि रथ में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रथ में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०६) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है ।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे क्षत्रिय ! मेरे वचन सुनो । तुमने सभी मदनोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो ।

### श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान क्षत्रिय हो । तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है । मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो ।

### प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हँस कर बोला कि रण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी ।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मांग रहे हो ।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुरुषार्थ देख लिया है । तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता । तुम्हारी सारी सेना पडी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है ।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हँस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी सहन कर रहे हो । मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणी से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणी के योग्य नहीं हो ।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड़ दो । प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ ।



प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पढ़ताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ कर बातें कर रहा है अब इसे नारता हूँ यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुष को चढ़ा लिया ।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा । जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुष चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया ।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है । जब श्रीकृष्ण का धनुष टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुष चढ़ाया ।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुष की प्रत्यंचा टूट गयी । तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुष को अपने हाथ में लिया ।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर बार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता । विष्णु ने जब तीसरा धनुष साधा लेकिन बाण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हंस करके श्रीकृष्ण से बात कही कि आपके समान कोई वीर चात्रिय नहीं है ? आपने यह पराक्रम किससे सीखा ? आपका गुरु कौन था वह मुझे भी बताइये ।

(५२३) तुम्हारे धनुष बाण छीन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके । तुम्हारा पौरुष मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे ?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंध तथा कंस को कैसे मारा ? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ मंगाकर उस पर बैठ गये ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढ़कर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रचलित अग्निबाण को फेंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उस पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण को सेना बहने लगी।

(५२९) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ वगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है ? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया ?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र उड़ उड़ कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरंगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढ़ाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(१३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण वड़े क्रोधित हुये । वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये ।

(१३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया । तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके ।

(१३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका । दोनों ही वड़े बलवान् योद्धा हैं जिनके प्रहार से नलांड भी फटने लगा ।

**श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना**

(१३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सकता है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है ।

(१३८) मैंने युद्ध में कंस को पड़ाड़ा और जरासिंह को रण में ही पकड़ कर मार डाला । मैंने सुर असुरों के साथ युद्ध किया है । जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा ।

**श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना**

(१३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया । वह खड्ग विजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो ।

(१४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो । जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये ।

(१४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलवली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो । देवांगनायें मत्त में कइने लगी कि देखें अब इसे कैसे मारता है ?

(१४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है । श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा ।

(५४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है। जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जावे हे नारद ? शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो।

### रण भूमि में नारद का आगमन

(५४४) रुक्मिणी के वचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा। नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहाँ प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी।

(५४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया। प्रद्युम्न वार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहाँ पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया।

### नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(५४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे वचन सुनिये। यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।

(५४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बड़ा है। इसने सिंहस्थ को जीता है। हे कृष्ण ! यह बड़ा पुण्यवान् है।

(५४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला से इसका बिगाड़ हो गया है। इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष संप्राप्त होने के पश्चात् तुमसे मिला है।

(५४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान एवं साहसी है। इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है ? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है।

(५५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही। यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है।

### प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पाँव पढ़ना

(५५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया। तब नारायण ने हृदय में खूब प्रसन्न होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया।

(११२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विधाधरी) को भी धन्य है जिसके यहां यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलान हुआ है।

(११३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा घूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

### नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(११४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खुद उत्सव करो।

(११५) श्रीकृष्ण के मन में तो विषाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा ?

(११६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मोहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी चोढ़ा एवं सुभट उठ खड़े हो।

### मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खड़ा होना

(११७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही बमब रहा हो।

(११८) वीर एवं श्रेष्ठ पाण्डव, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(११९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पद्मति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों ? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सघारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठे हों।

## प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो बैठे। सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे। प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे। उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है। सभी कहने लगे कि आज परिजनों का देव मानों प्रसन्न हुआ है। श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके नयनों में समा रहा है।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं। जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है। सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरूप पुत्र उसको मिला है। बड़ा योद्धा एवं वीर है। सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है। सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मारों बादल गर्ज रहे हैं।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया। इस घर को आज पुन्यवाला समझो। उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है। मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई। युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा। जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतियों की चंदनवार बँधी हुई थी। घर घर पर गुड़ियां उछाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे। नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयीं। अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी। घर घर मोतियों के चंदनवार एवं तोरण थे।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा छप्पनकोटि यादव घर चले। जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें चोभ हीन होकर चले।

## प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी छिप गयीं। गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय कार कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँधे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(१६६) नगर में दूने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं पंच शब्द बजने लगे।

(१६७) जय प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में वधावा गाये जाने लगे। गुडियां उल्लासी गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(१६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी की चलीं।

(१६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जय से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(१७०) दूध, दही एवं अन्न माये पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती उतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियां वहाँ से चलीं।

### यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(१७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(१७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उड़ती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

### यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(१७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्ध कौन स्वजन है ?

(१७४) तत्र रुक्मिणी उम्मी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे ऊच्यता होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिन्ना दी है ।

### प्रद्युम्न का विवाह लगन निश्चित होना

(१७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्न-कुमार का विवाह निश्चित हो गया । ज्योतिषी को बुलाकर लगन निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(१७६) हरे वांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वारा खड़े किये गये । लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

### विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(१७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया । जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये ।

(१७८) अंगदेश, वंग (बंगाल), कर्लिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये । लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवइ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये ।

(१७९) गुज्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे । त्रिपाडती कान्यकुब्ज के अच्छे थे । पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये ।

(१८०) शंखों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे । भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे ।

(१८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर-घर मंगलाचार गीत गाने लगी । नगरोत्सव के कारण कल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले ।



(५२२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र तिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर डुलने लगा। सोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फँक रहा हो ?

(५२३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करे तो भी मैं उसके केश उतरवाऊँगी।

(५२४) केश उतार कर उन्हें पाँव से मलूँगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५२५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भाँवर देकर हथलेवा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिप्रदण हुआ।

(५२६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौते उसका परिहास करती थी।

### सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

(५२७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहाँ रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५२८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहाँ जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे वहाँ भेजा है। रविकीर्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उसी लड़की को भानुकुमार को दे दें।

### भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५२९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा विद्याधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहाँ मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण-कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानुकुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उसके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

## पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शंभुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहाँ पुंडरीक नगरी थी तथा जहाँ क्षेमंधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किस स्थान पर पैदा हुआ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने सभा में कहा कि पृथ्वी पर पाँचवाँ भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। उसमें सोरठ देश में द्वारिकावती नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी महिम्न श्रीकृष्ण है जो संपूर्ण नियम धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या बड़ी गुणवती है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५६८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ। उस पुण्यवान् को सभी कोई जानते हैं। सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है।

### देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५६९) केवली के वचन सुनकर देव वहाँ गया जहाँ सभा में नारायण बैठे थे। देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा।

### देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महामहर्षि ! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये। जिसको तुम अनुपम हार भेंट देओगे उसी की कुक्ष से मैं अवतार लूँगा।

### श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को माने वाली मन में चिन्तना करने लगे। चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूँगा।

### प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया। माता से कहने लगा कि मेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बतता हूँ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भव में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था। अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आकर पुत्र होगा। हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुम्हें प्राप्त करा दूँ ?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही सहस्र संतान के बराबर हो। बहुत से पुत्रों से मुझे कोई काम नहीं है। तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो।

## जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी बहिन जामवंती है । हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो ।

## जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहाँ बुला लाओ । जो कामसुन्दरी पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी ।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े धोए और गहने पहिने । उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था । जामवंती वहाँ गयी जहाँ श्रीकृष्णजी बैठे थे ।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये । तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया ।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिंगन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शत्रुकुमार उत्पन्न होगा । जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए ।

(६११) तब महामहर्षि ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विस्मित और अचभित कर दिया । यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लिया तो विकृत रूप करके मोह लेगी । वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन मेट सकता है । श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान ही निष्कण्टक राज्य करता है ।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शत्रुकुमार रखा गया । वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लब्धित करने वाला था ।

## सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सुर और नर करते थे ऐसा प्रथम स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उत्पन्न हुआ ।

(६१४) जो वहाँ से चयकर अनेक लक्ष्यों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया ।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अथवार लिया था चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पड़ने लगे ।

### शंभुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद ( मोहर ) का दांव लगाया । उस दांव में शंभुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया ।

### दूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी । उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे ।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्गे आपस में भिड़ गये । इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंभुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली ।

(६१९) इसके परचान उसने बहुत से खेल किये । (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के परचान दूत को बुलाकर वहाँ भेजा जहाँ विद्याधर रहता था ।

(६२०) दूत ने वहाँ जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी । वहाँ दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ ।

### सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में वड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया । जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शरद होने लगे ।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और हपकुमार के पास भेजा ।

## रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) वह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है ।

(६२४) शंबुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुष को सब कोई जानते हैं । दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े ।

(६२५) तब उस अवसर पर रूपचन्द ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रूपचंद) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि संभल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुःखित हुआ ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई । आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो ।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया । उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी ।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते हैं ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें । तुमको छोड़ कर हम हम को देना पसन्द करते हैं ।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू बरसने लगे । इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुःखी कर बहुत बुरा किया है ।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित बदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी बोली से दुःखी है यह मुझे शीघ्र कह दे ।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने मंत्रणा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था । वहां दूत से उसने जो दुष्ट वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय विभ्रम गया ।

(६३३) मैंने तो यह जाना था कि वह मेरा भाई है किन्तु उसने नीच बनकर ऐसी बात कही है। वह मुझे विषय वासिनी मानता है। भला ऐसी बात कौन कहता है ?

(६३४) रुक्मिणी के वचन सुनकर प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ कि उसने माता से नीच वचन कहे। अब रूपचन्द को रण में पछाड़ कर उसकी प्राणां से प्यारी पुत्री को छलकर परखूंगा।

### प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

(६३५) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहुरूपिणी विद्या को स्मरण किया। शंभुकुमार और प्रद्युम्न पवन वेग की तरह कुंडलपुर गये।

### दोनों का डूम का भेष धारण कर लेना

(६३६) नगरी के द्वार दिखलाई देने पर दोनों ने डूम का रूप धारण कर लिया। मदन ने तो हाथ में अलावण ले ली तथा शंभुकुमार ने मंजीरा ले लिया।

(६३७) फिर वे दोनों वीर चौराहे की ओर मुड़े तथा सिंहद्वार पर जाकर खड़े हो गये। वहां राजा अपने बहुत से परिवार के साथ दिखलाई दिया तब मदन ने अपनी माया फैलाई।

(६३८) फिर मदन ने बहुत से गीत एवं कवित्त जो यादवों के सम्बन्ध के थे उच्चेजित हो हो कर गाये। गीतों को सब ने ध्यान से सुना लेकिन श्रीकृष्ण की प्रशंसा के गीत उन्हें अच्छे नहीं लगे।

(६३९) जब उसने यादववंश का नाम लिया तो रूपचंद का मन दुःखित हुआ। रूपचंद ने पूछा कि मैं तुम्हारे गीतों का सार जानता हूँ पर तुम कहां से आये हो, यह बतलाओ !

### रूपचंद को अपना परिचय बतलाना

(६४०) हमारे स्थान का नाम द्वारिका नगरी है और जहां यदुराज श्रीकृष्ण राज्य करते हैं। जिनके रुक्मिणी पटरानी हैं। हे राजन् ! जो तुम्हारी बहन भी हैं।

(६४१) उस राणी ने जो तुम्हारे पाँव दूत भेजा था उसने तुम्हारी बहुत सराहना की थी। उसी ने वहाँ जाकर तुम्हारा उत्तर कहा। और उसी के कारण हम यहाँ आये हैं।

(६४२) अपने कहे हुए वचनों को प्रमाण मानो क्योंकि सत्यवक्ता के वचन प्रमाण होते हैं। हे भाग्यवान् हम से स्नेह (संबंध) करके अपनी दोनों कन्यायें दे दो।

### रूपचंद का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

(६४३) यह सुनकर राजा क्रोधित होकर खड़ा हो गया। ऐसा लगने लगा मानों अग्नि में घी डाल दिया हो। उसका सम्पूर्ण अंग एवं मस्तक काँप गया तथा बोलने २ प्राण भी उड़ने लगे। ऐसे बोल तुमने किससे कहे हैं ? उसने आदेश दिया कि इनको बाहर लेजा कर शूली पर चढा दो। यदि यदुराज में ताकत है तो वह इनको आकर छुडा लेंगे।

(६४४) तब उन्होंने पकड़े जाने पर जोर २ से पुकार की कि हम डूम हैं डूम हैं। ये शब्द चारों ओर छा गये। उसके हाथ में अलावणि (अलंगोजा) थी जिसके सुनने के लिये सारे बाजार एवं हाट भर गये थे।

(६४५) उसी समय कुमार रूपचन्द ने सब राजाओं को पुकारा तथा सब बातें बताईं। वे हाथी घोड़ों को साथ लेकर एक ही क्षण में वहाँ आ पहुँचे।

(६४६) तब राजा रूपचंद वहाँ आये जहाँ प्रद्युम्न और शंभुकुमार थे। वे दोनों एक साथ अपने हाथ में एक तारा (सितार) अलावणि (अलंगोजा) और वीणा लेकर गाने लगे।

(६४७) डूम को देखकर राजा के मन में शंका पैदा हुई कि वह नीच जाति पर किस प्रकार प्रहार कर सकता है। धनुष साध करके जब उसने बाण छोड़े तब दूसरों ने भी चौंगुणे बाण छोड़े।

### प्रद्युम्न और रूपचंद के मध्य युद्ध

(६४८) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा धनुष चढा कर हाथ में ले लिया। उसने क्रोधित होकर अग्निबाण छोड़ा जिससे लड़ते हुये सभी क्षत्रिय भागने लगे।



(६४६) सेना भाग गयी तथा मामा के गले में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६४७) रूपचंद्र को लेकर महलों में पहुँचे जहाँ श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद्र ने आँखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

**रूपचंद्र को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना**

(६४९) तब मधुसूदन ने हंस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुष एवं विद्याबल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

**श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद्र को छोड़ देना**

(६४२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और वंधे हुये रूपचंद्र को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

**रूपचंद्र और रुक्मिणी का मिलन**

(६४३) वहाँ जाकर उसने अपनी वहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६४४) भाई, वहिन एवं भानजा अन्धही तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचंद्र को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

**प्रद्युम्न एवं शंभुकुमार का विवाह**

(६४५) तब हरे वांस का मंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। छप्पन कोटि चादर प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करने चले।

(६५६) बहुत भांति के शंख एवं भेरी बजीं। मिथुर वीणा एवं तूर बजा। भांवर डाल कर हथलेवा लिया गया तथा चारों का पाणिग्रहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो सबजन लोग थे वे तो खूब प्रसन्न थे किन्तु अकेली सत्यभामा ऐसी थी जिसका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और वह समधी त्राकायण के यहां से घर गया। वह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वारिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस घड़ी धर्म में लगा तथा जिन चैत्यालय की वंदना करने के लिये कैलाश पर्वत पर चले गये।

## छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने चिंतवन किया कि संसार समुद्र से तैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा कैलाश पर्वत पर जो जिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थंकरों के चैत्यालयों को देखा और कहा कि जिनने जिनेन्द्र भगवान के ये चैत्यालय बनाये हैं वे अरत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने चैत्यालयों की वंदना की जिनकी ज्योति रत्नों के समान चमकती थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वारिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके पश्चात् दूसरी कथा का अध्याय प्रारम्भ होता है। कौरव और पाण्डवों में कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संयम धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वारिका जाकर विविध भोग विलासों को भोगने लगे। पटरस व्यंजन से युक्त अमृत के समान भोजन करने लगे।

(६६३) वहां सात मंजिल के सुन्दर श्वेत महल थे उनमें वे नित्य नये भोग विलास करते थे। वे महल अगर् तथा चन्दन की सुगन्धि से युक्त थे तथा सुन्दर फूलों के रस से सुवासित थे।

(६२२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुझे भी होते ही धूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र ! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे बचपन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६२३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा ?

### प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६२४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के लूट जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६२५) इसलिये हे माता अब विवाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है ?

(६२६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सञ्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६२७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहाँ भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

### प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६२८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न ने मिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनसे द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचसुष्टि केश लौंच किया।

(६२९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। कईस प्रकार के परीषद् को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाल एवं अश्वपत्तप शरीर क्षीण हो गया।

## प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नाश करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोका-लोक की बात जानने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विद्याधर, बलभद्र, धरणेन्द्र, नारायण, सञ्जन लोग, एवं देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र उत्कृष्ट वाणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले ! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न ! तुम्हारी जय हो, तुमने संसार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र ऋद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

## ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न ! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अभवाल की जाति है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुणवती सुधनु माता के घर में अवतार लिया तथा सामहाराज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरल नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उस नगर में श्रावक लोग रहते हैं जो दश लक्षण धर्म का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। वह देव वहां से चय करके मुक्ति रूपी स्त्री को बरेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाव पूर्वक सुनेंगे उनके भी अशुभ कर्म दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उस पर प्रद्युम्न देव प्रसन्न होंगे।

(६६६) जो मनुष्य इसकी प्रतिलिपि करेगा अथवा तैयार करवाकर अपने साथ रखेगा तथा महान् गुणों से परिपूर्ण, रचनाओं को पढ़ावेगा वह मनुष्य स्वर्ण भण्डार को प्राप्त करेगा ।

(७००) वह चरित्र पुण्य का भण्डार है जो इसे पढ़ेगा वह महापुरुष होगा तथा उसको संपत्ति, पुत्र एवं यश प्राप्त होगा और प्रभु मन् इसे तुरन्त फल देंगे ।

(७०१) कवे कहता है कि मैं बुद्धि हीन हूँ और अक्षर तथा मात्रा के भेद को भी नहीं जानता हूँ । विद्वानों को मैं हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ कि वे मेरी ( अक्षर मात्रा की ) हीनाधिकता की त्रुटियों पर ध्यान न दें ।





## शब्दानुक्रमणी

अ

अइसइ—१२, ४६, ४०५  
 अइसउ—४६, १६८  
 अइसो—४३६  
 अकाल—१४३, २८१  
 अकुलाणउ—५४  
 अकुलाणी—२४७  
 अकुलानी—२६४  
 अकुलाणो—४८७  
 अकुलानो—५४०  
 अकुला—२१३  
 अकेलउ—२८२  
 अकेलो—४६०  
 अक्षत—३७७  
 अक्षर—७०१  
 अखण्ड—३२८  
 अखाडो—१८२  
 अखारउ—४५१  
 अखारि—३३१  
 अखाति—४५१  
 अगनिवारण—५२५  
 अग्र—२३, ५६३, ६६३  
 अग्रवाल—६६४  
 अग्रोए—६६४  
 अंग—६८, ५७८, ६८६  
 अगलाइ—५१७  
 अगहटे—३०२  
 अग्निवाण—६४८

अग्नि—४०१  
 अग्नि—२०८  
 अग्निनी—१६२  
 अग्निवाणी—६  
 अंगु—६६, १३२, ३११, ५०७  
 अंगुहडो—२००  
 अगुठा—६४  
 अगोडो—२०६  
 अघाद—३४१, ३६१, ३६२  
 अघाणउ—३८४  
 अचगले—३०६  
 अचंकित—२४५  
 अचंतउ—१५१  
 अचंभउ—४२३  
 अचंभिउ—३४६  
 अचंभी—३६५  
 अचंभो—१६४, ३३७, ४३१  
 अचंभ्यो—४५२  
 अचल—२४५  
 अचुल—५३६  
 अचरिउ—५०२  
 अंचल—४३१  
 अछइ—४१६  
 अछरायण—६६१  
 अछोह—५६४  
 अजर—२३२  
 अजह—३६१, ४१५, ६८३  
 अजितु—८  
 अजोदि—२६८, ४६६



अठहल—३  
 अठार—२७६  
 अठारह—२०  
 अणकुट्ट—२६६  
 अणगह—४२१  
 अण्यु—१३२, ३११, ३७०  
 अणंत—३४६  
 अणुसरह—२४  
 अति—३६, ४२, १३४, १३६,  
 २०१, २२७, ३३५, ४२२,  
 ६१४  
 अतिगले—३०६  
 अतिवत—२६१  
 अतिवल—२६०  
 अतिसल्प—४२२  
 अतीत—६५६  
 अतुल—२०२, ४५६ ४६१, ५०२  
 अतुर—५६१  
 अंत—२७३  
 अंतरिख—३२५  
 अंतरोल—४२२  
 अंतु—२, ४६  
 अयि—३१४  
 अविशि—२७३  
 अयिक—११, ३२६, ७०१  
 अयिकु—२५३  
 अनगानत—१४३  
 अनंत—१०, ३४६, ५००, ५०४, ६०६  
 अनंतु—६  
 अनंतु—५६१  
 अनागत—६५६  
 अनिवार—२७, १२१, २३६, ६११  
 अनुपम—६००, ६०२  
 अपमाण—४२३

अपय—३६२  
 अपयानु—७३  
 अप्रमाणु—१७५  
 अप्रपि—२०७  
 अप्रपण—४२२  
 अप्रार—१२, १६५, २३३, २३४,  
 ३४७, ४५६, ६४४  
 अपात—२३०, ५६१  
 अपूरय—१६२, २२४  
 अप्रामु—६०४  
 अप्रकानिउ—७६  
 अप्रभा—२७४  
 अभिनोरु—२  
 अभेउउ—२७६  
 अभमाउ—५  
 अभह—२७०  
 अभत—६५३, ६६२  
 अभर—२३२, २२१, ४६२  
 अभरदेउ—२१२  
 अभरदेव—२१६, २१७  
 अभिमिह—५२६  
 अभसउ—५३६  
 अभमाण—३६२  
 अर—२११, २३६, ४२२, ५१०  
 अरजुन—२२४  
 अरुन—४५६, ४६२, ४७५, ४६३  
 अरडाह—३५२  
 अर्य—३०१  
 अर्यु—३७६  
 अर्य—५१२  
 अरराह—३५६  
 अरहंत—२३१  
 अरि—५३२  
 अरिवल—१७५

अरियणवल - २१  
 अरियणु—१७१  
 अरिराउ—४५  
 अरु—६, २०, ३४, ४१, ५१, ७१,  
 ६०, ६६, ११३, १६२, १६२,  
 २५१, २६०, २६५, ३४५,  
 ३६७, ४१६, ४२०, ५०७,  
 ५०८, ५१६, ५५६, ६७३,  
 ६६६,  
 अरुजे—५०२  
 अरे—३०३  
 अला—१०३  
 अलावणि—४, ५८०, ६३६, ६४४,  
 ६४६  
 अलिउ—२६४  
 अलिउलि—४२०  
 अलियउ—२६७  
 अलोकणि—२५५  
 अव—७६, १०७, १४१, १७८,  
 १८६, २५२, २६४, २६५,  
 २६७, ३०६, ३१०, ३११,  
 ३२३, ४२६, ४६८, ४६६,  
 ४७१, ४७३, ४८१, ५१४,  
 ५१८, ५४१, ५४३, ५५१,  
 ६०३, ६०४, ६८३  
 अवगी—६८५  
 अवगुण—६२६  
 अवटाइ—६२७  
 अवठालि—५५३  
 अवतरइ—६८६  
 अवतरणु—१६२  
 अवतरिउ—२३१, ५०२, ५५२,  
 ५६५, ६१२, ६६५  
 अवतार—६१५

अवतार—६०७  
 अवधारि—६७  
 अवर—३३२, ४१५, ४१८, ४४५,  
 ५६१, ५६५, ६३८, ६४७,  
 ६६४  
 अवरइ—३८१  
 अवरु—८, २२, २४६, २६७, ३६३,  
 ५६३, ५६६, ६६१, ७००  
 अवलोइ—५४२  
 अवसइ—११०  
 अवसर—४३३  
 अवहि—५१३, ५६१  
 अवास—१८, ६६, १११, ३१४,  
 ३६६, ५६५, ६६३  
 अविचार—२३३  
 अविचारु—२१७, ५६६  
 अविलेखियउ—५६५  
 अवेति—२८८  
 असगुन—३५६  
 असंखि—४=५  
 असराल—२८१, ५८०  
 असरालु—६  
 असवारु—३३२  
 असवारिउ—३३७  
 असिवर—१७६, ४७६, ४६२  
 असोणी—२३३  
 असोस—१० २६, ४१, ५७०  
 असुभ—६६८  
 असुर—२३१, ५३८, ६६६  
 असुह—२७७  
 असेस—६८, १६४, ५२६, ५७७,  
 ६८३, ६८८  
 असेतु—३७, १५२, ५३४, ५५४,  
 ५६७

अत्तेसह—४६१  
 असोग—२६, १०२  
 अह—७३  
 अइइ—१४, ३७६, ४०४, ४७२,  
 ४४६, ४५६, ६३३, ६५१  
 अहउ—३७८  
 अहव—३६  
 अहनहइ—१४६  
 अहंकार—२३०  
 अहार—४४३, ६५३  
 अहार—३८४  
 अहि—१६६, २३०, ३०८  
 अहो—३६६  
 अहोबी—३०७

## आ

आइ—२५, ६४, ६६, ७२, ७५,  
 १०७, ११३, ११५, १२२,  
 १३६, १६०, १६५, १६८,  
 २००, २०१, २०६, २१०,  
 २१६, २२०, २२४, २५१,  
 २६२, २८१, २६७, ३०२,  
 ३४०, ३४६, ३५६, ३८८,  
 ३६२, ४१६, ४१७, ४३७,  
 ४६५, ४६७, ४६६, ४७३,  
 ५०५, ५४८, ५५१, ६१८,  
 ६२८, ६४३, ६४५, ६४६,  
 ६४६, ६६४, ६८१  
 आइत—५६४  
 आइस—१६७, १७१, ४३३, ६५८  
 आइसी—३०४  
 आइसे—१४५  
 आउ—२०६

आप—३६८, ४२६, ५६५, ५७७,  
 ६४१  
 आकज—१८४, २५६, ४२६  
 आकास—२७, २१४  
 आकित—५७०  
 आखज—३३०, ३७८, ४५५, ४५६  
 आखटं—२६६  
 आखरु—१  
 आखहि—४४६  
 आगइ—१०७, १६६, १६६, ३८६,  
 ४३६, ४५८  
 आगम—४, ६६६, ६७०  
 आगमख—२६, ४०८  
 आगमु—६७३  
 आगलज—५१४, ६१२  
 आगली—३६  
 आगय—२६६  
 आगासख—१६८  
 आगि—४७८, ५२८, ६७२  
 आंगुल—३२४  
 आंगुली—३६३, ४२२  
 आगे—३८६, ५६८  
 आर्ग—५७७  
 आघाइ—४०४  
 आचल—२४१, ३६७  
 आचलइ—१६२  
 आचुक—३७५  
 आछर—५४  
 आज—२८, ७४, २८६, ४२६,  
 ४३२, ४६६  
 आजि—१०१, ४६१  
 आमु—६६, ८७, १८६, २५६, ४१४,  
 ४१६, ४१७, ४७५, ४६३,  
 ५१५, ५२३, ५५२, ६७६

आठ—८०, ६७३

आठमउ—८

आठयउ—५८७

आठयी—६३२

आठहु—५३३

आठौ—५३६

आणइ—२५७, ३७६, ६११

आणंदियउ—१८३

आणण्डु—५८

आणि—२६, ४६, ५७, ६३, १००,  
११३, १३३, १८५, १६२,  
१६७, २०३, २०७, २०८,  
२१७, २४४, २४७, २७२,  
२७३, ३८८, ३६३, ४०३,  
४७१, ४७२, ५६२, ६८७

आणिउ—३२७, ३८६

आणिजउ—३४

आणिह—५८३

आणी—५७२

आण्यो—६०३

आणो—६३

आधि—५६, २७१

आदम—६३८

आदरु—३६६

आदि—३४४

आधासण—३८६

आधु—४०४

आनंद—१२७

आनंदिउ—५६०

आनण्डु—६८३

आप—२४४, २८३

आपइ—२२४

आपण—२६८, ४४१, ४८७

आपणउ—१५५, २७८, ३२७,  
३३४, ४०७, ४२१, ४३२,  
४८८, ४६४, ६५१

आपणी—४७, १६२, ६३१, ६५३

आपणो—६०, ३७१, ३५५, ५२३

आपणौ—३११

आपते—२०८

आपनउ—५०७

आपनौ—४५३

आप्यउ—२०३

आपसु—१७३

आपहु—६७०

आपि—८४

आपिउ—१३३, २०८, २१७

आपो—५२, २६४

आपु—३००

आपुण—३८८

आफइ—२००

आफउ—१६२, ४१२

आफर्यउ—४४३

आफह—२६१

आफहु—५५, ६०१, ६०२

आफि—१६३, ३०२

आफो—६३, १६१, २१५, २४७

आफोह—३०४

आफुहु—६७०

आभरण—१०३, २२६, ६०८

आभिडई—२६१

आम—२१०, ३४७

आय—३५३

आयउ—२८, ३२, ५३, २१६,  
२१७, २६३, ३०३, ३६२,  
४२८, ५६०, ५६३, ५७५,  
६६१

उत्तंग—१५  
 उत्तंगु—३१६  
 उत्तारव—५६२, ५८३  
 उत्तारण—४२०  
 उत्तारि—३४१, ४२२, ५७०, ५८४  
 उत्तार्यो—२८७, ५५७  
 उत्तारी—१०२  
 उत्तिमु—३८०  
 उत्तिरि—२६६  
 उत्तल्यव—५५७  
 उत्तव—४२, ५८२  
 उत्तिधिमाल—२६६, ३०५, ३१२  
 ४५५, ४५६  
 उत्तो—३१६  
 उत्तोत—२६३  
 उत्तोत—६८३  
 उत्तल—५६, ३३८, २४०  
 उत्तए—२६५  
 उत्तजइ—११, १५१, १५३, २३२,  
 ४०५, ५०८  
 उत्तजावइ—४३१  
 उत्तजी—३८६  
 उत्तएव—६, ५६४, ५६८, ६६०  
 उत्तएि—२७  
 उत्तएी—३६३  
 उत्तवेत्त—६१०  
 उत्तवड—२७, ११७, ५१७, ५५७  
 उत्तवनी—१७७, ४०३, ६७६  
 उत्तवनी—३३, ३२८, ३७६  
 उत्तवनी—२८६  
 उत्तव—११, १३३, १८७, २१५,  
 २५८, ३३७, ३४२, ३७७,  
 ३८१

उत्तरा—३८१, ३८२  
 उत्तरावपह—१६७, २०७  
 उत्तरि—३८१, ५११  
 उत्तए—३६३  
 उत्तएठ—७६, १६४, १८६, २०२,  
 २५२, २६२, ३२३, ४८१,  
 ५६१  
 उत्तएय—८२  
 उत्तरइ—६७२  
 उत्तव—२१६, २६६, ३२०, ४५०  
 उत्तवी—६७, ३५७, ४२४  
 उत्तवे—८६, २१२, ४३५, ४४२,  
 ५६३, ५६५, ६३७  
 उत्तवो—२०२, २३८, ३६१, ३७५  
 उत्तवो—६  
 उत्तवइ—२८६  
 उत्तवले—६८८  
 उत्तव—२३०, २५०, ५५२, ६६५  
 उत्तवइ—५३२  
 उत्तवएि—५७४  
 उत्तवपु—२६५  
 उत्तव—४२०  
 उत्तवगालो—३३६  
 उत्तववड—३७०  
 उत्तवह—२०७, ४४३  
 उत्तवरी—२८८  
 उत्तवसंत—२२३  
 उत्तवार—४६५  
 उत्तवारि—४६५  
 उत्तवह—४६७  
 उत्तविहाह—२१७  
 उत्तवह—८१, ३१३  
 उत्तवहे—५२६

## ऊ

ऊँदु—३५८  
ऊँदू—३५६  
ऊँगा—४२०  
ऊँतर—६७६  
ऊपरऊपर—६१८  
ऊमी—२३५  
ऊवट—२३५

## ए

एक—३०३, ३८०, ४४४, ४४८,  
५८१, ६०२, ६१६  
एकइ—५३६, ६५७  
एकठा—२५४  
एकत—६५४  
एकलल—३८०  
एकहि—६१५, ६४६  
एकताक्क—६४६  
एकीली—४७३  
एकु—२५७, २७२, ३५६, ३७८,  
३७६, ४३६, ४५७, ५३६,  
६०५, ६२०, ६८२, ६६३  
एकुइ—३८८  
एकुउ—३७६  
एकुह—४७३  
एगुणसीवार—१०  
एतइ—१२६, ४१६, ५८४, ५६३  
एतउ—६२१, २६४, ४३३  
एतह—११४, ११५, ६१३  
एतहि—५५०  
एतहु—५७१  
एते—३६८, ४२४

एम—३६६, ५५४, ६११  
एम्ब—३६, ६६७  
एरछनगर—६६५  
एसी—६३३, ६५४  
एसे—१५१, ४३४, ४६०, ४७८  
एसे—१५३  
एसो—२६८, २८३  
एसो—१३६, १४८  
एस्यो—१४४  
ऐह—१८७, २५५, २६५  
ऐहु—६५, ३२८, ४०६, ६६७  
ऐसी—४८३, ५१२  
ऐसी—३६४  
ऐहु—६२१, ६४३

## ओ

ओरइ—६१६

## क

कइ—६५  
कइय—३४८  
कइवं—३३०  
कइसइ—३५  
कइसी—५४१  
कउ—२, २८४, ३२३, ३३६, ४०२,  
४३०, ४८१, ५१६, ५६५,  
५८५, ६०६, ६१२, ६५७,  
६७६, ६८०, ६६४  
कराकंकरा—६०८  
कंकरा—२३६  
कंकगु—२१७  
कचनारू—३४५  
कंकरा—१६, १६१, ३१३, ६६६

कंचणमाल—२६४, ५७१  
 कंचणमाला—१२६, १३३, १३४  
 कछु—५१४  
 कछुक—१११  
 कछुस—३४०  
 कजल—३०  
 कठिया—३६८, ३७५  
 कठिहा—२३४  
 कठीया—३६७  
 कठाइ—४३८, ४४६, ४४७  
 कणखडराउ—१६१  
 कणय—२६, ३११, ३६६  
 कणयमाल—१३५, २४१, २४५,  
 २४६, २५०, ५४८  
 कणयमुकदू—१६५  
 कणयवीरु—३४५  
 कणिक—६३  
 करणौ—३३४  
 कत—१०८, २३०, ३६२  
 कतहुती—१  
 कयंतर—४१७, ४३३, ५६३  
 कयंतर—४१३, ६६१  
 कथा—११, १३६, १६३, ४५३,  
 ६५८  
 कन्ह—५०, ५५२, ५७५, ६०६  
 कन्ह—६०, ६३, ६६, ६७  
 कनउ—६०३  
 कनक—३७४, ५७६, ५६१  
 कनकयातु—३८५  
 कनकवंड—२३, ५८२  
 कनकमाल—२३, २४६, २५१, २६३,  
 २७७, ५७४, ६८२  
 कनय—५८२  
 कनयमाल—२३०

कन्या—२२३, ३०७, ६४६, ६५४  
 कनवनी—५७६  
 कवपु—६८४  
 कवप्य—६६८  
 कदप—२१६, २४३, २६१, ४१८,  
 ५६०, ५६२, ५६३, ६३५,  
 ६३७, ६६२  
 कदपु—५३०, ६३७  
 कदपु—६८५  
 कवि—२१३  
 कपट—६७  
 कपह—५०२  
 कपत—३७८  
 कपित—६७, २६५, ६४३  
 कमण—६२६  
 कमणु—२७६, २८४  
 कम्पु—२७८, ६८७, ६६०  
 कमल—३  
 कर्मडल—२५, ३१, १४६  
 कर्मडलु—३६०, ३६१, ३६४, ३६५  
 कम्महु—६६७  
 कम्बण—४२३  
 कम्बणु—१४४, २२६, ३८४, ५२२,  
 ५६८, ६७३  
 कयल—४३०  
 कपड—२०८, २३३  
 कयय—२१२  
 कर—३, ५, ३३, ६३, ७०, ७२,  
 ७६, ७६, १०३, १६१, २११,  
 २३४, २३५, ३५३, ३६०,  
 ३६५, ३८३, ४११, ४५५,  
 ४६६, ४७४, ४७६, ४७६,  
 ४८६, ५३३, ५३६, ५४०,  
 ७०१

करइ—२, २१, ३०, ३६, ५२,  
 ६६, ७६, ८२, ८४, ८५,  
 ८७, ९४, ९५, ९६, ९७,  
 १०६, ११०, १२५, १२७,  
 १४०, १४४, १५७, १६४,  
 १६८, १८१, १८४, १८८,  
 १९०, १९१, २०२, २०८,  
 २५०, २५१, २६४, २६६,  
 २६६, २८३, २९१, २९२,  
 २९४, २९८, ३०८, ३२३,  
 ३३२, ३३७, ३४२, ३५५,  
 ३५७, ३७७, ३८५, ३९३,  
 ३९४, ३९६, ४०५, ४१०,  
 ४१३, ४१८, ४२३, ४३६,  
 ४४५, ४५१, ४७६, ४९२,  
 ४९५, ४९७, ४९९, ५०५,  
 ५०७, ५३४, ५६८, ५६९,  
 ५८६, ५९७, ५९८, ६०१,  
 ६११, ६१२, ६१७, ६३६,  
 ६४१, ६३७, ६८१, ६८५  
 करई—५०७  
 करइस—५६४  
 करउ—७, १३, २७६, ४६१, ६४७  
 करंकइ—४८४  
 करकंकाण—१०३  
 करटहा—३७६  
 करण—४६, ६१, १६१, ३०८,  
 ४०१, ५४५, ५६४, ६४६, ६८१,  
 करत—३२, १११  
 करतउ—६०३  
 करंत—४२, ६१, ३०१, ३१६,  
 ५२६, ५८२, ६८२  
 करंति—५६३  
 करंतु—१२२, २६२, ५२६

करम—५८८  
 करमबंध—१२६  
 करयउ—५८४  
 करवहु—५६६  
 करवाल—७०, १७६, ४८६  
 करलेहि—७२  
 करहं—४  
 करहि—१११, १२१, १४३, १८२,  
 १८८, ६२६  
 करह—४६, ७०, ११३, १४८,  
 १६६, १७०, ३०५, ३६१,  
 ३८५, ३८६, ४००, ४८१  
 ५५४, ६१७, ६४२  
 कराइ—१३६, १३६, ४३१, ६५८,  
 कराउ—४६, ५७, १००, ३६८  
 कराए—६६६  
 करावहु—११४  
 कराहि—५६२  
 करि—१६, २६, २७, ५३, ८२,  
 ८८, १५८, १६७, १७७,  
 १७६, १८६, २१३, २१६,  
 २३७, २३८, २३६, २४०,  
 २४५, २४६, २५२, २७०,  
 २८०, २९४, ३०७, ३३३,  
 ३३७, ३५१, ३७७, ३९६,  
 ४०५, ४०८, ४१८, ४४८,  
 ४६६, ४७०, ४७२, ४९६,  
 ५१५, ५२५, ५३१, ५३३,  
 ५४०, ५७५, ५७७, ६११,  
 ६४८, ६५५, ६६८, ६७५,  
 ६८७  
 करिवालु—४६७  
 करिहा—४७६  
 करिहि—११०



करी—६५, ११०, १६६, २१५,  
२७६, ३५१, ३५७, ४१०,  
४१६, ४००, ६३६

करण—३४७

करेह—५०, २२०, ३६६, ६०६

करै—१३५, २६०, ३५०, ३७०,  
५०१, ६६२

कर्य—६६०

कलकनाल—३१६

कलयर—१२७

कलयल—५६१

कलयल—५०६

कलयल—३२१, ६२१

कनस—१६, ५६३, ५६०, ५७६,  
५६१

कनसह—१६१

कना—२४

कलाप—६०१

कनानु—३००

कनि—३१

कलिगह—५७०

कलियर—५६१, ५०१

कलियलु—१७३, ३१०

कवरण—६६, १४२, १४७, २०५,  
२४१, ३१३, ४४७, ५०६,  
५३७, ५७३, ५७६, ६०५

कवरण—४२४

कवसु—१२३, १२६, १३५, १३६,  
१५७, १०७, १६०, २१०,  
२३६, २७७, ३२०, ४०७,  
४६४, ४६०, ४७०, ५०१,  
५२२, ५२७, ५६०, ६२४,  
६४३, ६६०

कवसु—६३

कवसिगु—४२२

कवि—३, ५४६

कवित—६३०

कवितु—१, ७, १३

कसु—१४१, ५२४

कसु—५३०

कसमीर—५७०

कह—११५, १६६, २६०

कह—४०, ४४, ५०, ६६, ११६,

१२३, १४४, १४६, २२७,

२६३, २७७, ३०५, ३०६,

३१४, ३६६, ३७०, ३७६,

३६३, ४०५, ४२७, ४३७,

४४३, ४४५, ४४६, ४५६,

४५७, ५००, ५२२, ५३७,

५४१, ५५०, ५६६, ६०७,

६२७, ६३३, ६४१, ६५१,

६७५

कहउ—४, ६३, २५२, ५४६, ६२६

कहल—७३, १४७, ५०६, ५४६

कहत—७५, १७०, ३००, ६२६

कहरि—७४

कहलाउ—४७५, १२०

कहसा—४०५

कहहि—६२६

कहह—४०, ६३, २४०, २४२,

२०३, २०६, ४०७, ५४६,

६०४

कहा—२६, ७६, १०६, १५१, २२०,

३२६, ४१०, ४१२, ४४६,

४४०, ४४६, ५०७, ५००,

६२६, ६३६

कहि—३६, ४०, ६०, १४०, १६३,

२३०, ५६५, ६७०

कहिउ—३३, ३६न, ३६०, ४१३,  
 ४१४, ५७०, ६२न, ६६६  
 कहिए—१६न, ४४न, ६४०  
 कहिठार—५६५  
 कहियउ—१६०  
 कहौ १५०, १५६, २६०, २६७  
 कहौए—५६७  
 कहू—५७, ६५, १००, १०६, १६६,  
 १६७, १७०, २५२, २५४,  
 २६२, २६०, २६७, २६न,  
 ३०१, ३०३, ३०५, ३०६,  
 ३२६, ३२न, ३३०, ३६४,  
 ३६०, ३६४, ४१०, ४३न,  
 ५४३, ५४५, ५६४, ६०७,  
 ६२४, ६२५, ६२६, ६४२,  
 ६६६, ६७०, ६६न  
 कहूँ—३४, १०४  
 कहै—३६७, ४१५, ५१४, ६३२,  
 कहै—१६६, २न५, ३३५, ४२१,  
 ४४४, ४५५, ४न५, ५१२,  
 ६२न  
 कहौ—३२२  
 कहौ—२५५, ६०६  
 कहघउ—२०५, २५५, ३४०, ३६६,  
 ५१५  
 कहयो—६२३  
 काके—५५  
 कागु—४न४  
 काज—४२७, ६०५  
 काजु—४१६, ५१५  
 काटइ—३३६  
 काटे—४२६  
 काटिगौ—४न४  
 काढइ—१७६

कांड—२६६  
 कान—३२४, ३६३, ४२२, ४२५,  
 ४२६  
 कानकेजि—५७न  
 कान्ह—६०, ६६, १००, ४५२, ६६५  
 कान्हु—५६, ४५न, ५४२, ६०न  
 कांपइ—४५०  
 कापह—४५३  
 कापरछाप—५७६  
 कांति—६१२  
 काणि—११३, २४१, २४७, २७२,  
 ३६१, ५१७  
 काम—५७, ३४१, ३४३, ४३३,  
 ४३४  
 कामवाण—१२, ५४, २३६  
 काममुदरी—२३४  
 कामसुंदरी—२१५, ६०७  
 कामरस—२४१  
 कामिणि—१२१  
 कामिणी—३५६, ४१६, ५६३, ५६७,  
 ५६न, ५न१  
 कारण—२६५, ३६६, ४०६ ४१५,  
 ४१६, ५०न  
 कारणु—१२७, १४०, २४१,  
 कारणौ—२६५  
 काल—३१, ६न, १६न, २०५,  
 २७६, ४न६, ५०२, ५३६  
 कालसंवर—१३६, १५६, १७२,  
 २५१, २५२, २न५,  
 ५४७, ५४न, ६७न  
 कालसंवरु—२७७  
 कालासुर—१६न  
 कालि—४४६  
 कालु—५६६

कालुगत—६६४  
 कालू—४५  
 काली—४८४  
 कायर—४६१, ५७६  
 कासमीर—३  
 काह—५६०  
 काहुड—१४१, २७२  
 काहा—४०८  
 काहुस्पड—३६  
 काहे—२५५, ३३३, ३८१  
 काहो—१०८, ३५८, ३६२, ३६३  
 काहो—१२५, १४३, ३५५, ३८५,  
 ३६३, ४७०  
 कित—६६०, ६६१  
 किए—६८३  
 किकर—२००  
 किछु—४०४  
 किजइ—५६६  
 किजइ—६५६  
 किन—३१०, ३३५, ३५०, ३७१,  
 ४७१, ४७३  
 किन्हहु—३६३  
 किम—४८, ७३, १७७, ३०३,  
 ४५८, ६४७  
 किमइ—४४०  
 किम्व—३०२, ४६०, ५५५  
 किम्वहुड—५७४  
 किमाड—१७  
 किमि—२८४  
 किमु—४०५, ४०६  
 कियड—१४१, २१०, ३२८, ३२६,  
 ३३६, ३६७, ४३२, ५३३,  
 ५६२, ६१०, ६१६, ६२६,  
 ६५०, ६५६

कियो—८८, १८७  
 किरणि—४६५  
 किलकट—५०४  
 कितन—५४२  
 कोए—२७४, ४४४, ६३०  
 कोमइ—१४२  
 कोम्यहु—४३८  
 कोयड—२८, ३२, ४३, ५८, ७६,  
 ८६, १७६, १८५, १८६,  
 २२१, २५८, २५२, २५२,  
 २७३, २८४, ३४२, ३६४,  
 ४३६, ४८८, ५८५, ६०६,  
 ६१६, ६३०, ६५२, ६५८,  
 ६६४  
 कोयह—५३०  
 कोयो—८८, २८८, ५६१  
 कोर—५७८  
 कोरति—५८८  
 कोरतो—२४३  
 कोहु—४७  
 कोडा—१३०, १८७  
 कुकडहि—६१७  
 कुकडा—६१८  
 कुकुवार—३८२  
 कुकुवारठ—२५०  
 कुडम—५५५, ५८५  
 कुडमु—५६०  
 कुडव—५६१, ६८०, ६६०  
 कुड—२०८  
 कुडल—२३५  
 कुडलपुर—५६, ५६, ८४, ४७२,  
 ६२३, ६३२, ६५८  
 कुडलपुरि—३८, ६३५  
 कुहु—३४६

कुतालु—३२, ६५, ११०  
 कुङ्कु—१०  
 कुमार—१७६, १८३, १८७, २५१,  
 २६४, ६२४, ६७५  
 कुमारहि—२६४, ५६६  
 कुमारहि—१६७  
 कुमर—२६८  
 कुमार—२५७, ३०५  
 कुमार—३३३, ४६१  
 कुम्बर—२२२, २२७, २५८, २४८,  
 २५७, २५८, ३५४, ५८५  
 कुम्बरहि—१८५, २१८, २३०,  
 कुम्बर—१३३, २१३  
 कुम्बार—२१४  
 कुम्बरि—४०, ४१, ३०३, ३०७,  
 कुम्बार—३६, १३४, १३८  
 कुरवह—११४  
 कुरवि—४६१  
 कुष्येत—२७६, ६६१  
 कुल—६८३  
 कुलवेधी—५३७  
 कुलमंडल—५६१  
 कुलह—५०२  
 कुली—२०  
 कुवडज—२७०  
 कुवडा—३६५  
 कुवर—६२, १३६, १५७, १६५,  
 १६६, १६७, १७२, १७५,  
 १७७, १८६, १६२, १६६,  
 २०३, २२६, २३७, २४७,  
 २५३, २५४, २६४, २६६,  
 ३०६, ३३१, ३३५, ४३५,  
 ४६४, ५४५, ५५३, ५५४,  
 ५७५, ६१४, ६१५, ६१८,

६२२, ६२४, ६४५, ६५५,  
 ६५७, ६५६  
 कुवरहि—५८५  
 कुवरि—३८, ५६, ६६, २१६,  
 ३०८, ३५५, ६२१  
 कुवह—१५६, १५६, २३८, २५८,  
 २६५, ३२२, ४७१, ५६०,  
 ६३७  
 कुत्तमवाण—२२४  
 कलमरस—६६३  
 कुसल—२६  
 कुसुमवाण—२३५, ५१६  
 कुंकू—१२१  
 कुलि—६००  
 कुंजज—३४५  
 कुवह—२५०, ३४२  
 कुवहि—३८२  
 कुटि—४१७  
 कुड—२४६  
 कुडीवूधी—१०६  
 कुडीया—३२, २४६  
 कुर—४०२  
 कुवा—१६१, ३१४  
 कुके—७  
 कुड—४७६, ४७७, ४७८, ४६१,  
 ४६२  
 कुतज—२७३  
 कुते—६२६  
 कुमु—६८१  
 कुम्बु—७०१, ३७०  
 कुला—३४७  
 कुलि—३४६  
 कुव—४४५

केवराज—३४५  
 केवल—६६४  
 केवलज्ञान—५६४  
 केवलज्ञानु—१५२  
 केवलराण—१२  
 केवली—१६०, २६०  
 केवसु—६६०  
 केस—२५०, ४२०, ५२३, ५२४,  
 ६२३, ६२४  
 केसइ—५२३  
 केसव—४२६, ५०१, ५१०, ५२४,  
 ५३५, ५५१  
 केसु—५०६  
 केसे—६४  
 कंलासहि—६५६  
 कोइ—१, ३२, ४०, ४७, ५५, ६६,  
 १०५, १२५, १३५, १६६,  
 १६८, १६९, १७६, १८३,  
 १९२, २१८, २५३, २६७,  
 २७८, ३३६, ३५५, ३५६,  
 ४४४, ४८६, ४९७, ५११,  
 ५३६, ५५३, ५६६, ५६८,  
 ६६३, ६६७  
 कोज—२, ४७६  
 कोट—३१४  
 कोठि—६६८  
 कोण—१६६, ४४६  
 कोडि—२२, ५१६, ६१७, ६१८  
 कोडिबुज—१६  
 कोडी—३०७, ३०८  
 कोणु—१७६  
 कोत—४७१, ४७४  
 कोतिगु—३६४  
 कोतु—४७६

कोम—४६६, ५०८, ५१७, ५२०  
 कोपा—३३१  
 कोपाहड—७६, ४४१, ४६३, ५१८,  
 ५२७, ६४८  
 कोपाहडु—३३१, ५२५  
 कोपि—६८, २१०, ३४०, ४३५,  
 ४७४, ५०६, ५११, ५३७,  
 ५४२  
 कोपिज—६७, २५६, ३६३, ६४३  
 कोपिय—३०४  
 कोपु—३३, ५३३  
 कोप्यो—१७२, ४६०, ४७४, ४८०,  
 ५१६  
 कयो—५१३, ५२४  
 कोमलि—५२  
 कोवड—४७४  
 कोवडु—६४  
 कोवानल—३६  
 कोवि—५०२  
 कोसु—६८८  
 कोह—२८७  
 कोत—४६७  
 कोतिनन्दना—४५६  
 कोपाहड—४६६, ५२०  
 कोरो—२७६, ६६१  
 कोसाद—२३४  
 कण—३७, ४४०  
 कत्री—५५६  
 क्षिपति—६८०  
 क्षिम—५२४  
**ख**  
 खइ—२५, २७०  
 खच—४४४, ६१३

खग—३७, २६७, ५६०

खडी—५३

खण—३५, १२२, १३१, २१८,  
२२१, २२५, २३७, २८८,  
२६१, २६२, ३६०, ४०२,  
४२४, ४३०, ४३१, ५३४,  
५४५, ६२८, ६६६, ६६०

खत्री—२०, ४६०, ४६४, ४७३,  
४६५, ५३०, ५१०, ५११,  
५१२, ५२२, ५३०, ५५६,  
६०६, ६४८

खंड—४६, ३०६, ५३४

खंडव—३६

खंडव—४६८

खंधार—३६७

खण्ड—६६७

खयंकर—६६६

खयंतु—५०२

खर—५०६, ५३२

खरउ—३१६, ६४३

खरग—५४०

खरी—६१, ६८, १३१, १४०

खरें—८१, १६१, १८३, ४५८, ५३६,  
६१५, ६३२

खरी—४४५

खल—५४१

खली—३६४

खाइ—३४, २०६, ३५०, ३५३,  
३६१, ४०४, ४४४, ५६६

खाची—३३८

खाजतु—३५५

खाट—६७

खात—४४४

खारि—४६६

खिचकरण—६६७

खिण—२६४, ५२१

खिन्नपालु—६

खिरणी—३४८

खीप—३४७

खीर—१६२, ४०८

खुटी—३६३

खुवा—३८४

खुर—७१

खुरइ—४८३

खुडव—३६४, ४११

खुडा—३६६

खुडे—४०३

खेउ—५७, २१६

खेत—५३७, ५३८

खेसु—६५४

खेयव—५८७

खेव—५५२

खेल—६१७, ६०६

खेलणी—१८७

खेमवक—१५०, ५६३

खेह—७३, १७५, ४८३

खोडा—४८३

खोडि—३०७, ३५३, ७०१

खोडी—२७७, २६८, ३७१, ४११

खोल—३०५

खोहरी—३७६

## ग

गइ—१०५, १११, २५५, ३५६  
४५३, ६०८

गई—४२४, ४२५

गड—२०८, ३७२, ३८८

गक—६३  
 गण—६६, १२०, १६६, ३३५,  
 ४३५, ४३६, ४४१, ४६७,  
 ६१५  
 गगन—१६३  
 गल—३१६  
 गला—५१, ४६६, ४७४, ४६५  
 गलात—२०  
 गलाहर—५६६, ६०१, ६७४  
 गलाह—१६३  
 गयो—३१२, ५७६  
 गयो—२३६  
 गंजहि—१७५  
 गंभीर—१६  
 गन्धलि—२०  
 गय—५०२, ५०४, ५०७, ५३०,  
 ५३२, ५५६, ६४५  
 गयल—२६, ४१, ५३, ५६, ६७,  
 ६६, १०३, ११६, १३३,  
 १३५, १३७, १४५, १४८,  
 १५०, १८२, १६१, १६७,  
 २१०, २१२, २१६, २२५,  
 २३०, २६२, २६४, २६८,  
 २७०, २८३, २६६, ३२०,  
 ३३७, ३५६, ३६५, ३६८,  
 ३७६, ३६८, ४०२, ४१४,  
 ४४२, ४१६, ४४२, ४५५,  
 ४८६, ६०२, ६३६, ६४६,  
 ६४३, ६५८, ६६४, ६७४,  
 ६७५  
 गयलि—१७३  
 गयलिहि—१७५  
 गयवर—७०  
 ग्यारह—६, ११

गये—११, ६४, ६१, १०२, १११,  
 ११५, २१२, २१५, २२१,  
 २४५, २७४, ४७२  
 गयो—२२, ८, १०१, १६३, २०४,  
 २४४, २४२, २६५, ४४६,  
 ५००, ६२०, ६०३  
 गङ्—२१  
 गङ्ङ—१७३  
 गरङ्—३१६  
 गरं—१११  
 गरव—६६  
 गरवो—२१३  
 गरहट—६३  
 गरङ्—४०५  
 गरङ्—५३८  
 गरवो—५४६  
 गलि—३३६  
 गले—३०६, ३४३  
 गले—१८२  
 गहघट—२८२  
 गहवरङ्—१४०, ५८६  
 गहवति—१४७  
 गहि—२०२, २१५, ३२३, ४३८,  
 ४४०, ४४६, ४४६, ४५१  
 गहिट—२४१, २४५, ४४०  
 गहित—१६  
 गहीह—३४५  
 गहे—६४४  
 गाह—४६८  
 गाड—२८४  
 गाड गाड—३७  
 गाए—६३८  
 गाजह—३८१  
 गाजिड—४७४

गाजण—४७८  
 गाजहि—७१  
 गाजे—५६१  
 गांठि—६५  
 गाठी—६७, ६८  
 गाम्ब—१५  
 गामति—४२३  
 गावइ—१२०, ४५७, ५६७  
 गावत—३५६  
 गावहि—१२१  
 गाम्बु—३८७  
 गिरवरि—१८६  
 गिरि—२८०, २६५, ३७३, ५४१  
 गिरिवर—५०६  
 गीत—५६३, ६३८  
 गीघ—१४४, १८०  
 गीचीणि—५०५  
 गीम्ब—६४४  
 गीम्बु—३१५  
 गीटिकासिधि—१६४  
 गीडहि—४७७  
 गीडहु—६८  
 गीडी—५६३, ५६७  
 गीडे—१७३, २५६  
 गीण—५२, १३६, १४२, ३११,  
 ५२०, ६६६  
 गीणउ—७०१  
 गीणसिलउ—१२  
 गीणवइ—६६५  
 गीणवत—५६५, ५६७, ६१२, ६१४  
 गीणहु—६२  
 गीणो—६४७  
 गीणो—६१७

गुपत—४४६  
 गुफा—१८६, १६७, १६८, २००  
 २०१, २१८, २२६  
 गुवालु—७५, ११०  
 गुर—४०६, ५२१  
 गुरहु—७०, ४७५  
 गुव—१३, ४०७  
 गुजर—५७६  
 गुडी—८६  
 गेह—११४  
 गैयर—६७, १७३, २३५, ४६५  
 गैयर—२१२, २१३  
 गैवर—२५६, ४७५, ४७७  
 गोडइ—४४६  
 गोडड—४३८, ४४०, ४४६, ४५१  
 गोतु—४०७  
 गोहक—४४१  
 गोहिच—४३८  
 गोहिए—५८, ६१, १०५, १२६  
 ४२२  
 गोहिणी—४१६

## घ

घटइ—४०  
 घटाउ—६८७  
 घटाटोप—४८१  
 घडिक—६८०  
 घण—१२, १७३, २८१  
 घणउ—११, ३६, २६६, ३००,  
 ३१६, ३१८, ४०६, ४४८  
 ५४६, ५५०, ५६६, ६५१,  
 ६८०  
 घणघोर—२०१



घण्टी—१०८, १०८, १०८, १५४  
 २४१, २४३, २४५, २८८  
 ३६४, ४३४, ४५४,  
 घण्टी—२४, ६०, ३४७, ३४८  
 ३५५, ४२६, ५२६, ५७८,  
 ६७८  
 घण्टी—१५४, ४५३  
 घंटा—२६३  
 घर—८८, ११५, १२६, १३६  
 १७७, १८४, १६२, २३७  
 २८८, २८६, २६४, ३५८  
 ३८३, ३८४, ३६६, ४०६  
 ४१४, ४१६, ४२२, ४२५  
 ४४३, ४५३, ४६०, ४६२,  
 ४६३, ४६४, ४६५, ४६६,  
 ४६७, ४७२, ४७४, ४८६,  
 ४६६, ४६६, ६०४, ६१३  
 ६५२, ६८२, ६८३, ६८७  
 घरह—४०५  
 घर घर—८४, १२०, ५६३, ५८१,  
 ५६१, ६५७  
 घरणि—१५४, २४३  
 घरवाह—६७५  
 घरह—११७, ६६५  
 घरि—२३०, ४०२, ६१६  
 घरिघरि—१२१  
 घाइ—३६५, ६६०  
 घाव—६८, १७७, ५४५, ५६०, ६४७  
 घाघरी—२६३  
 घानी—५३१  
 घारह—२६१  
 घालह—३८३, ३८८, ५२१  
 घालव—१२५  
 घालह—४७

घालि—१२४, २५६, २५८, ३६३,  
 ४७०, ४८७, ५३८, ६१०  
 घालिह—२६२, ५३६, ६०६, ६६२  
 घालिघह—६२७, ४५१  
 घाली—१४२, २८७, ३५०, ३५३  
 घाले—३५१, ५५३  
 घाले—१७७  
 घाल्यो—२५६, ३३१  
 घोड—२५३, ६४३  
 घृत—४७४  
 घृतु—१४२  
 घेह—७१  
 घेहव—७१, ३५८  
 घोडे—३३१, ३३४, ३३८, ३४१  
 घोडो—३५२  
 घोडो—३२७  
 घोमि—१२२  
 घोर—१६८  
 घोरो—३२६, ३३७  
 घ्रत—७६

## च

चह—३१४  
 चव—५२६, ६४७  
 चवक—५६२  
 चवत्पह—८  
 चवतीसह—१२  
 चवपात—१८, ३१६  
 चववारे—१६  
 चवरंग—१७३, २८६, २८७, ४६६,  
 ५३२  
 चवरंगु—२६२, २७६  
 चवरासी—३८८

चउवल—२३  
 चउवीस—७  
 चउवीसउ—७  
 चकचूर—५२  
 चक्र—५१, ८१  
 चकला—३८७  
 चकवइ—४६, १५३  
 चक्कवति—१५०  
 चक्केसरि—२१  
 चक्केसरी—५  
 चडाइ—६७  
 चढाइयउ—५१७  
 चढिउ—५२१  
 चढिवि—२१३, ३३६  
 चढइ—२१४, ३३७, ३५८, ३६६,  
 ४३८, ४७७, ५०६, ५०६  
 चढउ—३३४  
 चढहु—६८  
 चढाइ—६५  
 चढाई—२८०, ४६६, ६४८  
 चढावण—३३५, ३३६, ३५६  
 चढावहि—३५७  
 चढि—१११, १३०, १३५, १५८  
 १८६, २३५, २६५, ३५७  
 चढिउ—२५, ३३१  
 चढी—३, १८७, ३४३, ३५४  
 चढीइ—४६५  
 चढे—१०२, २८१, ४६२, ४६६  
 चढयो—२६३  
 चतुरंग—७२  
 चंचल—३२३, ३२४  
 चंद—१३६, ६४१  
 चंद्रकांति मणि—६०१

चंदन—३७३, ५६३, ६६६  
 चंदणउ—८  
 चंद्र—२०३, २३४, ५१८, ५४०  
 चंद्रवयणि—४२  
 चंद्रहंस—५३६  
 चंदु—५४१  
 चमकइ—५३६  
 चमकयउ—६०२  
 चमतकार—३३७  
 चंपइ—६२  
 चंपउ—३४५  
 चंपि—३६  
 चंपिउ—२३१  
 चमर—७२  
 चमरंत—७२  
 चम्वर—२३३  
 चयउ—६१३, ६१४  
 चर—४२६  
 चरण—३३६, ३४०  
 चरणु—३७४  
 चरहु—३४१  
 चरित—२६६, २६७, ४२१, ६६२,  
 ६६५  
 चरितु—११, १०४, १८३, १६८  
 २६५, २७३, ३२०, ४२६,  
 ४३२, ४६२, ५३५, ६६७,  
 ७००  
 चरेइ—६८६  
 चलंत—५०२  
 चलइ—८५, १५२, २०६, २६७,  
 २६४, ४७६, ५८४  
 चलई—३३

चलज—१७३, १६६, ३०८, ४४८  
 ५१०, ६५२  
 चलत—२६०, ३१२  
 चलहु—४६, १०१, ४८१, ५०५  
 ५५४, ५८६  
 चलिज—१२४, १५८, १६४ १७३  
 २४८, २४६, ३१२, ३२६  
 ३५५, ३६०, ३६५, ४४१,  
 ५०६, ५३२, ५५१, ५६४,  
 ५८१, ५६०, ६५८  
 चतिलज—१८३  
 चतियज—२०८  
 चली—६१, ८५, २६६, ३०६, ३५६  
 ४१६, ४८३ ५२८, ५६३,  
 ५६८  
 चलीज—३४, १३०, ४४७  
 चले—१२८, १७५, १८७, ३०७  
 ४८२, ५२६, ५२६, ५४०  
 ५६१, ६४८, ६५५, ६६५  
 चल्यो—३५, ८३, २३७, ६२७  
 चल्योड—३३, २३६  
 चवइ—४६, ११२, ३४३  
 चवर—१६६  
 चवरंग—३२०  
 चवरगु—८३  
 चहि—५३  
 चहु—१८६  
 चाड—८०, २८०, ४८१, ४६६  
 ५१६, ५२०, ५२५, ६४८  
 चाडरंगु—४८२  
 चापि—१२६, ३४४  
 चाप्यो—१३०, १५५  
 चाम्बइ—५५०  
 चामर—२३

चारि—३२४, ४५७, ५८१  
 च्यारि—८०, ३७४, ३६७, ५६८  
 चारिसो नानाणो—२५६  
 चारु—३४७  
 चारयो—३२४  
 चालइ—११०, ५७०  
 चालि—१४५, ५१५  
 चाले—८८, ४७८, ५६४  
 चालं—४८७  
 चाल्यो—१४६, ६२८  
 चावर—५८२  
 चाहि—१४४, १६७, २२६, ३०३,  
 ६०५, ६०६, ६८६  
 च है—५४५  
 चाही—३३४  
 चित—१७७, ५१६, ६५६, ६६३  
 चित्तव—६६०  
 चितह—३६३, ४०३  
 चित—६१, ६०१  
 चितइ—३५, ३८, ३४६, ६२२  
 चितइत—३६  
 चितयज—३६७  
 चितयऊ—६११  
 चितवइ—४१  
 चितावत्यु—६७५  
 चित्तिज—१२२  
 चित्तु—३१५  
 चिन्ह—७२  
 चिललाइ—४००, ४०१  
 चीतइ—६३८  
 चेडी—३६२  
 चेताले—३६०  
 चेरो—३६१  
 चेली—१०६

चुटी—१४६  
 चुंमइ—४२६  
 चुंमियड—५६०  
 चुरइ—४०१  
 चूटी—२५  
 चून—६३  
 चूरह—७८, १७६  
 चूल्हि—४०१  
 चोपडु—३४२  
 चौयास—३१४, ३१७, ३६६  
 चोर—५७८  
 चोरो—६६, ६६, ७६  
 चौहटे—१८, ३६५, ६३७, ६४४  
 चौबहसं—११  
 चौरी—४७२  
 चौहुजण—६५६

## छ

छइ—८६, ६३२  
 छठि—१२२, १२७  
 छठी—५४७  
 छण—६४५  
 छाणांतरि—६६३  
 छत्र—१६६, २३३, ५०३, ५२२  
 ५८२,  
 छत्रजि—५००, ५२६  
 छत्री—२५, १४६, ४८१  
 छंडु—१३७  
 छपनकोटि—१२८, ३७३, ४४८  
 ४५३, ४६०, ५५८,  
 ६५५, ६६५, ६६६,  
 ६७१, ६७२,  
 छपनकोटि—२२, ४६, ४६६, ५६५,  
 ५६५

छपनकोडी—८६  
 छल—४७२  
 छलि—६३४  
 छलु—२४५  
 छवाइ—५६०  
 छहरस—६६२  
 छाइ—८१  
 छाए—१७, ५७६  
 छाडइ—८४  
 छाडि—१६६, १६१, २४१  
 छाडी—२७२, ३६६  
 छात—४८२  
 छाडचो—५५७  
 छारू—६८४  
 छायाज—६८६  
 छिनि—८२  
 छीनि—२६५, ३०८, ४०२, ५१६,  
 ५२१

छीनी—२६४  
 छीने—५२३  
 छुडावहु—६४३  
 छुरी—२१५, २३४  
 छुरीकार—२६०  
 छुहारी—३४८  
 छुडउं—२७६  
 छुरी—४७६  
 छेव—४५६  
 छोटो—३६६  
 छोडइ—२६७  
 छोडज—८५  
 छोडहि—४२७

छोडि—४६, ४७, ४४, १८४, २६८,  
२७३, ३०७, ३७२, ४१६,  
६२६

छोडिज—२३०, ६५२

छोडो—६१, २२१, २५०, ४१६,  
५२०

छोडो—२८७

छोरो—६८, २८७

## ज

जइ—७, ४०, १०६, २१५, ३००  
३०४, ३१७, ३२२, ३३०,  
३४६, ४०४, ४४८, ४८८,  
५८३, ६४३, ६५४, ६६७  
६७६

जइज—४२६

जइसी—३५२

जइते—३००

जउ—१३, ७६, २१२, २४६, २५७  
२८८, ४४०, ४१६, ५६०  
६७४

जझ—१६

जझ—१०६

जगत—५६६

जगु—१७५

जटिउ ३१६, ५६६

जटिन—१६२

जरो—५२

जरे—१७, ५८२

जरा—३३५, ३३६, ४४१, ५६०,  
६२८, ६३२, ६३६, ६५६,  
६५७, ७०१

जगणि—२४३

जगणो—२४८, ६६५

जगव—६२६

जगह—७०१

जगा—४५६

जगाइ—५५, ६६, २५७, ३६२,  
३७५, ४००, ४२५, ६२०

जगावहि—५०५

जगिउ—१७५

जगित—३१४

जगु—८७, १५३, ४१७, ५६०

जगो—८६

जगो—१६६

जह—१०५

जान—५६३

जानकु—६३

जाननी—६३१

जग्म—१४१, ५६०

जग्मभूमि—५०८

जगम—१५५, २४५, ६६७, ६८६

जगु—७१, ५०५, ५०६, ५६१

जनेउ—२७४

जगइ—१०३, २२६

जगिउ—२३१

जग्मवीप—१५२

जग्मविना—१४

जगइ—५०, १७७, २४२, २६८,

३०३, ३१५, ३१७, ३६२

३७१, ४१२, ४१३, ४२५

४७३, ५१०, ५१२, ५२१

५३०, ६११

जंगल—१८२

जंगल—५५६

जंपिड—२६५, ६४३  
 जम—५०६, ६८४  
 जमंत्रि—७७  
 जमपाधि—५३५  
 जमराइ—५०५  
 जंभीर—३४७  
 जंवइ—६१२  
 जंघवती—६०६, ६०७  
 जमसंवर—१२६, १३२, २४४, २४७  
 २५८, २६२, २६२, २८३  
 ४०६, ४४४  
 जमसंवर—२३१, २३७, २६५, ४१४  
 ५७१, ५७३  
 जम्मह—२५२  
 जंमि—३१४  
 जम्मु—६८०  
 जंमु—४३  
 जय—६६६, ६६७, ६६२  
 जयऊ—६  
 जयजयकार—५६५  
 जयन—१५२  
 जर—७  
 जरवकुमार—६७३  
 जरवकुमार—६७४  
 जरासंघ—४६५, ५२४, ५३८  
 जरी—२३३  
 जल—२०५, ३६४, ५२६  
 जलमह—१०६  
 जल सोखणी—१६३,  
 जलहर—५६१  
 जव—६८, ६६, १४७, १६३, १६४,  
 १६७, २०८, २१६, २६५,  
 २६६, २६७, ३७२, ४२६,

४६३, ५४०, ५४३, ५६०,  
 ५८१, ६४७, ६१२  
 जवइ—५६७  
 जवते—५६६  
 जवहि—१८३  
 जवसंवर—१६४  
 जस—३१६  
 जसु—७००  
 जसोधर—२७०  
 जह—२४३, ३१६,  
 जहां—३८, ६०, ६२, ६४, ६५  
 १०५, १२४, १३०, १५३,  
 १५५, १६६, २१८, २२०,  
 २२५, २२८, २४०, २५८,  
 ३३८, ३४३, ३५२, ३५४,  
 ३६१, ४१६, ४२६, ४३४,  
 ४५२, ४६३, ५४४, ५६३,  
 ५६६, ६४०, ६४६, ६६५  
 जहि—३०, ६६, १२६, १४०, १५०  
 १७४, २२१, २६३, ३१५  
 ३१७, ३१८, ३४६, ३६०  
 ४०६  
 जाइ—३५, ५८, ६०, ६२, ६७,  
 ८५, ७६, ८१, ८३, १०१,  
 १०४, ११०, ११४, ११६,  
 १३०, १३६, १४१, १४३,  
 १५०, १५७, १५६, १६३,  
 १७५, १६८, २२०, २२४,  
 २३०, २३७, २३८, २४६,  
 २५१, २५७, २६१, २६३,  
 २७६, २८७, २६४, ३३८,  
 ३४४, ३४५, ३३६, ३५२,  
 ३५८, ३५६, ३६०, ३६१,  
 ३६७, ३६८, ३७१, ३७३,  
 ३७५, ३७७, ४०५, ४३४,

५३५, ५३३, ५३६, ५१७,  
 ५२६, ५४३, ५४४, ५४०,  
 ५४१, ५४७, ५६०, ५६३,  
 ६०६, ६१६, ६२६, ६२८,  
 ६४३, ६५३, ६५८, ६६०,  
 ६६२, ६६८, ६७०, ६६२,  
 ६६८  
 जाइति—४४२  
 जाके—११२  
 जागइ—१२६  
 जागरण—१२२  
 जागहू—१२७  
 जागि—६६, ११७, ६७२  
 जागिह—१२८  
 जाख—१६०  
 जाख—१३८, ३००, ३०१, ३०२,  
 ३०४, ३४७, ३६०, ४६०  
 जाखइ—३६, १२६, १५४, १५७,  
 १७७, १६६, १६२, ३१७,  
 ३४४, ४४८, ५३५, ५६६,  
 ६०७, ६१०, ६२४, ६७७,  
 ६७८  
 जाखव—१४६, ४०५, ४६६  
 जाखहि—२०  
 जाखहू—६३६  
 जाखि—४, १३३, १३८, १६५,  
 २०३, २०८, २४१, २४४,  
 ३०७, ५६२  
 जाखिह—६५, ७६, ४२६, ५६५  
 जाखिए—१६  
 जाखिक—४७४, ४८६  
 जाखिति—४३६  
 जाखी—२४१, ४४८, ६४५  
 जाखु—१३८

जाखी—१६५, १७५, २५३, ३२०,  
 ४६८, ४७४  
 जाखीव—६३३  
 जाखी—१७, ७२, ७७, २८०, ३८१  
 ४२७, ४८३, ५३६, ५४१,  
 ५५७, ५८२, ६४३, ७०१  
 जात—६६४  
 जाति—६४७  
 जावव—२२, ४६  
 जाववराइ—६२  
 जाववराव—२७, १०६, ६०१  
 जावववीर—५४  
 जावकराव—१७  
 जावम—४६१, ५२६, ५५५, ५६०,  
 ६३८, ६५५, ६६५, ६६६,  
 ६७५  
 जावम्व—५०२  
 जावमराव—५७५, ५१७  
 जावमराय—२४२, ६३६  
 जावपुराव—६४०  
 जावव—४६८, ५५८  
 जाववहि—४७४  
 जाववराव—१२८  
 जावो—४६६  
 जावो—४३८, ४६०, ५०२, ६२५,  
 ६४३  
 जावोनी—४५७  
 जावोरव—५२५  
 जावि—६६५  
 जाव—१०३, २२६  
 जाव—२२, ५४, ६८, १२२, १४५,  
 १६३, १८१, २८०, २८२,  
 २६५, ४११, ५०१, ५१८,  
 ५१६, ५४०, ५४२, ५६४,  
 ६२२

जामवंती—६०८  
 जाम्ब—५२८  
 जायो—२७४  
 जालह—४४०  
 जालामुखी—५  
 जासु—५१  
 जाह—१७७  
 जाहि—१०१, ११२, ३०१, ४३७,  
 ४४२, ४६४, ५१६, ६८७  
 जाहू—३८६  
 जिउ—५४३, ६८६  
 जिबजाहूति—५७६  
 जिण—७, ११३, १८७, २६६,  
 २६७, ३३४, ५१७, ६७७  
 जिणह—४६०, ४७०  
 जिणऊ—४६१  
 जिणभवण—२६५  
 जिणभवणु—१८७, १८६  
 जिणभूवण—२७  
 जिणमु—१६६  
 जिणवर—२, ३१४, ६५६, ६७५  
 जिणवरु—१२, ४६१  
 जिणवाणी—६६८  
 जिणसासण—६  
 जिणहू—६६४  
 जिणि—५५२, ६२७, ६५१  
 जिणिउ—२११, ५१४  
 जिणिद—६५६  
 जिणिवि—१७४, ४६१  
 जिणु—६५८  
 जिणी—५०८  
 जिणे—५०२, ६१८  
 जिणिसरु—६६६  
 जिस्तह—५०२

जित्यो—५४७  
 जिन—६६, ७५, ११६, १५६,  
 ३०५, ३५३, ३७१, ४११,  
 ४२०, ४८१, ६६४  
 जिनके—४६०  
 जिनुसरणु—६६७  
 जिन्हहि—५०२  
 जिन्हि—५३६  
 जिम्ब—४१२, ४१३, ६६०,  
 जिम—१०४, १०६, ४६०, ५०५,  
 ५८६, ६८३  
 जिमहि—५५६  
 जिमू—१८१  
 जिमि—१०७, १३६  
 जित्यउ—१८३  
 जिघत—१८५  
 जिसकी—५७२  
 जिहां—८६  
 जिहि—४७, १२७, २६४, २६६,  
 २७३, २८४, ३१८, ४८०,  
 ५१३, ५५०, ५५२, ५५३,  
 ५६५, ५६०, ६००  
 जीउ—२२०, २६६, ६६८, ६८६  
 जीतह—५३६  
 जीतहू—१६५  
 जीतहुणे—७३  
 जीतित—५३८, ६५१  
 जीत्यो—५४८  
 जीम—२७२, ४८६, ५३६  
 जीव—२३२, ४८५  
 जीवण—४०१  
 जीवत—३७०  
 जीवदानु—५११



जुगत—३०४  
 जुगतव—२४०, २४८  
 जुगति—४८, ४३४  
 जुगतौ—२४६  
 जुगल—३६८  
 जुगलु—२११, २३६  
 जुक्त—१६७, २७४, ४६७  
 जुक्तइ—५४२  
 जुक्तएह—२०६  
 जुक्त—४६६, ६५८  
 जुक्तु—२१०, ५३६  
 जुव—१६५  
 जुवल—२३५  
 जुवलु—२१७  
 जुव्री—३४३  
 जुक्त—१३८, १६८, १८२, २२४,  
 ४४८, ५१४,  
 जुक्तइ—४५१, ४६२  
 जुक्तए—४७८  
 जुक्ति—१८१, ४६८, ५०१, ५५५  
 जुक्तु—१८०  
 जुक्वा—६१६  
 जुह—१६६  
 जुठव—११४, ११८, ६७७  
 जुत—२८५  
 जुवु—४६६  
 जुत्वथु—४३१  
 जुते—३७५  
 जुम्बए—३६०, ४ ३  
 जुम्बथु—३६१  
 जुम्बहिणे—३६२  
 जुमि ५६०

जुनि—५५२  
 जुवए—४००  
 जुंते—१२४, १८६  
 जुंहि—३२६  
 जुइ—४०, ३०४  
 जुइल—४७०  
 जुइतो—४७०, ५७५  
 जुगु—२६, ४०, ६४, ३७०, ५४८  
 जुजए—१६  
 जुड—३३  
 जुडइ—२११  
 जुडि—६३, १४८, १६१, २०२,  
 २२२, ३५३, ४५५, ७०१  
 जुति—४५८, ६१२  
 जुवो—४०४  
 जुवोति—६६०  
 जुवोनार—६५३, ६६२  
 जुवइ—१८६ ३६६

## झ

झकोलइ—१६  
 झणी—३६२  
 झपाए—४८७  
 झल—५२५  
 झाणु—६६०  
 झायव—६६०  
 झाल—१७०, ३८६  
 झावहि—६६६  
 झुणकार—१२०  
 झुरत—१४५  
 झुलाइ—६७  
 झुठव—११६  
 झुतति—६८

## ट

टंक—३६६, ३७०, ३७१  
 टंकारिज—२८०  
 टंकारु—७०, ४६५  
 टलदल्यज—५४१  
 टलिज—३७  
 टलै—११६  
 टल्यज—२४६  
 टांग—३७२  
 टादण—४७८  
 टाल—२५८  
 टोकौ—३६२  
 टेकतु—३६०, ३७६  
 टोइ—४२५  
 टोया—४७८

## ठ

ठयज—४४, २७६, ४३६, ५२४,  
 ५६२, ५७५, ५७६, ५८७,  
 ६१६  
 ठयहु—२२३  
 ठये—६५५  
 ठयो—६०, ५२८, ५६२, ६१६,  
 ६२२  
 ठवइ—३०  
 ठवहुक—३२७  
 ठाइ—२०, ३०, १०६, १२६, १५७,  
 २३०, २८३, २६५, २६६,  
 ३२७, ३४४, ३८६, ४१२,  
 ४३७, ४७३, ४८१, ४८६,  
 ५०४, ५३७, ५४८, ५५१,  
 ५७४, ५८७, ६१५, ६१६,  
 ६२५,

ठाज—२३, २८, ४५, ५६, ५८,  
 ७१, ८०, ८२, १२६, १५२,  
 १५५, १५६, १६७, १६६,  
 १७८, १६८, २३७, २४२,  
 २६६, २६६, ४१२, ४५४,  
 ४७१, ४६३, ४६४, ५०३,  
 ५४३, ५५२, ५७२, ६४०,

ठाजखु—५२२

ठाठा—६८, ६०, ४७६, ५००, ५८०

ठाढज—२६, ३३, ११६, २८२

ठाडे—४३६

ठाढी—१०४

ठाढो—१६०, १६६

ठाण—१८१

## ड

डरइ—१६६, ३०८

डरहु—३३४

डसइ—१६८

डहणु—४६८

डाभाहि—५२६

डोम—१२६, ६३६, ६४४, ६५७

डोरे—४१६

डोलइ—३१७

डोलहि—५७६

डोले—२८०

## ढ

ढलइ—२३, ५८२

ढलीय—६४३

ढल्यज—७६, ४७५

ए

एंकालु—२१४  
 एंबख—१८३, ६१४  
 एयर—२५, ५६५  
 एवि—१  
 एविवि—१२  
 एमेसु—६७  
 एययाएंबख—५६१  
 एाख—१२  
 एारि—२२६, ४१६  
 एिच्चल—३१४  
 एिगाय—२  
 एिमि—६८८  
 एिय—२५, २६३, ३१५, ३५६,  
 ६१०  
 एिलज—१२  
 एिचसइ—२१४  
 एिष्वाया—२३२  
 एिमुसह—२७१  
 एीगांबु—१३

त

तइ—७६, २१४, ३०३, ३६२,  
 ४६५, ५१०, ५१५, ५१६,  
 ५२३, ५५०, ५७३, ५७४,  
 ६२६, ६६६, ६७८  
 तज—२७, २८, ३३, ३६, ४८,  
 ५०, ५८, ५६, ६३, ६५,  
 ६८, ८५, ६४, ६५, ६६,  
 ६७, ६६, ११६, १-२, १५२,  
 १६७, २१२, २१५, २२६,  
 २२७, २४६, २५०, २७७,

२७८, २८३, २६७, २६८,  
 ३०३, ३०७, ३२७, ३६८,  
 ३७१, ३८५, ३८५, ३८८,  
 ४०३, ४०५, ४०६, ४१३,  
 ४२८, ४३७, ४३८, ४४२,  
 ४५७, ४७१, ४७४, ४८६,  
 ५०६, ५०८, ५१०, ५१५,  
 ५५१, ५८३, ६०१, ६१८,  
 ६३७, ६६८, ६७१  
 तएज—११, ६६, ११६, १६७,  
 २६८, २६६, ३००, ३०५,  
 ३१५, ३१८, ३१६, ३२२,  
 ३७६, ३७६, ४२१, ४४८,  
 ४६६, ४६४, ५४६, ५५०,  
 ६०३, ६१८, ६३८, ६६६,  
 ६८०, ६८४  
 तजनि—४०  
 तजपट—३५१  
 तक—१३७, ६४३, ६५३  
 तजिज—३२७  
 तए—८६  
 तएज—३६, ६५, २२५, २६८,  
 २७८, ३२७, ४०६  
 तएी—४४, ५६, ६५, १२३, १२८,  
 १४८, १५६, १६२, २४१,  
 २४२, ३६२, ३८२, ४३३,  
 ४७२, ५०६, ५१६, ५६७,  
 ६०६, ६२३, ६४०, ६७८  
 तखज—३१४  
 तखी—३४६, ४३०, ५२३, ५२६,  
 ५७८  
 तखी—६३८  
 तखी—१६६, ५३४  
 तखी—११३, ३६७

तत्तपि—३६  
 तत्र—५६१  
 तंखण—५०८, ६५५, ६६१  
 तंखिणी—४१  
 तंखणी—२८८, ४०१, ४१८  
 तंखिणी—१२३, २४२, ५६५, ६३५  
 तन—४२२  
 तनी—५६५  
 तनो—३३२  
 तप—१६१, २७४  
 तपन्नरणह—६७५  
 तपु—६७७  
 तर—६७, ३४२  
 तरुणे—३३३  
 तल—६३, १२५, १२६, १६२,  
 २४४, ३८१, ५८४  
 तलही—१२६  
 तव—५०, ६६, ७८, ८३, ८७,  
 १००, ११२, १२६, १४८,  
 १६२, १६६, १७१, १७२,  
 १७६, १८३, १८४, १८५,  
 २-२, २०७, २१०, २२८,  
 २३०, २४६, २५४, २५६,  
 २६३, २८२, २८७, ३०२,  
 ३२०, ३५६, ३५१, ३६६,  
 ३७२, ३६६, ४०४, ४०७,  
 ४२५, ४२८, ४४२, ४४४,  
 ४४७, ४५३, ४५६, ४६६,  
 ४६६, ५०२, ५०७, ५१६,  
 ५२०, ५२५, ५२७, ५३०,  
 ५३१, ५३५, ५३६, ५४६,  
 ५५१, ५५४, ५५८, ५७५,  
 ५८३, ५८७, ६०५, ६०६,  
 ६१५, ६२२, ६४८, ६५१,

६५२, ६५४, ६५५, ६६४,  
 ६८४  
 तवह—६८, २६६, २५५, ३४१,  
 ३५८, ४३७, ४४५, ४४६,  
 ४८८, ५३३, ५३७, ६०२,  
 ६१६  
 तव्व—५८४  
 तवहि—१८५, २२०, ३२६, ४०८,  
 ४१२, ४७२, ६०६  
 तवही—६८२  
 तवु—२६४  
 तस—३८५  
 तसु—५४, ५६, १४८, १५६, १६२,  
 १६५, २३६, ५०७, ६१२  
 तह—३६, १२७, १४७, १५१,  
 २१७, २२०, २३६, २६३,  
 ३४७, ४२१, ४८८, ५६८,  
 ५६७, ६०४, ६१३, ६२१,  
 ६३४  
 तहतह—२२६  
 तहा—२५, ३८, ५३, ५६, ६२,  
 ८६, ६२, ६४, ६५, १०२,  
 १०३, १२२, १२४, १४६,  
 १५१, १५२, १५३, १५५,  
 १५८, १८०, १६६, २१४  
 २१८, २२०, २२५, २२८,  
 २५०, २५८, २६१, ३२३,  
 ३२६, ३३८, ३४३, ३५२,  
 ३५४, ३५५, ३६१, ३६८,  
 ३६८, ४१६, ४२६, ४३२,  
 ४३४, ४५२, ४५४, ४६३,  
 ४७४, ५४४, ५६६, ६०८,  
 ६०६, ६१४, ६१६, ६५०,  
 ६६३, ६६५

तहि—२, २१, १२६, १५०, १५२,  
 १५५, १५६, १६४, १७३,  
 १८०, १६०, २०८, २१५,  
 २१६, २१६, २२४, २३०,  
 २४१, ३२६, ३६३, ४१५,  
 ४२८, ४५०, ४५४, ५१७,  
 ५६१, ५८६, ५८८, ५६६,  
 ६१६, ६४७, ६६८, ७००  
 तहरि—५६२  
 ताकी—१५४, २४३, २७१  
 ताके—१६८, ३२४  
 ताकी—१५४  
 ताज—४२७  
 ताले—४८३  
 ताम—३२, ३६, ७७, १२२, १४५,  
 १६३, १८१, २६१, २८०,  
 २८२, ४११, ५०१, ५१८,  
 ५१६, ५२८, ५४०, ५४२,  
 ५५५, ५६४, ६१०  
 तारणी—१६२, २०४  
 ताल—२४, ६२, २६४, ३६३, ५८०  
 ताबु—५१, ६४  
 तास—६१३  
 ताह—१६२  
 ताहि—५०, ५२, १७७, ३०४,  
 ३७०, ४०६, ४४०, ४४२,  
 ४२४, ४६१, ६८७  
 तिच—३६४  
 तिजवलाह—१२  
 तिण—६०३  
 तिणि—६४१  
 तित्त—३६०  
 तिन—१६७, १७०, ३५०, ४८५  
 ५६५

तिनकी—३४४  
 तिनके—२४  
 तिनसु—३४३  
 तिनस्यो—४०२  
 तिन्हि—१, ६५, ३७२, ६६०  
 तिन्ह—३४१  
 तिन्हहि—१६७  
 तिनहु—४२२  
 तिनि—४६, ८८, २६६, ६१६  
 तिनी—८६  
 तिपत—५०५  
 तिम्वइ—२६८  
 तिम—१६७, १७०, ३५२  
 तिमुतिमु—३८६  
 तिय—२६४  
 तियवर—२०  
 तिरड—६६७  
 तिरिय—४२, २६७, २६६  
 तिरियहि—२६७  
 तिरो—२४३  
 तिलकु—२६, ५६२, ५६६  
 तिलोत्तम—५५  
 तिवइ—२६८  
 तित्त—२, ३६, १२८, १५७, ४७  
 ४८६, ६२५  
 तित्तके—१३४  
 तिसको—६२५  
 तिह—२०४, २८३, २६३  
 तिहा—२०४  
 तिहारड—२४३, २८८  
 तिहारे—५१४  
 तिहारं—४८०  
 तिहारो—३७८, ५४६  
 तिहारो—२८६, ४२१, ४६३

तह्नि—१४, २०, २२, ३०, ३७,  
 ४१, ४२, ४६, ५७, ५६,  
 ६४, १०६, ११२, ११३,  
 १२६, १५६, १५७, १६४,  
 १७०, १८३, १८८, १६८,  
 २०१, २०५, २११, २१५,  
 २१८, २२५, २३७, २४२,  
 २४३, २७१, २७३, २७६,  
 २८४, ३०६, ३२०, ३२७,  
 ३३५, ३४५, ३५२, ३५५,  
 ३७३, ३६१, ४१२, ४१६,  
 ४३२, ५१३, ५३६, ५४८,  
 ५५१, ५५२, ५७४, ५८७,  
 ६००, ६०८, ६०६, ६१०,  
 ६२४, ६४१, ६६१

तिहिवा—६०८

तिहिस्यो—५५०, ५५३

तिह्—२१०

तीजी—२००

तीजे—२७१

तीन—४०२

तीनखंड—२१

तीनि—२०३, २४५, २४६, २७१,  
 ३०६, ५२१, ५४०, ५८३

तीनिज—२४७

तीन्यो—२६३

तीस—१२८

तुजि—५२१

तुडि—३७१, ५२१

तुडहि—२६१

तुणह—४२६

तुहो—३=५

तुम—२८, ४६, ६२, ११३, ११४,  
 ११७, १२७, २८६, २६०,  
 २६७, ३०२, ३३२, ३३३,  
 ३३४, ३८०, ४२४, ४३३,  
 ४६४, ४६६, ४७३, ५१५,  
 ५२३, ५५०, ६२३, ६२४,  
 ६२८, ६२६, ६६७, ६६४,

तुमि—१०८, ३०५, ४४८, ४६४

तुम्ह—१२७, ४२०

तुम्हारज—२६

तुम्हारी—३७०

तुम्हि—२४८, ३४०, ३८०, ४०७,  
 ४२०, ६४१

तुमहि—४७०

तुम्ही—४७२

तुरंग—३५६

तुरंगु—३२७, ३३१, ३५८

तुरंत—६२३

तुरंतु—१३५, १७१, २१३, २३७,  
 २६२, ४८२

तुरय—५२६

तुरगइ—३३१

तुरिय—६८, २५६, ३२३

तुरिहय—१७३

तुरोय—६७, ३३५

तुरीयज—३२४

तुरी—३३५, ३४०, ४६५

तुरीन—४७७

तुव—३१४, ६११

तुह—२४२, ५०६, ५४६, ५११,  
 ६४०

तुहारि—६२६

तुहि—५०, १४८, १६७, १६०,  
 २५७, २५८, ३१६, ३२२,

३७१, ४०७, ४७२, ५१५,  
 ५७३, ६३५  
 तुही—७००  
 तुह—५११  
 तुते—५००  
 तुटिगो—५१६  
 तुठज—१७२, ५७७, ५६०  
 तुठी—३७७  
 तुर—३४  
 तुरी—५०३  
 तुव—२४५  
 तेज—३६०, ५३६  
 तेज—५२५  
 तेण—१५६  
 तेरज—६६, १७३, १६७, १७३  
 तेरह—६३६  
 तेरे—५१६  
 तेल—१४०, ३५६, ३५७  
 तेलो—५७६  
 तोडइ—२१३, २६१  
 तोडहि—२१०  
 तोडि—२६१, ३५१, ३७२, ५२०  
 तोडिवि—६६२  
 तोडी—२०६  
 तोपह—४६७, ४७१, ५३०  
 तोरण—३६, ५६३, ५६५, ५६१,  
 ६५५  
 तोरइ—५७६  
 तोरी—३५४  
 तोहि—७४, २४६, २६३, ३०४,  
 ३३०, ३७०, ३६६, ४०३,  
 ४१४, ४४७, ४५५, ४५६,  
 ४५७, ४६६, ४६३, ५११,  
 ५१०, ५२०, ५७४, ५३३,

६०२, ६०४, ६०६, ६४३,  
 ६६७

तोहि—६०६

## थ

थणहर—१६२, २५०  
 थन—१६४  
 थनीणी—४०१  
 थरहरइ—६६२  
 थल—४७४, ५२६  
 थाके—१४१  
 थापिज—२५२, २७२  
 थापे—१२१, ५६१  
 थाल—३३७, ५५२, ५७०  
 थाबु—६१  
 थुतिवि—६६३  
 थुरे—४२२

## द

दइ—२३, ४१, २७०, ३१५, ३३०,  
 ४२७, ५३५, ६४६  
 दउ—२००, ५४२  
 दकाण—४३४  
 दखु—२५७  
 दंत—२१६  
 दंड—५  
 दन्व—१४२  
 दन्वण—३४६  
 दरड—४३३  
 दर्ण—३१  
 दवु—३०१

बल—२१, ७१, ७५, २६१, २७६,  
२८३, २८५, ३२०, ४८६,  
५२६

बलबल—२१

बलु—७२, ७५, ८३, १७१, २६२,  
२८२, २८६, ५३२, ६४६

बस—६, १३६, ३३५, ३३६, ४२६,  
४४१, ५२६, ५५६, ६६६

बसह—४६८

बसदिसार—६७५

बसह—४६६

बहि—५७०

बाज—२४८, २५४

बाख—३४७, ३४८

बाण—३००

बाढिन्व—३४७

बांत—३६५

बावानल—७२

बाहिया—१४

बाहियाह—५०७

बाहियाज—५०७

बाहिनी—४८४

बाहु—१४८

बिललाज—३३४

बिललावहि—४५६

बिललावहु—४६४

बिलाह—४६४

बिलाज—७४

बिलालह—१८६, १६७

बिलालज—४३२

बिलालि—६१०

बिलालिज—५४

बिल्या—४०६

बिल्यावह—४६६

बिल्यावहि—४६३

बिलि—२५२

बिलियावह—६६६

बिगु—५८७

बिजह—६५६

बिहु—१२३

बिठ—४२६

बिठज—३२, ३३७

बिठि—७६

बिठु—२८२, ४११

बिठु—६५६

बिन—११, १११, ११५, १६३

बिनज—३८५

बिनि—६२१

बिपह—३१३, ६०१, ६६०

बिवस—११०, ४०३, ४०४, ४३०,

६१६

बिवसु—३५६

बिवावह—६०६

बिस—१६, ४८४

बिसह—१६१

बिसंतर—४१०

बिसा—४६६, ४८८, ४६४, ४६८,

५५८

बिसि—१४

बीख—४०६

बीख्या—८७५

बीजह—४४६

बीज—४८५

बीठ—५६

बीठज—६२, ८६, ६६, १४७, २०६,

३२०, ४४२, ५१४, ५१८,

५२३, ५४५, ५५०, ५६०,

६३६, ६३७, ६६०,



वीहि—४०, ६३१  
 वीठी—२७, ४१, ६८, ६६, २०१,  
 २६६  
 वीठे—३७, ३४४, ३६७, ६५६  
 वीणज—६४८  
 वीणज—२६, २१६, ३३०, ३३६,  
 ३७२, ३८७, ५११, ५२०  
 वीनी—४४, २२३, २२८, २५८,  
 २६७, ३४३, ४०८, ५७४,  
 ६५४  
 वीने—३५०  
 वीप—५७८  
 वीपइ—१६१  
 वीयो—४०२  
 वीस—३२४, ६६३  
 वीसइ—१६, १८, २२, ७२, २१७,  
 ३१३, ३१६, ५०३, ५२६,  
 ५६२, ५६६  
 वीसह—१७  
 वीसहि—१६२, ४८२  
 वुइ—३३, ७१, ७६, २११, २२२,  
 २३५, ३०६, ३४१, ३४६,  
 ३५३, ४०१, ६१७  
 वुइज—१३६  
 वुइजो—४, २७०  
 वुइजो—२७६  
 वुल—१२५, ४२६, ४४५,  
 वुलइ—२७०  
 वुमण—६८६  
 वुजो—३०६  
 वुठ—६६६  
 वुठ—६६७  
 वुठि—६  
 वुवार—४४२

वुवारि—४३६  
 वुवार—४४१  
 वुवारे—६३६  
 वुष्ट—७६, १२०, ६३२, ६८५  
 वुह—७, १६१  
 वुहागिणि—१०७  
 वुह—१११, ११५, १२०, ५८४,  
 ६२५, ६५७  
 वुखित—६२६  
 वुख्यो—६३०  
 वुजइ—११८, ५२३  
 वुजज—५२४  
 वुजो—१६७  
 वुणे—८१  
 वुल—६०, ११४, ११७, ११८, ४३७  
 ६१६, ६२०, ६२८, ६४१  
 वुसल—६६७  
 वुसह—११४  
 वुतु—४३५  
 वुयल—२१२  
 वुयज—३८३  
 वुयह—३३३  
 वुयि—६६८  
 वुय—५७०  
 वुवाह—४६२  
 वुह—६८६, ६६६  
 वुइ—३, ५, ६५, ७६, ११७, ११८,  
 १६७, १७२, १८४, २११,  
 २१३, २१७, २२३, २६८,  
 २६६, ३००, ३०१, ३०२,  
 ३४१, ३७६, ३७७, ४६८,  
 ४६२, ५७०, ६००, ६१७,

दण, द२५, द२६, द२४,  
 ७००  
 देव—२११, ३२८, ६०३, ६१३,  
 ६६६  
 देवद्व—३८, १०५, १३१, १३२,  
 १८३, १८६, २८१, ४२५,  
 ५०३  
 देवत—३१, ३७२, ५१२  
 देवलय—१३२  
 देवह—१३४  
 देवाहि—३३०  
 देवि—३२, ४३, १२५, १४१,  
 १५६, १५६, १७६, १७७,  
 १८४, १६०, १६६, २०२,  
 २०५, २३०, २३६, २६०,  
 २६६, ३०८, ३१३, ३१५,  
 ३२६, ३६५, ४२४, ४३६,  
 ४५२, ४६४, ४८७, ४६३,  
 ५०५, ५३४, ६४८  
 देविज—६८२  
 देवित—५८६  
 देवियज—३१, ४३, ५१८  
 देवी—६८, १३१, ३५६  
 देवीयज—४८८  
 देवु—३०५  
 देव—१५, २८, ५७, ६२, ३१७,  
 ३७०, ५४७, ५८८, ५६४,  
 ६६६, ६६७, ६६८  
 देवता—६६७  
 देवतु—५३५  
 देवल—१८  
 देवलहि—६७  
 देवि—६६६  
 देवी—५, १०३, १०६, १०७

देव—१४, ३७, ३८, ३४४, ५६६  
 देवु—१५२, ६८८  
 देह—१२१, ३६५  
 देहरज—५७  
 देहि—१०, २४६, २४८, ३८२,  
 ३८३  
 देहु—४, १०६, १७१, ३०५, ३४०,  
 ३६६, ४२०, ५८८, ६२४,  
 ६२७  
 देहुरद—४६  
 देहुरे—५७, ६१  
 देवतु—१६८  
 देव—५६०  
 देव—१८१, १८२, ४५१, ५३६,  
 ६१५  
 देव—८१, १८१, १८२, २८१,  
 ४६२, ४८६, ६३६, ६४२,  
 ६५५  
 देवद्व—२७६  
 देवत—६६, २७८  
 देवु—६३,  
 देवद्व—३३०  
 देवु—२३६  
 देवत—३७४  
 देवत—४४२  
 देविका—५८६, ५६०, ६२१, ६२८,  
 ६४०, ६४६, ६५८, ६६०,  
 ६६२, ६७०, ६७१, ६७२,  
 ६७४, ६७६  
 देविकापुरी—१६, २७, १३६, १४५,  
 १५२, १५७, २८६,  
 २६६, ३१४, ५३४,  
 ५६४, ५७१, ५७७  
 देवियज—६७२

६३

द्वीपायतु—६७४  
 द्वेव—७३, २७६  
 द्वेसै—३५३

## ध

धडड—४४६  
 धण—२६६, ३६३  
 धणुक—६४७  
 धणाय—१६  
 धणह—७०  
 धन—५६५, ६००  
 धनकु—५२०  
 धनप—४६२, ५१७, ५१६, ५२३  
 धनसु—५३३  
 धनहर—७०, ५१६, ५२१, ५२०,  
 ५३६  
 धनि—५५२  
 धनिसु—५५३  
 धनियज—५१०  
 धनु—५५२, ६५६  
 धनुक—२६०  
 धनुके—३१३  
 धनुप—७६, ०२, १३७, २००,  
 ४०६, ५५३  
 धम्पु—६  
 धर—०१, १६०, २३०, २४४,  
 २६७, ४१४  
 धरइ—२४, ३१, ६७, १४३, १६६,  
 २१७, २५०, २५६, २०५,  
 १६१, २६२, २६०, ३०१,  
 ३५५, ३०५, ४१०, ४३६,  
 ४६६, ५४५, ६३१, ६६०  
 धरज—१२५

धरण—१६१  
 धरणि—५१५, ५६०  
 धरणिपु—६६१  
 धरनी—६३०  
 धरन—२६, १५४, २५२, ३६६  
 धर्म—२०, १५२, ५६४  
 धर्म—५६२, ६५६, ६६६, ६६७  
 धर्मपूत—१३४  
 धर्मह—६५०  
 धर्माधर्म—६६६  
 धरमु—६७१, ६०६  
 धरपज—६१२  
 धरपो—५३५, ५६०, ६५३  
 धरहि—२५  
 धरहु—२०६, ६४२, ६०५  
 धरि—७, ४३, ००, १७४, २७१,  
 ४०७, ५७५, ६५२, ६६७  
 धरिज—४२६, ५६५, ६६५  
 धरो—१६, ४४, १३१, २०३, ३६६,  
 ४२२  
 धरीज—२१६, ५५५  
 धरे—३६०, ४०३  
 धरं—१४६  
 धवलहर—१५, १०  
 धवलहव—३१६  
 धवहर—३१४  
 धलकयो—२४६  
 धाइ—२१६, २१७, २३६, ४३१  
 धाइयो—५३१  
 धाए—२०५  
 धाजइ—१४१  
 धाणुक—७०  
 धायज—५५४, ५२६, ५३२  
 धाराबन्धणो—१६५

बीजह—१४०

बीय—५८८, ६२५

बीर—२५६, ३४६, ४२७, ४५८,  
४६७, ४६८, ५१०, ५५८,  
५६६

बीरु—१६२, २०१

बीजा—२६३, ३१६, ३१७, ३१८,  
४८५

बुधि—६४३

बुधाह—४०१

बुरंधर—६७७

बुजा—३१६

बुजु—२७२, २७३

बुम्योड—४१७

बुमकेतु—१२२, १२५, १५४

बोह—६०८

बोरो—३२५, ३२६

बोवती—३६०, ३७४

बोल—६६३

## न

नह—५६३

नज—७, १३

नकुल—४७४

नक्षत्र—११

नगर—४२३

नदी—३६५

नन्दण—११८, १२०

नंदणवण—४६

नंदणवणु—६०

नंदणु—१२

नहन—१०४, ११५, ४५३

नवतु—५५३

नमस्कार—२६, ४३, १५८, २४०,  
५६५

नमस्कार—३६६

नमणु—४०८

नमि—१०

नंसु—७०१

नयण—३०, १०५, १४१, १४१,  
२२७, ५६०, ६५०

नयणा—६६

नयन—५६६

नयर—१५, ३७, ६०, १२४, १२८,  
२६२, ३२०, ३६२, ४२३,  
५६१, ५६३, ५६५, ५८६

नयरि—१२०, १३५, २६६, ३१६,  
५६७, ५६६, ५८१, ६२८,  
६४६

नयरी—४४, ३२०, ५५४, ५६४,  
५७१, ५८०, ६२१, ६४०,  
६५७, ६७०, ६७२

नयरु—५६, ८४, २७१, ३१३, ६३६  
नर—६५, १६८, ५६५, ६१३, ६६८,  
६६७

नरनाह—४७

नरवह—५४, २५३, २६५, २८०,  
६००

नरवं—१६७

नरायण—२८५

नरिह—१३२, ६५६

नरेस—६६, ५७६

नरेसह—४६१

नरेसु—१६४, ५३४

नरु—२२६, ४८०

नवह—५

नवज—६  
 नवखंड—४६०  
 नवणी—१३  
 नवि—६३६  
 नहि—१६७, ३०७  
 नही—१४७, ४८०, ४६५, ५७३  
 ६२०  
 नहु—६०, २७८, ५०२, ६२६  
 न्हवणु—६६०  
 नाइ—६२  
 नाइ—११६  
 नाज—३२७, ४१६, ४२१, ४२५,  
 ५६७, ६१२  
 नाक—३६३, ४२२, ४२५  
 नाग—२०१  
 नागपाती—२०४, २५६, २८२, ३८७  
 नागतेज—२०३, २३३  
 नागु—१८६, २०१, ४८४  
 नाचणु—३४  
 नाचणु—२४  
 नाचहि—५६६  
 नाजु—४०१  
 नाटक—१३७  
 नाण—२०४  
 नातर—६६०  
 नानारिवि—२५, २८, ३०, ३३, ३५  
 ३८, ५६, १४५, १४६,  
 १५१, २८३, २८८,  
 ४४५, ५४५, ५५४,  
 ५५६  
 नाम—४०६, ६१४  
 नामु—१६८  
 नारद—२६, ३१, ३७, ४१, ४६,  
 ४८, ५१, १४७, १४६,

१५०, १५२, २८५, २६१,  
 २६२, २६७, ३०६, ३१३,  
 ३१४, ३६६, ४१४, ४५६,  
 ५४२, ५४६  
 नारदु—३४, ४३, ५३, २६५, ५४४  
 नारदुतिवि—५०  
 नारायण—२८, ४३, ४७, ५१,  
 १०१, १०२, ११४, ११८,  
 १२७, २६३, ४०४, ३०५,  
 ३०६, ४०४, ४०५, ४५२,  
 ४६१, ४६५, ४७२, ५३०,  
 ५३५, ५४४, ५५१, ५५५,  
 ५५५, ५६५, ५६६, ६१०,  
 ६२६, ६६५, ६७०, ६७२,  
 ६७६, ६८१, ६६१  
 नारायणु—२६, २६, ५३, ६४, ६५,  
 ७६, ८५, ८६, ६५, ६५,  
 ११७, १५३, ३३३, ३६०,  
 ४६२, ६४०, ६५०, ६७६  
 नारायणु—५२  
 नारायणु—८२  
 नारि—५५, ८८, ११५, १२०,  
 १४२, २२६, २२७, २७१,  
 २७६, ३६५, ४२२, ४२३,  
 ४२६, ५४१, ५६३, ५६५,  
 ५७०, ५८४, ६०८, ६३४  
 नारिण—३४७  
 नारी—१२३  
 नासु—६६२  
 नाहि—४५, ८३  
 नाही—२०७, २६८, २७७, ३३२,  
 ३७१, ४५६, ५१५, ५२२,  
 ६७५  
 न्हाइ—२०५, ६०८

न्हातो—२३६  
 निकटकु—१८६  
 निकलह—४६१  
 निकलिउ—३६४  
 निकली—२१४, ४२३  
 निकालि—३८३, ५४८  
 निकासु—३, ८, १३८  
 निकुताइ—१३२, ५७७  
 निकुल—४५६, ४७१, ४६३  
 निगहह—६४३  
 नीघण—६४७  
 निपाति—३५०  
 निबू—६३३  
 निज—६५  
 निजिणि—२१६  
 निजु—७०, ४१८  
 निति नित—६१, १४०  
 निद्रा—६६  
 निपजावइ—३३८, ३४६  
 निपाए—६५६  
 निमजंत—७२  
 निमजि—७५  
 निमति—५७७  
 निमते—५७६  
 निमस—२४२  
 निमसइ—१५२, २७१, ५८७, २८२,  
 ६१६  
 निमसै—११६, १६४, ६५४  
 निम्यल—१६१  
 नियमण—७६  
 निपनिय—६६३  
 नियरी—१६६  
 निरखि—१०५, १६२

निरजासु—६७०, ६६७  
 निरवाणु—६६४  
 निरास—२३३  
 निरुत—११२, २६३, ३६६, ४१४  
 निलउ—६१३, ६६६  
 निवली—३४६  
 निवारि—५४३  
 निवसइ—१५६, २२०  
 निवसहि—१६, २०  
 निवचल—६७०  
 निवचे—१६०, ४२७  
 निसाण—४८३  
 निसाणह—५६०  
 निसाणा—६८, ५६८, ५७६  
 निसि—१२२  
 निसिपूत—१२७  
 निसिहि—५४७  
 निसुणइ—३०५  
 निसुणउ—२६६  
 निसुणह—११, १७४, ४०१, ४६२,  
 ५४६  
 निसुणि—२६, ४२, ४८, ५१, ६४,  
 १२७, १५८, १७२, १७८,  
 १८३, १८७, १८६, २४६,  
 २५३, २५६, २६४, २८६,  
 ३०१, ३१४, ३१५, ३२०,  
 ३२२, ३२८, ३३१, ३८६,  
 ४२१, ४२६, ४२७, ४३८,  
 ४४१, ४४५, ४५६, ४५४,  
 ५०७, ५४३, ५६६, ६००,  
 ६०६, ६२८, ६३०, ६३४,  
 ६४३, ६५४  
 निसुणिउ—३२७  
 निसुणी—३०६, ५१०

निमुणोह—४३०, ६८४  
 निमुणो—४६६  
 निमुणौ—४५४, ५६५  
 निमुनह—३८२  
 निहचे—६७४  
 निहाड—५८०  
 निहालिव—२०१  
 निहृदिव—३६५  
 नीकलह—४७६  
 नीच—२६८  
 नीची—२६८  
 नीवृ—६५४  
 नीर—५२८, ५२६  
 नीरु—१६, ७८, ३७७  
 नीसरह—६६८  
 नेम—२२, ३६, ५८४  
 नेम्म—५६७  
 नेमि—१०, ४६१, ६६४  
 नेनोत्तर—६६१  
 नेनिसल—१२  
 नेहु—६२४  
 न्योते—३६०  
 न्योत्यो—३६२

## प

पइ—६०, ३०४, ३७०, ४८७  
 पइठव—३६३  
 पइठे—३५१, ३५३  
 पइपइ—४४२  
 पइसरह—२००  
 पइसार—१३८  
 पठ—२४४  
 पठति—३१४

पएसु—५५४  
 पकडि—१६०  
 पकरि—४५७, ४६३, ५४५  
 पखारे—३२४  
 पंलि—४८५  
 पपारु—१८६  
 पचारि—३२, १६२, २११, ४५०,  
 ४६५, ४६०, ४६४, ४६६,  
 ५३०, ५३८, ५४३, ५४७, ७  
 ६३४  
 पचारे—६७८  
 पचारै—५४२  
 पचास—७६  
 पछिताह—४१७  
 पछिताव—३६  
 पछितावव—५१७  
 पछितावव—४२६  
 पछितावो—२८६  
 पजलह—३६  
 पजुलंतु—५२५  
 पजुन—६६४  
 पजुन—५३३  
 पजुनहा—५२६  
 पजुसह—११  
 पटरानी—३७४  
 पडु—१८२  
 पठइ—८७, १०४, १२०, ७०१  
 पठव—७७  
 पठए—६०, २५५, ६३६, ६४१,  
 पठयव—४३३  
 पठयो—५८८  
 पठापो—२१८, २२६, ६१६  
 पठावह—६६६  
 पठिनु—१३७

पठे—६०  
 पठयो—६२, ६२२, ६२३  
 पठइ—४२०  
 पठइ—४२०, ५५१  
 पठउ—४३६  
 पठएयउ—५०५  
 पठयु—१३८  
 पठह—६३८  
 पठहु—१७३  
 पठाइ—५३२  
 पठि—४३६, ४७६, ५१५  
 पठिउ—७५, १६६, ३३२, ३५६,  
 ३७३, ४१२, ४४०, ५५१  
 पठिगयउ—३७२  
 पठियउ—१७३  
 पठियो—४५२  
 पठिहार—४८४  
 पठो—६३, १५३, ५१४  
 पडे—४६८, ४६६, ५००, ५०२,  
 ५५५, ५५६  
 पठइ—३१८  
 पठण—१३७  
 पठम—६१३  
 पठमछ—१३  
 पठायतु—३७६  
 पठावइ—१७६  
 पठे—६१५  
 पणमइ—१  
 पणवइ—४  
 पणवहु—२  
 पणि—२६६  
 पणथय—२६५  
 पताल—६८६  
 पतिगइ—२६६

पतिपाइ—४०५  
 पयंतरि—५६२  
 पदमवतीण—४  
 पद्यपुत—१४७  
 पदमावती—५  
 पदमुप्रभु—८  
 पदारथ—५२, ३१३  
 पच—१३, २४, १६६, ३११, ३१६,  
 ४०४, ४३०  
 पंचकउ—४३६  
 पंचइ—११  
 पंचज—१२  
 पंचति—४५६  
 पंचमु—५६६  
 पंचमुखीर—६८८  
 पंचसय—१८३  
 पंचावयु—१८०  
 पंडव—४५६  
 पंडित—७०१  
 पंडो—५०२  
 पण्डत—३७४  
 पण्डतउ—३७६  
 पंथ—४६६  
 पंथि—७७  
 पंथह—५४८  
 पभणइ—२२६  
 पभणोइ—३  
 पम्बण—१३५  
 पम्बाण—४१५  
 पम्बाणु—६४२  
 पय—१३, १६, १०६, २७१  
 पयठइ—२१२  
 पयडो—२६८  
 पयंपइ—३७०, ४२४, ४६३



पयसाक—४४०  
 पयाइ—१६४  
 पयार—१०७  
 पयाल—५६२  
 पयालि—१४४, १४६  
 पयासइ—१०७  
 पयासज—४१२  
 पयासहु—१०८  
 पयानु—१२  
 पयासो—४०८  
 पयाहिए—६६६  
 पर—२१६, ४४५, ४६१, ४८८,  
 ५२७  
 परइ—५४२, ६६७  
 परंखिज—५१५  
 परगट—४२७  
 परचंड—५५८  
 परजलइ—६५७, २७५  
 परजल्यज—४४१  
 परजलीज—२५३  
 परजलें—१७०  
 परठयो—६२२  
 परणइ—४७  
 परणज—५७, ६३४  
 परणज—३६  
 परणी—८८, ३०३  
 परदमणु—४१३, ५६६, ६४६, ७००  
 परदमनु—६३५  
 परदम्बण—१४४  
 परदम्बुण—१३०  
 परदम्बु—३२०  
 परदबण—२२५, ३१४, ३२०, ५८४  
 परदवणु—१५५, १५७, १६०, १७३  
 १७६, १७८, १८२, १८७

१८६, ४२८, ४२६, ४६४  
 ५४२, ५७३, ६५६, ६६६  
 ६६८  
 ११६ १२३, १२७ १३५,  
 १३६, १४६, १५४, १८७  
 १६२, ४६२, १६८, २६०  
 २२७, २३६, २७७, २६०  
 ४६२, ५५१, ६२४, ६७५  
 ६७७  
 परदवन—३८२  
 परदवनु—६३४  
 परदेस—४०८  
 परदेसो—३७०  
 परधानु—१८५  
 परपंचु—२६५  
 परभाव—४०६  
 परम—३१०  
 परमैसक—६६५  
 पर्वत—३५  
 पर्वतज—५४१  
 परवतवाण—५३३  
 परघज—७६, १४२  
 परयो—५३०  
 परसपर—३८१  
 परहती—६६  
 परहि—५३२  
 प्रछन—१२४  
 प्रजलंतु—७५  
 प्रजलेइ—२०६  
 प्रतिजसक—६८४  
 प्रतिपालिज—२८४  
 प्रदवण—५४६  
 प्रदवणु—५२२

प्रवचन—४५५  
 प्रवचनु—६७६  
 प्रवुचनु—१३६, १३८  
 प्रमाण—३६७  
 प्रभाण्ड—४६१  
 प्रवाह—५२६  
 प्रहार—४६५, ५३४  
 प्रहास—४६७  
 पराह—२६०  
 पराण—१४४, ३०८, ४७०, ५२२  
 पराणु—५१८  
 परान—२७४  
 परापति—१८३, १८८, २३०  
 परि—२८६, ३०२, ३६१, ६४७,  
 ६६२  
 परिच—२५३  
 परिगह—२४८, ५१६, ५७७  
 परिगह्—५५५, ६२७  
 परिणह—२३५  
 परिपूनु—५२  
 परिभानही—५८८  
 परिमल—६६३  
 परिमलह—२३  
 परिमलु—६८  
 परिमह—४५  
 परिरहे—६४४  
 परियण—२७५, ५६०, ५६१, ५६२  
 परियाणि—२  
 परिहरे—६८८  
 परिवार—२२, ६३७  
 परिहरह—६८५  
 परिहरचउ—३८६  
 परिहरह्—३८५  
 परिहस्त—६१, ६६, १४५

परिहसु—५८६, ६१७  
 परिहाजउ—३२०  
 परी—३०६, ५०१, ५१२  
 परीघर—१८१  
 परीवल—१७५  
 परीसह—६८६  
 पाहति—३८२  
 परे—२५६, ५०३  
 परोसह—३८८  
 परोसिउ—३८६, ३६०  
 परोसे—३८७, ४०३  
 परोसो—३६३  
 पलणाह—६४५, ६४६  
 पलणाह—२५७  
 पलाह—८३, ३५२, ५१६, ५२५,  
 ६४८  
 पलाणह्—६८, ६६  
 पलाणिउ—१७५  
 पलाणु—१७३  
 पलाणे—२५८  
 पलि—१४४  
 पव्वउ—५०६  
 पवण—५६, ७२, २५२, २६६,  
 ३५४, ३८६, ४३५, ४४१,  
 ६०२, ६३५  
 पवणि—२०  
 पवणु—५३३  
 पवन—५७२  
 पवय—२८०  
 पवर—६६२  
 पवरिय—३३४, ४५६, ४६८, ४६९,  
 ५५०  
 पवरिपु—४७१, ४६३, ५३३, ६५१,  
 ६७७

पवरिद्यु—७४, १६६, ४६४  
 पवरिसु—५३४, ६२४  
 पबलि—४४०  
 पवहि—१५६  
 पवाडव—६२६  
 पवाण—६४२  
 पबिन्—२८  
 पसाइ—१४८  
 पसाइ—५६४  
 पसाठ—७, १३, २८, ८५, १०६,  
 १६६, १७२, १८३, १८४,  
 २८८, ३२८, ३७७, ६५२  
 पसारी—४०  
 पसारी—४८६  
 पसारी—५३६  
 पहा—३६, ११४, ११८, १६३, २५६  
 २४७, २५१, ३०२, ३०७,  
 ४३५, ४४०, ४४१, ४५३,  
 ४६५, ५२२, ६०२, ६२३,  
 ६४७, ६५२, ६७५  
 पहाइह—३०३  
 पहाणइ—३२४  
 पहाण—५१  
 पहर—३५२  
 पहरइ—४७८, ४६६, ६०७  
 पहरे—६०८  
 पहरइ—७८, ८०, १७६, २३५  
 पहाण—१५०, ५६४  
 पहार—५३६  
 पहाणइ—५०  
 पहाणइ—११२  
 पहा—५३  
 पहात—६, २५, ७२, ११४, १२२,  
 १३५, २६३

पहात—१३०,  
 २६१,  
 ३४४,  
 पहाती—४१६  
 पहाते—५६, १  
 ५६०,  
 पहातो—५४५,  
 पहापचाप—२३  
 पहापयाल—३१  
 पहामालु—२१  
 पहात—५७१,  
 पहातव—३६०  
 पाइ—१०६,  
 २००,  
 २३८,  
 ५७४, ५  
 पाइक—२६०,  
 पाइकल्यो—२१  
 पाहात—११६  
 पाउ—१८२,  
 ५४५,  
 पाख—१६३  
 पाखर—२५६,  
 पांच—१३६,  
 पाचसइ—२५१  
 पांचती—२५१  
 पाचती—१६५  
 पाछइ—३१,  
 पाछिलठ—४१  
 पाठघरणि—१  
 पाठण—२७१  
 पाठमहादे—६१  
 पाठइ—४५४  
 पाठण—३३५

पाठयंज—५८७  
 पाठयो—४३५, ६५२  
 पाडल—३४५  
 पाडिउ—१६७  
 पांडव—६६१  
 पांडवह—४६१  
 पांडो—२७६, ५५८  
 पाण—६३४  
 पाणन—६४३  
 पाणिउ—३६१  
 पाणिगहनु—६५६  
 पाणिगहखु—५८५  
 पाणिग्रहन—८८  
 पाणी—१६१, ५२८  
 पाणीबंधणी—१६४  
 पातलि—३८८  
 पातालगामिनी—१६३  
 पाथि—५३५  
 पाप—३२४, ५८४  
 पापह—१६६  
 पापउ—६७५  
 पायो—४०२  
 पार—१३३, ५६२  
 पालक—२५२  
 पालकु—१८५  
 पालि—६४२  
 पालिउ—२४४, ५७३  
 पाव—३३६  
 पावह—३६२, ३६२  
 पावडो—२०३, २११, २३३  
 पावय—५८२  
 पावहु—४५८  
 पास—१०१, २६५, ४१७, ५५०,  
 ६२२, ६८८

पासि—१६७  
 पासु—१०, १२६, ४२०, ६७०,  
 ६७४  
 पाहृ—१२७  
 पिउ—२६७  
 पिडखजूरी—३४८  
 पिता—४०८, ५५०, ६५१  
 पियउ—३६१  
 पियरे—१६२  
 पीतियउ—४४८  
 पीयरे—३६७  
 पुकार—६२७, १२८, २५१, ३५४,  
 ५०५, ६४४, ६४५  
 पुकारिउ—६६  
 पुकारियउ—६७, २५८  
 पुकारी—६५  
 पुकारचो—३५२  
 पुहु—५४  
 पुण—११६, २३०  
 पुखु—४, ५४  
 पुणि—८५, १०३, १०६, २१४,  
 २६३, ५६४  
 पुत्री—६२०, ६४२  
 पुत्रु—४१३, ४२६, ६६६  
 पुन—१८८  
 पुन—५६३, ७००  
 पुनवंत—२३०  
 पुनवंत—५४७, ५६२, ५६८, ६११  
 पुनवंतु—५११  
 पुनह—२३२  
 पुनहि—२३२  
 पुनु—३३१  
 पुर—३, ६६४, ६६६

पुरवग—५५३  
 पुराइयड—५६२  
 पुराण—३१८, ३८०, ६६५  
 पुरायड—५६२  
 पुरि—२०, ३५२, ५५५  
 पुरियु—३६२  
 पुरी—१६, १५२, ३१३  
 पुव—७६  
 पुव्व—२५५  
 पुव्वह—२६६  
 पुप्प—२३६  
 पुष्पकाप—२१६  
 पुहपमाल—५२७  
 पुहमि—१५६, १७०, ३०६, ५५६,  
 ५७७, ५७६, ५६२, ६८६,  
 पुहमिराय—६७  
 पुहिमि—८१  
 पुण—६३२  
 पुण्ण—१६०, २१५  
 पुण्णव—२६, ६३, २२६, २५०,  
 ३२०, ३२६, ४००, ४०७,  
 ४०८, ४०९, ४४७, ४७०,  
 ६६६  
 पुण्णव—४४७  
 पुण्णु—१६१  
 पुण्णि—२६, ६३१, ६७१  
 पुण्णिव—१५१, २२६, ४५३  
 पुण्णो—४०८  
 पुण्ण—१८८  
 पुण्णह—४२, २५३, ४२८, ४६७,  
 ५६८  
 पुण्णह—६५६  
 पुण्णण—३५७  
 पुण्णा—४६, ५१

पुण्णी—५६५  
 पुण्णरीकणी—५६३  
 पुण्ण—११२, ११५, ११७, ११६,  
 १२७, १५२, १७१, २५२,  
 २८५, ३७४, ३६६, ४१४,  
 ४१७, ४०८, ४५६, ४६०,  
 ४६१, ४६२, ५४६, ५७४,  
 ६०४, ६१२, ६३२, ६७६,  
 ६७७, ६८१, ६८३  
 पुण्णव—४०५  
 पुण्णहि—२८४, ३०६  
 पुण्णु—२५८, ४१५, ५४६, ५६१,  
 ६८५  
 पुण्ण—१४०  
 पुण्णल—५६८  
 पुण्णो—६८३  
 पुण्णव—२५४, ४४२  
 पुण्णव—४७, १२६, १४२  
 पुण्णव—१५०, १५५, १६८, २८,  
 २७७  
 पुण्णि—२२, ३६२  
 पुण्णिय—१४२, ४२३  
 पुण्णिहि—५६६  
 पुण्णे—७७, ३६७, ४१५  
 पुण्ण—५६५, ६०३  
 पुण्णव—५६३, ६८६  
 पुण्णवह—६८७  
 पुण्णिलि—१२५, २४१  
 पुण्णेट—१४८, ३८६, ४३६, ४४३  
 पुण्णेम—२६५  
 पुण्णेमरस—२५५  
 पुण्णिलि—५०७  
 पुण्णिलि—२४६, २४८

पंठा—६०  
 पंम—२४७  
 पेलणो—२४  
 पोरिष—५२२  
 पौरिष—४५३, ५४६  
 पौरिषु—२३०  
 पौरिषु—६८०

## फ

फटिक—१७, ३१४  
 फटिकसिला—२२६  
 फण—५४१  
 फेरकिउ—५०७  
 फरहरइ—२५  
 फरहरै—१४६  
 फरहि—३८२  
 फरी—४७५  
 फल—३५१, ७००  
 फलु—२३०  
 फले—१६२, ३४८, ३६७  
 फलयउ—२०६  
 फहरंत—३१६  
 फाडियउ—२६५  
 फाटहि—५३६  
 फारह—२५०  
 फिरइ—३१, ३३७, ६८६  
 फिरत—३८  
 फिरहि—४१०  
 फिरावइ—२१५  
 फिरि—३७, ३४२, ५०३, ६६०  
 फिरे—३७, ६३७  
 फुंकाव—१८६  
 फुटि—६३

फुडउ—६०४, ३१४  
 फुरावइ—२१५  
 फुरिण—३८, ८८, ११०, ११८,  
 १२८, १३७, १५७, १५६,  
 १७७, १८४, १६६, १६६,  
 २००, २०२, २०४, २१२,  
 २१५, २१६, २२१, २२२,  
 २२३, २२५, २२८, २३०,  
 २३५, २३८, २३६, २४०,  
 २४८, ३७०, २७१, २७६,  
 २६३, २६६, ३०८, ३१२,  
 ३२०, ३२६, ३३८, ३५१,  
 ३५७, ३६०, ३६२, ३६३,  
 ३६४, ३६७, ३७३, ३६५,  
 ४०८, ४१४, ४१६, ४२०,  
 ४२७, ४२६, ४३०, ४३२,  
 ४३६, ४३८, ४४०, ४४५,  
 ४७२, ४६४, ५१५, ५२०,  
 ५२४, ५८४, ५६६, ६००,  
 ६०६, ६१०, ६५२, ६६८,  
 ६६६, ६७१, ६७८, ६८१,  
 ६८३, ६८८, ६६३, ६६८

फुरिणर—६६४

फुनि—२६

फुलइ—२६७

फुलवादि—१०१, ३४४, ३५०

फुलि—३६५

फूटि—५३४

फूलो—३४४

फेकरइ—४८४

फेरहु—८२

फेव—१४

फोकल—३४८

व

वनीत—८०  
 वलिनद्र—५१  
 वहूत—२३७, २८०, २८८  
 वाढी—८१  
 वाण—७६  
 वाषि—२५६  
 वाषिच—२२०, २२१  
 वांछ्यो—११८४  
 वात—२४२, २४७, २५५, २८५,  
 २९०  
 वुलाह—२५१  
 वोलह—७५, २६७, २६०, ३०६  
 वोलु—१७८

भ

भइ—६३, ६६, १४६, २४६, ३४१,  
 ३५७, ३५६, ३८६, ४२५,  
 ५१७, ६४५, ६६३,  
 भई—४२४  
 भव—२६६, ५६०, ६४७, ६५६  
 भए—११, ६४, ६८, १०२, १२०,  
 २१२, ४३३, ४३५, ४३६,  
 ४७२, ४८६, ५४८, ५६७,  
 ५७६, ६३७, ६५३  
 भगति—१०८, २२३, २३७, २३८,  
 २६४, ५७३  
 भजल—५६७  
 भजह—४६५  
 भरा—४४, ५१, १२३, १७५,  
 २८३, २८४, ३०१, ३०४,  
 ३०७, ३१४, ३२०, ३३३,

३३४, ४५२, ४५८, ४८०,  
 ४८५, ५१६, ६२०, ६६३

भरांत—४६०  
 भराहि—१८७  
 भरां—१७६  
 भंग—३५  
 भंगु—३२६, ३६४  
 भंजह—१७५  
 भंजल—३७६, ३६३  
 भंति—१७  
 भंती—५७६  
 भय—१२  
 भयल—८, ६, २८, ३३, ११३,  
 ११६, ११८, ११६, १२७,  
 १२८, १३६, १४७, १४८,  
 १५१, १७३, १८०, १८५,  
 २१६, २२३, २४५, २५४,  
 २५५, २६४, २७०, २७५,  
 २७६, २८०, २८६, २८६,  
 ३२०, ३२६, ३३७, ३५६,  
 ३६०, ३६१, ३७३, ३७६,  
 ३६४, ३६८, ४०२, ४१३,  
 ४३०, ४३२, ४३३, ४५०,  
 ४६३, ४७५, ४७६, ४८१,  
 ४६६, ५२०, ५२४, ५४७,  
 ५४८, ५५२, ५५५, ५६०,  
 ५६१, ५६६, ५६६, ५८०,  
 ५८५, ५८६, ५६१, ५६३,  
 ६०२, ६०३, ६१३, ६१४,  
 ६२१, ६२५, ६३६, ६४८,  
 ६५४, ६५६, ६५७, ६५८,  
 ६६१, ६६४, ६७५, ६८२,  
 भयो—२८, ६५, ७२, ८७, १०६,  
 १५४, २०४, २३८, २६२,

२७३, ३५६, ४०६, ४२८,  
 ४७२, ५१६, ५२७, ५३१,  
 ५४३, ५६१, ६२१, ६७६  
 भये—११५, १८३, २५४  
 भए—६७५  
 भर—५४१  
 भरइ—८५, २५६, ३६४  
 भरथ—१३७  
 भरत—५२८  
 भरहु—६५६  
 भरहखेत—१४, १५२, ५६६  
 भरहु—३६१  
 भरिउ—४४३, ५५२, ५६२  
 भरिमाउ—२६६, २८४  
 भरिवाउ—२१, ७४, ७६, ८३,  
 १६४, १६६, १७१,  
 १७८, १८२, १८६, २०२,  
 २५६, ३२३, ३३६,  
 ४६५, ६४६  
 भरि—२८६, ३१३, २६८  
 भरिहि—२४  
 भरो—६१, ६६, ३४८  
 भरे—१६१  
 भरेइ—६१, ५७०  
 भरोसउ—२५७  
 भलउ—२८, ३२५, ३८०, ५१४,  
 ६६६  
 भल्यउ—५४२  
 भली—२६०, ३०२  
 भले—२३३, ५२६, ५७६, ६५४  
 भलो—४७३  
 भव—६६७  
 भवंतर—५६५  
 भवपासु—६६२

भवियहु—६  
 भवखु—२६५, ५८३  
 भहराइ—५३१  
 भाइ—२४, २६, ६५६,  
 भाउ—७, १३, २७, १७४, २७०,  
 २७१, २८६, २६६, ३२८,  
 ३४१, ३७६, ३७७, ४०७,  
 ६०१, ६५२, ६६८  
 भाख—६४२  
 भाग—३८८  
 भागिउ—२५८  
 भागी—६४६  
 भाजि—३५६, ४६१  
 भाजउ—१७१  
 भाखाइ—१६४  
 भाखिज—६५४  
 भाखु—२६३, ३३६  
 भाखेजु—६५१  
 भाति—१८, २४, ३४४, ३५०,  
 ६५५  
 भातु—३८८  
 भावो—१७५  
 भावन्व—४८३  
 भान—३२६, ३३६, ६१८, ६७३  
 भानइ—१८, २८४, ३५६, ६२०  
 भानउ—१७१, १७८, १८६, ३२६,  
 ३५६  
 भानकुम्बर—३२७, ३५२  
 भानकुमार—३२०, ३२८, ३२६,  
 ३३३, ४१६, ५८६,  
 ५६१  
 भानकुमार—३२२  
 भान्यउ—२०२



नाव्यो—४६५  
 नावहि—२६७  
 मानिड—७६  
 मानु—३०६, ३३१, ३३२, ३५५,  
 ३५६, ३५८  
 मानुइ—३८८  
 मानो—२५६  
 मामिलो—५१०, ५१३  
 मायड—५६०, ५६२, ६३३, ६५४  
 भारड—३३५  
 भारय—२७६  
 भारहु—६६१  
 भाव—६७३  
 भावति—८८, ५८५, ६५६  
 भावहु—५५७  
 भासपु—१७०  
 भिटाड—१००, १०४  
 भिडह—७८, १७६, १८०, २१४,  
 ४६६, ४६२  
 भिडिड—२०१, २१६  
 भिरे—४६२, ४६०  
 भिडे—२८१, ४६८  
 भिमिड—६१०, ६११  
 भिरड—१६५, २६१, ४५१, ४६०,  
 ४६८  
 भिरड—२१३  
 भिरहु—४७३  
 भिरे—६१८  
 भिसु—३०४, ३०८  
 भोरड—५५३  
 भोरहि—४६१  
 भोल—२६८, ३०७, ३०६  
 भोसु—३०२  
 भोष्म—८३

भोषमराह—६५  
 भोषपु—४४  
 भोषपुराड—५६, ६८, ७१, ८३, ८५  
 भुइ—४५०  
 भुजइ—६५७  
 भुजही—५७८  
 भुजं—६०५  
 भुजिड—५२३  
 भुवण—३१४, ६५६  
 भुवन—५४१  
 भुखड—३६१, ३७८, ३७९, ३६१,  
 ३६३, ४००, ४०१, ४०२  
 भुखे—३४०, ३८४  
 भुजइ—१२६  
 भुजहि—१११  
 भूमि—३७२, ३७३  
 भूमिय—३१४  
 भूमिड—६८३  
 भूली—४११  
 भेड—१६५, १६७, ४६६, ६६६,  
 ७०१  
 भेट—४४  
 भेटइ—१८७  
 भेटि—२३८  
 भेटिड—२७, ६२, २३७, ५७३  
 भेटो—१५६, ६५३  
 भेरि—१२१, १७३, ५६१, ५८०,  
 ६५६  
 भेत—२६८  
 भोग—६१, ५६२, ६६२, ६६३  
 भोगत—६८३  
 भोगवइ—२६७  
 भोगु—२३२, ५८६, ६६१

भोजन—३८५, ४१८, ४६६, ६५३,  
६६२

## म

मङ्ग—५६, ३३०, ४२६, ४४३, ४४५,  
४६६, ५३३, ६३२, ६३३,  
६६४

मङ्गल—७८, १७६.

मङ्गलसङ्घ—५१७

मङ्गल—३५५

मङ्गल—८६, ६०, १००, १४२,  
२१२, २२६, ३६५, ४२३,  
५६५, ५७२, ६३७

मङ्गल—४३६

मङ्ग—१८

मङ्गल—२६६, २६७, २६८, ५१८

मङ्गल—३६२

मङ्गल—१२, १७, १६८, २६२,  
३१४, ३१६, ३१६, ५६६

मङ्गल—२२०

मङ्गल—२४६

मङ्गल—१

मङ्गल—४६५

मङ्गल—६७२

मङ्गल—१२

मङ्गल—६५१

मङ्गल—६७

मङ्गल—१२१, ५६६

मङ्गल—१२०, ५६३, ५६७

मङ्गल—८७

मङ्गल—५६८, ५८१

मङ्गल—३५७

मङ्गल—६३६

मङ्गल—६५५

मङ्गल—८६, ८८, ५७६, ५६०

मङ्गल—५७७

मङ्गल—२७, ६१६

मङ्गल—६०, १६८, १८७

मङ्गल—१८७, ६१७, ६२२, ६३२

मङ्गल—५८७

मङ्गल—५८०

मङ्गल—३५६

मङ्गल—१५, १८, ६०, ६५, २६३,  
३१७

मङ्गल—३५६

मङ्गल—२५, २६, ३२, ३६, ३८, ५४,

५८, ६५, ६८, ८४, ८७,

१३०, १४३, १५५, १५६,

१६६, १७२, १८६, १६४,

१६७, २०२, २२७, २२८,

२४८, २५६, २८०, २८६,

२८७, २८८, २८९, २६१,

३२२, ३२६, ३२८, ३२६,

३३१, ३४०, ३४६, ३७१,

३७३, ३६२, ३६८, ४०४,

४०५, ४११, ४१२, ४१३,

४१७, ४८८, ४६६, ५३०,

५३३, ५३५, ५४१, ५४२,

५४४, ५४५, ५५५, ५६०,

५६५, ५७५, ६०१, ६०२,

६०७, ६०६, ६१०, ६११,

६१७, ६२०, ६२१, ६२२,

६४२, ६४२, ६५५, ६६५,

६७१, ६८१,

मङ्गल—३५, ४१, ४८, ६५७,

मनवि—६४७  
 मनह—२२२, ५३१, ६६८  
 मनाह—६२५  
 मनावह—४११  
 मनावहि—१०७  
 मनि—१२२, १५८, २२३, २६८,  
 ३०४, ५३८, ५८५, ६६८  
 मनु—४२, ३०८, ३२६, ४१३,  
 ५६५, ६५८  
 मनुइ—५१५  
 मनुहारि—३१४  
 मनोजउ—२२१, २२२  
 मय—३११  
 मयउदउ—२६२  
 मयगल—४६०, ५०४  
 मयण—५७, १७८, १७४, १८२,  
 १८३, २०२, २०३, २११,  
 २१२, २१४, २१८, २२०,  
 २२२, २२८, २२६, २३७,  
 २३६, ३५४, ३५५, ३५६,  
 २६०, २८३, २८७, २८८,  
 २६५, २६७, ३०६, ३२७,  
 ३३८, ३४४, ३५८, ३६७,  
 ४०१, ४३०, ४३६, ४६३,  
 ४८८, ५१८, ५२१, ५३५,  
 ५४५, ५५०, ५५४, ५५६,  
 ५५७, ५६५, ५६७, ५७५,  
 ५८५, ६०१, ६३६, ६४८,  
 ६६०, ६६२  
 मयणकुवर—६२६  
 मयणपड—५५७  
 मयणह—२३०  
 मयणहि—५३४

मयण—१७२, १७३, १६०, १६७,  
 २००, २१०, २२०, २२५,  
 २३८, २४०, २८४, २६२,  
 ३१५, ३२०, ३२२, ३६४,  
 ४१२, ४४७, ४६२, ५१२,  
 ५१६, ५६०, ५६२, ५६६,  
 ६०७  
 मयमंत—२६१, ५००  
 मयमंतु—२०१, २१३, ५०४  
 मयरघ—२०७  
 मयरघउ—३५५  
 मयरह—२२५, ३६०, ४६६, ५१५,  
 ५२१, ५४४  
 मयरहउ—२८३, ३६६, ४५७,  
 ५२१, ५२४, ५६२  
 मयरहह—१६८  
 मयरहु—४६१  
 मयरहु—१६६, ५८१  
 मयरहो—५२६, ६५२  
 मया—१७७  
 मयाह—४१८, ४१६  
 मयायउ—३२३, ५२४  
 मरह—१२८, २६६, ४४०  
 मरउ—१२५, ४३८  
 मरण—७, २६६, ४८१, ६१  
 मरणा—३११, ४७१  
 मरणु—५४२, ६७३  
 मरवाह—६२७  
 मरवा—३४६  
 मल्ल—५६१  
 मलति—६६३  
 मलयहउ—२६१  
 मलयगिरि—२१६  
 मलावह—४५१

मलावह—४००.  
 मल्लिनाथु—१०  
 मलु—६३  
 मसाहरण—५६०.  
 मह—४६, ५८, १६७, २५०, २५८,  
 २६२, ४८६, ५८६, ७००  
 महइ—३४६  
 महकइ—६८, ३४५  
 महछरिद—५८  
 महणी—२८६  
 महतइ—६७८  
 महंत—२३०, ४२६  
 महसु—५०२  
 महसंडल—२४३  
 महमहइ—३४६  
 महमहरण—६०, ७३, ४७४, ५०६,  
 ५३०, ५६७, ६००, ६११  
 महमहणु—५०१, ५१६, ५४६.  
 महमहनु—५०६  
 महल—३०५  
 महलई—३०४  
 महलज—६१, ३०१, ३०३, ३०६,  
 ४३३, ४३४  
 महले—६७, ८३  
 महागुणरायु—६६६  
 महादे—१३३, २७०, ६७३  
 महाहज—२१०, २७४, २७६, ५३६,  
 ६६१  
 महि—२३२, ५०२  
 महिमंडल—५३२  
 महियल—५२८  
 महियलु—५०६  
 मही—६०५

मह—१०, ८५, १८३, ३०१, ५१०,  
 ६०६, ६६७  
 महवरि—१२१, ४८५, ५८०, ६५६  
 माइ—४१२, ४४७, ४५४, ४५६,  
 ४५७, ४५८, ६३४, ६८५,  
 ६८७, ६८८  
 माइन—६८५  
 माग—३०१  
 मागइ—३०३, ३२८, ३२६, ३७६,  
 ४३१, ५१३, ६६७  
 मागि—३७६  
 मागित—४१०  
 मागी—५६  
 मागो—४५७  
 माजि—४७६  
 मांभ—३१, १२४, १३०, १३१,  
 १५२, २६६, ३१४, ३१६  
 माटी—३४२  
 माड—३६४  
 माडे—३८८  
 मायास—१५१, १५३, २६६  
 माण्ड—५६०  
 माणिक—६१, २६३, ५६२, ५७०,  
 ५७१  
 माणु—३३६, ६८५  
 माणुसु—६६८  
 मातह—७०१  
 माता—२४१, ३१६, ४०५, ४०८,  
 ४१७, ४१८, ४३०, ४३२,  
 ६६३, ४८७, ६०२, ६०४,  
 ६८४  
 माते—४७७  
 माथे—४७८  
 मायो—४१७

माघव—६५२—६६६  
 मान—१२, ३५, ३६, ४५, १८५,  
 २०७, ३२६, ३६४, ४६१,  
 ४८०  
 मानह—१०६, ६३३, ६६६  
 मानन—२२६  
 मानभंग—६३०  
 मानहि—४८७  
 माहू—६४६  
 माया—३६७, ४६६, ६८३  
 मायामह—३५५  
 मार—४६१  
 मारउ—५१७  
 मारज—१७  
 मारण—२५५  
 मारि—८३, १४४, २५३, २६२,  
 ३८७, ५३८, ५४१  
 मारिउ—२१६, ५२४  
 मारिवंतु—२१३  
 मावत—५३१  
 मारघो—२७०  
 माल—२३६, ३१६, ४५५, ५०३  
 मालव—५७८  
 माला—१२६  
 मालाहि—१३३  
 मालि—३५२, ३५३  
 माली—३५४  
 माल—१६३, ४०३  
 मासह—४२४  
 माह—४३०, ४६५, ६२६, ६४५  
 माहि—१४, १६, १०१, १२८, ६६६  
 मित्र—३६७  
 मित—१२८, १८६  
 मितह—३४, २०७, ५६२

मित्पउ—१८६, २६६  
 मित्पो—४१७  
 मितहि—२२६  
 मितहू—४६६, ४८१, ५८६  
 मिलाइ—४६८  
 मिलावऊ—५६१  
 मिति—८६, २३०, २५४, २६६,  
 ५८४, ५६१  
 मितिउ—४८२, ५६१, ५६०  
 मितिसह—१६०  
 मिली—४८, ६१, १०५, २६०,  
 ३५६, ४१६, ५४८  
 मिले—१६०, १८७, ३०७, ६४७,  
 ६५४  
 मिति १८७  
 मोच—५४३  
 मुकट—१६६, २३३, ५८२  
 मुकटू—२१७  
 मुकति—६६७  
 मुकराह—६४८  
 मुकलाह—२८२, ३५०, ३८२  
 मुक्के—७  
 मुजमंडल—४४८  
 मुखह—२  
 मुगण्णा—२३२  
 मुग्—३१५  
 मुंड—१४६, २६१  
 मुंडह—४१६  
 मुंडकेवली—६६३  
 मुण्णि—१५१, ५६५  
 मुण्णिउ—१४४, १८०  
 मुण्णिवर—२४२  
 मुण्णिवर—४८

मुनि—४०, ४३, १५८, १६३, २६८,  
 ३६७, ४१५, ५५०, ५६३,  
 ६७३  
 मुनिराइ—३६  
 मुनिसर—५६४  
 मुंबडी—५२, ६३  
 मुदरी—३४३  
 मुदरी—६३  
 मुनिस्वर—२४०  
 मुनिवर—१५२  
 मुरारि—५०, ६७, ८६, ८८, ९०,  
 ९७, १००, १०३, ५४७,  
 ५७२, ५७५, ६०८  
 मुह—२०७, २४१, ३००, ५११,  
 ६०५, ६३०, ६६८, ६७८  
 मुह—१२, १६७  
 मुहवतु—४६  
 मुहवि—४६१  
 मुहामुह—२२६  
 मुहि—१०६, १२३, १४८, २१०,  
 २४१, २६८, ३००, ३०२,  
 ३०३, ३०७, ४१४, ५५५,  
 ५२३, १३३, ६७६, ६६४  
 मुही—२६०  
 मुह—६२  
 मुठिक—३८४  
 मुठ—२५  
 मुठज—४३६  
 मुठहु—११३  
 मुठि—११२  
 मुठिज—४२१  
 मुठो—३६५, ४२२  
 मुणिसुप्रतु—१०  
 मुठ—३०१

मुठे—२५, १४६, ३६३  
 मुदरी—३४१  
 मुह—३१८  
 मुघ—१७६, २८१  
 मुघकूट १२६, १५६, २३७, ४५४,  
 ५७१  
 मुघनाहु—५२८  
 मुघवाण—५२७  
 मुघमाली—५३१  
 मुटइ—४७, १६८, २७८, ४८६,  
 ६७३  
 मुटण—१२६, २७७  
 मुटणहाव—६११  
 मुठे—३१७  
 मुठो—३६७  
 मुवनी—२१  
 मुवज—३२६, ६३०  
 मुरो—३७१, ५३७, ६६४  
 मुव—१४, ६७  
 मुरो—५४२  
 मुलइ—८०  
 मुलज—५५२  
 मुलहइ—७६  
 मुलीज—५३३  
 मुह—७१, १७३, ४८३  
 मुहज—३७२  
 मुहकूटि—१५४  
 मुहु—५३०  
 मुंगल—१८०, ४६०, ५००  
 मुठो—३६४, ३६६, ३७२  
 मुंयन—१८१  
 मुंलइ—५२१  
 मुकली—४२४  
 मुठि—२६२, ३५१

मोडो—६१८  
 मोती—१७, ६१, ३१३, ५०३,  
 ५६२, ५६३, ५७०  
 मोपह—२६४, ४६७, ४७१  
 मोलु—३४०  
 मोल्यो—२६५  
 मोलहु—२०६  
 मोसिहु—१६०, ५२२  
 मोह—२८७, ६८५, ६६२  
 मोहणइ—६११  
 मोहणी—५५, १६३, २८७  
 मोहतिमिरहरसूत्र—६६२  
 मोहि—१७१, २४६, २४८, २६३,  
 २६५, ३०४, ३११, ३३०,  
 ३८६, ४०८, ४१२, ४३२,  
 ४५७, ४५५, ४५६, ४६६,  
 ४६३, ५११, ५४६, ५७४,  
 ५८३, ६०२, ६०३, ६०४,  
 ६७०, ६८३  
 मोहिणी—५५७  
 मोहिहि—१५  
 मोहु—४३१  
 मोहे—४६६

य

यड—६११  
 यः—१५, ५५, १०८, १०६, १६२,  
 २०७, २१०, २२६, २२७,  
 २२६, २८५, २६७, ३०४,  
 ३१४, ३२०, ३२२, ३२६,  
 ३३२, ३३३, ३६२, ३६१,  
 ४०६, ४२८, ४२६, ४४७,  
 ४४८, ४५२, ४५५, ४५६,

५०१, ५०२, ५०६, ५३८,  
 ५४६, ५४७, ५४६, ६८६  
 यहर—४२३  
 यहु—१२३, ३३२, ३६२, ५०२,  
 ५४१, ७००  
 याको—४३५  
 याण—१११

र

रए—६५५  
 रलवाल—२०५  
 रलवाले—२०७, ३३६, ३४०, ३४१,  
 ३४२  
 रलहि—३१५  
 रचतु—१२२  
 रचहि—६६३  
 रचि—१६, २६१, २५३, २६२  
 रचिड—३६५  
 रचित—४७, २७७  
 रचितु—१२६  
 रची—४७, २६०  
 रच्यो—२६३  
 ररा—७२, ७३, ८१, ८३, १६५,  
 १६६, १७४, १७६, १८१,  
 २६१, २८१, ४६१, ४६२,  
 ४६७, ४७५, ४७६, ४७७,  
 ४८०, ४६१, ४६२, ४६६,  
 ४६८, ४६६, ५०१, ५०२,  
 ५०६, ५०७, ५१२, ५३७,  
 ५३८, ५४२, ५४४, ५४६,  
 ५५५, ५५६, ६३४, ६७६  
 रराधीर—५०८  
 रराच—७०

रणवासह—२६, ४१, २३८  
 रणहांक—५२७  
 रणि—४६१  
 रतिनामा—२२७, ५७२  
 रथ—५३, ५६, ६५, ३५४, ३५७,  
 ३५८, ५२४, ५४०, ५४५  
 रथु—५०७  
 रम्यो—२७०  
 रयण—३१३, ५०३, ५८७, ५६६,  
 ६६०  
 रयणवृत्तु—५८७  
 रयणजडित—६०३  
 रयणसरसणी—१६३  
 रयणह—१६२  
 रयणि—१२७, २३६  
 रयण—५४०  
 रयणनि—५००  
 रलइ—६५७  
 रलउं—३२६  
 रलयउ—१३०, १५८, २४८, ३३१  
 रली—४८, ६५८  
 रले—३३३, ६५५, ६६५  
 रस—२४७, ६६३  
 रसु—११  
 रसोई—३६१  
 रह—७८, १७३, १७६, ४०५, ४८२,  
 ५३२, ६४५  
 रहइ—२६८, ४०४, ४५०, ६७१  
 रहउ—३४०, ४४६, ५७६  
 रहटमाल—६८५  
 रहटान—४४३  
 रहयउ—५३३, ५३८  
 रहवर—५५६  
 रहवर—२६२

रहस—२६  
 रहस्यउ—१२७  
 रहहु—६७१  
 रहाइ—१४४, १५७, २१६, २८५,  
 ५४५, ४६५, ६८०, ६८१  
 रहाए—६०  
 रहायो—२८४  
 रहि—७४, ८१  
 रहिउ—२०५, ६२६  
 रहिवर—७०, १७५, २५६, ५००,  
 ५०४, ५२६, ५२६  
 रहे—६४४  
 रहै—५३७  
 रहोगे—६८३  
 राइ—६६, १८५, ५७७, ५७६, ६४१  
 राइर—१६  
 राज—२१, ६४, १२६, १३३, १३७,  
 १५३, १६६, १७२, १७४,  
 १७७, १८३, १८४, १६१,  
 २३८, २५४, २५६, २६६,  
 २६६, २७०, २८२, २८४,  
 २८६, २८८, ३६६, ३७२,  
 ३७३, ४५४, ५०३, ५६०  
 राकी—१७१  
 राखि—८४, २०५, ५२३  
 राखिउ—२५७  
 राखियउ—१८५  
 राग—३२४  
 राज—२२, २३२, ५६२, ५६८,  
 ६०५, ६११, ६५८, ६७७  
 राजकुवरि—२३५  
 राजा—६६, १३४, १६२, २५१,  
 २५७, २५८, २६६, ६५५,  
 राजु—१११, १८६, १६१, ५२३,



५७६, ५८६, ५९१  
 राजभोग—६७६  
 राडि—२७५  
 राडी—८१  
 राणी—६१, १११, १३३, २७४,  
 ३७६, ३७७, ३७६, ३८३,  
 ३८८, ३९१, ३९३, ३९४,  
 ३९५, ४०५  
 राणे—५२६  
 राति—११०  
 राम—२७५  
 रामहिउ—२६४  
 राय—२५५, २५७, ५६०, ५८६,  
 ६४०  
 रालि—३५८, ३८३, ५३६, ५५३  
 राजयउ—३६५ ४३८  
 रालियाउ—४४६  
 रावण—२७५  
 र.वत—५०, ७५, १७८, १६१, ४६०  
 रावतस्त्री—२६१  
 रावल—४२४, ४२६  
 रावलह—६५०  
 रावलुहो—३३८  
 रिवि—६६६  
 रीति—६६३  
 रिद्ध—३६३  
 रिता—६६६  
 रियमु—८  
 रियि—२६, ३२, ३३, ४६, ४६,  
 १५६, २६८, ५४५  
 रिताह—३५, ३५, ३०२, ३३६,  
 ४३८, ४४५, ४४६, ५८३,  
 ६३४

रिसाणउ—४११  
 रिसाणा—२५६  
 रिसानो—२८२  
 रीति—३६४  
 रीष्य—५४४  
 र्वमणी—५०६  
 र्विमणी—४४७, ५०८, ५८३, ५१६,  
 ६४०, ६५३  
 र्वमिणी—४७, १०४, १०७, १०८,  
 १०६, १४८, २४३, ४७२, ५४६  
 र्विमिणि—१०२  
 र्वमीणी—१५४  
 र्विमिणी—१५६  
 र्वुमिणी—६२१  
 र्वल—३५१  
 र्वि—५३३  
 र्वलु—६६  
 र्वप—३१, ३२, ३६, ३६, ५५, ६८,  
 ६७, १०३, १३४, १६०,  
 ३१८, २१६, ३११, ३३८,  
 ४०३, ४५०, ५०२, ५६८,  
 ६१२, ६३४, ६३६, ६५०,  
 ६८४  
 र्वचंद—८५ ६२३, ६३६, ६४५,  
 ६४६, ६५८  
 र्वचंदु—८४, ६२५, ६३४, ६५०  
 र्वणि—४०३  
 र्वि—४५१  
 र्विमिणि—५०, ६१, ६२, ६५, ६७,  
 ६६ ८४, ९०, ६५, ६६,  
 १०२, १०४, ११६, ११७,  
 १२७, १४०, १४३, १४६,  
 १४७, १६०, १६३, २३१,

३६६, ४०५, ४०७, ४११,  
 ४१३, ४१७, ४१८, ४१९,  
 ४२५, ४२६, ४२८, ४२९,  
 ४४१, ४५६, ४६३, ४६५,  
 ४६६, ४६७, ४६८, ४७१,  
 ४८०, ५१०, ५११, ५१२,  
 ५१५, ५४२, ५४४, ५६१,  
 ५६५, ५७४, ६०२, ६०५,  
 ६२५, ६५२, ६७८, ६८१,  
 ६८७, ६८८  
 रूपियाली—५६, ७३, ११०, १२६,  
 ३६८, ४०६, ४१८, ४२७,  
 ४५३, ४५४, ५५२, ५६७,  
 ६०६, ६२३, ६३१  
 रूपिन—४२८  
 रूपी—३६७  
 रूपीलि—५३, ७६, ४२५, ६२२,  
 रूपीली—७४, ४३४  
 रूपु—६१०  
 रूपुकुवर—६२२  
 रूपो—४३२  
 रूपे—६८४  
 रूपसइ—४१०  
 रंहइ—१२  
 रहुडे—२६५  
 रुहिष—५०४  
 रेख—३०  
 रोइ—४२५  
 रोपहु—६४३  
 रोपे—५६१  
 रोवइ—१४१, २५१  
 रोवलि—३५६  
 रोस—२८०  
 रोहिलि—५

## ल

लइ—६६, ७१, ७६, १०२, २१२,  
 २३३, २४८, २४९, २७४,  
 ३०८, ३२६, ४७४, ४४७,  
 ४४०, ४६७, ५६०, ५६३,  
 ६४६, ६५०  
 लइय—६७, ३०७  
 लज—२२१, ४७४, ५३५  
 लण—१६५, ३५४, ४८६, ४६५,  
 ६३६, ६४४  
 लक्षणवत—४२  
 लक्षणा—३६, १३४, १३६, १३७,  
 ४२८, ६८६, ६६६  
 लक्षणवतु—४२८, ६१४  
 लकुटि—६  
 लखण—१३२, ३११  
 लगन—४४, ८७, ४७५  
 लगाई—६८  
 लगि—२७४, ३२२  
 लइइ—३८२  
 लइयु—१३८  
 लइहि—३७१  
 लइहु—३८१  
 लडी—३६५  
 लंका—३७५, ३५२  
 लंघे—२६५  
 लयज—१३३, १३४, १८४, २७०,  
 २८०, २८६, ३६०, ३६५,  
 ४०८, ४१३, ५२०, ५२५,  
 ५३३, ५४०, ५४७, ५५१,  
 ५५३, ६४८, ६३१, ६७४,  
 ६८२  
 लयो—४५०, ५३१

लरइ—४५१, ४६१, ५२५,  
 लवंग—३४८  
 लवःबुहि—१४  
 लह—५८०  
 लहइ—२, ५५३  
 लहव—२७३  
 लहणी—२७८  
 लहरि—१६  
 लाइ—६०, १०६, २७५, ६२०,  
 लाठ—५७८  
 लाए—६४६  
 लागइ—१०८, ११२, २२२, २२३,  
 २६४, ३००, ४३१, ४७२,  
 लागठ—६००  
 लागणह—११३  
 लागने—४३३  
 लागह—१२७  
 लागि—२७५  
 लागी—७३, १०८, १४७, २३६,  
 २६०, ३१२, ३८३, ५७४,  
 दिन४  
 लागो—२३०, ४८७  
 लागो—२३७, २३८, ५०६, ५४६  
 लायल—४०२  
 लाज—१७६, २४६, ५१३  
 लाजइ—१७१  
 लाकी—३६०, ३७१  
 लाह—४०३  
 लाह—२७०, ३६०, ४०३, ४०४  
 लान—१८३, २०४, २३१, ५४८  
 लानह—१७८, २७८, ३०२  
 लानु—६५०  
 लायल—४२६  
 लालची—४४४

लावण—६८४  
 लावह—५७, ३५३, ४००, ४११,  
 ५०१  
 लाव—३११  
 लावाइ—५३  
 लावलि—६८६  
 लाविलु—१२७  
 लावियावइ—६६६  
 लावो—५५  
 लावयो—४८६  
 लावड—५३, १३७, १८७, ४१४,  
 ५८५, ६१५  
 लावो—५८, ८२, २४४  
 लावाठ—३०  
 लाए—४६३  
 लाबहि—२४५  
 लाय—३६५  
 लायल—४२६, ४६६, ५२७  
 लायो—४०२, ५३६  
 लावमि—२४७, २७२  
 लावमि—२६५  
 लाइ—५, ६४, ६६, ७८, ८६,  
 ११६, १६६, १७२, १७६,  
 १६२, २०६, २११, २२७,  
 २३५, २३६, ३७७, ४६८,  
 ४७७, ४७८, ४७९, ४८५,  
 ५६८, ६२०, ६२५, ६७५,  
 ६८६  
 लाव—१०४, १६५, ६००, ६२६  
 लाकर—३८७  
 लासाणि—३  
 लागयो—१५४  
 लाबलव—५१०  
 लाबल्यो—४६४

लेख—१४२, १४६  
 लेख—४५७  
 लेख—२०६  
 लेखि—२३६  
 लेखि—७२, १४४, २६८, ३०१,  
 ४१०, ६०७, ६७६  
 लेखु—६६, ७५, १४६, ३४०, ४२०,  
 ४६४, ४६६, ४७४, ६२०  
 लेखै—२७७  
 लेखय—१५६  
 लेखउ—६७  
 लेख—२७, ६०, ३४६,  
 लेखु—३००, ३३२, ३८६, ३६०,  
 ३६२, ४२३, ४५२, ५८६,  
 ६६१  
 लेखु—४३१  
 लेखु—३८७  
 लेखि—२६३  
 लेखियउ—५६५  
 लेखी—७३  
 लेखण—६६०  
 लेखणमाखु—६६०  
 लेखणु—५०७

## व

वह—३६, ५७८, ५६०, ५६६,  
 ६००, ६४१, ६६३, ६६७  
 वहउ—१४३  
 वहउ—२३, ३५, ६४, २४८,  
 २५८, ४६३, ६६८  
 वहउ—६२, २५१, ३१८, ४३४, ६०८  
 वहउ—३५, ११७, ५६६, ६५०  
 वहसाह—३४१

वहसारि—१०३  
 वहसारिउ—५६२, ५६६  
 वहसि—३८५  
 वहाराह—६६८  
 वहाराखु—६६४  
 वहचन—५४६, ६२८, ६३२  
 वहद्यलि—६०६  
 वहजह—१७३  
 वहज—५२, ६३, २०६, २५८,  
 २६४, ५२४  
 वहजहि—५६६  
 वहजवाल—३००  
 वहउ—३३२, ३६२, ४२३, ४३६,  
 ४५३  
 वहडी—३३, ३०१  
 वहडे—३८७, ३८८, ३६५  
 वहण—५६, १०१, १३०, १३१,  
 १६६, १८७, २१२, २२०,  
 २२१, २२४, २२६, २४०,  
 २५४, ३३६, ३४२, ४८५,  
 ६६६  
 वहण—६६३  
 वहणवेह—५५  
 वहणवेवी—१०५  
 वहणवर—३१४  
 वहणवाल—६६  
 वहणवासी—६६४  
 वहणह—८६, १००, १४२, २१२,  
 २२४, २२६, ३३८  
 वहणिल—२७२  
 वहणिसण—३३३  
 वतीस—  
 वतीस—८०  
 वतीसी—१३२

वरनि—६३१  
 वरतु—२१५  
 वदे—२७  
 वधाए—५६७  
 वधावज—११६, ११७, ११८, ५६३  
 वधावा—१२०  
 वधु—४५०  
 वधी—४६५  
 वन—१३०, २२५, ३३८, ४७४,  
 वनखंड—१२४  
 वनोपज—८  
 वनवासा—६७४  
 वंग—५७८  
 वंदनमाल—१७, ८६  
 वंदर—३५०, ३५१, ३५३, ३५४  
 वंदरखेज—२०६  
 वंदल—३५०  
 वदे—२६५, ६६०  
 वंधज—१६३  
 वंधि—१८३  
 वंधिवि—३५६  
 वंस—११०, ५७६, ६२५, ६५५  
 वपु—१२  
 वभंगु—१६८  
 वभर—१२०, ३१८, ३६३, ३७८,  
 ३८२, ४४३  
 वभणु—३६०, ३६३  
 वमठज—५३, ११६, २२०, ५६०  
 वयरी—१०८, २२६  
 वयल—२६, ४६, ६१, ६२, ७७,  
 ६६, ६७, १४१, १५८,  
 १६२, १७६, १८६, १६२,  
 २४०, २४६, २५३, २५६,  
 २८६, २८६, २६८, ३१६,

३७१, ३६७, ४२१, ४२७,  
 ४३८, ४४१, ४५४, ४५५,  
 ४७०, ५१०, ५५६, ५६६,  
 ६००, ६०२, ६२७, ६२८,  
 ६३०, ६३१, ६३४, ६५४,  
 ६७६, ६८४.  
 वयणु—६०, ६४, १४६, १६०,  
 २६५, ३०१, ३१५, ३३१,  
 ३७८, ३८४, ४१२, ४२६,  
 ४३०, ४३२, ५१६  
 व्यजन—३८८  
 वयर—१२३  
 वयराज—४६८  
 वयस—८४  
 वयसंवस—१७०  
 वयसारि—५८  
 वयसारि—११६  
 वयसारियज—५६२  
 वर—४४, २०१, २०६, २२६, २३६,  
 २५६, ३१५, ३४३, ३५६,  
 ४११, ४२८, ४६७, ५०२,  
 ५४६, ५५६, ५५८, ५६१,  
 ५६८, ५७०  
 वरजह—५८३  
 वरजे—३७५  
 वरणी—३१६  
 वरणी—५४६  
 वरत—२६६, ६५६  
 वरतु—४०८  
 वरगिरि—६६७  
 वरमूंड—५३६  
 वरमूंड—४७४  
 वरगिरि—५६५

वरस—१३६, ५५३  
 वरसङ्—७८  
 वरसहि—२८१  
 वरहासेण—२१८  
 ब्रह्मचारि—३६८  
 ब्रह्माज—६३७  
 बुद्धि—१३६, ५४७  
 बराह—२१८  
 वरि—६०५  
 वरिस—१५७, १६०, १६३, ५४८,  
 ६७१  
 वरिसज—५३०  
 वरिसहि—१७६  
 वरिसुहृ—१४५  
 वरी—२६, ३०६,  
 वर—७००  
 वल—१३२, २०२, २८७, २६३,  
 ४०६, ४५३, ४५६, ४६१,  
 ५०२, ५७६, ६४३, ६८०  
 वलि—११६, ४६६  
 वलिबन्ध—४६०, ५५८  
 वलिभद्र—२२, ७८, ६२, ११३,  
 ३१५, ४३३, ४३४,  
 ४४४, ४४५, ४४६,  
 ४४८, ४६७, ४६४  
 वलियज—२३०  
 वलियो—४६४, ४६७, ५०१  
 वलिबन्ध—१२७, ५३६  
 वलिबन्ध—२०३  
 वलो—४५८  
 वलीभद्र—४४२  
 वलु—६६, २७६, ३०७, ४६४,  
 ४८८, ६६६, ६५१

वलु—३४५  
 वलसिरि—३४५  
 वलुविज—३६८  
 वलुवेज—३७३  
 वसङ्—१४, १५, २०, १०१, ३१३,  
 ३१४, ४६०  
 वसई—२१६  
 वसन्ते—६६५  
 वसन्त—२२७  
 वसन्तु—२२१  
 वस्त—१६२, २१७, २३६, ३०१,  
 ३०२  
 वस्त्र—४, १०३, २२६  
 वस्त्रु—३००  
 वसहि—२०, ६६६  
 वसा—८८  
 वसारि—४५७  
 वसी—४७०  
 वसुण—२००  
 वसुदेज—३७१, ३७२  
 वसुदेव—३१७, ३६७, ४६६, ४६४,  
 ४६८  
 वह—७६, ८०, १०५, १०७, २४५,  
 ३१६, ३१७, ३१८, ३१६,  
 ३७६, २२३, २४५, ३१६,  
 ३१७, ३१८, ३१६, ३७६,  
 ४००, ६०४  
 वहङ्—५२०, ५२६  
 वहज—३६५  
 वहत—१४१  
 वहयज—२८२, ५३८

बहहि—५०४, ६४३  
 बहि—१३०, ५२८, ५२९  
 बहिरण—११०, २७६, ६०६  
 बहिरिण—६४३, ६५४  
 बहिरिणी—१०६  
 बहुर—३६, ४२, ६१, ६६, १०१,  
 १०५, १३७, १७३, २२३,  
 २६२, ३१४, ३१६, ३४८,  
 ३५०, ३५६, ३८०, ४१८,  
 ४१६, ४३८, ४५०, ४५१,  
 ४६६, ५२४, ५५७, ५६१,  
 ५६३, ५७५, ५७६, ५८१,  
 ५८६, ५९०, ५९७, ६०३,  
 ६१२, ६३७, ६५६, ६५८,  
 ६६३, ६७५, ६६१  
 बहुरि—८४, ८५, २६१, ५१३,  
 ६८७  
 बहुरिणी—२७६  
 बहुरिण—१८, २४, ४४, ६१, १०५,  
 ११५, २३७, २३८, २६४,  
 ३२२, ३४४, ३४७, ३८८,  
 ४१६, ४३१, ४४३, ५७३,  
 ५७६, ५८६, ६०५, ६१६,  
 ६३२, ६३६, ६५५, ६७७,  
 ६८३  
 बहुरिण—४६८  
 बहुरिण—५४६, ५६१  
 बहुरिण—१६४  
 बहुरिणी—४  
 बहुरि—४११, ६१६  
 बहुरि—३२८  
 बहुरिण—६३४  
 बहुरि—४६०, ६४१, ६६६  
 बहुरि—१२७

बहुरि—५२६  
 बहुरि—१६२  
 बहुरि—४३७  
 बहुरि—२२१, २७७, ३७१, ४३७,  
 ६१७  
 बहुरि—२८७  
 बहुरि—१०८, ४८०, ४८४  
 बहुरि—८६, ६८६  
 बहुरि—३२५  
 बहुरि—३२४  
 बहुरि—६६७  
 बहुरि—२४, ५८०  
 बहुरि—४८३  
 बहुरि—६५६  
 बहुरि—४, १२१, १७५, ५६१  
 बहुरि—१७५  
 बहुरि—३०४, ३०७, ४८४  
 बहुरि—४३६  
 बहुरि—१०२, ३४४  
 बहुरि—३१४  
 बहुरि—१०५, ३४३, ३४६, ३५०,  
 ३५१, ३५३, ३५४  
 बहुरि—६२४  
 बहुरि—५०६  
 बहुरि—२७५  
 बहुरि—७८, ७६, ८२, १३८, १७६,  
 २८१, ५१८, ५२१, ५२३,  
 ५३१, ५३३, ६४७  
 बहुरि—५१, ६२, ८१  
 बहुरि—२  
 बहुरि—१६  
 बहुरि—६६२

वाङ्—५३५, ५५३  
 वात—२६, ४२, ४८, ५३, ७५,  
 ६३, ६४, ६६, ११६, १५०,  
 १५४, २६७, ३२६, ३६६,  
 ३८२, ३८३, ४४४, ४४७,  
 ४५३, ४७०, ४७२, ४८०,  
 ५१२, ५८२, ५५०, ५६५,  
 ६२३, ६२६, ६३०, ६३१,  
 ६३३, ६७१, ६७४

वावर—३४६

वाघि—७, ६५

वाघिज—८५, ५१७, ६४६, ६५२

वाघि—४४६

वाप—४६२

वापहि—२८५

वापी—२५८, ३६२, ३६८

वापु—६८०

वांभण—३२५, ३३५, ३६५, ३७०,  
 ३७५, ३७६, ३७८, ३८०,  
 ३६०, ३६३, ३६४, ४३७,  
 ४३६, ४४२, ४४३

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वाभण—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,  
 ३६१, ४३८

वारम्बह—३१२

वारह—१६, १५७, ६७०

वारहसह—१२६

वारहे—१६०

वाह्यण—२०

वारि—७८, १६१, ६८१

वाह—११

वाल—१७७, २६४, ३००

वालज—१६८, १७०, १८८, ४३०,  
 ५७३

वालखयंत—३५२

वाला—४२६

वालु—१६६

वालुका—३२७

वाले—१६७, ३८२, ६४२

वालोहि—१७७

वालो—१७१

वालो—१७६

वावण—१५५

वावणी—१०५, ३६०, ३६३, ३६४

वावरी—१०२, १०४

वावी—२१४

वावीस—११

वास—२३, ६६३

वासु—३

वासुपुत्रु—६

वाह—४०१, ४५७, ४६३, ५४५

वाहिर—३८३, ४४६, ६४३, ६८६

वाहिरी—४०६

वाहु—३६६

वाहुड—५११

वाहुडि—८६, १७७, २४६, ३०८,  
 ४३६, ५५३, ६०६, ६६०,  
 ६६६



बाहुडिउ—३७२  
 बाहुडी—१३३, १५८, ३६५, ६०६  
 बाहुरि—१४०, १६३, २४८, ४५३,  
 ६२५, ६५८, ६६६  
 बाहुती—१७७, ३४३  
 बाहुरे—४२२  
 बिउ—६८६  
 बिउलखण—२२५  
 बिकाहह—११२  
 बिगतिहि—४३४  
 बिग्रह—३७६  
 बिगह—१६४  
 बिगाह—२८५  
 बिगुचीन—३३६  
 बिगोड—२५२, ४२४, ५१३  
 बिघन—६  
 बिचारि—३६, ६३, २१२, २२७  
 बिचार—३०५, ३२०, ३८४, ६०६,  
 ६०७, ६०६  
 बिचाहण—४८६  
 बिचित्त—६६३  
 बिछोही—१४२  
 बिजव—४२३  
 बिजवरे—३४७  
 बिजयसंख—२३४  
 बिजयसंतु—२१६  
 बिजयामिदि—१८७  
 बिजाहर—३८, १८५, २२६, २६५,  
 ३१८, ५७२, ६१६, ६२१,  
 ६६१  
 बिजाहरनी—६२०  
 बिजाहरि—५५, २२१  
 बिजाहव—२२३, २६२, ५७१  
 बिजु—५८६

बिजोगु—३३२, ३६२, ४५२, ५४८  
 बिहु—७६  
 बिरावड—२११  
 बिराह—३४  
 बिरासु—६७४, ६६०  
 बिष्णु—१  
 बियारि—५७६  
 बिदेह—१५०, ५६३  
 बिद्या—१२६, १३२, १६१, २०३,  
 २०५, २२२, २३३, २४५,  
 २४६, २४७, २४८, २४९,  
 २५५, २६३, २६५, २६३,  
 ३६४, ३८२, ४०६, ४१८,  
 ४५४, ४८८, ६५१  
 बिद्यातारणी—१६४  
 बिद्यावर—५८६  
 बिद्यावल—६७७  
 बिधाता—१४०  
 बिनड—६२, ६४, ४३४  
 बिनव—३६६  
 बिनवड—२७, ११८, ४२०, ५८८  
 बिनाण—२७३  
 बिनोद—२४  
 बिग्र—३२३, ३२६, ३२८, ३३३,  
 ३३४, ३३७, ३६२, ३७७,  
 ३८०, ३८१, ३८५, ३६०,  
 ३६५, ४३५, ४३६, ४३७,  
 ४४२, ४५६, ५६८, ५७१  
 बिग्रड—४४५  
 बिग्रह—३४५  
 बिपरित्त—३२, ४२४  
 बिप्रु—३२६, ३३०, ३८७, ३६२  
 बिमव—३६६, ५०१  
 बिमिउ—१६०

विमलु—६  
 विमरण—२५, ५३, २६१, २६२,  
 २६५, ३१२, ३२०, ४८५,  
 ४८७, ५५६

विमरणह—४६२, ५४४  
 विमरणा—१३३, ६५५  
 विमरणि—१२४  
 विमरणी—१३३, १३५, १८६  
 विमरणा—४६६

विम—२६६  
 विम्वरण—१३०, ३१८  
 विम्वरणह—१३१  
 विम्वरणी—१२२, २६१  
 विम्वर—३१

विमरण—२६६  
 विमरणह—३८४  
 विमरी—४२३, ५२६  
 विमर—८४, १०२, १६२, ३४४,  
 ३४७, ३५१

विमर—२०६  
 विमरि—१५७, ३६६, ४०६, ४३०,  
 ६१७, ६८२

विमि—१३६  
 विमि—२२५  
 विमि—२५४  
 विमि—३१  
 विमि—३६५  
 विमि—८३, २१५, २६६, २६२,  
 ५०१, ५२४, ६३१, ६७६

विमि—२६२, ३२६, ४१५  
 विमि—१४३  
 विमि—१६०, ३६१, ६८१  
 विमि—६३०

विलखी—६०, १४०, ३५६, ३६१,  
 ४२५

विलखी—६७८  
 विलतरंग—२२५  
 विललाह—४००, ६८१

विलसाह—५८६  
 विलसाह—५६२, ६६२  
 विलास—११३, ६६२, ६६३

विलिख—१४६  
 विवाण—१५८  
 विवाणहि—२८१  
 विवाणह—३०६, ५८१, ५८६

विवाहहि—४६, ४७  
 विवाहि—२२७  
 विवाहि—६२२  
 विवाह—४४, ४८, ८७, २२३,  
 २८६, ४१३, ५८५, ५८६,  
 ५८६, ६५४, ६५५

विविह—१०७  
 विष्णु—७६  
 विष्णु—२०१, २०७, २२६, ३३१

विष्णु वासिणी—६३३  
 विस—१६६, २७०  
 विसखाती—४७६  
 विस्तार—१६

विसवाह—६६  
 विसमह—५३५  
 विसमज—१४३, १८५, २५०, ४०५,  
 ५५५, ६११, ६३१

विसमादी—३२  
 विसरणी—१४५  
 विसहर—१६०, २०२, २०६, २१४,  
 २१५

विसहर—२१४

विनाह—२२२  
 विनाले—२६६  
 विनाहु—२१६  
 विभुर—५६६  
 विभुरद—४१२  
 विनेयद—१५  
 विरगु—५२१, ५४५  
 विनात—२६६  
 विहडाइ—५३१, ६३०  
 विहडाव—४६१  
 विहलघण—५४  
 विहलंघन—२५०  
 विहृति—५६ ६४, २६०, ३७०,  
 ४२६, ४५५  
 विहृत—६०  
 विहृतंशु—२५, ११७  
 विहृतिव—६०६  
 विहृसाइ—२६, १५६, २००  
 विहृतेइ—६१  
 विहि—४०, ४५६  
 विहिया—६६१  
 विहिसाइ—६६५  
 विहु—६५६  
 वीनाहराव—१५३  
 वीजु—५३६  
 वीडा—१७२  
 वीण—४, ५५०  
 वीणा—३०३, २३३  
 वीघा—२७७  
 वीनयो—६३  
 वीय—१३  
 वीर—७५, ५१, १३६ १५५, १६३,  
 १५१, १५२, १५६, २०१,  
 २०३, २१२, २२१, २३६,

३४३, ४०३, ४२७, ४४७,  
 ४४६, ४५५, ४६७, ४६२,  
 ४६५, ५०२, ५१०, ५४६,  
 ५५६, ५५५, ५६१, ६३७  
 वीरा—३५२  
 वीर—१०, १३०, १६०, १६६,  
 २०७, २०५, २०६, २१०,  
 २१४, २२०, २२४, २२५,  
 २२६, २५६, ३१५, ३४५,  
 ३४६, ३६२, ५०१  
 वीवो—१६७  
 वीत—३३५, ३३६  
 वीतक—४४१  
 वुआण—१५५  
 वुआइ—५२५  
 वुकिवि—१३७  
 वुषि—१, २६५, ३६४, ४३५, ४५५  
 ७०१  
 वुदि—४१५, ६३५, ६७६  
 वुरो—६३०  
 वुलाइ—१५७, ६२२  
 वुलाय—१०४  
 वुल्लिव—१५३  
 वुवइ—२२७, २६६, ६४०  
 वुवइ—१, १३६  
 वुकिव—१३५  
 वुडव—३२५, ३३४  
 वुडे—३३२  
 वुपी—४५१  
 वुव—३११  
 वुरं—४५५  
 वुलाइ—४००  
 वेग—५६, ७२, १३५, २६५, ३५४,  
 ५७२, ५५७, ५५६

वेगड—३६८  
 वेगि—६६, १६५, १७०, २५३  
 २८६, २६०, ४३५, ४४१,  
 ६०२, ६०५, ६३६  
 वेगु—६३४  
 वेग—२८६  
 वेगा—४४३  
 वेटा—३६  
 वेटी—३६, ६२४, ६२७  
 वेविपड—१४  
 वेण—६५६  
 वेनात—४०४  
 वेतातु—३२  
 वेपि—६४  
 वेव—८७, ३२८, ३७४, ३८०, ४६८  
 ४८१  
 वेवहड—४३०  
 वेस—३४८  
 वेसड—१२५  
 वेसा—४७६  
 वेसु—३४५  
 वेसु—३०६  
 वेवार—६३६  
 वेवड—१०१, ३८७  
 वेदि—३८१  
 वेडी—३०४, ३८८, ४२६  
 वेडी—३७२  
 वेद—१७४  
 वेद—६११  
 वेसु हत—४७४  
 वेस—२६  
 वेसु—१८३  
 वेस—३११

वेमंदर—७६  
 वेसुंदर—६४६  
 वेसरति—३८१  
 वेसी—४८१  
 वेस—४५, ३३८, ४२३, ४४०  
 ४३३, ४२०, ६३१  
 वेसड—४३, ४४, ७६, ८४, १६  
 ६७, १६, १००, १०६  
 ११७, १४६, १४८, १६६  
 २०६, २०६, २८८, ३०६  
 ३१३, ३०८, ३८४, ४०६  
 ४४४, ४४३, ४४४, ४६३  
 ४४४, ४४४, ४४६, ४७६  
 ४५४, ४८६, ६०६, ६०४  
 ६३१  
 वेसात—६४६  
 वेसाति—६४८  
 वेसाते—६४६  
 वेसाति—११६  
 वेसाति—४१६  
 वेसातव—६३  
 वेसातव—४१७  
 वेसी—६०७  
 वेसी—१४८, ३०६  
 वेसी—४७६  
 वेसासी—३३८, ४०६  
  
 वे ५ ४  
 वेसी—१४  
 वेसु—१  
 वेस—३१ ४६

सङ्ग—२३  
 सङ्घ—३७, ७६, १६८, १७६, २२४  
 २५२, ४८८, ६२६, ६७६  
 सकह—१६८, ३६२, ४६६, ५३२  
 ६३०  
 सकड—३३१, ४३७, ४४३  
 सकति—२६८  
 सक्क—३३  
 सकलतज—१३०  
 सकहि—३३०  
 सके—५२३  
 सकिलह—५५६  
 सक्को—२०२  
 सखी—४००  
 सगलो—४५२  
 सगिग—६१३  
 सगुन—४८५  
 सघण—७८  
 सचउ—५८७  
 सचभामु—३६  
 सनिउ—४०५  
 सवण—६८६, ६६१  
 सनहु—७०  
 सज्जत—२६३  
 सज्जण—१८३  
 सज्जेह—१७३  
 समूल—१७५  
 सटकह—३३५  
 सठ—७७  
 सजे—६३८  
 सतखण—६६३  
 सतभाह—२६, ३३०  
 सतभाउ—४५, ८४, ३६८

सतभामा—३०, ३१, ६१, ६८  
 १०८, ६१३  
 सतरह—१०  
 सति—६४  
 सतिभाउ—४८, ५६, ६२, १००  
 १५२, १६१, २२३, २७४  
 ३२६, ५१७, ५४३, ५७३,  
 ५८५  
 सतिभान—४०२  
 सतिभामा—६३, ६४, ६५, ६६, ६६  
 १०३, १०४, १०६  
 ११२, ११३, ११६  
 ११८, १२७, ३१८  
 ३४३, ३६१, ३६२  
 ३७३, ३७५, ३८५  
 ४१६, ४२०, ४२४  
 ४३३, ४४३, ८६  
 ५८७, ५८८, ५६७,  
 ६०१, ६०६, ६११,  
 ६१४, ६१७, ६५७  
 सतोभामा—६२  
 सतुवाची—६४२  
 सदा—६६३  
 सदाफल—३४७  
 सधाणि—६४७  
 सघार—१, ३, ५५६  
 सघार—५, ३०६  
 सघे—६४  
 सघेहि—१८३  
 सन—५३२  
 सनघु—१७३  
 सनढच—४७५  
 सनमच—२४५

सनमधुर्दन ३  
 सनमधु—४०६  
 सनाह—४७०  
 सनीश्वर—११  
 सनेह—६०३  
 सनेहु—५८८, ६४२  
 संक—३६६, ३७१  
 संख—५१, १२१, ३४८, ५६६  
 ५८०, ६५६  
 संगह—२६८  
 संग्राम—२१०, ४६७, ४६६, ४६३  
 ४६८, ५००, ५०६, ५४६  
 ५५५, ५५६  
 संग्रामु—२६६, ५०८  
 संघरह—२०५, २८३, ३८८, ६७२  
 संघरहु—१६५, ६७१  
 संघरुषज—५१०  
 संघरि—२८६  
 संघरी—३५१  
 संघरे—४०३  
 संघार—४६१  
 संघारु—४६२  
 संघारुणु—७६  
 संघासण—२३४  
 संघरह—३०  
 संघारिज—५१६  
 संजमु—५६४, ६६६, ६७३, ६७५  
 संजुत—७२  
 संजुत—३२०, ४८२, ५०१  
 संजोमु—४०  
 सति—६  
 संतापु—१४०, १४२  
 संतोषी—१६३

संवेसज—३६८  
 संवेह—४०६  
 संवेहु—१६, ३०५, ५३०  
 संघाणु—८०  
 संमधु—६८७  
 संन्यास—३३१  
 संसार—६५६  
 संसारि—६६७  
 संसारु—२३१  
 संहरे—३६०  
 संहार—१६१  
 सपतज—१५६, २२८, २४०, ३५५  
 ४६३, ५४४  
 सपतज—१५०  
 सपती—६८१  
 सपते—८४  
 सपराण—८१, १८१  
 सपराणु—२६  
 सपरान—४५८  
 सफलु—२३१, ४२६, ५६२  
 सव—२२, १११, १६२, १७५, १८७  
 २५४, २५५, ३५०, ३५६  
 ३५३, ३६४, ४२५, ४७३  
 ४८१, ५०२, ५१२, ५८६  
 ५६३, ६३८  
 सवहु—२४  
 सवह—२३०  
 सभा—२३, ५३, ३३२, ३३७  
 ३७२, ३७३, ४५७, ४६३  
 ४६४,  
 सभाइ—११०, २५५, ३१२, ३६०  
 ४५८  
 सभाज—२५७, ५६६  
 सभासह—५२१

सभालि—४७७, ५३६  
 सभालिज—७६  
 सभ—७२, २४३, ४२८, ५२२, ५६२  
 सभजसरण—६६५  
 सभकाइ—६६, १४५, ३६२, ६२८  
 सभकावइ—६८७  
 सभक—२०६  
 सभदि—२६४  
 सभाविज—१८४  
 सभदिनारायणइ५८  
 सभरि—३०३, ४०६  
 सभययुह—१२  
 सभरंगिणि—७६  
 सभराण—१७५  
 सभरी—४८८  
 सभसरण—१५१, ६६४  
 सभहाइ—२७६  
 सभाण—१५  
 सभाषान—४००  
 सभान—१५  
 सभु—३३२, ५७३  
 सभुम्हार—१५०, २८५, ३८३, ४००  
 ४८०, ५५०, ६८८  
 सभुम्काव—४८६  
 सभुव—३२७  
 सभुडु—४५७, ६५६  
 सभुद—१२५, ५५७  
 सभुद—५७८  
 सभैलि—३८६  
 सभतउ—६५, २२५  
 सभति—७००  
 सभु—५५, ६६, १६७, २८३, ५०८  
 ५५३, ५६५, ५६६, ६२४  
 ६४६

सभियज—५६३, ६१०  
 सभये—१११  
 सभरि—५७६  
 सभकुम्वाइ—६१२, ६२४  
 सभकुम्बर—६१६, ६१८  
 सभलु—११  
 सभवल—२३५  
 सभहारइ—४७६  
 सभयह—५६६  
 सभहलि—१२३, १६२, ४५०, ४५१  
 सभपंच—२२८  
 सभन—२६०, ३२०, ४७४, ४८३,  
 ४८८, ५१०, ५१४, ५२६,  
 ५२८, ५५६, ५७७, ६४६  
 सभना—५१२, ५६४  
 सभनु—४८७, ५०८, ५७२,  
 सभल—२५८, ३५७, ३८५, ३६०,  
 ३६१, ४६६, ५२६, ५५८,  
 ५६१, ५६३, ५६४, ५८६,  
 ५८७, ५८६, ५६१, ६१४,  
 ६६८  
 सभलह—४६१  
 सभलु—३७, ३८६, ४१३, ५१०,  
 ५५५, ५७७  
 सभ—६४, १७६, २२४  
 सभण—१३  
 सभणा—३११  
 सभलि—१४४  
 सभयु—६४३  
 सभवर—२०८  
 सभस—११, ६६३  
 सभसती—४  
 सभसुती—१  
 मरस्वती—६२८

सरिस—१०२, २६५, २६४, ४२५,  
४६३, ४७०, ५३६, ५६१

सरिसो—४६५

सरीर—५४, ५०८, ६८५

सरीरह—६८४

सरोर—२३६, ३४६

सर—१, ५२०

सख—३८, ३६, ४२, १३६, २२७,  
२३८, ४२८, ६१४

सखु—१३४

सखे—२८१, ३२०

सखीर—२०४

सखीरह—३, २०५

सख—६४, २१३, ५५६

सखिक—५०६

सखिह—६३६, ६६१

सखिह—२३०

सखि—२१६

सख—५७६, ६३८, ६४३, ६४६

सखई—३६७, ४१५

सखइ—६११

सखतिसाल—६१

सखतिसालु—५८६

सखद—५६६

सखनि—३७५

सखनु—४८७

सखल—१७५, ४५१, ५०२, ६४३

सखसिद्धि—१६४

सखारि—५६८

सखव—४२२

सखवह—४६१

सखु—२, १३५, १३७, १३८, १८३,  
१६२, २७६, ३००, ३८७,

३८८, ३८९, ३९०, ३९१,  
४४४, ४६२, ४६८

सखुव—५८०

सखुव—५८४

सखिसु—१३६

सखि—१७, ४२, ७३, १०६, २६३

सखिपालह—८२

सखिभाइ—३०, ६१५

सखिहर—६१२

सखइ—५३७, ६८६

सखण—५२६

सखवेज—४५६

सखयो—४७०, ४६७

सखल—८३

सखनाण—१३३

सखनाणु—५०

सखस—६०५

सखाइ—५३७

सखाज—११०, २६८

सखारइ—५२७

सखारज—१४१

सखारि—३३, ३३१, ३४०, ४६६,  
५३२

सखि—३१६

सखिज—१२

सखिनाण—३१८, ३६७

सखिनाणु—४१५

सखियो—४६३

सखिलडो—६१, १०५

सखीए—४२६

सखु—११०, २१०, ३४०, ५१६,  
५६०

सखेट—४६, ५७, ६४१

सखीवर—५१



सहोवरि—४४  
 सहोवह—२१  
 सहोयर—१६६, २२८  
 सहोवरि—६४०  
 सहोवह—४६५, ६०३  
 सहो—१३१  
 सहयज—५१५  
 सागालाए—६४६  
 सावज—३७८, ४२१,  
 साज—४८६  
 साजह—४७६  
 साजहह—४७५  
 साजि—४७६, ४७७, ४७६, ४८६  
 साजिज—५८, १७३  
 साजियज—५६  
 साजहि—१७५  
 साजह—६६, ४७५  
 साजे—२५६  
 साजह—४७५  
 साजे—४७६  
 सास—२०७  
 सात—५१, ६२  
 सातज—६४  
 साति—३२  
 साय—८४, २६६, ५०२, ५३८,  
 ६४६  
 सायि—५१३  
 सायु—६६६  
 सायु—५५७  
 सायिज—५१८, ५२७  
 सायु—३८४  
 सायन—३२४  
 साभहि—६२६

सामकुमार—६३६  
 सामकुम्बाल—६४६  
 सामहण—२७६, ५७७  
 सामहराज—६६५  
 सामि—१२, १५०  
 सामिज—२१, ४६१  
 सामिकुमार—६७३  
 सामिणि—१०६, ४२०  
 सामी—१६६, २६४, ३५३, ४०७,  
 ६६४  
 सामुहे—५६१  
 सायर—१६, १५२, ४७५  
 सायरह—३७४  
 सार—६०, ६४, १२८, १५६, ३१२,  
 ३६७, ३७५, ४००, ४३५,  
 ५०५, ६२०, ६३६, ६४५  
 सारंगपाणि—२६, ५१७  
 सारगपाणि—६३  
 सारंगमणि—७७  
 सारयि—५८, ५६, ४८५, ५०७,  
 ५०६  
 सारयी—४८६  
 सारव—१, २, ३  
 सारिज—१५५  
 सारी—६५  
 सार—५, ११, ३६, १३४, १३६,  
 ३४५, ३७८, ३८०, ४४८,  
 ४७१, ६०३, ६८४, ७००  
 सावयलोय—६६६  
 सासज—६७१  
 सासण—५  
 सासु—१२

साहय—२१  
 साहस—१६२, १६८, २०८, २५६,  
 २६७, २७३, ३४६; ४२७,  
 ४५८, ५६८, ५४६, ५५६  
 सिञ्ज—४६०, ५४६, ५४८; ६३७  
 सिद्धक—२१७  
 सिगली—३७३  
 सिगिरि—४८२, ५५६  
 सिन्धु—४१०  
 सिन्धि—६६६  
 सिद्धि—२३१  
 सिगा—६४४  
 सिगार—३०  
 सिगार—३५७  
 सिध—१३८, १६५, १८१; १८२,  
 ३१७, ४४८, ४५१  
 सिधरह—१६४, १६८, १७४, १८३  
 सिघासण—२६, ५६६  
 सिघासण्यु—२०३, ३६६, ५६२  
 सिदुरु—३४६  
 सिधु—१६६  
 सिह—१७४, ४५०, ४६०  
 सिवालु—४८४  
 सिर—२३, ३३३, २५०, २५६,  
 २७२, २८६, ३६३, ३७८,  
 ३८२, ४१६, ४२१, ४२६,  
 ४२६, ५६०, ५६२, ५७०,  
 ५८२, ५८३, ६५६  
 सिरि—३४५  
 सिल—२५८  
 सिला—३५, १२४, १२५, १२६,  
 १३१, १३२, १५५, २३०,  
 २४४, ३५६  
 सिब—१८३

सिहवार—५७६  
 सिद्ध—११२, ११६, १६४, १६५,  
 २१०, २४५, ३२०, ४१४,  
 ५८८, ५८६  
 सीज—१६०  
 सीखज—४५३, ५२२  
 सीम्ह—६५३, ६६२  
 सीतल—६  
 सीद्वार—३७५  
 सीघज—४१६  
 सीया—२७५  
 सीलम्बत—६१४  
 सीस—१, ६२  
 सीसु—८२, ६४३  
 सीहद्वार—४४२, ५६१  
 सीहद्वार—४३५  
 सीहवारि—६३७  
 सीहिरिण—१६६  
 सीह—१६६  
 सूअइ—२०  
 सुअठे—३५८  
 सुइ—५८८  
 सुइन—७१  
 सुइरी—३६४, ४०१  
 सुख—६१, १११  
 सुखह—६८२  
 सुखासण—१०२  
 सुखु—६२६  
 सुगणइ—४८६  
 सुगमु—४८६  
 सुगुण्यु—१८३  
 सुचंगु—३१६

सुजन—५७३  
 सुजाणु—५०  
 सुकह—७१  
 सुह—१२  
 सुकार—८७  
 सुप्यज—४१७  
 सुणह—३८४, ६६३,  
 सुणह—२७१  
 सुणि—२६५, ४५८, ६६४  
 सुणिव—१३७, २६५, ६६४  
 सुणिव—६६४  
 सुणे—४२६  
 सुणेह—६७६  
 सुणो—६२३  
 सुण्यो—३७६  
 सुतारि—५५  
 सुवंसणु—१४, २७४  
 सुदिन—४२६  
 सुयणु—६६४  
 सुधाकारणी—१६३  
 सुधि—६८, १४४, १४८, १५७,  
 १६६  
 सुन्दरि—३२, ४१, ३१२, ४२१  
 सुनीर—३६८  
 सुपनसां—२७५  
 सुपवित्—१२  
 सुपासु—८  
 सुपिनंतक—६७६  
 सुपियार—६१५  
 सुमियाक—१३६, ७७३  
 सुम—१६३  
 सुमहया—४५६  
 सुम वरिसणी—१६३  
 सुमान—६२२

सुभागकुवर—६२१  
 सुभागु—६१४, ६७३  
 सुभासुगुवर—६१६  
 सुमु—५०७  
 सुमति—८  
 सुमिरो—४१८, ४८८, ६३५  
 सुपण—५६१  
 सुर—१८३, २०५, २३०, ५३८,  
 ५६५, ५६६, ६००, ६०३,  
 ६१३, ६६६, ६६८, ६६३,  
 ६६६  
 सुरंग—१४६  
 सुरंगिनि—५४१  
 सुरजगृह—२७८  
 सुरवेज—२१६  
 सुरनारि—५०  
 सुरमणि—५५२  
 सुरभबण—६७७  
 सुरमणु—६६१  
 सुरारिदु—६६४  
 सुरतोह—२३२  
 सुरतु वरि—४१, ४३, ४५, ४८  
 सुरिदु—६६१  
 सुरेस्वर—६६२  
 सुवंद—५१६  
 सुवरीयज—२७८  
 सुवाप्त—६६३  
 सुविचार—१८  
 सुविधु—६  
 सुसपालु—४५  
 सुहह—२६४  
 सुहह—७०, १७५, १७६, ४७५,  
 ५४३, ५५६, ५५८, ६७८  
 सुहहनि—४८०

सुहृदनु—४८६  
 सुहृद—४७७, ४६८  
 सुहृण—४८७, ४६६  
 सुहृवसण—२७४  
 सुहृनाली—२२७  
 सुहृल—५३६  
 सुहाइ—३२६  
 सुहिनाल—२७१  
 सुके—१६१  
 सुम्ह—२३, ६८, १७३, ५०३, ६०२  
 सुण्डि—५१४, ५६६  
 सुब—२०  
 सुबदि—१४३  
 सुदि—६५७  
 सुक—१६८  
 सुली—६४३  
 सुवर—२१६  
 सुवा—८७  
 सुहो—१२०  
 सुहृद—३५७  
 सुखण—२३४  
 सुठि—२७१, २७२  
 सुरी—२७२  
 सुत—४, १०३  
 सुती—६४५  
 सुना—५०१  
 सुनाकति—२६०  
 सुनाकरी—२०४  
 सुभउ—८  
 सुम्बहि—२३१  
 सुल—४७६  
 सुव—२८, ६२, २११, ४४५, ५८८,  
 ६१३, ६६६

सुवा—२१५  
 सुस—५०६  
 सुसपाल—४४, ६६, ७१, ७४, ७५,  
 ७६, ७७, ७६, ८३, ६२७  
 सुसे—११६  
 सुइ—८०  
 सुन—२८८, ५५७  
 सुना—५०३  
 सुड—३५, ३८, ४२, ४३, ४७,  
 १०५, १०७, ११२, ११४,  
 ११८, १२४, १३१, १७०,  
 १८८, १९०, १९६, १९६,  
 २१३, २१५, २१८, २२४,  
 २३५, २४०, २५०, २५२,  
 ३३५, ३३८, ३४६, ३६४,  
 ४०६, ४१५, ४२४, ४३१,  
 ४६७, ४३४, ५६६, ५६८,  
 ६०४, ६०६, ६२५  
 सुउ—१०७, ५२१  
 सुखइ—२७०  
 सुखणी—१६३, ३६५  
 सुतउ—२७२  
 सुनो—३०१  
 सुण्यो—२६६  
 सुभ—५५५  
 सुभे—५६३  
 सुरठ—१४, १४६, ३४२, ५६६  
 सुलह—८०, १६१, २२६, २३१,  
 २३३  
 सुलहउ—६  
 सुला—१८३, १८६, १६८, ५४८  
 सुले—६३२  
 सुवत—१२८

सोहद—४२, ५२, १०३, २३४,  
३१६, ६०८

सोहज—६८७

सोहि—३०३

सोहहि—१७, ४६७, ४६७

स्तुति—६६८

स्मरि—४६१, ४६३

स्वंगराज—१८४

स्वंगराज—५४७

स्वंगराज—१८४

स्वर्ग—६८६, ६६७

स्वर्ग—५६४

स्वाति—१२

स्वामि—६३५

स्वामी—४, ६५, ११८, १४७, १४८  
५६५, ५६७, ६२३

स्याज—५०५

स्याली—३४

ह

हइ—८७, ६३, २२५, ३२७, ४०६,  
४४६, ४७१, ४८०, ५६३

हइवर—२६१

हउ—१५४, १२८, १६६, २६३,  
२७३, ३००, ३२८, ३७०,  
३८०, ४१७, ४६४, ४७३,  
५३६, ६००, ६२३, ६६७,  
६७८, ६८२, ७०१

हकारज—३७६

हकारज—३७६

हकारि—५८, ११६, १३०, २५३,  
३४०, ५७५, १०७, ६१६

हउद—५०६

हउई—५३२

हउह—२७५

हउडि—१५४, २६७, ४१३, ४१४

हउडिलइ—६७

हउडी—५०८, ५१२

हउडे—५७६

हउणइ—५१

हउणज—६२

हउणवंत—३५३

हउण्ये—६४७

हउत्य—२०६

हउति—१२४

हउलेवो—८८

हउलेवउ—५८५, ६५६

हउयार—३५४

हउयार—४६७, ४७१, ४७६

हउंस—३

हउंसगमिणि—४२

हउम—४१०, ४११, ४२५, ४३७

हउमइ—६५०

हउमारज—१८५, ३०६

हउमारी—११३, ३०८

हउमारे—२८६

हउमि—२७, १४३, १४४, ३८४,  
४४२, ६४१, ६४२

हउम्बु—२४८

हउय—४८२, ५०४, ५२६, ५२६,  
५३२, ५५६, ६४५

हउय—५४, २३६

हउयवर—५००

हउया—२७१, २७२

हउर—१२७, ४५८, ६६३

हउरइ—६

हरज—१४२

हरण—७

हरण्यो—१८६

हरसिज—३२०

हरि—३६, ६६, ११६, १४३, १६२,  
३४४, ४५८, ४८०, ५०६,  
५१६, ५४७, ६५०, ६७३

हरिज—१२७

हरिवेज—१०७, ५१३

हरिनंदण—३६३

हरिनंदनु—३२२

हरिराज—२३, ६२, ७६, ४६३,  
४६४, ५६०, ५७३

हरिलइ—७६

हरिलयज—१४७

हरिवसइ—१२

हरिव्यो—२८८

हरिसय—१६६

हरी—१२१, ४७२, ६७८, ६८२

हरीनइ—६६

हृद—३१४

हृद—६५५

हृद—६

हृल—४६७

हृलज—६४

हृलहर—५५, ११६, ३३४, ४४४,  
४३६, ४४१, ४४७, ४५२,  
४६१, ४७२, ४६७, ६६१,

हृलहर—५६, ८६, १४३, ४४६

हृलहर—५६, १४३, ४४६

हृलहृल—६६५, ६७१, ६७२

हृलहृल—६४, ५५८

हृलावभु—७८

हृलज—४७४

हृल्लज—४७४

हृली—३५१

हृलु—४५०

हृलुवइ—६६७

हृवइ—४२१

हृसइ—१०७

हृसाइ—३७३

हृसि—६५, ६७, १००, १४६, ४४४,  
५१२, ५१५, ५४६, ६१२,  
६५१, ६५२,

हृसिज—५५१

हृस्ती—१६१

हृहृज—३६

हृहि—२२८

हृहु—३८०

हृइ—१०६

हृक—४६२, ५०६, ५२७, ५३७

हृकइ—४६१

हृकि—७८, १६०, १६६, २६१

हृकी—४६५

हृक—६४४

हृकी—३८८

हृय—६, २५, ३१, ५२, ६२, ११७,

१२५, १३१, १४६, १४८,

१५५, १७२, १६६, २०२,

२०६, २२२, २३४, २८०,

२६६, ३०६, ३४३, ३७७,

४१७, ४२२, ४६६, ४६७,

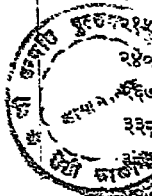
५०६, ५२०, ५३१, ५३३,

५३५, ५४०, ६४४, ६४६,

६४८, ६७३

हायह—२११, २३५  
 हायि—७७, ८२, २१३, २४६  
 हायु—३८७  
 हार—६०३  
 हारइ—११२, ११३  
 हारलु—६०४  
 हारि—२६२, ६१६  
 हारिउ—१८२, ५१४  
 हारी—४१६  
 हारु—२३४, ५६६, ६००, ६०१,  
 ६०४, ६०६, ६०६, ६१०  
 हारु—६१७  
 हालइ—५०६  
 हालज—३७३  
 हाली—२६१, ३३२, ५२२  
 हाहाकाव—५०१  
 हिस—३२४  
 हिय—१४०  
 हिय अलोक—१६३  
 हियइ—१६६  
 हियह—६०१  
 हियज—१४१, २६५, ३४२, ४२६,  
 ६२६, ६७८  
 हिवस—५१६  
 हीएह—४०६  
 हीए—१७८, ७०१  
 हीए—६३४  
 हीयउ—२४६, ५५१, ६३०  
 हीयरा—१६०  
 हुइ—११, १२४, १७१, १७३, २००  
 ४२२, ५३३, ६४४

हुतासल—२५३  
 हुली—३५०  
 हुले—६३६  
 हुली—२६६  
 हुलि—८५  
 हुयो—१३५  
 हेम—२६०, ३०१, ६२६, ६५६  
 हेवर—१८०, ४७५, ४६२  
 होइ—१, ६, ७, ३५, ४०, ४३,  
 ४८, १०४, १०७, १०६,  
 ११२, ११४, ११७, १३१,  
 १६८, १७६, १८३, १८६,  
 १९०, १९२, १९६, २०२,  
 २०४, २१५, २२४, २३२, २३५,  
 २४०, २४३, २४८, २५०,  
 २५५, २६०, २६३, ३१०, ३३५,  
 ३३७, ३४६, ३६४, ३६५,  
 ३६६, ३६९, ४०६, ४१५,  
 ४२७, ४४४, ४६४, ४७८,  
 ४८१, ५०५, ५११, ५१३,  
 ५१४, ५३५, ५३६, ५५३,  
 ५५५, ५८६, ६०४, ६०७,  
 ६३३, ६७०, ६७४, ६८४,  
 ६६७, ६६६  
 होइहि—१६२  
 होउ—१३, ५७३  
 होए—५६८  
 होहि—७४



## शुद्धाशुद्धि-पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध       | शुद्ध           |
|-------|--------|--------------|-----------------|
| १०    | ३      | रुक्मिणी     | रुक्मिणी        |
| १४    | १      | रुक्मिणी     | "               |
| १४    | ३      | रादउराइ      | जादउराइ         |
| २२    | १      | रुक्मणि      | रुक्मिणी        |
| २२    | १०     | रुक्मिणी     | "               |
| २४    | ६      | नारयण        | नारायण          |
| ३१    | ७      | रुक्मिणी     | रुक्मिणी        |
| ३४    | ७      | निम्पल       | निम्पल          |
| ४४    | १      | प्रद्यम्न    | प्रद्युम्न      |
| ६०    | २      | दग्धन्ति     | दग्धन्ति        |
| ६६    | ३      | गुण          | गुर             |
| ६७    | ४      | आवास         | अवास            |
| ७३    | ३      | वृत्         | वृत्तो          |
| ७५    | ६      | मंगल         | मंगल            |
| ९०    | १      | प्राप्त सकने | प्राप्त कर सकने |
| ९१    | ६      | रुक्मिणि     | रुक्मिणी        |
| ९२    | ६      | "            | "               |
| ९३    | ४      | "            | "               |
| ९३    | ६      | "            | "               |
| ९४    | ६      | "            | "               |
| ९६    | ४      | दाउ          | दोउ             |
| १२०   | १      | रुक्मिणि     | रुक्मिणी        |
| १२०   | १०     | जामवती       | जामवती          |
| १२३   | ६      | भानहि        | सुभानहि         |
| १२४   | १      | रुक्मिणि     | रुक्मिणी        |
| १२६   | १      | डाम          | डोम             |
| १३५   | ४      | रुक्मिणि     | रुक्मिणी        |
| १४२   | ७      | अठरइवे       | अठारइवे         |
| १५०   | २२     | भयकर         | भयंकर           |



|     |    |                |             |
|-----|----|----------------|-------------|
| १५१ | १७ | दुख            | दुःख        |
| १५१ | १८ | दुख            | दुःख        |
| १५२ | ६  | नत्रों         | नत्रों      |
| १५३ | ८  | सहेल्यो        | सहेलियों    |
| १५४ | १  | पहिले          | पहिले       |
| १५४ | ६  | के             | का          |
| १५४ | २३ | प्रचन्त        | प्रचुन्त    |
| १७० | २३ | विधाओं         | विधाओं      |
| १८५ | १६ | रुप धारण बनाकर | रुप धारण कर |
| १६२ | २० | के             | से          |
| १६२ | २० | समा            | सभा         |
| २१४ | ५  | रुपचन्द        | रुपचन्द     |
| २१४ | ८  | बहुरुपिणी      | बहुरुपिणी   |
| २१४ | २४ | रुपचन्द        | रुपचन्द     |
| २१५ | ७  | "              | "           |
| २१५ | १६ | "              | "           |
| २१५ | १६ | "              | "           |
| २२० | २६ | अभ्यन्तर       | अभ्यन्तर    |

